राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक – पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ५३

राजस्थानी-साहित्य-संग्रह

भाग ३

(पांच राजस्थानी प्रेमवार्ताओं का संकलन)

प्र का श क

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला
प्रधान सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य
[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ५३

राजस्थानी-साहित्य-संग्रह

भाग ३

(पांच राजस्थानी प्रेमवार्ताओं का सङ्कलन)

प्रकाशक
राजस्थान राज्य संस्थापित
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR.
जोधपुर (राजस्थान)
१९६६ ई०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिलभारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर;
ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी;
निवृत्त सम्मान्य नियामक (ऑनरेरि डायरेक्टर),
भारतीय विद्याभवन, बम्बई; प्रधान सम्पादक,
सिंघी जैन ग्रन्थमाला, इत्यादि

ग्रन्थाङ्क ५३

राजस्थानी-साहित्य-संग्रह

भाग ३

(पांच राजस्थानी प्रेमवार्ताओं का सङ्कलन)

प्रकाशक
राजस्थान राज्याज्ञानुसार
सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राजस्थान)
१९६६ ई०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजस्थानी-साहित्य-संग्रह

भाग ३

पांच राजस्थानी प्रेमवार्त्ताओं का सङ्कलन

(विस्तृत भूमिका एवं परिशिष्टादि सहित)

सम्पादक

गोस्वामिश्रीलक्ष्मीनारायण दीक्षित

कैटलॉगिङ्ग एसिस्टेन्ट

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर

भूमिका-लेखक

डॉ० नारायणसिंह भाटी, एम.ए., (पी-एच.डी.), एल-एल. बी.

सञ्चालक,

राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर।

प्रकाशनकर्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०२२ | भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८७ | खिस्ताब्द १९६६

प्रथमावृत्ति १००० | मूल्य- ५.५०

मुद्रक- हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनुक्रम

सञ्चालकीय वक्तव्य — १ – २
भूमिका — १ – [illegible]
सम्पादकीय — ३८ – ५४
वार्तागत विषयानुक्रम — ५५ – ६०

वार्ताएं

१ बात बगसीरांम प्रोहित-हीरांकी — १ – ५०
२ रीसालूरी वारता — ५१ – १४४
३ बात नागजी·नागवन्तीरी — १४५ – १६३
४ बात दरजी मयारामकी — १६४ – १८५
५ राजा चंद-प्रेमलालछीरी बात — १८६ – १९६

परिशिष्ट

१ रिसालू की बात के रूपान्तर—
(क) रीसालूकुमरनी वार्ता (गुजराती) — १९७ – २१०
(ख) रिसालूरा दूहा — २११ – २१४

२ पद्यानुक्रमणिका—
(क) बात बगसीरामजी प्रोहित-हीरांकी — २१५ – २२४
(ख) बात रीसालूरी — २२४ – २३६
(ग) नागजी ने नागवंतीरी बात — २३७ – २३८
(घ) बात दरजी मयारांमरी — २३९ – २४२

३ वार्तागत सूक्तियाँ — २४३ – २५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संचालकीय वक्तव्य

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान की ओर से 'राजस्थान पुरातन ग्रंथ-माला' के अन्तर्गत "राजस्थानी साहित्य-संग्रह-श्रेणी" में राजस्थानी भाषा की प्रतिनिधि स्वरूप उत्तम प्रकार की कृतियों को यथायोग्य प्रकाशित करने का हमारा संकल्प ग्रंथमाला आरम्भ करने के समय से ही बना हुआ है। तदनुसार राजस्थानी साहित्य-संग्रह के दो भाग पहले प्रकाशित हो चुके हैं।

राजस्थानी साहित्य-संग्रह, भाग १ का प्रकाशन १९५७ ई० में हुआ, जिसका सम्पादन राजस्थानी भाषा और साहित्य के सुप्रसिद्ध विद्वान् प्रो० नरोत्तमदास स्वामी, एम० ए०, विद्यामहोदधि ने किया। इस संकलन में : १–खींची गंगेव नींबावतरो दो-पहरो, २–रामदास वैरावतरी आखड़ीरी वात और ३–राजान राउतरो वात-वणाव नामक तीन राजस्थानी वर्णनात्मक वार्ताओं का प्रकाशन हुआ। इसी भाग के प्रारम्भ में राजस्थानी गद्य के विषय में श्री अगरचन्द नाहटा के दो निबन्ध प्रकाशित किये गये हैं जिनसे पाठकों को राजस्थानी कथा-साहित्य और राजस्थानी गद्यात्मक रचनाओं के वैशिष्ट्य का परिचय प्राप्त होता है।

राजस्थानी साहित्य-संग्रह, भाग २ का प्रकाशन १९६० ई० में हुआ जिसका सम्पादन प्रतिष्ठान के प्रवर शोध-सहायक डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम०ए०, साहित्यरत्न ने किया है। इस पुस्तक में वीरतासंबंधी तीन राजस्थानी कथाएँ हैं : १–देवजी बगड़ावतांरी वात, २–प्रतापसिंघ म्होकमसिंघरी वात और ३–वीरमदे सोनीगरारी वात। तीनों ही वार्त्ताओं के साथ सम्पादक ने शब्दार्थ और टिप्पणियां दी हैं जिनसे पाठकों को वार्ताओं के अर्थग्रहण में सुविधा रहती है। साथ ही, सम्पादकीय भूमिका और परिशिष्ट में परिश्रमपूर्वक प्राचीन भारतीय कथा-साहित्य, राजस्थानी कथा-साहित्य और प्रत्येक वार्ता से संबंधित ऐतिहासिक और साहित्यिक-सौन्दर्य को प्रकट कर राजस्थानी कथा-साहित्य-विषयक जानकारी को अग्रेसृत किया गया गया है। उक्त दोनों ही प्रकाशनों में राजस्थानी भाषा की प्राचीन कथाओं और गद्य के उत्कृष्ट उदाहरण संकलित हैं।

इसी शृंखला में प्रस्तुत राजस्थानी साहित्य-संग्रह, भाग ३, ग्रंथमाला के ५३वें ग्रंथ के रूप में पाठकों को प्रस्तुत किया जा रहा है। इसमें पांच राजस्थानी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रेमाख्यानों का संकलन है । इसका सम्पादन प्रतिष्ठान के कैटलॉगिंग सहायक गोस्वामिश्रीलक्ष्मीनारायण दीक्षित ने किया है ।

इन वार्ताओं का गद्य प्रसंगानुसार पद्यांशों से अनुप्राणित है । राजस्थानी कथाएँ बड़े परिमाण में कही, सुनी और लिखी जाती रही हैं । ऐसी अवस्था में कथा कहने वाले और लिपिकर्त्ता इन कथाओं में अपनी रुचि के अनुसार परिवर्तन कर गद्यांश में पद्य जोड़ते रहे हैं । इस प्रकार राजस्थानी गद्य-कथाओं का परिष्कार और विस्तार होता ही रहा है ।

इस संकलन की कथाओं में ऐतिहासिक पुट देने का भी प्रयत्न किया गया है किन्तु ऐतिहासिक तिथिक्रम की कसौटी पर वे तथ्य पूरे खरे नहीं उतरते हैं ।

सम्पादकीय वक्तव्य में अनेक तथ्यों का अध्ययनपूर्वक उद्घाटन किया गया है । इस पुस्तक को अधिकाधिक उपयोगी बनाने का प्रयत्न किया गया है । इस प्रकार पुस्तक को उत्तमतया सम्पादित करने के लिये श्रीगोस्वामीजी बधाई के पात्र हैं ।

राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर के संचालक डॉ० नारायणसिंह भाटी ने अपनी विद्वत्तापूर्ण भूमिका में राजस्थानी गद्य की प्राचीनता, राजस्थानी गद्य के विभिन्न रूप, राजस्थानी कथाओं का वर्गीकरण, प्रेम-कथाओं की सामान्य विशेषताएँ और वार्तागत विषयों का याथातथ्य निरूपण किया है जिससे इस प्रकाशन की उपादेयता अध्ययनार्थियों के लिये संवर्द्धित हो गई है । तदर्थ हम डॉ० भाटी को हार्दिक धन्यवाद देते हैं । साथ ही रिसालू की वार्ता से सम्बद्ध "रिसाळूरी ओरत" शीर्षक चित्र उपलब्ध करने के लिये भी हम उनके आभारी हैं ।

इस पुस्तक के प्रकाशन-व्यय का एक अंश "आधुनिक भारतीय भाषा विकास योजना (राजस्थानी)" के अन्तर्गत शिक्षा-मंत्रालय केन्द्रीय सरकार, दिल्ली से प्राप्त हुआ है । इस सहयोग के लिये हम प्रतिष्ठान की ओर से उक्त मंत्रालय के प्रति हार्दिक आभार प्रदर्शित करते हैं ।

आशा है कि इतः पूर्व प्रकाशित इस प्रकार के साहित्य-संग्रह के दो भागों के समान यह तीसरा भाग भी विद्वानों को पठनीय एवं उपयुक्त प्रतीत होगा ।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
शाखा कार्यालय,
चित्तौड़गढ़
दिनांक १–१–६६

मुनि जिनविजय
सम्मान्य संचालक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भूमिका

राजस्थानी गद्य की प्राचीनता—

प्राचीन राजस्थानी साहित्य गद्य एवं पद्य दोनों ही दृष्टियों से समृद्ध है। राजस्थानी पद्य की विपुलता एवं उसकी विशेषता सर्वत्र ज्ञात है। परन्तु राजस्थानी गद्य की अपनी विशेषता और उसकी प्राचीनता के सम्बन्ध में बहुत कम जानकारी अभी प्रकाश में आ पाई है। राजस्थान की विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं के संग्रह तथा अधुनातन शोध-कार्य के आधार पर यह कहा जा सकता है कि राजस्थानी भाषा में जो प्राचीनतम गद्य मिलता है वह 'असमिया' आदि एक दो भारतीय भाषाओं को छोड़ कर अन्य भाषाओं में नहीं मिलता। राजस्थानी गद्य के प्राचीनतम उदाहरण स्फुट रूप में ही प्राप्त होते हैं परन्तु उनसे गद्य की बनावट और भाषा के रूप का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। इस प्रकार के स्फुट उदाहरण शिलालेखों व ताम्रपत्रों में देखे जा सकते हैं। राजस्थानी गद्य का प्राचीनतम उदाहरण बीकानेर के नाथूसर गाँव के एक शिलालेख में अंकित है जिसका समय सं० १२८० दिया गया है।[1] अतः १३वीं शताब्दी में राजस्थानी पद्य के साथ-साथ गद्य का निर्माण भी प्रारंभ हो गया था, यद्यपि उस पर अपभ्रंश की छाप विद्यमान है।

१३वीं शताब्दी के पश्चात गद्य का निरन्तर विकास होता रहा है। संग्रामसिंह द्वारा रचित बालशिक्षा व्याकरण[2] में प्राप्य राजस्थानी गद्य के उदाहरणों को देख कर यह कहा जा सकता है कि आचार्यों का ध्यान भी राजस्थानी गद्य की ओर १४ वीं शताब्दी में आकृष्ट होने लग गया था। प्राचीन गद्य के निर्माण में जैन-विद्वानों का विशेष योग हमें निःसंकोच भाव से स्वीकार करना होगा, क्योंकि

---

१ – वरदा, वर्ष ४, अंक ३, पृ० ३।

२ – इस ग्रंथ का रचनाकाल १३३६ है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उन्होंने न केवल स्वतन्त्र रूप में वरन् बालावबोध, टब्बा तथा टीकाओं आदि के रूप में भी राजस्थानी गद्य को अपनाया है तथा उसको पनपाने की चेष्टा की है। इस दृष्टि से तरुणप्रभसूरि द्वारा सं० १४११ में लिखित षडावश्यक बालावबोध यहां उल्लेखनीय है। १५ वीं शताब्दी के अंतिम चरण तक आते आते राजस्थानी गद्य में काफी निखार आ गया था और अपने साहित्यिक रूप में उसकी स्थापना हो चुकी थी जिसके प्रमाण में माणिक्यसुंदरसूरि द्वारा सं० १४७८ में रचित वाग्विलास के गद्यांशों को देखा जा सकता है, जिनमें गद्य के परिमार्जन के साथ-साथ लयात्मकता, अनुप्रास एवं वर्णन-कौशल की खूबी परिलक्षित होती है।

भाषा के क्रमिक विकास की दृष्टि से १५ वीं शताब्दी की रचनाओं में अपभ्रंश का प्रभाव विद्यमान है क्योंकि उनमें 'अउ' तथा 'अइ' के प्रयोग प्रायः सर्वत्र मिलते हैं। इस समय की जैनेतर गद्य रचना अचलदास खीची री वचनिका में भी इस प्रकार के उदाहरण देखे जा सकते हैं। शिवदास गाडण रचित यह रचना गागरोन के खीची शासक अचलदास तथा मांडण के बादशाह के युद्ध को लेकर लिखी गई है जिसमें राजस्थानी गद्य का प्रयोग बहुलता के साथ हुआ है। उसकी अभिव्यक्तिगत विशिष्टता के आधार पर डा० टेसीटरी ने उसे प्राचीन राजस्थानी का एक क्लासिकल मॉडल कह कर उसके महत्त्व को प्रदर्शित किया है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि मुस्लिम सभ्यता के संपर्क के कारण राजस्थानी में अरबी और फारसी के शब्दों का आगमन भी इस समय हो गया था। राजस्थानी गद्य के क्रमिक विकास का इतिहास प्रस्तुत करना यहां अपेक्षित नहीं है। अतः यहां केवल यह बताना पर्याप्त होगा कि १५ वीं शताब्दी के अंत तक आते-आते राजस्थानी गद्य का परिमार्जन एक सीमा तक हो गया था और १६ वीं शताब्दी में तो वह अनेक साहित्यिक विधाओं का माध्यम बनने लगा। १७ वीं और १८ वीं शताब्दी में गद्य रचनाओं का निर्माण ज्ञात तथा अज्ञात लेखकों द्वारा विपुल परिमाण में हुआ है जिसका अधिकांश भाग प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों में आज भी सुरक्षित है।

गद्य के विभिन्न रूप—

राजस्थानी गद्य का यह विकसित रूप बात, ख्यात, पीढी, वंशावली, वचनिका आदि अनेकानेक रूपों में प्रयुक्त हुआ है। इनके अतिरिक्त राजस्थानी गद्य के माध्यम से अनुवादों की परंपरा भी कोई १४ वीं शताब्दी से प्रारम्भ हो गई थी और जिनमें जैन-विद्वानों का ही विशिष्ट हाथ रहा है। अनुवाद तथा टीकायें अनेक रूपों में उपलब्ध होती हैं। इन टीकाओं के मुख्य रूप टब्बा,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बालावबोध, वार्तिक आदि हैं। आगे चल कर अरबी फारसी आदि भाषाओं के महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का उलथा भी राजस्थानी गद्य में किया गया है, जिसकी सामग्री हस्तलिखित ग्रंथों में हजारों पृष्ठों में लिपिबद्ध हुई है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि रामायण, महाभारत, पुराण, हितोपदेश आदि को पूर्ण रूप में अथवा आंशिक रूप में इस भाषा के माध्यम से जनता तक पहुंचाने का सफल प्रयास भी अनेक विद्वानों ने किया है। स्थानीय रियासतों के प्राचीन राजकीय रेकार्डों को देखने से यह प्रमाणित होता है कि बड़े लंबे अर्से तक इस प्रकार के कामकाज राजस्थानी भाषा में ही होते थे। अतः समाज की व्यावहारिक भाषा राजस्थानी ही थी।

कथाओं का वर्गीकरण—

उपरोक्त गद्य के विभिन्न रूपों में वात और ख्यात का विशिष्ट महत्त्व है। मुंहता नैणसी, दयालदास तथा बांकोदास की ख्यातें बहुचर्चित हैं, परन्तु इन ख्यातों के अतिरिक्त राठोड़ों, भाटियों, कछवाहों, चौहानों आदि की ख्यातें भी उपलब्ध हैं, जिनका महत्त्व जितना साहित्यिक दृष्टि से नहीं है, उतना ऐतिहासिक दृष्टि से है। साहित्यिक दृष्टि से वात-साहित्य एक ऐसी विधा है जिस पर सही माने में राजस्थानी भाषा गौरव का अनुभव कर सकती है। अन्य भारतीय भाषाओं में इतना विषय-वैविध्य तथा कलात्मकता से परिपूर्ण कथासाहित्य उपलब्ध होना कठिन है। इस कथासाहित्य को मोटे तौर पर पांच भागों में विभक्त किया जा सकता है—

१. ऐतिहासिक २. अर्ध ऐतिहासिक ३. पौराणिक
४. धार्मिक ५. सामाजिक

ऐतिहासिक कथायें प्रायः ख्यातों के आंशिक रूप में तथा स्फुट रूप में उपलब्ध होती हैं, जो कि प्राचीन शासकों, योद्धाओं तथा विशिष्ट प्रकार के चरित्रनायकों को लेकर लिखी गई हैं। अर्ध ऐतिहासिक कथाओं में कल्पना तथा जनश्रुतियों का बाहुल्य है, परन्तु वे ऐतिहासिक कथाओं के अपेक्षा अधिक कलात्मक हैं। इस प्रकार की कथाओं की बहुलता का मुख्य कारण मुगलकाल में यहाँ घटित होने वाली अनेकानेक घटनाएँ हैं जिनमें यहाँ के शासक वर्ग के शौर्य तथा कर्त्तव्यपरायणता व स्वामीभक्ति आदि गुणों का बखान किया गया है। प्रत्येक साहित्य प्राचीन सामाजिक-परम्पराओं एवं मान्यताओं से प्रभावित ही नहीं होता, अपितु अपने पूर्वजों की थाती के रूप में बहुत कुछ उनसे ग्रहण करने और उस पर मनन करने को लालायित रहता है। अतः अनेक पौराणिक प्रसंग

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सहज ही में राजस्थानी कथा-साहित्य की निधि बन गये हैं। हमारी संस्कृति में धर्म का स्थान सर्वोपरि रहता आया है, वह केवल देवालय तक ही सीमित न रह कर हमारे आचार-विचार और दैनिक नित्य कर्म को बराबर प्रभावित करता रहा है। ऐसी स्थिति में धर्म की शिक्षा-दीक्षा तथा उसके अनुकूल आचरण की प्रवृति डालने के उद्देश्य से विभिन्न धार्मिक-सम्प्रदायों ने अनेकानेक कथाओं का प्रचलन हमारे समाज में किया। जिनमें एकादशी, शिवमहात्म्य, शनिश्चरजी, सत्यनारायणजी आदि की कथायें प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त प्रायः प्रत्येक धार्मिक पर्व से सम्बन्धित कथायें आज भी सुनने को मिल सकती हैं।

सामाजिक कथाओं के अंतर्गत नीति, प्रेम और आदर्श-परक कथाओं को रखा जा सकता है। प्राचीनकाल में जब शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध आधुनिक ढंग का-सा संभव नहीं था, तब इस प्रकार की कथायें ज्ञान-वर्द्धन तथा समाज की व्यावहारिक जानकारी का महत्त्वपूर्ण साधन थीं। इनमें प्रेम-कथाओं की संख्या सबसे अधिक है जो कई उद्देश्यों से लिखी जाती रही हैं। इन कथाओं पर सर्वांगीण रूप से विचार करने पर यह प्रतीत होता है कि इनमें अनेक तत्त्व विभिन्न रूपों में गुम्फित होकर मानव-भावनाओं तथा तत्कालीन समाज की मनोदशाओं के अंकन के साथ-साथ उनकी मान्यताओं पर सुन्दर प्रकाश डालते हैं।

कथाओं के विकास एवं प्रचार की प्रक्रिया—

कथाओं की विविधरूपता के साथ-साथ उनके विकास एवं प्रचार में समाज के कुछ वर्गों का विशिष्ट योगदान रहा है जिसकी चर्चा यहाँ करना इसलिए आवश्यक है कि उसे जाने बिना इन कथाओं के उद्देश्य एवं मर्म को समझना सहज नहीं है। इस दृष्टि से जैन विद्वानों, राजघरानों और चारण व भाटों का योग यहाँ उल्लेखनीय है।

जैन—जैन-विद्वानों द्वारा रचित अधिकांश कथा-साहित्य धार्मिक है। वह जैन यतियों और श्रावकों द्वारा विकसित एवं प्रचारित होकर उनके धर्मावलंबियों में विशेष प्रतिष्ठित हुआ। कई विद्वानों ने धर्मनिर्पेक्ष कथाओं का भी सर्जन किया। कुछ कथाओं में लौकिक पक्ष की प्रमुखता है परन्तु उन्होंने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उस पर धर्म का आवरण चढ़ा दिया है। कथाओं के निर्माण की दृष्टि से ही नहीं अपितु उनकी सुरक्षा की दृष्टि से भी जैनियों की सेवायें अविस्मरणीय हैं। उनके नित्यकर्म में स्वाध्याय एवं लेखन आदि नियमित रूप से चलता रहा है जिसके कारण कथाओं के प्रचार एवं उनकी सुरक्षा की तरफ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उनका ध्यान निरन्तर बना रहा। आज भी बड़े-बड़े मंदिरों और उपाश्रयों में इस प्रकार के ग्रंथ बहुत बड़ी संख्या में संग्रहीत हैं।

राजघराने—जिस काल में प्रेम, नीति तथा ऐतिहासिक तत्वों को लेकर अधिकांश कथाओं का निर्माण हुआ है, वह काल मुगलसत्ता और संस्कृति से आच्छादित रहा है। आए दिन भू और भामिनी के अतिरिक्त मंदिर और गायों के प्रश्न को लेकर युद्ध होना साधारण बात थी। अपने मान और गौरव की रक्षा के लिए वीर पुरुषों की कथाओं का निर्माण एवं प्रचलन कर उत्सर्ग की प्रेरणा प्राप्त करना स्वाभाविक ही था। परन्तु इस प्रकार के युद्धों की क्लान्ति और संघर्षमय जीवन में रस का संचार करना भी आवश्यक था जिसकी पूर्ति के लिए अनेकानेक प्रेम-कथाएं बनती रहीं और अवकाश के क्षणों में वे उनके लिए मनोरंजन के साधन का काम देने में सफल हुईं। राठोड़ पृथ्वीराज की तरह अनेक राजा जहाँ युद्धकला व काव्यकला दोनों में निपुण थे, वहाँ महाराजा मानसिंह तथा बहादुरसिंह जैसे शासकों ने इन दो कलाओं के अतिरिक्त कथा-निर्माण की कला भी प्राप्त की थी। वैसे शासकों का निजी योगदान उतना नहीं है जितना उनके आश्रय में रहने वाले साहित्यकारों का है। इस प्रकार की रोमान्टिक कथाओं के प्रचलन के पीछे एक सामाजिक प्रक्रिया भी थी। एक राजघराने से उपहार के रूप में लिपिबद्ध बातों की सुन्दर पोथियां दूसरे राजघरानों व विद्वानों को पहुँच जाया करती थीं। एक घराने की लड़की जब दूसरी जगह ब्याही जाती तो वह अपने साथ अपनी मन पसंद कई पोथियें ले जाती थी। इस प्रकार यहाँ के रजवाड़ों में इनका आदान-प्रदान होता रहता था। आज भी अनेक ठिकानों में दूसरे स्थानों की लिखी हुई पोथियें उपलब्ध हो जाती है। कहना न होगा कि इस प्रकार के आदान-प्रदान में कथाओं के प्रचार के साथ-साथ उनकी भाषा में भी परिमार्जन हुआ है।

चारण व भाट—चारण तथा भाटों का सम्बन्ध यहाँ के शासक वर्ग के साथ तो घनिष्ठ रूप में रहा ही है परन्तु समाज में भी उनकी मान्यता व स्थान सदा से रहता चला आया है। उनके द्वारा राजस्थान में साहित्य-रचना भी बड़े परिमाण में हुई। राज्याश्रय के अतिरिक्त स्वतंत्र रूप से भी वे अन्य साहित्य की तरह कथाओं का निर्माण भी करते थे। उनका सम्पर्क प्रायः साधारण जनता से अधिक रहता था इसलिए जनता में इस प्रकार की कथाओं के प्रचलन का श्रेय भी इन लोगों को ही है। दिन भर के कार्य से थक कर शाम के समय मनोरंजन के लिए जब लोग हथाई पर बैठते थे तो प्रायः कई नो कोई बारहठजी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

या रावजी बीच में आ जमते और लोगों के थोड़ेसे आग्रह पर बात की भूमिका बननी प्रारम्भ हो जाती थी। इन बातों को कहने की भी एक विशिष्ट कला है जो स्वयं कथाओं से कम रोचक नहीं है। श्रोताओं का ध्यान आकृष्ट करने के लिए भूमिका बाँधी जाती है जिसमें प्रायः बात से सम्बन्धित भौगोलिक वर्णन अथवा देश विशेष की विशेषताओं का वर्णन रहता है। बात में हुंकारे का बड़ा महत्त्व है। बात कहने वाला पहले से ही श्रोताओं को सतर्क रहने तथा बात में दिलचस्पी लेने को यह कह कर आगाह करता है कि 'बात में हुंकारो और फोज में नगारो'। सब की जिज्ञासा को अपनी ओर केंद्रित कर फिर वह मूल बात पर यह कहता हुआ आता है—तो रामजी भला दिन दे, एक समय री बात, फलां नगर में फलां राजा राज करतो हो। आदि २।

प्रेम गाथाओं की सामान्य विशेषतायें—

यह उल्लेख हम पहले कर आये हैं कि कथा-साहित्य में श्रृंगारपरक कथाओं का विशेष महत्त्व है। यहाँ सम्पादित बातों पर प्रकाश डालने के पहिले इस प्रकार की प्रेम-विषयक वार्ताओं की सामान्य विशेषताओं की ओर संकेत कर देना अनुचित न होगा। इन कथाओं में प्रेमिका के सौन्दर्य का वर्णन अनेक उपमाओं, रूपकों और उत्प्रेक्षाओं के सहारे किया जाता है। वेश-भूषा तथा हाव-भाव का चित्रण भी कथाकारों ने पूर्ण रस लेकर के किया है। जहाँ नायिका की कोमलता, प्रेम-लालसा व अलौकिक सौंदर्य का वर्णन किया गया है, वहाँ नायक के शौर्य, शारीरिक गठन, घुड़ सवारी आदि का भी बखान किया गया है। उसे यथा-स्थान छैल-छबीला व रसिक-शिरोमणि भी सिद्ध किया गया है।

श्रृंगार का सजीव चित्रण प्रायः प्रकृति व महलों की साजसज्जा की पृष्ठ-भूमि में किया गया है। वियोग और संयोग दोनों अवस्थाओं में नायिका के भावोद्वेलन का वर्णन कहीं-कहीं षट्ऋतुओं के प्रभाव के साथ-साथ हुआ है तो कहीं वसन्त और वर्षा के सहारे। बाग-बगीचे व उद्यानादि उनके मिलन-केंद्र के रूप में वर्णित हैं। कहीं-कहीं प्रकृति के उपकरणों पर प्रेमातुर क्षणों में मनुष्यों से भी अधिक विश्वास कर उन्हें प्रेम की सचाई के लिए साक्षी रूप में स्वीकार किया गया है। प्रेम-सन्देशों के आदान-प्रदान के लिए जहाँ डावड़ियों तथा दूतियों आदि का सहयोग उन्हें मिलता रहा है वहाँ मालिन, तम्बोलिन व धोबन आदि ने भी पूरा जोखम उठा कर बड़ी चतुराई के साथ उनका काम कर दिया है। उनके शुभचिंतकों की संख्या यहाँ तक ही सीमित नहीं है, पाले हुए मृग, सुग्गे व कबूतर भी अपने कर्त्तव्य से विमुख होना नहीं जानते। अश्व व ऊँट आदि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ने नायक को निश्चित स्थान व समय पर उसकी प्रेमिका से उसे मिलाया हो नहीं, अपितु सब की आंख में धूल झोंककर सुरक्षित स्थान पर भी पहुंचा दिया।

स्वजातीय प्रेमी-प्रेमिका के बीच में जहां घरेलू व्यवधान, प्रेम-तत्त्व को प्रगाढ़ता प्रदान करते हैं वहाँ विजातीय नायक-नायिका के बीच समाज का व्यवधान चित्रित किया गया है। परंतु सच्चे प्रेम के सामने दोनों ही प्रकार के व्यवधान अन्ततः बालू की दीवार की तरह ढह पड़ते हैं। नायक-नायिका का मिलन चाहे विधिवत् रूप से विवाह मंडप के नीचे न हो, अथवा कुसुम शैया पर निश्चित रूप से पौ फट जाने तक संभोग का आनन्द लेने का अवसर उन्हें भले ही न मिला हो, परन्तु श्मसान की भूमि में आकर उनके चिरमिलन में संसार की कोई भी ताकत व्यवधान नहीं बन सकी। यह अलग बात है कि शिव-पार्वती की किसी प्रेमी-युग्म पर कृपा हो जाय और वे पुनर्जीवित होकर सामाजिक नियमों की पराजय से निर्मित गौरव महल में फिर से प्रेम-क्रीड़ा करने लगें।

नायक-नायिका के प्रेम को चरम सीमा तक पहुंचाने के लिए अनेक प्रकार के व्यवधानों का वर्णन तो किया ही गया है परन्तु इसके साथ-साथ नायिका के प्रेम को औचित्य प्रदान करने के लिए जहाँ च्युत नायक के बुद्धूपन तथा कुरूपता, कायरता आदि का हास्यास्पद वर्णन किया गया है वहाँ शौर्य आदि का उत्कर्ष न केवल नायक तक ही सीमित रहा है, वह नायिका के चरित्र में भी प्रकट किया गया है। कुसुमादपि कोमल सुकुमारी अपने प्रेमी से मिलने के लिए मेघों से आच्छादित तिमिराच्छन्न रात्रि में अपने घर से बाहर निकल पड़ना साधारण सी बात समझती है और रास्ते में आने वाले किसी वन्य पशु व दुश्मन की हत्या करने में तनिक भी नहीं हिचकिचाती है।

प्रेम करना कोई हंसी-खेल नहीं है। इसमें जितने साहस की आवश्यकता है उतनी चतुराई की भी। अनेकों बार ऐसी परिस्थितियां आ जाती हैं जिनमें नायक-नायिका का बातचीत करना संभव नहीं होता, तब संकेतों के सहारे हृदय की मूक-भाषा में संवाद संपन्न होते हैं। कहीं परिस्थिति कुछ अनुकूल-सी लगी तो लाक्षणिक काव्य-पद्धति उन्हें सहयोग दे जाती है।

अधिकांश प्रेम-चित्र यौवन के उद्दाम क्षितिज पर चित्रित हैं। जिनमें काम की लालिमा पर सुखद संभोग के अनेक इन्द्रधनुष तैरते हुये दिखाई देते हैं।

त्रिया में धूर्ततापूर्ण चरित्रों को चित्रित करने की दृष्टि से लिखी गई कथाओं में प्रायः जादू, टोना, निम्न कोटि की सिद्धियां, भूत-प्रेतों व पाखण्डी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सन्यासियों का वर्णन बड़ी चतुराई के साथ किया गया है जो लंबी कथा में प्राय: औत्सुक्य का निर्वाह करने में भी सहायक सिद्ध होता है।

प्रेम-गाथाओं में पत्र-लेखन का बड़ा महत्त्व है। अपनी विरह-वेदना का सागर प्राय: प्रेमपाती पर अंकित दोहों की गागर में भरकर भेजने में प्रेमी को बड़ा संतोष होता है। इन पत्रों में प्राय: नायिका अपने प्रेम-विह्वल हृदय की बात ही नहीं करती अपितु अपने हृदय को ही प्रेमी तक पहुंचाने को लालायित रहती है। निश्चित अवधि पर मिलन न होने की स्थिति में प्राणों का मोह छोड़ देने की धमकी उसका अमोघ अस्त्र है, उसका उपयोग भी पूर्ण विश्वास के साथ वह करती है।

यद्यपि नायिका की विभिन्न अवस्थाओं और हाव-भाव का वर्णन इन कथाओं में मिलता है परन्तु वह हिन्दी के रीतिकालीन प्रेमाख्यानों से अलग किस्म का है। शृंगारिक उपकरणों व उसकी अभिव्यक्ति में परिपाटीबद्धता अवश्य लक्षित होती है परन्तु रीतियुक्त नायक-नायिकाओं के सुनिश्चित क्रिया-कलापों के केट-लाग से वह सर्वथा भिन्न है। रीतिबद्ध प्रेम को जहाँ शास्त्र ने अपने नियमों में जकड़ लिया है वहां इन गाथाओं का प्रेम सर्वथा मुक्त है। रीतिकाल के अनेका-नेक प्रेम-चित्र जहां वासना-जन्य भावनाओं से उत्पन्न कवियों की कल्पना के उपहार हैं वहां इन कथाओं का प्रेम जीवन की वास्तविकताओं के बीच क्रीड़ा करता हुआ दिखाई देता हैं।

कहने की आवश्यकता नहीं कि इस प्रकार का कथा साहित्य तत्कालीन समाज के राग-द्वेष, सौन्दर्य और प्रेम के मापदण्ड, जातीय-व्यवस्था, जीवन-आदर्श, यौन सम्बन्ध, मनोविनोद व राजा तथा प्रजा के सम्बन्धों की जानकारी का बड़ा ही उपयोगी साधन है। इन कथाओं में प्रयुक्त काव्यांश कहीं-कहीं उत्कृष्ट कोटि की काव्यकला अपने में लिये हुये है। गद्य और पद्य का यह सुन्दर समन्वय तत्कालीन जीवन की यथार्थता और प्रेमानुरंजित कल्पना के सम्मिश्रण के अनुकूल है, जिसकी व्याप्ति कथाकारों ने इस लोक में ही नहीं, जन्म-जन्मा-न्तर तक में कर देने का प्रयत्न अपनी कुशल लेखन-शैली के बल पर किया है।

अब यहां सम्पादित प्रत्येक कथा को लेकर संक्षेप में कुछ आवश्यक विचार प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

१. वात बगसीराम पुरोहित : हीरां की

कथा सारांश—

प्रकृति और मानव-सौन्दर्य की सुषमा के आगार उदयपुर पर राणा भीम (१८३४-१८८५) राज्य करता था। उसके राज्य में अनेक कलाओं में

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निपुण गुणिजन और धनी सेठ-साहूकार रहते थे जिनमें कोड़िधज लखमोचन्द का नाम प्रसिद्ध था। उसके घर हीरां नाम की रूपवती पुत्री ने जन्म लिया। शनैः शनैः समय के साथ अपनी सखियों के बीच गुड्डा गुड्डी का खेल खेलती हुई बचपन की देहली को लांघ, वह यौवन के क्षेत्र में ज्यों ही प्रविष्ट हुई, उसके अंगों में नया निखार, मुख पर भोली लज्जा की अरुणिमा और आंखों में चंचलता व्याप्त हो उठी। यौवन का चांचल्य बातों में व्यक्त होने लगा और अधरों की बातें नजरों तक आने लगीं, तब माता-पिता ने उसका विवाह अहमदाबाद के धनी सेठ कपूरचन्द के सुपुत्र मांणकचन्द के साथ कर दिया। हीरां यौवन की सुख-लालसा का स्वप्न लेकर माणकचन्द के साथ चली गई, परन्तु उस सुन्दरी की इच्छा के अनुकूल वर प्राप्त न होने से वह बड़ी दुःखित रहने लगी और वापिस उदयपुर चली आई।

उन्हीं दिनों निवाई[1] (जयपुर राज्य) में बगसीराम पुरोहित निवास करता था जो युद्ध और प्रेम दोनों ही कलाओं में समान रूप से प्रवीण था। वह अपने ससुराल बूंदी में आखेट आदि अनेक प्रकार के मनोविनोद करता हुआ सावण की तीज का आनंद लूट रहा था। इतने में किसी ने उदयपुर की गणगौर की प्रशंसा करते हुये उसे देखने का प्रस्ताव रखा। बगसीराम वहां से अपने साथियों सहित उदयपुर आ पहुँचा और सहेलियों की बाड़ी में डेरा डाल दिया। पीछोला तालाब पर 'गवर' की सवारी देखने के लिये जनता की भीड़ एकत्र हुई तो बगसीराम भी अपने घोड़े पर सवार हो वहां जा पहुंचा। उसके सौन्दर्य और तड़क-भड़क ने सभी को अपनी ओर आकर्षित कर लिया। उधर हीरां की नजर इस पर पड़ी तो उसने फौरन अपनी चतुर दासी केसरी को संकेत कर उसके पास भेजा और परिचय प्राप्त करने के बाद उसने हीरां की अभिलाषा प्रकट की। पहले तो बगसीराम ने स्वीकृति नहीं दी परन्तु जब उसने हीरां की मनोदशा का, उसके अलौकिक सौन्दर्य का वर्णन किया तो बगसीराम का उन्मत्त यौवन भी उस सुन्दरी को भोगने के लिये लालायित हो उठा।

संकेत के अनुसार निश्चित समय पर बगसीराम अपने घोड़े पर सवार हो रात के समय हीरां के महल में जा पहुंचा। महल की शोभा, साज-सज्जा और उसमें सोलह शृंगार कर बैठी हुई काम भावना की साक्षात् मूर्ति, अप्सरा सी सुन्दरी हीरां ने एकाएक उसे अपनी ओर खींच लिया। रात भर रति-विलास करने के पश्चात् जब पुरोहित रवाना होने लगा तो हीरां के लिये विदाई के वे

१ – कथा में पुरोहित का निवास-स्थान कहीं निवाई और कहीं नरवर मिलता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्षण असह्य हो उठे। दूसरे ही दिन राणा भीम को ज्यों ही पता लगा कि कोई विलक्षण व्यक्ति अपने दलबल सहित सहेलियों की बाड़ी में ठहरा हुआ है, तो उन्होंने मिलने की इच्छा प्रगट की। जगमंदिर में दोनों का मिलना हुआ। राणा ने जब नमस्कार किया तो पुरोहित ने केवल राम राम कह दिया और आशीर्वाद आदि न दिया। राणा ने क्रुद्ध होकर इसका कारण पूछा तो उसने बताया कि मैं अनमी हूं और रघुवंश तथा नरवर के शासकों के अलावा किसी को नमन नहीं करता। महाराणा ने उसके अनमीपने के औचित्य को स्वीकार किया परन्तु जब उसने साधारण ब्राह्मण न होकर तलवार के बल पर खेलने वाला योद्धा अपने आपने को कहा और इसी संदर्भ में परशुराम के द्वारा २१ बार क्षत्रियों का विध्वंस करने की बात आई तो फिर बात बढ़ गई। राणा ने उसके दल-बल को देख लेने की चुनौती तक दे दी। पुरोहित ने अपने डेरे पर लौट कर शिवलाल धाभाई को सारी बात कही। धाभाई ने किसी प्रकार की परवाह न करने को कहा और अपनी सहायता के लिये फौरन अपने पगड़ी बदल भाई सिवाने के राव बहादुर को चुने हुए योद्धाओं के साथ सहायतार्थ आने के लिये लिखा। राव बहादुर आ पहुंचा।

ज्योंही तीज का त्यौहार आया, पुरोहित अपने साथियों सहित अफीम आदि का सेवन कर तीज का उत्सव देखने पीछोले पर एकत्रित हो गए। उधर हीरां भी अपनी सहेलियों के साथ बन ठन कर वहाँ आ पहुंची। सुनिश्चित योजना के अनुसार देखते ही देखते बगसीराम ने हीरां को अपने घोड़े पर बिठाया और वहां से निकल पड़ा। मेले में भगदड़ मच गई और शहर में शोरगुल हो गया। राणा भीम ने पता लगते ही अपनी फौज भेजी। दोनों पक्षों में घमासान युद्ध हुआ। पुरोहित ने हीरां और उसकी दासी केसर को पहाड़ी की ओट में घोड़े से उतार दिया और स्वयं विपक्षियों पर टूट पड़ा। काफी समय तक युद्ध होने पर दोनों पक्षों के अनेक योद्धा मारे गये परन्तु विपक्षियों की क्षति अधिक हुई। पुरोहित हीरां को लेकर अपने निवास स्थान लौट गया। अपने सहयोगियों का आभार प्रकट किया और हीरां के सौन्दर्य का निश्शंक होकर उपभोग करने लगा। छहों ऋतुओं में विभिन्न त्यौहारों का आनन्द लूटते हुये अनेकानेक प्रकार की प्रेम-क्रीड़ाओं में रत होकर समय व्यतीत करने लगा।

कथा का वैशिष्ट्य—

यह कथा अनमेल विवाह के दुष्परिणामों को प्रकाश में लाने की दृष्टि से लिखी गई है। हमारे देश में अनमेल विवाह की प्रथा काफी लंबे समय से

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रचलित रही है। राज्य सत्ता, धन सत्ता अथवा घराने के बड़प्पन की होड़ को लेकर प्रायः अनमेल विवाह होते रहे हैं। मुगलों में भी यह प्रथा प्रचलित रही है और उसके दुष्परिणाम भी उन्हें भोगने पड़े हैं। जलाल और बूबना की बात इसका उदाहरण है। हीरां जैसी सुन्दरी का विवाह माणिकचन्द जैसे कुरूप व्यक्ति के साथ कर देने से ही हीरां का मन उसके उपयुक्त प्रेमी ढूंढ़ने के लिये विकल हो उठता है और संयोग से बगसीराम जैसे सुन्दर और साहसी नवयुवक के संपर्क में आकर उसे अपना जीवन अर्पण कर देती है।

कथा को रोचक बनाने के लिये लेखक ने स्थान-स्थान पर गद्य व पद्य में बड़े ही सुन्दर वर्णन किये हैं। इस दृष्टि से उदयपुर नगर, बूंदी, सहेलियों की बाड़ी, हीरां का सौंदर्य व शृंगार, उसके महल की साज-सज्जा, बगसीराम व उसके साथियों का ठाट-बाट तथा प्रेमी युग्म की क्रीड़ाओं का वर्णन द्रष्टव्य है। कहीं कहीं उक्ति-वैचित्र्य भी देखते ही बनता है।

प्रेम की रात प्रेमियों के लिये प्रायः बहुत छोटी हो जाया करती है। प्रथम मिलन की रात ढलने को हुई है उस समय हीरां की मनोवृत्ति का वर्णन लेखक ने सुन्दर संवादात्मक शैली में किया है। यथा—

बगसीराम कहै छै—परभात हूवो, मंदर झालर घंटा बजायो।
हीरां कहै छै — बालम, परभात नहीं, बधाई बाजै छै। अऊत घर पुत्र जायो।
प्रोहित कहै छै — प्यारी, प्रभात हुई, मुरगी बोल रही छै।
हीरां कहै छै — कुकड़ा मिलाप नहीं छै।
प्रोहित कहै छै — प्यारो, प्रभात हुवौ, चड़ियां बोलै छै।
हीरां कहै छै — बालम, प्रभाति नहीं, यांका माळा में सरप डोलै छै।
प्रोहित कहै छै — प्यारी, प्रभात हुवौ, चकई चुपकी रही छै।
हीरां कहै छै — बालम, बोल बोल थाकी भई छै।
प्रोहित कहै छै — दीपग की जोति मंदी भई छै।
हीरां कहै छै — तेल को पूर नहीं छै।
बगसीराम कहै छै — सहर को लोग जाग्यो छै।
हीरां कहै छै — कोईक सहर में चोर लाग्यो छै :
प्यारो कहै छै — प्यारी, हठ न कीज्ये, अब बहुत कर डेरानै हूकम दीज्ये।
(पृष्ठ २६)

संपूर्ण बात में गद्य का प्रयोग बड़ी काव्यात्मक शैली के साथ किया गया है। उसमें लय के साथ साथ तुकान्तता भी है, जिससे उसे पढ़ते समय काव्य का सा आनंद आता है। इस द्रष्टि से एक उदाहरण यहां दिया जाता है—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'हीरां की सहेलियां हंसा को डार। अदभुत कंवळ वदन सोभा अपार। यूं कवळ की पांषडीयां एक बरोबर सोहै। वां सहैलियां में हीरां परगुरूपी मन मोहै। कीरतियां को भूमकौ तारा मंडल की शोभा। आफू की क्यारी पोसाष मन लोभा। केसरियां कसुमल घनंबर पाटंबर नवरंग पोसाष राजै छै। अतर फुलेल केसरि कसतुरी सुगंध छाजै छै।' (पृ० १५)

लेखक व्यंग का प्रयोग करने में भी बड़ा प्रवीण है। व्यंग के सहारे दूल्हा और दुलहिन की अनमेल जोड़ी का चित्रण बड़ी ही खूबी के साथ किया गया है; जिसे पढ़ते ही पाठक की सहानुभूति हीरां के साथ हुए बिना नहीं रहती। हीरां के मन की बात हीरां के मुख से सुनिये—

'सुणि केसरी, असो षांवेंद पायौ छै। कपूर को भोजन काग नै करायौ छै। गधेड़ा रै अंग पर चंदन चढ़ायौ छै। अन्ध कै आगै दरपण दीषायो छै। गूंगै के आगै रंगराग करायो छै। नागरवेल को पांन पसु नै चबायो छै।' (पृ. ५)

लेखक ने जहाँ एक ओर परिमार्जित गद्य का प्रयोग किया है वहाँ कविता की भी सुन्दर सृष्टि की है। उसने स्थान-स्थान पर दूहा, सोरठा, गाथा, कुंडलिया, पद्धरी, झमाल, उधोर, चंद्रायणा, भुजंगप्रयात, छप्पय, त्रोटक, गीत अर्धाली आदि अनेक छंदों का सफल प्रयोग किया है। काव्यकला की दृष्टि से कुछ पद्यांश यहाँ उल्लेखनीय हैं।

हीरां की मनोदशा—

हीरां मन आकुल भई, आयो लेष अनंथ।
चात्र हीरां चंदसी, केत राहासो कंथ ॥ ३१ ॥

फीकै मन फेरा लिया, अंतर भई उदास।
आंष मीच रोगी अवस, पीवत नीम प्रकास ॥ ३२ ॥

× ×

हीरां मद आतुर हुई, चित पीतम की चाह।
विषधर ज्यूं चंदन बिनां, दिल की मिटै न दाह ॥ ४२ ॥

× ×

प्यारी पीव प्रजंक पर, झलही उर अवलूंब।
मानुं चंदन बृच्छ मिल, झुकी क नागणि झूंब ॥ २१४ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शिकार वर्णन—

ताता अपार प्राक्रम तुरंग, कूदंत छैवि जावत कुरंग।
चढि चले प्रोहित रांण चंग, अत बलबीर जोधार अंग ।।

बण सुभट घाट हैमर बणाये, आषेट रमण कीनो उपाये ।
घमसाण चले घण थाट घेर, बाजंत घाव नीसाण भेर ।।

चमकंत सेल पाखर प्रचंड, दमकंत ढाल नीसाण दंड ।
घमकंत घोड़ पुर धरण धज, रमकंत गगन मग चढ़ीये रज ।।

× ×

हलकार प्रोहित कोप कीन, ललकार म्यांन तरवार लीन ।
पेष्यो क गज धरै अनंड पष, घायो क बाज चीडकली यधक ।।

अति जोम पीरोहत कर अपार, दमकंत तड़त बाई दुधार ।
कटचो क शीस केहरि कराल, फटचो क मांनु तरबूज फाल ।। ६६ ।।

(पृष्ठ ६)

युद्ध वर्णन—

चहूवांण इतै झालो अचल, ऊत राव प्रोहित ऊरड़ै ।
वीर हाक-घमच विषम, झुके बंदूकां सो कड(डै) ।।२६३।।

हणण मांच हैमरांण गणण घोषा रवै डूंगर ।
षणण बाजया ज पाषरां धुज धूरताल धरणधर।
ठणण बंदूकां ठोर गोलियां गिणण गिण गनगत,
टणण धनस टंकार भणण पर तीर भणंकत ।।

सिंधवां राग समागमण गणण भेर त्रंबक बज्ये ।
चीरबै घाट परचा पड़ै, विषमं थाट भारथ बजे ।। २६४ ।।

(पृ० ३६)

इस रचना का लेखक अज्ञात है। परन्तु यह घटना रांणा भीम के समय की है, इसलिए यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इसकी रचना १९ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुई है । उदयपुर की प्रकृति-सुषमा, सहेलियों की बाड़ी तथा राणा भीम के ठाट-बाट का वर्णन कवि ने विशेष रस लेकर किया है जिससे वह स्वयं उदयपुर का निवासी हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं, परन्तु उसने पुरोहित बगसीराम के ऐश्वर्य, शौर्य आदि का वर्णन भी उतनी ही दिलचस्पी के साथ किया है और युद्ध में राणा भीम की राजकीय सेना को उससे हारता हुआ बताया है जिससे यह सम्भावना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अधिक वजन रखती है कि वह बगसीराम के साथियों की मण्डली में से ही उसका आश्रित कोई कवि रहा होगा।

२. राजा रीसालू री बात

कथा सारांश—

एक समय श्रीपुर नगर में शालिवाहन राजा राज्य करता था। उसके स्वर्गवास होने पर समस्तकुमार गद्दी पर बैठा। उसके सात रानियां थीं, किन्तु पुत्र एक के भी नहीं था। इस कारण राजा चिन्तित रहता था।

एक बार वह सूअर की शिकार खेलने के लिए निकला। शिकार का पीछा करते करते रात पड़ गई। उसने वहीं जंगल में ही ठहरने का निश्चय किया। वहां से कुछ दूर एक पहाड़ी पर आग जलती हुई दिखाई दी। राजा ने इसका पता लगाने को कहा, तब अन्य लोगों की तो हिम्मत नहीं पड़ी किन्तु एक गडरिये ने हिम्मत की और वह पता लगा कर आया कि वहां कोई सन्यासी तपस्या कर रहा है। जब राजा स्वयं वहां पहुंचा तो उसने देखा कि गुरु गोरखनाथ आंखें बंद किये समाधि में लीन हैं। राजा बहुत देर तक एक पैर पर हाथ जोड़ कर खड़ा रहा, गुरु गोरखनाथ की कृपा हुई। वर मांगने को कहा। राजा ने पुत्र मांगा। गोरखनाथ ने अपनी गुलाब की छड़ी उसे दो और उसे फेंक कर आम प्राप्त करने को कहा तथा वह आम किसी रानी को खिला देने से उसके पुत्र पैदा होगा, जिसका नाम रिसालू रखा जाये ऐसा आदेश देकर राजा को विदा किया।

राजा ने ऐसा ही किया। कुंवर तो उत्पन्न हो गया परन्तु ज्योतिषियों ने एक आशंका खड़ी करदी। उन्होंने अपनी विद्या के आधार पर पुत्र का जन्म माता-पिता के लिए घातक बताया जिसके निदान-स्वरूप बारह वर्ष तक पुत्र का मुंह वे न देखें, इस प्रकार की व्यवस्था की गई। राजकुमार अलग से धाय मां के द्वारा पाला पोसा जाने लगा।

समय बीतता गया। जब वह ग्यारह वर्ष का हुवा तो आनंदपुर के राजा मान और उज्जैनी के राजा भोज की ओर से कुंवर के शादी के नारियल आये। कुंवर अभी एक साल तक बाहर नहीं निकल सकता था और नारियल वापिस करना उनकी प्रतिष्ठा के प्रतिकूल था। इसलिये कुंवर का खांडा मंगा कर नारियल स्वीकार किये गये और राजकुमारियों का विवाह खांडे के साथ कर दिया गया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजकुमार ने जब धाय मां की लड़की से बाहर निकलने के प्रतिबंध की जानकारी चाही तो उसने सच्ची-सच्ची बात कह दी । वह बड़ा दु:खित व कुपित हुआ तथा राजा की अनुपस्थिति में दरीखाने में आ बैठा । ज्योतिषी महाराज से उसकी झड़प होना स्वाभाविक ही था । राजा को पता लगते ही राजकुमार को देश निकाला मिल गया । वह काले घोड़े पर सवार होकर वहां से विदा हुआ ।

अनेक प्रकार की बाधाओं को झेलता हुआ वह एक नदी किनारे पहुंचा तो उसने अनेकों मुंड पड़े हुये देखे । उन्हें हँसता देख कर वह और भी चकित हो गया । जब उसने इसका भेद जानना चाहा तो उसे पता लगा कि यहां के अगरजीत नामक राजा की राजकुमारी को प्राप्त करने के लोभ में इनकी यह गति हुई है । वह स्वयं अगरजीत के महल तक जा पहुंचा और बाजी खेलने का प्रस्ताव रखा । चौपड़ बिछाई गई । पहले तो राजकुमार हारता गया, उसने अपनी सारी वस्तुयें खो दी । आखरी दांव सिर को बाजी पर लगा देने का था । दोनों में निश्चित लिखा पढ़ी हुई । कुंवर ने इस बार अपनी लघु लाघवी विद्या के सहारे गोरखनाथजी के पासे वहां प्रस्तुत कर दिये । कुंवर जीत गया । राजा सिर देने के पहिले बड़ा दु:खित होकर रानियों से मिलने गया तो राणियों ने राजा को बचाने की युक्ति से राजकुमारी का विवाह रिसालू के साथ कर देने का प्रस्ताव रखा । रिसालू ने उदारतापूर्वक प्रस्ताव को स्वीकार किया; किन्तु जिस लड़की की मनोकामना के फलस्वरूप अनेक राजकुमारों के मुंड धराशायी हो गये थे, उसे पापिनी समझ कर उसके साथ विवाह करने से इन्कार कर दिया । दूसरी लड़की केवल दस माह की थी परन्तु रिसालू उसके साथ विवाह करने को राजी हो गया । विवाह के पश्चात् लड़की को अपने साथ ले वहां से विदा हुआ । लघु लाघवी कला से उसने एक हिरण और सुग्गा-सुग्गी के जोड़े को अपनी परिचर्या के लिये पकड़ लिया ।

वहां से ज्यों ही एक नगर में पहुंचा तो पता लगा कि नगर उजाड़ पड़ा है । किसी राक्षस के आतंक से वह नगर खाली हो गया था । रिसालू ने उसे पुन: आबाद करने की दृष्टि से उस राक्षस का वध करने की ठानी । गोरखनाथजी से प्राप्त तलवार से उसने राक्षस को खत्म कर दिया । वहां से भागे हुये लोग पुन: आकर बस गये । नगर पुन: आबाद हो गया । समय बीतते-बीतते राजकुमारी ग्यारह वर्ष की हुई ।

रिसालू का हिरण बाग में चरने का बड़ा शौकीन था । जलाल पाटण के बादशाह हठमल का बाग पास ही पड़ता था । वहां वह प्राय: रात को पहुंच

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाता था। जब हठमल को उसका पता लगा तो वह स्वयं एक रात उसको शिकार करने के लिये वहां आया। हठमल उसका पीछा करता-करता रिसालू के महल के पास वाले बगीचे तक आ पहुंचा। रात अधिक हो जाने के कारण वह वहीं सो रहा। उधर जब बहुत देर तक हिरण वापिस नहीं आया तो रिसालू स्वयं उसकी खोज में बाहर निकल पड़ा। रानी ने प्रभात में जब महल से बाहर झांका तो बड़े निश्चित ढंग से हठमल अपने दाढ़ी के बाल संवारता हुआ, अलसायी हुई आँखों से झरोके की तरफ देख रहा था। राणी ने भी निश्चिन्तता, साहस और मदभरी आंखें देखी तो वह उस पर आसक्त हो गई। रिसालू तो बाहर गया हुआ था ही, रानी के संकेत पर हठमल महलों में पहुंच गया और दोनों प्रेम-क्रीड़ा करने लगे : सुग्गा-सुग्गी को यह असह्य हुआ तो उन्होंने उसे टोक कर अपना कर्तव्य पूरा करना चाहा। परन्तु उनकी इस गुस्ताखी की सजा रानी ने सुग्गी के पर नोंच कर उसी समय दे दी। सुग्गा फौरन उड़ कर सभी बातों की खबर राजा को दे आया। राजा पहुंचा तब तक हठमल वहां से रवाना हो चुका था। राजा ने रानी के सब रंग ढंग देखे तो उसे संशय हुए बिना न रहा। दूसरे दिन राजा सुग्गे को साथ ले घूमने निकला। कुछ दूर जाने पर सुग्गा उड़ कर पुन: महल पर आया। उस समय हठमल रानी के साथ प्रेम-क्रीड़ा कर रहा था। सुग्गे ने फौरन इसकी सूचना राजा को दे दी और फिर महल पर आकर व्यंगात्मक ढंग से उन्हें कुकर्म करने की सजा मिलने का संकेत किया। हठमल ने आने वाले खतरे को भांप लिया और काम में उन्मत्त रानी से बड़ी कठिनाई के साथ विदा लेकर घोड़े पर वहां से निकला। रास्ते में ही हठमल और राजा में मुठभेड़ हो गई। हठमल राजा के भाले से मारा गया। रानी से दुश्चरित्र का बदला लेने के लिये वह हठमल का कलेजा उसके पास ले गया और उसे शिकार का मांस बता कर, पका कर खाने को कहा। रानी ने ऐसा ही किया।

रानी राजा की नजरों से गिर ही चुकी थी। संयोग से एक योगी अपनी स्त्री को खो चुकने के बाद दूसरी स्त्री की मनोकामना लेकर राजा के पास उपस्थित हुआ। राजा ने अपनी रानी उसे देदी। योगी के साथ रानी रवाना तो हो गई परन्तु उसके मन में अनेक प्रकार के संकल्प-विकल्प उठ रहे थे। आगे जाकर उसने देखा तो हठमल रास्ते में मरा पड़ा था। उसे कौए नोंच रहे थे। मन ही मन रानी अपने प्रेमी की यह दशा देख कर विलाप करने लगी। जोगी को कह कर उसे जलाने के लिए चिता बनवाई, और जोगी को पानी लाने के बहाने तालाब पर भेज कर पीछे से हठमल की देह के साथ जल मरी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अब राजा ने उस नगर में रहना उचित न समझ कर वहां से राजा मान की नगरी आणंदपुर को कूच किया। वहां जाकर तालाब पर स्नानादि करने लगा। अनेक सहेलियों के साथ राजकुमारी भी वहां पानी भरने आई थी। उसने इस सुन्दर युवक की ओर कटाक्ष किया, तथा दोनों में सांकेतिक ढंग से एक दूसरे के प्रति अनुराग व्यक्त हुआ। रिसालू वहां से सीधा मालिन के घर पहुंचा जिसने जँवाई के आने की खबर राजा के दरबार में पहुंचाई। राज-लोक में बड़ी खुशियां मनाई जाने लगीं। रिसालू का स्वागत किया गया। वह राजमहलों में ठहरा। रात पड़ने पर राजकुमारी सोलह शृंगार कर अपने पति से मिलने आई तो महल का दरवाजा बंद था। उसने दरवाजा खटखटाया। अनेक प्रकार के प्रेम-भरे उलाहने कोमल शब्दों में देने लगी, पर दरवाजा न खुला। इतने में वर्षा प्रारंभ हो गई। राजकुमारी ने दरवाजा खुलवाने का यह कह कर प्रयत्न किया कि मेरा शृंगार भीग रहा है, अब तो यह मजाक छोड़ो। दरवाजा फिर भी न खुला, तब उसने अपनी दासी से कहा—इसे तो थकावट के कारण नींद आगई है। मैं अपने प्रेमी का वायदा तो निभा आऊं। रिसालू तो नींद का बहाना करके सोया हुआ था। उसने सभी बातें सुनली। राजकुमारी जब महलों से नीचे उतरी तो वह उसके पीछे हो लिया। राजकुमारी सीधी प्राणनाथ सुनार के यहाँ गई। बरसती हुई रात में दरवाजा खुलवा कर अंदर गई तो प्राणनाथ ने उसे देर से आने पर बुरी तरह डांटा। राजकुमारी ने बड़ी विनम्रता के साथ माफी मांगते हुए अपने दुष्ट पति के आ जाने की बात कही। तब तो सुनार और भी बिगड़ा और कहने लगा—तब तो तू इसी तरह टालमटोल करती रहेगी। तब राजकुमारी ने उसी विनम्र भाव से उसे आश्वासन दिया कि चाहे जितनी देर हो जाय किन्तु मैं आपकी हाजरी अवश्य बजाऊंगी। रिसालू यह सब कुछ दरवाजे के पास बैठा हुआ चुपके से देख रहा था। उसने उनके संभोग की उन्मुक्त क्रीड़ायें भी देखीं। प्रभात हो गया। राजा राणी से पहले अपने महल में आकर सो गया। कोई पहचान न ले, इसलिए राणी भी पुरुष का वेश धारण कर महलों में पहुंची। राजा को जगाया तो वह बनावटी निद्रा से आलस मरोड़ता हुआ उठा। राणी ने रात को दरवाजा न खोलने के लिए बड़े मान और प्रेम भरे वाक्य राजा को सुनाये।

कुछ समय पश्चात् राजा ने कहा कि उसे कुछ सोने का काम करवाना है अतः सुनार को बुलवाया गया। राणी भी वहीं उपस्थित थी। राजा ने सुनार से बातचीत प्रारंभ की। उसने देखा कि सुनार और राणी की प्रेमभरी नजरें बार-बार आपस में टकरा रही हैं। उसने उपयुक्त अवसर देख कर पानी को

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

झारी मंगवाई और अंजली में संकल्प लेकर 'श्रीकृष्णारपुन्य छै' कहकर रानी का हाथ सुनार के हाथ में दे दिया। राज-परिवार ने रिसालू को बड़ा उलहना दिया, परन्तु उसने यह कह कर वहां से विदा ली कि मैंने तुम्हारी लड़की को उसी प्रकार तज दिया है जिस प्रकार सांप केंचुली को छोड़ता है।

रिसालू को अब केवल भोज की लड़की से मिलना था। वह सीधा उज्जैन पहुंचा। उसके संकेत के अनुसार जब बगीचे में आम का झूमका गिर पड़ा, तो भोज की लड़की ने समझा कि रिसालू आ जाना चाहिए था परन्तु निश्चित अवधि तक वह नहीं आया। इसलिए अब प्राण त्याग देना ही उचित होगा। नदी के किनारे उसके लिए चिता बन चुकी थी। रिसालू आकर वहीं बाग में ठहरा। लड़की जलने के लिए चिता के पास पहुंची तब रिसालू ने वहां पहुंच कर अपने आने की सूचना दी। लड़की को जलने से रोक दिया गया और यह निश्चय होने पर कि लड़की का पति रिसालू यही है, दोनों सुख के साथ राज-महलों में आनंद भोगने लगे। रिसालू को विश्वास हो गया कि संसार में पतिव्रता और सती नारियां भी हैं।

वहां से फिर अपनी रानी सहित अपने माता-पिता से मिलने चला। महादेवजी की कृपा से उसका फौज-बल भी बढ़ गया था। शहर के बाहर तालाब पर उसने फौज सहित पड़ाव डाला। राजा समस्तजीत किसी प्रबल शत्रु को आया जान, पहले तो भयभीत हुआ, परन्तु जब पता चला कि बारह वर्ष का वनवास भोगने के बाद यह उसका पुत्र ही आया है तो उसके हर्ष का ठिकाना न रहा। पूरे शहर में खुशियां मनाई गईं और रिसालू को बड़े स्वागत के साथ राजमहलों में लाया गया।

कथा-वैशिष्ट्य

कथाकार का उद्देश्य—

राजस्थानी कथा साहित्य में राजा भोज, विक्रमादित्य, रिसालू आदि प्रसिद्ध व्यक्तियों को लेकर अनेक प्रकार की कथायें बनी हैं। उनमें त्रिया-चरित्र को प्रगट करने वाली कथाओं का अपना महत्व है। इस प्रकार की घटनायें वास्तव में इन महापुरुषों के जीवन में घटी या नहीं, यह कहना बड़ा कठिन है। परन्तु यह स्वीकार किया जा सकता है कि इन विभूतियों का व्यक्तित्व इतना महान् था कि जिसे महत्तर बनाने के लिए ये मानव की अनेकानेक प्रवृत्तियों को जानने के जिज्ञासु निरन्तर बने रहे और अपने ज्ञान की पिपासा को शान्त करने के लिए अनेक प्रकार की कठिनाइयां भी इन्होंने झेलीं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सौन्दर्य से ओतप्रोत सुकुमार नारी मनुष्य की काम-पिपासा को शान्त करने का साधन सृष्टि के प्रारंभ से ही रही है। इसलिए उसके सौन्दर्य और व्यक्तिगत विशिष्ट गुणों की असंख्य कल्पनायें अलग-अलग युगों में होती रही हैं। एक ओर मनुष्य नारी की सम्मोहन-शक्ति से जहां अभिभूत होता रहा है वहां वह उस पर पूर्ण अधिकार रखने के लिए ही सचेष्ट रहता आया है। अपना पूर्ण अधिकार खो देने की कल्पना उसे भयभीत भी करती रही है जिसके कारण वह अपनी अत्यन्त प्रिय वस्तु को संशय की दृष्टि से भी देखता आया है। दूसरी ओर, नारी अपना सब कुछ पुरुष को अर्पण कर सन्तोष और सुख का अनुभव करती रही है, वहां वह मनुष्य के कृत्रिम अधिकारों से बुने हुए सामाजिक नियमों के जाल में दम घुट जाने के कारण मनोवैज्ञानिक विवशताओं की विशेष परिस्थितियों में उस जाल को तोड़ कर सब के सम्मुख आ खड़ी हुई है।

इस प्रकार की कथाओं के नारी-चरित्रों को देखने से नारी और पुरुष के अधिकारों की असमानता तथा दाम्पत्य जीवन की विशृंखलता का अनुमान लगाने के साथ-साथ उस काल के मानव का नारी के प्रति दृष्टिकोण भी किसी अंश तक समझ में आता है।

राजा रिसालू जब अगरजी की नगरी के पास पहुंचा तो उसे पता लगा कि एक सुन्दर राजकुमारी को पाने के लिये कितने ही लोग अपनी जान गँवा बैठे हैं, फिर भला वह क्यों पीछे रहता यद्यपि कुछ ही समय पहले उसकी शादी राजा भोज और राजा मान की लड़की से हो चुकी थी। चौपड़ के खेल में अगरजी से जीत जाने पर अगरजी का शिर न कटवाने के बनिस्पत उसकी बड़ी लड़की के साथ शादी करने का प्रस्ताव उसके सामने रखा गया परन्तु अनेक मनुष्यों का वध उसके कारण हुआ था, इसलिये उसने यह रिश्ता अस्वीकार कर दिया। वस्तुस्थिति तो यह थी कि लोगों के प्राण लेने का खेल उसका पिता खेलता था, लड़की का भला इसमें क्या दोष? एक ओर पिता के कुकृत्यों के कारण उसे पापिनी घोषित होना पड़ा और दूसरी ओर उसका भविष्य भी अनिश्चित हो गया। मनुष्य का नारी के प्रति मोह बड़ा अजीब होता है। रिसालू ने राजा की दस माह की कन्या के साथ शादी करली और उसे लेकर वहां से रवाना भी हो गया। अनेक प्रकार की कठिनाइयों को झेलने के बाद लड़की ग्यारह साल की हुई और उसका प्रेम-सम्बन्ध अचानक ही हठमल के साथ हो गया। रिसालू का उसके प्रति कुपित होना स्वाभाविक ही था, क्योंकि वह उसकी परिणीता थी। परन्तु मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यदि देखा जाय तो जो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लड़की एक पुरुष द्वारा शिशु-अवस्था से ही पाल पोष कर बड़ी की गई हो, उसके प्रति पिता का सा आदर और अनुराग की भावना का होना स्वाभाविक ही है। उसे अपना प्रेमी बना लेने की कल्पना बहुत कठिन है। ऐसी स्थिति में प्रेमातुर पिपासा के वशीभूत वह अपना नवविकसित यौवन हठमल को अर्पित कर देती है। उसका प्रेम वास्तव में सच्चा है, इसीलिये वह योगी के साथ न जाकर हठमल की चिता में जल मरती है।

राजा मान की लड़की के साथ रिसालू की शादी कोई ११-१२ वर्ष पहिले हो चुकी थी। क्योंकि रिसालू को देश निकाला मिल चुका था और उसका निश्चित पता भी मालूम नहीं था, ऐसी अवस्था में सुनार के लड़के से उसका प्रेम हो गया। सुनार जैसे साधारण व्यक्ति से एक राजकुमारी का प्रेम होना चौंका देने वाली बात अवश्य है, किन्तु इसके पीछे संपर्क की सुविधा विशेष कारण प्रतीत होती है क्योंकि सुनार लोग प्रायः रनिवास में गहने आदि बनाने के संबंध में बातचीत करने पहुंच जाया करते होंगे। रिसालू को जब उनके प्रेम-संबंध का पता लग गया तो उसने सुनार को ही राजकुमारी देदी और वह उसे अपने घर ले गया। इससे एक ओर जहां रिसालू की उदारता प्रकट होती है वहां राजा मान की घरेलू व्यवस्था का भी पता चलता है। राजकुमारी के चरित्र के बारे में घर वालों को सब कुछ मालूम हो जाने पर भी वे राजकुमारी को उसी समय किसी प्रकार का उलाहना या दण्ड नहीं देते अपितु रिसालू से ही प्रार्थना करते हैं कि वे इतनी सुन्दर राजकुमारी का परित्याग इस प्रकार की घटना के कारण न करें और सारी बात को वहीं पर दबा कर उनके घर की प्रतिष्ठा को बचाने में सहयोग दें। रिसालू का कोई भी बात नहीं मानना स्वाभाविक है क्योंकि कोई भी व्यक्ति, दुश्चरित्र नारी को जान-बूझ कर पत्नी के रूप में स्वीकार करना नहीं चाहता।

राजा रिसालू के जीवन में इस प्रकार की घटनाओं के घटने से नारी-जाति के प्रति उसका विश्वास उठ-सा गया था। फिर भी वह अपनी एक और विवाहिता रानी राजा भोज की राजकुमारी को भी परख लेना चाहता था। निश्चित अवधि समाप्त हो जाने पर वह अपने वायदे के अनुसार उज्जैनी नगरी पहुंच गया। न मालूम इस बीच में कितनी उलटी-सीधी कल्पनायें राजा भोज की लड़की के संबंध में की होंगी। परन्तु ज्यों ही वह वहां पहुंचा, उसने देखा कि अवधि के समाप्त हो जाने के कारण राजकुमारी चिता में जल कर भस्म हो जाने को तैयार है। तब उसे विश्वास हुआ कि सभी स्त्रियां एक सी नहीं होतीं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्त्री या पुरुष का चरित्र संस्कारों से ही बनता और बिगड़ता है। बात की ऊपरी घटनाओं को देखने से तो नारी-जाति के प्रति अविश्वास का भाव जगता है परन्तु उनकी गहराई में जाकर विचार करने से कथाकार का उद्देश्य यही मालूम देता है कि परिस्थितियों की छाप मनुष्य के मनोभाव पर पड़े बिना नहीं रहती।

सामाजिक परिस्थितियां व मान्यतायें

राजकुमारी का पानी भरने सखियों के साथ तालाब पर जाना, स्वयं खाना आदि पकाना, जल-क्रीड़ा करने सहेलियों के साथ जाना आदि कथा में वर्णित है। इससे पता चलता है कि आभिजात्य-वर्ग के लोगों का सीधा सम्पर्क जनता से था।

जूआ आदि खेलना और उसमें अपने प्राणों की बाजी लगा देना तथा उसके दुष्परिणामों के कारण दुःखद घटनाओं का होना भी महाभारत-काल की तरह उस समय में भी मौजूद था।

जैसा कि प्रायः राजस्थानी लोक कथाओं में मिलता है। पशु-पक्षियों को इन्सान की तरह पढ़ा लिखा कर चतुर बताया गया है। हरिण व सुग्गे-सुग्गी राजा रिसालू के विश्वासपात्र मित्र की तरह उसका काम करते हैं और उसकी अनुपस्थिति में उसके महलों की निगरानी भी रखते हैं। मौका आने पर स्वामि-भक्त नौकर की तरह प्राणों का मोह छोड़ कर अपने कर्तव्य को पूरा करते हैं।

अनेक प्रकार के अवतारों व उनकी सिद्धियों आदि से नायक को अचानक सहायता मिल जाने के कारण कथा में अप्रत्याशित परिवर्तन आ गये हैं। गोरख-नाथ की सिद्धि तथा लघु-लाघवी विद्या के बल पर ही रिसालू बड़ी से बड़ी कठिनाइयों में से पार होता हुआ आगे बढ़ता है और अन्त में महादेवजी की कृपा से वह बहुत बड़ी फौज का मालिक भी बन जाता है।

कई घटनाओं को घटित कराने के लिये ज्योतिष का भी सहारा ले लिया गया है।

ये सभी तत्व तत्कालीन समाज की मान्यताओं और रूढ़ियों को हमें अवगत कराते हैं।

वर्णन एवं शैली

कथा में स्थान-स्थान पर नारी-सौन्दर्य के अतिरिक्त सुन्दर प्रकृति-वर्णन भी किया गया है। प्रकृति-वर्णन प्रायः पारम्पर्य रूप से ही हुआ है। परन्तु उससे वातावरण की सुन्दर सृष्टि अवश्य हो गई है। यहां वर्षा का वर्णन उल्लेखनीय है :—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"इतरा माहे वरषा काळ रो मास छै। श्रावण रो महिनो छै। तठे उतराधरा पमी (गी, गा) री चाली थकी घटा आई छै। मोर, पपीया, कोइलां कहुका कीया छै। डैडरिया डरूं डरूं कर रह्या छै। धरती हरीयों कांचू पहरण री आस धरी छै। (पृ० ११५)

पद्यांशों में भी कुछ पद्यों में प्रकृति के उद्दीपक रूप की सुन्दर अभिव्यंजना क गई है:—

"वरषा रित पावस करे. नदीयां प (ष) लके नीर।
तिण विरीयां सूंकलीणीयां, धणीयांस्यां धरचौ सीर ॥ २२६ ॥
परवाई भीणी फूरे, रीछी परवत जाय।
तिण विरीयां सूंकलीणीयां, रहती पीव-गल लाय ॥ २२७ ॥ (पृ० ११५)

जहां तक शैली आदि का प्रश्न है, इसमें गद्य और पद्य का प्रचुर प्रयोग हुआ है, परन्तु कथा को रोचक बनाने के लिए तथा उसे गति प्रदान करने के लिए संवादात्मक शैली को प्रधानता दी गई है। कुछ एक संवाद तो बड़े ही प्रभावोत्पादक बन पड़े हैं जिससे लेखक के कलात्मक सृजन का अनुमान लगाया जा सकता है। पद्यांशों के अन्त में 'बे' अक्षर का प्रयोग प्रायः सर्वत्र मिलता है, जो कि शायद इसी कथा के आधार पर प्रचलित खयालों की शैली के प्रभाव के कारण है। जहां तक भाषा का प्रश्न है उस पर पंजाबी का प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है।

कथा-भिन्नता

राजस्थानी भाषा में लिपिबद्ध कथाओं के विभिन्न रूपान्तर भी प्राय: मिलते हैं। मूमल, सोरठ, ऊजळी जेठवा आदि कुछ बातें राजस्थानी और गुजराती दोनों में ही प्रचलित रही हैं। राजा रिसालू की बात भी गुजराती भाषा में भी उपलब्ध होती है जो इस ग्रन्थ के परिशिष्ट १ (क) में प्रकाशित की गई है। दोनों की कथा-वस्तु में तथा स्थानों आदि में भी अन्तर है। उदाहरणार्थ कुछ एक भिन्नतायें इस प्रकार हैं:—

राजस्थानी	गुजराती
१ शालिवाहन का पौत्र समस्तकुमार का पुत्र रिसालू।	१ शालिवाहन का पुत्र रिसालू।
२ राजा भोज एवं राजा मान की पुत्रियों का नाम नहीं।	२ राजा भोज की पुत्री का नाम सांमलदे और धारा नगरी के मान कछवाहा की पुत्री का नाम धारा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३ अगरजी की नगरी का नाम नहीं।	३ अगरजी की नगरी का नाम विराट है।
४ अगरजी की छोटी पुत्री का नाम नहीं।	४ छोटी पुत्री का नाम फूलवती है।
५ राक्षस द्वारा उजाड़े गये नगर का नाम द्वारका।	५ सीघडी गांव।
६ जलाल पाटन का बादशाह हठमल।	६ हठीयो बणझारो, जाति का राजपूत, गढ गांगल का चहुवाण राजपूत, सोरठ में नवलरक गांव बसा कर रहा।
७ योगी की पत्नी का किसी ने हरण कर लिया।	७ योगी के साथ सुन्दरी के त्रियाचरित्र का ऐन्द्रजालिक वर्णन।
८ फूलवती का हठमल के साथ सती होना।	८ फूलवती का झरोखे से कूद कर आत्महत्या करना।
९ प्राणनाथ सुनार।	९ कुमतीओ सुनार।

परिशिष्ट १ (ख) में प्रकाशित रिसालू के दोहों में भी कुछ भिन्नता है।

कथा का मूल लेखक कौन रहा होगा ? इसका पता बात से नहीं लगता परन्तु कथा के अन्त में आए हुए एक पद्यांश में नर्वद नामक चारण का उल्लेख अवश्य आया है जिसने कि प्रचलित बात में दोहे आदि जोड़ कर उसे वर्तमान रूप दिया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बात नागजी नागवन्ती री

कथा-सारांश—

कच्छ के स्वामी जाखड़े अहीर के राज्य में दो तीन वर्ष तक निरन्तर अकाल पड़ा। जब कोई व्यवस्था वहां न बैठ सकी, तब वे बागड़ प्रदेश के राजा धोलवाड़ा के वहां पहुंचे। दोनों में अच्छी मेल-मुलाकात हो गई तथा वे दोनों पगड़ी-बदल भाई हो गये। धोलवाड़ा के नागजी नाम का पुत्र था। नौकर-चाकर जब चारों ओर काम में लग जाते तब वह स्वयं एक खेत की रखवाली किया करता था। उसकी भावज परमलदे उसका खाना खेत में ही दे आया करती थी। एक बार वह जाखड़े अहीर की लड़की नागवंती को भी साथ ले गई। रास्ते में परमलदे ने नागवंती से जिद्द किया कि नागजी जब स्नान करके प्रभात में सूर्य को जल चढ़ाते हैं तो उनके पैरों के चिन्ह कुंकुम से अंकित हो जाते हैं। नागवंती ने इस पर बड़ा आश्चर्य व्यक्त किया और कहा कि यदि ऐसी बात है तो मैं नागजी से शादी कर लूंगी। बात सही निकली।

नागजी भी नागवंती के सौन्दर्य को देख कर मुग्ध हो गये। उनके विवाह में एक अड़चन यह थी कि दोनों के पिता आपस में पगड़ी-बदल भाई बने हुये थे। इसलिये बिना किसी को मालूम हुये उन्होंने खेत में ही विवाह कर लिया। अब वे खेत में ही आनंद से रहने लगे। परन्तु जब खेत काट लिया गया तो सभी को अपने-अपने घर वापिस जाना पड़ा। नागजी आम के वृक्ष के नीचे घोड़े पर सवार होकर विदा होने के लिए तैयार हुए तब नागवंती ने आम को साक्षी बना कर अपना प्रेम व्यक्त किया तथा प्रेम का निर्वाह करने की दोनों ने अपने हृदय में दृढ़ प्रतिज्ञा की।

नागजी की चेष्टाओं को देखकर उसके पिता को संदेह हो गया। अतः वह नागजी को घर से निकलने की इजाजत तक नहीं देता था। विरह की व्याकुलता में नागजी क्षीणकाय होकर बीमार रहने लगे। वैद्य बुलाये गये, परन्तु बीमारी का कुछ भी पता नहीं लगा। नागजी ने एक दोहे में अपने हृदय की बात कहते हुए कीमती मूंदड़ी उस वैद्य को दी। तब वैद्य को बात समझ में आई। उधर से नागवंती ने भी अपना कीमती हार उसी वैद्य को दिया। वैद्य ने नागजी की चारपाई वहां से हटवा कर अलग कमरे में लगवा दी जिससे नागवंती मौका निकाल कर नागजी से मिल सके।

होली के दिन नागवंती गैहर देखने के बहाने से गढ़ में नागजी से मिलने आई, परन्तु नागजी कहीं दिखाई न दिये। तब एक दासी की सहायता से वह

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नागजी के पास महल में पहुंची। संयोग से इन दोनों को पलंग पर सोता हुआ नागजी के पिता ने देख लिया। क्रुद्ध होकर ज्योंही उसने अपनी तलवार निकाली, नागवंती का पिता जाखड़ा अहीर भी आ पहुंचा और उसने उसका हाथ पकड़ लिया।

दूसरे दिन नागजी को देश-निकाला दे दिया। नागवंती की सगाई हाकड़े परिहार से की हुई थी, अत: उसे फौरन आकर नागवंती से शादी कर लेने की सूचना दी। रवाना होते समय नागजी अपनी भावज से मिले। तब भावज ने उससे कहा कि तीन दिन तक वह बाहर वाले बगीचे में ही ठहरे। उसने दोनों का मिलान कराने का वायदा भी किया। हाकड़ा सूचना मिलते ही फौरन आ पहुंचा। दोनों तरफ विवाह की तैयारियां होने लगीं। नागवंती ने जब परमलदे को मिलने के लिए बुलाया तो वह अपने साथ स्त्री के वेश में नागजी को भी ले आई, यद्यपि सभी लोग चौकस थे कि कहीं वेश बदल कर नागजी यहां न आ जाय।

नागजी किसी तरह से नागवंती के पास पहुंच गये। नागवंती ने भी इन्हें पहिचान लिया और हथलेवे के बाद रात को बाग में आकर मिलने का वायदा किया। नागजी अपने स्थान पर लौट गए और रात पड़ने पर बगीचे में नागवंती का इंतजार करने लगे। हथलेवे के बाद नागवंती सिर में दर्द होने का बहाना बना कर एकान्त में चली गई और वहां से चुपचाप बगीचे की ओर निकल पड़ी। नागजी काफी देर तक बड़ी उत्सुकता से नागवंती का इन्तजार करते रहे, परन्तु जब नागवंती नहीं पहुंची तो विरह के दारुण दु:ख ने उन्हें कटारी खाकर चिर निन्द्रा में सो जाने को मजबूर कर दिया। अनेक विघ्न और बाधाओं को पार करती हुई, वर्षा में भीगती हुई नागवंती जब नियत स्थान पर पहुंची तो नागजी अपना दुपट्टा ओढ़ कर सोये हुए थे। पहले तो नागवंती ने समझा कि ये रूठ कर सो गये हैं, परन्तु उसने जब नागजी को मरा हुआ पाया तो वह अत्यन्त दु:खित होकर विलाप करने लगी। इतने में नागजी का पिता वहां आ पहुंचा और यह सारा दृश्य देख कर जाखड़ा अहीर को भी बुलाया। बड़े ही मार्मिक और करुणाजनक परिस्थितियों में लोकलज्जा-वश नागवंती को घर लाया गया।

प्रभात होने पर बरात रवाना हुई और ज्योंही तालाब के पास पहुंची तो नागजी की चिता जल रही थी। नागवंती ने जब उस दृश्य को देखा तो उसका हृदय उसके वश में न रहा और वह अपने हाथ में नारियल लेकर सती होने के

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लिए रथ से उतर पड़ी। देखते-देखते नागजी और नागवंती का अग्निदेव की गोद में चिर मिलन हो गया।

सच्चे प्रेमियों का यह करुणापूर्ण जीवन-उत्सर्ग देख कर महादेव व पार्वती तुष्टमान हुए और उन्होंने उन दोनों को पुनर्जीवित कर दिया। अब दोनों आनंद और उल्लास के साथ जीवन-सुख भोगने लगे।

कथा-वैशिष्ट्य

राजस्थानी प्रेम-गाथाओं में नागजी और नागवंती की प्रेम-गाथा का विशिष्ट स्थान है क्योंकि इनकी प्रेम-कहानी इस प्रकार की घटनाओं के साथ गुंफित है जिसमें कि प्रेम, करुणा, सामाजिक व्यवधान और इन्सान की मजबूरी का अद्-भुत सम्मिश्रण हमें देखने को मिलता है। नागजी के साथ नागवंती का प्रेम, नागजी के विशिष्ट गुण के कारण परमलदे के माध्यम से होता है और नागवंती अपने नैसर्गिक सौन्दर्य के कारण नागजी को पूर्ण रूप से अपने में आसक्त कर लेती है। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि सामाजिक रीति-रिवाजों और बंधनों से एकाएक ऊपर उठना उनके वश की बात नहीं है। इसलिए वे अपना विवाह भी चुपके से खेत में ही कर लेते हैं। विवाह के पश्चात् वे एकान्त में ही आनंद का उपभोग करते हैं और संशय हो जाने पर समाज का मुकाबला न कर चुप्पी साध लेते हैं। दोनों पात्रों में इतना घनिष्ठ प्रेम होने के बावजूद भी उनका इस प्रकार का व्यवहार उनके हृदय की कमजोरी को ही व्यक्त करता है। लड़की और लड़के के पिता दोनों ही अपनी सन्तान को प्रिय समझते हैं परन्तु यह जानते हुए भी कि नागजी और नागवंती में बहुत गहरा प्रेम है, वे समाज के भय से विचलित होकर उन्हें सहायता पहुंचाने के बजाय व्यवधान ही बनते हैं। अन्त में नागजी की मृत्यु के पश्चात् नागवंती हाकड़े परिहार के साथ विदा होती है तो नागजी का पिता उस पर व्यंग करके नारी की दुर्बलता पर पुरुष के क्रूर पौरुष का आघात करता हुआ पुत्र-हानि से होने वाले विह्वल हृदय को आत्म-तोष प्रदान करना चाहता है। यह विडम्बना तत्कालीन समाज में नारी और पुरुष के सम्बन्धों को व्यक्त करती है। व्यंग्यात्मक दोहा इस प्रकार है :—

ऊंडै पड़वै पैस, पिवसु पैजां मारती।
सुं मांणसीया एह, घूंघै लागा धोलउत ॥ ७४ ॥ पृ० १६२

इसमें कोई संदेह नहीं कि सभी पात्र समाज के बंधन से ऊपर उठने में असमर्थ रहे हैं। परन्तु अन्त में नागवंती ने नागजी के साथ सती होकर अपने हृदय की कमजोरी पर ही विजय नहीं पाई, वरन् नागजी तक के प्रेम को उसने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चुनौती दे दी। इसी प्रकार नारी का सच्चा प्रेम पुरुष के प्रति कथा में प्रकट किया गया है।

कथा के अन्तिम भाग में करुणा और प्रेम का बड़ा ही अद्‌भुत मिश्रण हुआ है और वह भी नागवंती का विवाह अन्य पुरुष के साथ होने की पृष्ठभूमि में। यद्यपि नायक और नायिका का प्रेम बड़ी ही भावुकतापूर्ण शैली में व्यक्त किया गया है तथापि यह प्रेम करुणा की रागिनी से ओतप्रोत है। अतः विवाह अथवा अन्य किसी शुभ कार्य के अवसर पर इस गीत का गाना अशुभ माना जाता है। नागजी, भर्तृहरि आदि के गीत और दोहे सुन कर लोगों के हृदय में अन्ततः एक प्रकार के वैराग्य की भावना उत्पन्न हो जाती है।

कथा में जहां तक उस काल की सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों का प्रश्न है, ऐसा प्रतीत होता है कि दुष्काल पड़ने पर शासक-वर्ग प्रजा को सहायता पहुचाना अपना फर्ज समझता था। इतना ही नहीं अपितु प्रजा की भलाई के लिये वे स्वयं उसके साथ दूसरे देश में जाकर वहां के शासक से जान-पहिचान करते और अपनी प्रजा के लिये समुचित व्यवस्था करवाते थे। प्रजा और राजा का यह घनिष्ठ संबंध यहां तक ही सीमित नहीं था, चोर लुटेरों को दलित करने के लिये उनके पुत्र स्वयं जोखिम उठा कर उनका पीछा किया करते थे। धोलवाड़ा के राज्य का आतंक उसके पुत्र स्वयं नागजी ने समाप्त किया था। नागजी का स्वयं खेत में जाकर पहरा देना और उनकी भावज परमलदे का उनके लिये खाना लेकर जाना आदि इस बात को प्रमाणित करता है कि उस काल का शासक-वर्ग कितना कर्मठ और समाज के साथ घुला-मिला था।

भाषा-शैली

कथा की भाषा का जहां तक प्रश्न है वह प्रसाद-गुणयुक्त और सरल है तथा बोलचाल की भाषा के अधिक समीप होते हुये भी उसमें साहित्यिक सौन्दर्य का अच्छा निर्वाह हुआ है। ठेट राजस्थानी के शब्दों के प्रयोग से सामाजिक वातावरण बनाने में कथाकार को अच्छी सफलता मिली है। काव्य-सौंदर्य की दृष्टि से कुछ दोहे राजस्थानी साहित्य की अमूल्य निधि कहे जा सकते हैं क्योंकि उनमें भाव-गरिमा के साथ-साथ हृदय की तड़फन और व्यंग्यात्मकता का सुन्दर सम्मिश्रण हुआ है। उदाहरणार्थ कुछ दोहे इस प्रकार हैं—

> सज्जन दुरजन हुय जले, सयणा सीख करेह।
> धण विलपंती यूं कहै, आंबा साख भरेह ॥ १६ ॥
> नागजी नगर गयांह, मन-मेलू मिळीया नहीं।
> मिळीया अवर घणांह, ज्यासुं मन मिळीया नहीं ॥ १७ ॥ पृ० १५१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सांमा मिळीया सैंण, सेरी में सांमा भला ।
उवे तुमीणा वैण, नहचै निरवाया नहीं ॥ ३० ॥ पृ० १५४

नागड़ा निरखूं देस, एरंड थांणौ थपीयौ ।
हंसा गया विदेस, बुगला ही सूं बोलणौ ॥ ३७ ॥ पृ०

भांमण भूल न बोल, भंवरो केतकीयां रमैं ।
जांण मजीठां चोळ, रंग न छोड़े राजीयो ॥ ३८ ॥

वण्यो त्रिया को वेस, आवत दीठो कुंवरजी ।
जातो दुनीया देख, नाटक कर गयो नागजी ॥ ४० ॥ पृ० १५७

नागड़ा सूतो खूंटी तांण, बतळायां बोलै नहीं ।
कदेक पड़सी कांम, नोहरा करस्यो नागजी ॥ ५८ ॥ पृ० १६०

कळ मैं को कुंभार, माटी रो मेळो करै ।
चाक चढ़ावणहार, कोई नवौ निपावै नागजी ॥ ७७ ॥ पृ० १६२

वात मयाराम दरजी री

कथा-सारांश—

आबू पर्वत पर गुरु और चेला तपस्या करते थे। गुरु का नाम गंगेव ऋष और चेले का नाम चतुर रिष। तपस्या करते-करते उन्हें तीन युग व्यतीत हो गये। ऐसे तपस्वियों की सेवा-शुश्रूषा करने और ज्ञान-चर्चा सुनने इन्द्राणी स्वयं आठ अप्सराओं सहित प्रस्तुत हुआ करती थी और कलियुग में गुरु-चेले की मंसा वहां रह कर तपस्या करने की नहीं थी। अतः उन्होंने वहां से विदा लेने के पहले इन्द्राणी और अप्सराओं से वर मांगने को कहा, क्योंकि उनकी सेवा से वे अत्यधिक प्रसन्न थे। इन्द्राणी ऐसे पहुंचे हुए ऋषि का पीछा छोड़ने वाली कब थी। उसने यही वर मांगा कि नरपुर में जन्म लेकर आप मुझसे विवाह करें और हम दोनों आनंद का उपभोग करें। वचनों में आबद्ध ऋषि को भांड्यावास ग्राम में दुलहे दरजी के घर मयाराम के रूप में जन्म लेना पड़ा और अलबल(र) नगर में शिवलाल कायस्थ के घर इन्द्राणी ने जसां के रूप में अवतार लिया। आठों अप्सरायें जसां के पास दासियों के रूप में पहुंच गईं।

जब जसां पन्द्रह वर्ष की हुई तो रामबगस सुग्गे के रूप में चेला चतुर ऋष उसके पास पहुंच गया। वह वेदों का ज्ञाता तथा आगे-पीछे की जानने वाला था। शिवलाल कायस्थ सुग्गे की प्रतिभा से बहुत अभिभूत था इसलिए उसने जसां के वर ढूंढ़ने तथा विवाह करने की जिम्मेवारी भी उसी पर छोड़ दी और वह

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वयं परदेश चला गया। अब विलंब किस बात का था। जसां से प्रेम-पत्र लिखवा कर वह फौरन भांडियावास मयाराम के पास पहुंचा और मयाराम की स्वीकृति तथा हाथ की मूंदड़ी लेकर जसां के पास लौटा।

मयाराम जसां से विवाह करने के लिये बड़ी सजधज के साथ अलवल(र) नगर पहुंचा। बरात में घोड़ों और बरातियों को साज-सज्जा देखते ही बनती थी। बधाईदार ने ज्योंही जसां को जाकर बधाई दी तो उसे ५०० मोहरें मिलीं। मालकी दासी को जसां ने बरात के सामने भेजा, तथा साथ ही मयाराम के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए उसे पहिचानने के लक्षण बताये। फिर मालकी मयाराम के पास पहुंच कर उसे तोरण पर लाती है। उसके स्वागत में कोई ५०० वेश्यायें, भगतणें व ढोलनियें गाती हुई उसका स्वागत करती हैं। मयाराम का ठाट-बाट उस समय इन्द्र से कम प्रतीत नहीं होता है। उसका रूप तो कामदेव को भी मात करता है। सभी सखियों ने मयाराम के सौन्दर्य और साज-सज्जा की मुक्त-कंठ से प्रशंसा की। बड़े ही ठाट-बाट के साथ विवाह-संस्कार सम्पन्न हुआ। दूसरे दिन जसां जब मयाराम के डेरे की ओर चली तो मदमस्त हाथी की सी चाल और उसके शृंगार की अनुपम छबि लोग देखते ही रह गये। आधी रात होने पर दोनों रति-क्रीडा का आनंद लेने लगे। बीच-बीच में दासियां ठिठोली करने लगीं।

दूसरे दिन जब मयाराम वहां से प्रस्थान करने का विचार करने लगे तो जसां के लिए मयाराम का विछोह असह्य हो गया। इतने सुन्दर वर को वह आसानी से किस प्रकार जाने देती। उसने अपनी दासियों की सहायता से शराब के प्यालों की मनुहार ही मनुहार में युवक वर को मदमस्त बना कर उसका जाना स्थगित करवा दिया, फिर भला वर्षा ऋतु में जाना संभव कैसे हो, क्यों कि सामने ही सावण की तीज भी तो आ रही थी, जिसका ललित चित्र मयाराम के सामने जसां ने प्रस्तुत कर आनन्द का उपभोग और अनुकूल मौसम का लोभ देकर उसे भरमा लिया। शराब की मनुहारें निरंतर चलती रहीं।

प्रेम की इन मदमस्त घड़ियों में जब लज्जा और संकोच का निवारण हो गया तो बातों ही बातों में अपने-अपने देश की बड़ाई करते समय दूल्हे-दुल्हन में खटपट हो गई। मयाराम यह कह कर कि ऐसी कई सुंदरियां मुझे उपलब्ध हो सकती हैं, वहां से विदा लेने को तैयार हुआ तब परिस्थिति को बिगड़ते हुए देख कर मालू दासी ने जसां के राशि-राशि सौन्दर्य का वर्णन कलात्मक ढंग से करते हुए 'ऐसी सुन्दरी को त्यागना बुद्धिमानी नहीं है' कहकर प्रेमी युग्म को

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुनः भावात्मक सहजता के सूत्र में बांधा। जसां ने भी गुस्से ही गुस्से में कटु वचन कहने के लिए क्षमा मांगी ।

कथा-वैशिष्ट्य

युद्धवीरों, दानवीरों और धर्मवीरों को लेकर यहां के कवियों ने पुष्कल परिमाण में साहित्य-सृजन किया है। इन प्रमुख विषयों के अतिरिक्त कुछ चारण कवियों ने संभ्रान्त परिवार के नायकों को छोड़ कर साधारण व्यक्तियों का नाम अमर करने की मनोकामना से भी साहित्य-निर्माण किया है। ये व्यक्ति किसी न किसी कारण से कवियों के कृपापात्र बन गये थे और उनको सेवाओं का पुरस्कार उन्होंने उन्हें संबोधित कर साहित्य रचना के द्वारा किया है । राजिया, किसनिया, ईलिया, चकरिया आदि को संबोधित करके की गई रचनाओं के पीछे इसी प्रकार की कुछ बातें हैं। उन्नीसवीं शताब्दी से इस प्रकार की रचनाओं के निर्माण की परम्परा विशेष रूप से राजस्थानी-काव्य में गतिशील दिखाई देती है ।

मयाराम दरजी की वात भी इसी कोटि की रचना है। ऐसी किंवदन्ती प्रसिद्ध है कि भांडियावास (मारवाड़) के प्रसिद्ध कवि मोडजी आसिया जब एक बार लंबे अर्से तक बीमार रहे तब उन्हीं के गांव के दर्जी मयाराम ने उनकी बड़ी सेवा की थी। अतः कवि ने प्रसन्न होकर इस वात की रचना उसे नायक बना कर की।

जहां तक बात की कथावस्तु का संबंध है उसमें दैविक अवतार से कथा प्रारंभ होकर नायक-नायिका के उद्दाम यौवन में झूलती हुई काम-क्रीड़ा और प्रेमी-युग्म की अनेकानेक चेष्टाओं को व्यक्त करती हुई समाप्त होती है। कथा में जहां एक ओर अत्युक्तिपूर्ण वर्णनों का आधिक्य है, वहां कामुकता और नग्न शृंगार का भी कवि ने बड़ी उदारता के साथ रस लेकर वर्णन किया है ।

राजस्थानी में प्रेमपाती लिखने की विशेष परम्परा रही है। प्रायः प्रेयसी भावुकतापूर्ण अलंकृत शैली में अपने प्रिय को अनेक प्रकार को उपमाओं से विभूषित करती हुई उसे पत्र लिखती है। इस बात में भी रामबगस सुग्गे के साथ जसां अपने प्रिय मयाराम को पत्र लिखती है, जिसमें जसां के प्रेम-प्रदर्शन के साथ-साथ राजस्थानी संस्कृति के भी दर्शन होते हैं ।

'सिध श्री भांडोयावास वाली वाट मुहगी दसै, आतम का आधार मयारांम जी वसै, अलवल (र) थी लषावतुं जसांको मुझरो अवधारसी। रामबगस राज नषै आयो छै, जींको कुरब वधारसी। अठा लायक काम बिदगी लषावसी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अठी दसाकी आप गाढी षुसीयां रखावसी। षांन-पांनकौ, पिंडांको जाबतौ रषावसी। जाबतो तो बलदेवजी करसी पण ताबादार तो लषावसी। भरोसादार भला मनंष जीव-जोग साथे लीजो। इंद्र राजाकी तरैंका वींद राजा (हो) वीजो। आपकी वाट भाळां छां। औ दवस कदीयां ऊगै, जसीकौ भाग जागै, अलवल (र) आप आय पूगै।'[1]

मोडजी आसिया बांकीदासजी के वंशजों में प्रसिद्ध कवि हो गये हैं जिनकी रचना पाबू प्रकाश विख्यात है। उन्होंने इस कथा के निर्माण में कुछ स्थलों पर अपनी विद्वत्ता और भाषा की विस्तृत जानकारी का सुन्दर परिचय दिया है। वास्तव में ये स्थल ही कथा को साहित्यक महत्व प्रदान करते हैं। दो स्थल इस दृष्टि से यहां उल्लेखनीय हैं:—

घोड़ों का वर्णन—

'पवन का परवांह 'गुलाब की मूठ' सघराजकौ गोटकौ, तारेकी तूट। आतसकौ भभकौ, चक्रीकी चाल, चपलाको चमंकौ, चातीका ढाल। सींचाणै की झडप, हींडेकी लूंब, षगराजका वच, षेतुमें षूब ऐहड़ा-ऐहड़ा पांच हजार घोड़ा सोनेरी सांकतां सज कीधा।'[2]

जसां का सौन्दर्य-वर्णन—

'जसीया कसोयक छै आपने भी उधारे जसीयक छै। पतीयासीको कमल, गंगासी विमळ। भूभलोया नैणांकी, अमरतसा वैणांकी। ममौलौ, वादलांको, बीज, होलीकी झाळ, सामणकी तीज। केळकौ गरभ, सोनेको षंभ, सीळकी सती, रूपकी रंभ। ताठौ मरग, मगराकी मौर, पाबासर को हंस, मनकी चौर। जीवकी जड़ी, होयाको हार, अमीकौ ठाहौ, रूपको अवतार। कांजांलीकी सांठी, गूंजालीको भळको, गैलाको कबांण, हीडाकौ कलकौ। मुगलरौ मींमचौ, वषायतरो झालौ, सघरौ गाटको प्रेमरौ प्यालौ। सोलैमो सोनो, राजहंसरो वचौ, बावनौ चंदण, रेसमरौ गचौ। करतीयांरौ झूंबकौ, मोतीयांरी लूंब, हीरांरो लछौ, सरगरी झूंब। सनेहरी पालषी, हेतरौ थाणौ, नैणांरौ नरषणौ, प्रेमरौ कमठांणौ। सरदरी पूनमरो चंद, आसाढ़रो भांण, जसोयांकी तारीफ, बुधंका वाषांण। मदवीको मछौळौ, हाथकी हाल, तीजणीयांकौ तुररौ, रूपकी ससाल। कांषको लाडू, मोतीयांको गजरो, जलालीयाको धको, जसीयां को मुजरौ। कलपव्रच(छ) री डाळ, पारसरौ टोळ, मेहरो महर, दरीयावरी छौल। तावड़ैरी छांह, अंधारैरो

---

[1] पृ० १६६

[2] पृ० १६७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दीयो, सीयाळारो ताप, जका जसां घणा जुग जीवौ। हरषरौ हींडौ, उदेगरी भेट, जीवरो जतन, इन्द्ररी भेट। किस्तूरीरो माफौ, केसररी क्यारी, रूपरो रूषड़ो, रच(स) ना हीनारो। भमरांरो भणणांट, डीलांरी दोली, दीपमाळारा दौर, भाषररी होळी। गुलाल सही गढ़ौ, श्रांषांरो पांणी, हीरांरो हार। ग्रहणांको भललाटौ, तजको श्रंबार, जसीयांको जीवणो वा संसार की सार। दांतारो पांणी, कड़ीयांरो केहरो, हालरो हंस, भूंश्रांरी भमर, कुरजरी नस। श्रलकांरी नागण, पलकांरी कुरंग, कंठारी कोयल, सोनेरी श्रंग। श्रणीयाळां नैणांमें काजळकी रेषां, श्रमरतरा ठांसा चंदामें पेषौ। सींदूर की बींदो भालूमें भळकै, काळीसी कांठळमें चंदो कन चळकै। श्रसोभतां ऊतारे, सोभतां धारे। वाल वाल मोताहल पोया, जांणे नवलाष नषत्र एकठा होया। बाजणां जांझर पैराया, घूघरांका सुर गैरीया। श्रण भांतकी जसीयां, जकाकूं चो(छो)डो चौ(छो) रसीया। मांणोनी म्यारांम जी, थांनै दीनी छै रांमजी। लो नी लाडीका लावा, पीचै (छै) करसौ पच(छ) तावा। जावणकी वातां जांणां छां, मतवाळी कूं नहीं माणां छां। वरसाळाका वादळ ज्यूं ढाळका जल ज्यूं, भाषरका पांणी ज्यूं, वाटका वांणी ज्यूं, चे(छे)ह मती चा (छा) डो, थोड़ौ सो मन करो गाडौ। झाली वागां षड़ौ, थोड़ा रहौ झलीया। पिण थांमै किसो दोस, थां कै संगी पलीया।"[1]

बहुत ही साधारण स्थिति के नायक को लेकर लेखक ने इसे ऋषि का अवतार और जसां को इंद्राणी का अवतार बताया है तथा उनकी साज-सज्जा और ऐश्वर्य का वर्णन भी बहुत ऊंचे दर्जे का चित्रित किया है, जिससे उसका अत्युक्तिपूर्ण वर्णन उस समय के साहित्यकारों को भाया नहीं, इसलिए बात की सुन्दरता को स्वीकार करते हुए भी नायक के औचित्य का किसी कवि ने व्यंग्यात्मक ढंग से उपहास किया है :—

दर्जी कौड़ी दोढ़ रो, बणी लाख री वात।
हाथी री पाखर हुती, दी गधे पर घात॥

राजा चंद प्रेमलालछी री वात

कथा-सारांश—

राजपुर गांव में रुद्रदेव नामक एक राजपूत रहता था। उसके दो औरतें थी दोनों ही मंत्रसिद्धि में निष्णात थीं, परन्तु पति इससे अनभिज्ञ था। एक बार जब दोनों औरतें पानी भरने जाने लगी तो छोटी ने रुद्रदेव से कहा—मेरा लड़का पालने में सो रहा है सो तुम उसका ख्याल रखना। बड़ी बहू ने कहा—

---

[1] पृ० १८२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गायों के आने का समय हो गया है । बछड़ा कहीं चूंग न जाय, इसका तुम ध्यान रखना । थोड़ी देर में बच्चा रोने लगा तो रुद्रदेव ने बच्चे को खिलाना शुरू किया किन्तु इतने में गायें आ गईं । अतः बच्चे को पालने में छोड़ कर बछड़े को बांधने लगा । उसी समय दोनों बहुवें पानी भर कर आ गईं । छोटी बहू ने देखा कि बच्चा पालने में रो रहा है, और वह बड़ी के काम में संलग्न है । ईर्ष्या के वशीभूत उसने ऐसे पति को मार देने का निश्चय कर अपनी इंढुरी उसकी ओर फेंकी जिससे वह सांप बन कर रुद्रदेव को डसने के लिये भागा । बड़ी बहू यह देखते ही सारी बात भांप गई । उसने अपने हाथ की लोटी सांप पर फेंकी, सो लोटी नौलिया बन गई और उसने सांप को मार डाला ।

यह देख कर भोला राजपूत बड़ा भयभीत हुआ और मन ही मन वहां से निकल भागने की तरकीब सोचने लगा । औरतें इससे ज्यादा होशियार थीं, इसलिए उन्होंने आपस में विचार किया–अब यह अपने कब्जे में रहने वाला नहीं है इसलिये इसे गधा बना कर रखा जाय । रुद्रदेव अपनी स्त्रियों से पिंड छुड़ाने के लिये विदेश में कमाई के लिये जाने को उनसे कहता, किन्तु वे नहीं मानतीं । अन्त में उन्होंने प्रसन्न होकर, भाता साथ में देकर सीख दी । रुद्रदेव मन ही मन बड़ा खुश हुआ और बड़ी तेजी के साथ वहां से चला । करीब दस कोस पर पहुंचा तो उसे एक तालाब दिखाई दिया । वहां हाथ-मुंह धोकर कलेवा करने का विचार कर ही रहा था कि इतने में एक ढोली वहां आ पहुंचा और उसकी याचना पर अपने कलेवे में से एक लड्डू उस ढोली को दे दिया । ढोली बहुत भूखा था, इसलिये फौरन ही वह लड्डू खा गया । लड्डू खाते ही वह गधे के रूप में परिवर्तित हो गया और तत्काल रेंकता हुआ उलटे पैरों रुद्रदेव के घर जा पहुंचा । इधर जब रुद्रदेव ने यह करामात देखी तो स्त्रियां कहीं पीछे न आ पहुंचें, इस भाव से आतंकित तीनों लड्डू जल में फेंक कर, वह भाग खड़ा हुआ ।

स्त्रियों ने जब गधे को पुरुष बनाया तो वह ढोली निकला । अपनी योजना की विफलता ज्यों ही उनके समझ में आई वे घोड़ियां बन कर वहां से रुद्रदेव के पीछे भागीं । रुद्रदेव देवगढ़ नगर में पहुंचा ही था कि दोनों घोड़ियें उसके समीप आ पहुंचीं । जान बचाने के लिये वह बेचारा एक अहीरन के घर जा पहुंचा । पहले तो अहीरन ने उसे डांटा, परन्तु जब उसने सारी बात सच-सच बताई तो अहीरन बड़ी प्रसन्न हुई और उसने रुद्रदेव से वचन मांगा कि वह उसके घर में रहेगा । रुद्रदेव ने स्वीकार किया । अहीरन नाहरी बन कर घोड़ियों पर झपटी और उन्हें बहुत दूर तक भगा दिया ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रुद्रदेव ने देखा कि छोटी आफत से छुटकारा पाने के लिये बड़ी आफत में आ फंसे। वह किसी प्रकार रात को वहां से भी भाग निकला और चंदराजा की आभोनगरी में आ पहुंचा। वहां राजा की लड़की का स्वयंवर था। कौतूहलवश वह भी वहां जा पहुंचा। संयोग से राजा की लड़की ने वरमाला इसके गले में डाल दी। आनन्द और विलास के साथ वह राजमहलों में रहने लगा। इतना हो जाने पर भी दोनों स्त्रियों ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। वे चीलें बन कर वहां आ पहुंचीं और एक दिन रुद्रदेव जब झरोखे में बैठा था तो उसकी आंखें नोंचने के लिये वे उस पर झपटीं। रुद्रदेव भयभीत होकर महल के अन्दर लुढ़क गया। राजकुमारी ने एकाएक इस प्रकार की घबराहट हो जाने का कारण पूछा। पहले तो रुद्रदेव बात छिपाता रहा, परन्तु राजकुमारी के अत्यधिक आग्रह पर उसने सारी बात कह दी। राजकुमारी ने इसका निदान फौरन निकाल लिया। उसने अपने नूपुर उतार कर मंत्र पढ़ा और उन्हें झरोखे में से ऊपर फेंका तो नूपुरों ने बाज का रूप धारण कर दोनों चीलों को मार डाला।

रुद्रदेव ने देखा कि इस माया का कहीं अन्त नहीं है। ये औरतें मेरी जान लेकर छोड़ेंगी। अतः बेचारा अपनी जान बचाने के लिये वहाँ से भी रात को भागा। चंद राजा को जब दामाद के चले जाने की खबर मिली तो उसने फौरन सिपाही पीछे भेजे। सिपाहियों से जब रुद्रदेव वापिस नहीं लौटा तो राजा चंद स्वयं मनाने के लिये पहुंचे और इस प्रकार बिना सीख लिये ही रवाना होने का कारण पूछा। रुद्रदेव बेचारा क्या कहता? परन्तु राजा ने जब अधिक हठ किया तो उसने सारी बात कह सुनाई। इस पर राजा चंद ने कहा—'जब तक हमारे दिन अच्छे हैं, तब तक हमारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता, और फिर बीती बात कहने लगा—

"मेरी माता और पटरानी प्रभावती इसी प्रकार की मंत्र-विद्या में प्रवीण थीं। वे अपनी विद्या के बल पर मुझे अघोर निद्रा में सुला कर रात्रि को गिरनार के राजा के पास क्रीड़ा करने के लिये पहुंच जाया करती थीं। एक बार मुझे संशय हुआ, तो जिस वट-वृक्ष पर बैठ कर वे जाया करती थीं, उस वट-वृक्ष की खोह में पहले से ही मैं छिप गया और उनके साथ गिरनार जा पहुंचा तथा वहां के रंग-ढंग देख कर बड़ा आश्चर्य-चकित हुआ। कुछ दिन बाद ही गिरनार के राजा की लड़की प्रेमलालछी का विवाह होने वाला था। उसमें इन दोनों को भी आमन्त्रित किया गया था। अतः विवाह की रात को मैं इनके साथ गिरनार पहुंचा। बरात बड़ी साज-सज्जा से आई थी। किन्तु दूल्हा बड़ा कुरूप था। अतः उन्होंने यह युक्ति निकाली कि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूसरे किसी खुबसूरत आदमी को फिलहाल दूल्हा बना कर भेज दिया जाय और शादी के बाद में लड़की को अपने ही ले जायेंगे। संयोग से दूल्हा बनने के लिये मैं ही उन्हें मिला। जब मैं तोरण पर पहुंचा तो मेरी पटरानी ने मुझे पहचान लिया।

मैंने शादी के समय तांबूल से दुलहन की चूनड़ी पर यह दूहा लिखा—

अभो नगरी चंद राजा, गिर नगरी प्रेमलालछी।
संजोगे-संजोग परणिया, मेळो दैव रे हाथ।।

वहां से मैं उसी रात अपनी नगरी तो पहुंच गया परन्तु सास-बहू ने मिल कर मुझे सुग्गा बना दिया। दिन भर पिंजरे में बंद रहता और रात को पुनः चंद बन जाता।

उधर कुरूप पतिदेव प्रेमलालछी के रंगमहलों में सुहाग-रात मनाने पहुंचे तो उनकी बड़ी दुर्गति हुई। बरात बिना दुलहिन के वापिस पहुंची। प्रेमलालछी बड़ी दुःखित रहने लगी। परन्तु जब एक वर्ष बाद सावण की तीज के दिन उसने अपने विवाह के कपड़े पहने तो चूनड़ी की कोर पर लिखा हुआ दोहा उसके ध्यान में आया। उसने सारी बात का अनुमान लगाकर अपने पिता से सहायता ली और मेरी नगरी में आ पहुंची। उसकी चतुर दासियों ने अपनी जासूसी के द्वारा मेरा हाल-चाल मालूम कर लिया और एक दिन दावत के बहाने जब वह स्वयं महलों को देखने ऊपर पहुंची तो उसकी एक चतुर दासी ने मेरे पिंजरे के स्थान पर तोते सहित दूसरा पिंजरा आले में रख दिया और मुझे वहां से मुक्ति दिलाई। सास-बहू ने शाम को जब सुग्गे को संभाला तो सुग्गा दूसरा था। अतः वे चीलें बनकर मेरी आंखें फोड़ने को डेरे पर आईं, उस समय मैंने तीर से उन दोनों को मार गिराया।"

अपना अनुभव सुनाने के बाद चंद ने रुद्रदेव से कहा कि त्रिया-चरित्र का कोई पार नहीं होता है परन्तु मैंने तुमको प्रेमलालछी की पुत्री ब्याही है। वह तुम्हारा कभी बुरा नहीं चाहेगी। इसलिये तुम आश्वस्त रहो।

कथा-वैशिष्ट्य—

इस बात की कथा-वस्तु पूर्णतः त्रिया-चरित्र पर ही आधारित है। छोटी-सी बात में अनेक स्त्रियों के चरित्र का उल्लेख हुआ है। राजा रिसालू की बात में भी स्त्रियों के कुटिल चरित्रों पर प्रकाश डाला गया है। परन्तु इन दोनों कथाओं के निर्माण व घटनाक्रम में बड़ा अन्तर है। रिसालू की वार्ता में प्रत्येक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नारी-पात्र के जीवन की पृष्ठभूमि बांधने का प्रयत्न किया गया है जिससे उन नारी-पात्रों के चरित्र में उत्पन्न होने वाले यौन-विकारों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन किसी हद तक संभव हो सकता है। इस कहानी में जादू-टोने व मंत्र-सिद्धियों के आधार पर अनहोनी घटनाओं को घटित कराते हुये नारी की यौन-पिपासा के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली अनेकानेक घटनायें वर्णित हैं। जादू-टोने का सहारा लेने के कारण कथा में किसी भी नारी-पात्र का चारित्रिक विकास नहीं हो पाया है, जिससे कहानी केवल काल्पनिक स्तर पर ही न रह कर तिलस्मी बन गई है।

इस कहानी को पढ़ने से सामाजिक तथ्यों की ओर हमारा ध्यान अवश्य ही आकर्षित होता है। कथाकार ने रुद्रदेव जैसे साधारण नायक से बात प्रारंभ कर के चंद राजा और उसके परिवार पर कथा को समाप्त किया है। अतः निम्न स्तर के समाज से लेकर राज्य-परिवार तक में व्याप्त दुष्चरित्रता तथा यौन-कुण्ठाओं पर करारा व्यंग हमें देखने को मिलता है। इसके अतिरिक्त यह बताया गया है कि एक ओर नारी को स्वयंवर के माध्यम से अपना पति चुनने का पूर्ण अधिकार है तो वहां किसी सुन्दरी को छल के साथ प्राप्त करने के लिए असली दूल्हे के स्थान पर दूसरे दूल्हे को तोरण पर भेज दिया जाता है क्यों कि असली दूल्हा कुरूप था। इस प्रकार जहां एक ओर नारी की बड़ी दीन स्थिति बताई गई है, वहां दूसरी ओर पुरुष उसके सामने बड़ा निरीह चित्रित किया गया है। क्यों कि वे अपनी चतुराई तथा काम-पिपासा में उन्मत्त पुरुषों के विभ्रम के कारण उन पर शासन ही नहीं करतीं अपितु उनको मूर्ख और अपनी लालसाओं का खिलौना तक बना देती हैं।

लेखक ने जहां एक ओर दुष्चरित्रता का पूरा वर्णन किया है वहां दन्तकथा की मुख्य नायिका प्रेमलालछी के चरित्र को निष्कलंक बताया है तथा उसकी चतुराई का भी बड़ा बखान किया है।

कथाकार ने मनुष्य के भाग्य को सर्वत्र प्रधानता दी है परन्तु दुष्चरित्रता में लिप्त पात्रों का अन्त भी बुरा बताया है। अतः कथा का वास्तविक उद्देश्य दुष्चरित्रता के दुष्परिणामों की ओर इंगित करना कहा जा सकता है।

भाषा-शैली–

पूरी कथा गद्य के माध्यम से ही कही गई है जिसमें केवल एक दोहे का प्रयोग मिलता है। जहां तक कथा की भाषा का प्रश्न है वहां सरल, प्रसाद-गुण-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

युक्त बोल-चाल की भाषा है। स्थान-स्थान पर अरबी व फारसी के शब्दों का प्रयोग भी मिलता है। कथा की शैली में सबसे बड़ी खूबी राजस्थानी के ठेट मुहावरों का सफल प्रयोग है। अतः कुछ मुहावरे यहां द्रष्टव्य हैं :–

"भलो नहीं आपने, तिको दीजे काळा सांप ने।
एस साख पतळी हुई ने घर मांहे उंडो तेह नहीं।
जाडो जीमतां पतली जीमस्यां।
चोपड़ी जीमतां लूखी जीमस्यां।
बाहर पालूं।
वात धुरा मूल सूं कही।
मोसूं लाल पाल करणो।
जीमण सूं देखणो भलो।
बुरो चाहे तो भलो होवे नहीं।

उपसंहार

प्रस्तुत संग्रह की पांचों बातें मूलतः प्रेमविषयक होते हुए भी अनेक प्रकार की विभिन्नतायें लिए हुए हैं। अतः न केवल साहित्यिक दृष्टि से अपितु समाज-शास्त्र व भाषाविज्ञान की दृष्टि से भी इनका बड़ा महत्व है।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर के मान्य अधिकारी-गण इस प्रकार के साहित्य-संग्रह प्रकाशित कर राजस्थानी-साहित्य की अमूल्य निधियों को प्रकाश में लाने का प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं उसके लिये वे बधाई के पात्र हैं।

मेरे प्रिय मित्र श्रीलक्ष्मीनारायणजी गोस्वामी ने इन कथाओं को संपादित करने में बड़ा श्रम किया है। अनेक प्रतियों के पाठान्तर तथा विस्तृत परिशिष्ट दे कर पुस्तक को साधारण पाठक व विद्वद्वर्ग, दोनों के लिए उपयोगी बना दिया है। उनकी इस साहित्य-साधना के लिये बधाई तथा मुझे इस पुस्तक की भूमिका लिखने का अवसर प्रदान करने के लिये धन्यवाद।

नारायणसिंह भाटी
संचालक
राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर

जोधपुर.
बसंत पंचमी, १९६५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्पादकीय

आज जिस प्रान्त को राजस्थान कहा जाता है उसका यह नामकरण अधिक प्राचीन नहीं है। बहुत प्राचीन काल में इस भूभाग के नाम मरुप्रदेश, मरुभूमि तथा मरुस्थल आदि मिलते हैं जिसका आशय मुख्यतया वर्तमान पश्चिमी राजस्थान की मरुभूमि से ही रहा होगा। वैसे राजस्थान शब्द प्राचीन ख्यातों व वातों आदि में प्रयुक्त हुआ है परन्तु उसका अर्थ वहाँ राजधानी अथवा किसी राजा के आधिपत्य के दस्तूर आदि से है। संस्कृत-व्युत्पत्ति 'राज्ञः स्थानम्' से भी यही अर्थ प्रकट होता है। 'यथा नाम तथा गुणः' के अनुसार संस्कृत की विशेष व्युत्पत्ति इस नामकरण के औचित्य को और भी बढा देती है :—'राजन्ते शौर्यौदार्यादिगुणैर्देदीप्यन्ते ये (नराः)ते राजानस्तेषां स्थानं - आवासभूमिः राजस्थानम्।' अर्थात् जो मनुष्य शौर्य-औदार्यादि गुणों से सर्वाधिक सुशोभित हों, उन मनुष्यों के रहने का स्थान 'राजस्थान' है। प्रान्त के वर्तमान नामकरण के रूप में संभवतः इस शब्द का प्रयोग सबसे पहिले प्रख्यात इतिहासकार कर्नल टॉड ने किया है जैसा कि उसकी पुस्तक 'एनल्स एण्ड एन्टिक्विटीज् ऑफ राजस्थान' से प्रकट होता है। जब कि इससे पूर्व यहाँ की रियासतों के समूह के लिए 'राजपूताना' शब्द प्रचलित रहा है क्यों कि अंग्रेजों के ऐतिहासिक वृत्तान्तों में यहाँ की रियासतों के लिये 'राजपूताना स्टेट्स' जैसे प्रयोग मिलते हैं।

यहाँ की रियासतों और इस भूभाग के लिए राजस्थान शब्द कब से प्रयोग में आने लगा, यह इतना महत्त्वपूर्ण नहीं है जितना कि भारतवर्ष के इस भूखण्ड में आर्यसंस्कृति को जो सांस्कृतिक और साहित्यिक देन इस प्रांत ने अपने नाम के अनुरूप दी है, उसका है। राजस्थान वीरों का देश कहा गया है। यहाँ के निवासियों ने शताब्दियों से विदेशियों और विधर्मियों का सामना हर कीमत पर करना अपना धर्म और अन्तिम ध्येय समझा है। इतिहास साक्षी है कि धर्म और धरती के लिये जितना बलिदान यहाँ के वीरों ने किया है, वह भारत के इतिहास में ही नहीं अपि तु विश्व के इतिहास में अप्रतिम है।

बलिदान और तप से ओत-प्रोत यहाँ का इतिहास राजस्थान शब्द की पृष्ठ-भूमि में होने से राजस्थान शब्द के साथ 'वीर' शब्द का सान्निध्य सहज हो हो जाता है। भारतीय संस्कृति में वीरों का असाधारण महत्व समझकर उनका गुण-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गान अनेक रूपों में हुआ है। वैसे वीर शब्द का उल्लेख अतिप्राचीन काल में ऋग्वेदसंहिता (१.१८.४; १.१४४.८; ४.२६.२; ५.२०.४; ५.६१.५), अथर्ववेद (२.२६.४ ; ३.५.८), आश्वलायनादि - श्रौतसूत्र, पञ्चविंशब्राह्मण (१६.१.४), बृहदारण्यकोपनिषद् (५.१३.१ ; ६.४.२८), छांदोग्योपनिषद् (३.१३.६), शरभोपनिषद् (११), नीलरुद्रोपनिषद् (२३), नृसिंहपूर्वतापिनी (२.३; २.४), नृसिंहोत्तरतापिन्युपनिषद् (२;४;५;६) आदि में तेज, पराक्रम और शौर्यादि अर्थों में मिलता है। इससे हमारी संस्कृति में वीरों की विशिष्ट परम्परा ही लक्षित नहीं होती अपि तु संस्कृत-साहित्य में आदर्श नायक के गुणों में वीरत्व एक अनिवार्य गुण के रूप में कवियों द्वारा अपनाया गया है।

राजस्थान के इतिहास में युद्धों की अधिकता के कारण सहस्रों युद्धवीरों का उल्लेख हमें अनेक रूपों में मिलता है परन्तु युद्धवीरों के अतिरिक्त धर्मवीरों, दानवीरों और दयावीरों की भी यहाँ कमी नहीं रही। वस्तुत: युद्धवीर के उदात्त चरित्र के साथ अन्य वीरात्मक भावनाओं का गुंफन भी किसी न किसी रूप में हमें दृष्टिगोचर हो ही जाता है। वैसे उत्साह को वीररस का स्थायीभाव रसशास्त्रियों ने माना ही है परन्तु त्याग और संयम की जो गरिमा चारों प्रकार के वीरों में देखने को मिलती है वह भी इन वीरों के दृष्टिकोण की एकता को ही प्रतिपादित करती है। अत: इन वीरों ने हमारी संस्कृति और धर्म को जो महत्त्वपूर्ण देन दी है उसका न केवल यशोगान ही अपि तु दार्शनिक लेखा-जोखा भी राजस्थानी साहित्य में अनेक रूपों में मिलता है। पद्यात्मक शैली में इन विषयों को लेकर, सैकड़ों कवियों ने जहाँ अनेकों महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तक-काव्य लिखकर अमरत्व प्राप्त किया है वहाँ राजस्थानी-भाषा की विशाल गद्य-परम्परा में वातों, ख्यातों, वचनिकाओं में इस प्रकार की घटनायें भी अनेक प्रसंगों को लेकर वर्णित की हैं। साहित्यिक दृष्टि से यह वात-साहित्य अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

'वात' शब्द वार्ता का अपभ्रंश रूप है। भारतीय वाङ्मय में वार्ता का प्रयोग ठेठ सीतोपनिषद् (३१), सागरहस्योपनिषद् (२५०,११), आश्रमोपनिषद् (२), आदि में उपलब्ध होता है। प्रतीत होता है कि इससे पहले वार्त्ता के लिये 'कथा' शब्द ही प्रचलित रहा है क्यों कि 'ऐतरेय-ब्राह्मण (५.३.३), जैमिनीय-ब्राह्मण (६), जैमिनीयोपनिषद्ब्राह्मण (४.६.१.२), विष्णुधर्मसूत्र (२०.२५) आश्वलायन-गृह्यसूत्र (४.६.६), छान्दोग्योपनिषद् (१.८.१), नारदपरिव्राजकोपनिषद् (४.३), आदि में इस शब्द का प्रयोग वार्त्ता के अर्थ में मिलता है।

वार्त्ता का चाहे जो रूप प्राचीन वाङ्मय में रहा हो किन्तु राजस्थानी-साहित्य में यह शब्द विशेष अलंकृत और सुव्यवस्थित साहित्यिक शैली में लिखी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गई कहानियों के लिए वात के रूप में प्रचलित रहा है और इस साहित्य का अपना विशिष्ट स्थान भी है। यहाँ की ऐतिहासिक व सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप प्राचीन राजस्थानी का अधिकांश साहित्य वीररसात्मक है परन्तु अन्य रसों के साहित्य की भी इसमें कमी नहीं है। यदि हम वातों को ही लें तो वीर-चरित्रों को लेकर लिखी गई वातों के अतिरिक्त शृंगार, भक्ति, धर्म, नीति और उपदेश आदि विविध विषयों को लेकर अनेक कथाओं का निर्माण हुआ है। यहाँ की वीरगाथाओं और कहानियों ने द्विजेन्द्रलाल राय तथा रवीन्द्रनाथ ठक्कुर जैसे महान् साहित्यकारों को भी प्रभावित किया है तथा उनका महत्व सर्वविदित है ही। परन्तु शृंगारात्मक वातों की जो विशिष्ट देन यहाँ के साहित्य को है उस ओर अद्यावधि अन्य प्रांतों के साहित्यकारों का ध्यान बहुत कम आकर्षित हो पाया है। अतः इस बहुमूल्य साहित्य का परिचय साहित्यानुरागियों को देने की दृष्टि से ही प्रस्तुत पुस्तक में ५ वातों का संकलन किया गया है।

पांचों ही वातें प्रेमविषयक हैं, परन्तु प्रेमसम्बन्धी कथाओं में भी जो वैशिष्ट्य यहाँ देखने को मिलता है उसको ध्यान में रख कर वे विविध प्रकार की प्रतिनिधि प्रेमकथाएं यहाँ प्रस्तुत की गई हैं जिनमें कहीं स्वकीया नायिका का निश्छल प्रेम है तो कहीं परकीया की कामातुरता, कहीं नारी के कुटिल चरित्र की अनेकरूपता है तो कहीं नारी व पुरुष की काम-भावनाओं का गूढ़ चित्रण यहाँ की सामाजिक पृष्ठभूमि में देखने को मिलता है।

नागजी - नागवन्ती की वात में जहाँ पुरुष और नारी का एकनिष्ठ प्रेम मार्मिकता के साथ चित्रित है वहाँ बगसीराम और हीरां की वात में अनमेल विवाह पर करारा व्यंग्य है। मयाराम दर्जी की बात में जहाँ पूर्व संस्कारों को मान्यता देते हुए अतिशयोक्तिपूर्ण शृंगार का वर्णन है तो रिसालू री वात में राजा रिसालू जैसे ऐतिहासिक व्यक्ति के साथ नारी के विभिन्न रूपों और यौन-सम्बन्धों का अजीब चित्रण है। प्रेमलालछी की बात में नारी के कुटिल-चरित्रों का सूक्ष्म दिग्दर्शन ही नहीं अपि तु पुरुष की काम-पिपासा को नारी-सौन्दर्य द्वारा तृप्त करने के विकल्प भी वर्णित हैं। इन सभी कथाओं में एक ओर नारीपात्रों की सुन्दरता और चतुराई दिखाई गई है तो दूसरी ओर पुरुष की विवशता तथा सामाजिक मान्यताओं एव रीति-नीति पर भी अच्छा प्रकाश डाला गया है। इस प्रकार की प्रेमकथाओं का सर्वाङ्गीण अध्ययन तो तभी संभव है जब कि हस्तलिखित ग्रन्थों में बिखरी हुई सामग्री सुसम्पादित होकर प्रकाश में आ जाती है। परन्तु, इन कथाओं के आधार पर प्रेमकथात्मक-साहित्य की कुछ विशेषताओं का अनुमान तो लगाया ही जा सकता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यहाँ सम्पादित कथाओं के वैशिष्ट्य पर डॉ० श्रीनारायणसिंहजी भाटी ने भूमिका में विस्तृत रूप से प्रकाश डाला है ; अतः इनके वैशिष्ट्य के बारे में चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है।

प्रसन्नता का विषय है कि सम्पादकीय लिखते समय कुछ विशेषज्ञातव्य संदर्भ भी प्राप्त हुए हैं वे यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

'बगसीरांम प्रोहित हीरां की बात' का रचियता 'तेण' कवि है या अन्य कोई, निश्चित रूप से नहीं कह सकते ! 'कबी तेण इण विध कहो' (पृ० ४६) से तेण का अर्थ 'कर्त्ता' भी माना जा सकता है और तेण का अर्थ 'उसने' भी। यहाँ 'तेण' शब्द यदि नामवाचक है तो इसे इस वार्ता का प्रणेता मान सकते हैं अन्यथा कर्त्ता का प्रश्न शोध का ही विषय है।

प्रस्तुत पुस्तक में राजा रसालु की बात के दो संस्करण मुद्रित हैं :—१. राजस्थानी-रूप है और २. गुजराती-रूप है। इस वार्ता का एक अंग्रेजी संस्करण भी रेवरेण्ड चार्ल्स स्विन्नरटन (Rev. Charles Swynnerton) लिखित 'दी एडवंचर्स ऑफ दी पंजाब हीरो राजा रसालु' के नाम से डब्ल्यू. न्यूमेन एण्ड कम्पनी लिमिटेड, ४, डलहोजी स्क्वायर, कलकत्ता के प्रकाशक द्वारा सन् १८८४ में प्रकाशित हुआ है। चार्ल्स स्विन्नरटन उस समय रॉयल एशियाटिक सोसायटी, फोकलोर सोसायटी तथा एशियाटिक सोसायटी, बंगाल के सदस्य थे। स्विन्नरटन ने यह गीतात्मक कथा 'सरफ' नामक लोकगायक से सुनी थी। इस गायक का चित्र भी इसमें प्रकाशित है।

आंग्लभाषा के संस्करण और इस संस्करण की कथाओं में कहीं वार्ता का तारतम्य एक-सा नज़र आता है तो कहीं बहुत ज्यादा अंतर दृष्टिगोचर होता है। अतः तुलनात्मक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए अंग्रेजी संस्करण के १२ अध्यायों का क्रमशः संक्षिप्त रूप (अनुक्रम) यहाँ उद्धृत कर रहे हैं जिससे कि शोधविद्वान् इसका समालोचनात्मक अध्ययन कर सकें।

१. रसालु का प्रारम्भिक जीवन :

[राजा सलवान और उसकी दो रानियाँ, रसालु के बड़े भाई पूरण भगत का चरित्र और उसकी भविष्यवाणी, रसालु का जन्म और बाल्य-काल, प्रतिबन्ध से मुक्ति, उसका नटखटपन और देशनिष्कासन, लूणा माता का विलाप]

२. रसालु की प्रथम विजय :

[गुजरात की यात्रा, झेलम की राजकुमारी के विरुद्ध अभियान, तिला के साधु का चमत्कार, साधु की भविष्यवाणी]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. रसालु का पुनरागमन :

[मक्का की यात्रा, हज़रत द्वारा स्वागत, मुसलमान-धर्म में परिवर्तन, सियालकोट से समाचारों का आना, दीवारों का गिरना और मनुष्यों का बलिदान, जबीरों द्वारा हज़रत को अपील, सियालकोट पर आक्रमण, नगर पर अधिकार, सलवान की मृत्यु और रसालु का राज्यारोहण]

४. राजा रसालु और मीर शिकारी :

[रसालु की दक्षिण यात्रा, जंगल में मीर शिकारी से भेंट, मीर शिकारी का रसालु का शिष्य बन जाना, रसालु की शर्त्तें, मीर शिकारी और उसकी रानी, उसके द्वारा प्रतिज्ञाभंग, मृग और मृगी की कथा, मीर शिकारी की मृत्यु, मीर शिकारी की पत्नी का रसालु से दुर्व्यवहार, मीर शिकारी की मृत्यु का दोषारोपण, रसालु की मुक्ति, मीर शिकारी का अन्तिम संस्कार और स्मारक

५. राजा रसालु और हंस :

[रसालु का एक नगर में प्रवेश, रसालु द्वारा तीस मील ऊँचा बाण चलाना, दो कौवों की कथा, उनका आकाश में उड़ कर वापस आना, हंस के घोंसले में शरण लेना, नर-काक द्वारा धोखा दिया जाना, राजा भोज का न्याय, रसालु और गीदड़ की कथा, रसालु और भोज, गीदड़ की मित्रता, हंसों और कौवों को वापस बुलाना, रसालु की बुद्धिमानी]

६. राजा रसालु और राजा भोज :

[रसालु की यात्रा विलम्बित, उसका प्रस्थान, भोज का साथ चलना, उनका वार्त्तालाप, रानी शोभा के बाग में पराक्रम दिखलाना, उनका आम्र-वृक्ष के नीचे ठहरना, राजा होम का आगमन, उसकी कविता, रसालु की बुद्धिमानी, रसालु और भोज दोनों मित्रों का बिछुड़ना]

७. राजा रसालु और गण्डगढ़ के राक्षस :

[रसालु का स्वप्न, उसका पराक्रम के लिए प्रस्थान, ऊजड़ नगर और वृद्धा, वृद्धा की विपत्ति, राक्षस का भोग, रसालु और वृद्धा का पुत्र, रसालु और थीरा, थीरा और भींवूं का पलायन, दूसरे राक्षसों से मुठभेड़, राक्षसी से टक्कर, राक्षसराज वैकलबाथ, भींवू और थीरा का दुर्भाग्य, थीरा का विलाप, गण्डगढ़ पर्वत में कैद, गण्डगढ़ की चीत्कार, रसालु के तीर]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. रसालु का तिलार, नाग और काग, डोढ काग (जंगली कौवा) के साथ पराक्रम :

[रसालु का झाऊमूसे को डूबने से बचाना और अपने साथ ले चलना, उसका एक सूने महल में आगमन, चार घड़ियां, झाऊमूसे का कुण्ड में पड़ जाना, राजा का जीवन खतरे में, झाऊमूसे का काग और नाग से युद्ध, उसकी दुहरी विजय, राजा रसालु का जागरण, आभार-प्रदर्शन, झाऊमूसे का परामर्श, मित्रों का बिछुड़ना]

९. राजा रसालु और राजा सिरीकप :

[रसालु और सिरीसूक, सिरीसूक का बोलना, उसका निषेध और परामर्श, रसालु की यात्रा चालू, जुलाहा और उसकी बिल्ली, दो ग्रामीण युवक, वृद्ध सैनिक और बकरा, रसालु का श्रीकोट पर आगमन, सिरीकप के जादू का तूफान, रसालु और किले का घण्टा, रसालु और राजकुमारी झुधाल, राजाओं का मिलन, उनका कूट प्रश्नोत्तर, उनका खेल, रसालु की हार, रसालु की बिल्ली और सिरीकप के चूहे, सिरीकप की अन्तिम पराजय, उसका भाग जाना और फिर पकड़ा जाना, राजकुमारी कोकिलान का जन्म, जादूगर सिरीकप का अन्त, रसालु की कोकिलान के साथ विदाई]

१०. रानी कोकिलान का धोखा :

[रसालु का खेड़ीमूर्त्ति में बस जाना, कोकिलान का बाल्यकाल, धाय की मृत्यु, रसालु की शिकार, रानी कोकिलान का शिकार में साथ जाना, उनके पराक्रम, हीरा हरिण कृष्ण मृग का अपमान और उसके द्वारा बदला, गंजा और काँना, राजा होदी का खेडीमूर्त्ति में आना, उसका कोकिलान से प्रेम, तोता और मैना, होदी का डर कर महल छोड़ना, व्याकुल रानी, होदी का धोबी और धोबिन से मिलना, उसका अटक पहुंच जाना]

११. रानी कोकिलान का भाग्य :

[तोते द्वारा तलाश जारी रखना, उसका हजारा में अपने स्वामी से मिलना और रानी का भेद बताना, रसालु और उसका घोड़ा, उसका घर पहुंचना, शादी को राजा होदी के पास भेजना, षड़यन्त्र, होदी का खेड़ीमूर्त्ति आना, द्वन्द्वयुद्ध, होदी की मृत्यु, रसालु और कोकिलान, अपराध के प्रमाण, धीरे-धीरे दुर्घटना का रहस्योद्घाटन, रानी कोकिलान का अन्त]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२. रसालु की मृत्यु :

[रसालु द्वारा मृत शरीरों को प्राप्त करना, उनको नदी पर ले जाना, धोबी और धोबिन से मिलना, धोबी की कहानी, राजा का उसका मित्र बन जाना, उसके दु:ख और शक्ति का ह्रास, अटक की बुद्धिमती स्त्रियां, राजा होदी के भाई, खेड़ीमूर्त्ति पर आक्रमण, धोबी का संदेश और भविष्यवाणी, खेड़ीमूर्त्ति का घेरा, रसालु का शाप, युद्ध, रसालु की मृत्यु, सन्देश]

'मयाराम दर्जी की वात' की एक अन्य विशिष्ट प्रति इस संस्थान में प्राप्त हुई है। उसका मन्थन करने पर ऐसा प्रतीत हुआ है कि जो वार्ता इस संस्करण में मुद्रित हुई है वह अपूर्ण है। अतः इस वार्ता का शेषांश और मुद्रित संस्करण की अपेक्षा इस प्रति में जो अधिक दोहे प्राप्त हैं, वे यहाँ पाठकों की जानकारी के लिये दिये जा रहे है :

जांणण समजण वध जुगत, सषरापण सागेह।
आठू ही दासी अबै, एक जसीयल आगेह ॥१६॥ १६ के बाद[1]

ग्रहणा झब-झबे गजब, पाग फबै सिर पेछ।
उगतडौ सूरज अबै, देष दबै दस देस ॥३१॥ ३१ के बाद

तेल पटां कसीयल तरह, रसीयल लाग रहंत।
वसीयल हीय असीयल वनौ, जसीयल बाट जोअंत ॥३४॥ ३३ के बाद

यण तरै का वोदराजा मयरांम चवरीनूं आवै है,
पेमरा पयाला नेत्रा सूं पावे है,
विलकुल तौ अलवेलो गूमरांमे वै हैं।
करतीयो रा भूव्रकामै चंदौ जिम कहै है,
जोय जोय हेली मदरूप च(छ)क जावै है।
घूंम घूंम रंग मै सहेली इम गावै है ॥५०॥

गावै उभू गायणी, नरषै उभी नार।
मद-चकीया म्यारांम रौ, इंद्र जिसौ उणीयार ॥५१॥ ४८ के बाद

मांणै सूष यम म्यारजी, दूलहौ जसीयल देह।
दनकर तीन ससरम्न दष, धण धती पीउ मेह ॥६४॥ ५६ के बाद

---

१. यहाँ पर सभी जगह मुद्रित संस्करण की पद्यसंख्या के बाद यह समझनी चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वावल कांठल वीजळी, बुग पंकज उर चाढ ।
वादल काला वरसतां, आयो धुर आसाढ ॥६६॥ ६० के बाद

झड लागौ धोरां झरण, मोरां लोर मिलाव ।
वैरल सरपाटां वहै, भालण ज्युं भांडचाव ॥६८॥ ६१ के बाद

उर-वसीया मैं ऐकली, वसीया कदे न वाग ।
इण पुल जसीयाइ षनै, रसीया सांभल राग ॥७३॥ ६५ के बाद

म्यारौ आषै मालकी, रहै नहीं ऐक रीत ।
काछो(चो) रंग कसूंभरौ, पंछो(चौ)लणरी प्रीत ॥७८॥ ६६ के बाद

चत्रमासौ वलवल सषर, अथ जल थल-थल आज ।
जिण पुल जसीयल तीजनै, मांणौ अलवल(र) माज ॥११७॥ १०६ के बाद

मनछल छलरूपी मकर, वल-वल उठौ वैल ।
अलवल(र) रहणौ आदरौ, छोडौ हल-वल छैल ॥११८॥

बीज-छटा धुर वादलां, आव घटा छ(च)हुँ ओर ।
वाव मटा दीठा वणै, मीठा महकत मोर ॥१२३॥ १११ के बाद

लोरां जल लायौ लहर, पायौ थल चहुं पास ।
मोरां मल गायौ महक, चायौ इल चत्रमास ॥१२५॥ ११२ के बाद

उमड घटा उद्रीयांमणी, वींज छटा छव वाह ।
विस जसडी लागै बुरो, निस पावस विण नाह ॥१२७॥ ११३ के बाद

वरछां झूंबै वेलीयां, लूंबै कांठल लोर ।
कर-कर सौर कलाव कर, मांणै रत धर मौर ॥१३०॥ ११५ के बाद

कांठल आभै काजली, वल-वल षवसी बीज ।
म्यारा अलवल माजली, तिण पुल रमसां तीज ॥१३२॥ ११६ के बाद

मगज अमर मूंछां मयंद, भमर डमर भणणंत ।
अरज गूंमर मानौ अना, नवल वना नषतंत ॥१३५॥ ११८ के बाद

मालू आषै म्यारनै, जालूं छालां झल ।
की हालूं-हालूं करौ, पालूं छूं पल-पल ॥१५०॥ १३२ के बाद

कहीया था आंगुं कवल, रहण अठै राजांन ।
कर हठ क्यूं बांधौ कमर, नवल वना नादांन ॥१५२॥ ,, ,,

क्यूं हठ जाली कवरजी, वाली धण वीसार ।

जसां-वायक —

क्यूं काळी अतरी करै, माली थूं मनूंहार ॥१५३॥ ,, ,,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

म्यारांम-वायक —

अण जसीयल मांनै अबै, कहीया बोल कुबोल ।
यण बोलांरै उपरै, जासां अलवर षोल ॥१५४॥ „ „

मालू आषै म्यारनै, हठ कर तजौ हलांण ।
कलहलीया केकांण ज्यूं, करो पलांण-पलांण ॥१५७॥ १३५ (गीत पद्य-६) के बाद

म्यारा मांरा मुलकमै, चोषी पांचू चीज ।
हीडै रागां वाग हद, तीजणीयां नै तीज ॥१६२॥ १३६ के स्थान पर

वात का शेषांश इस प्रकार है—

वारता— ॥ म्यारांमजी-वायक ॥

अबै म्यारांमजी बोलीया, दिल का पड़दा षोलीया । वचनां अमरत-वांणसी, सारां देसां सिरे सिवांणची । लूणका लहरां लेवै, उमंग की छोलां ए वै । सारी नदीयां सूं सिरै, कताबांमै कव तारीफ करै । जिका जमना गंगारै जोडै, तुठी थकी पाप-दालद तोडै । यण भांतको मांको देस, जठै केलासके भोलैभुलै महेस । जिकण सवांणछीका इसा भाषर छै नै इसाइ ठाकुंर छै ।

॥ कवत ॥ अकल दुरंग अण षलो वडा परबत चहुं वल,
माही नदी लूणका नीर-धारा अत उजल ।
अन भाजा नीपजै रहै सब दन आवासां,
माता बकर षाय चढण ताता बरहासां ॥
पदमणी त्रीया उत्तम पुरष, पड अवगुण न हुवै पछी,
मुरधरा तणां जोतां मुलक, सिरै देस सिवीयांणछी ॥ १७३

वात—मुलक देसांको सरो मारवाड, मारवाडका मुगटामण सिवाणची का पाड । सिवांणचीको चौगो भांडीयावास, जठै मांको रैवास । जकण देसमें हमै जावसां, अलवल फेर कदेक आवसां । जसां सहथी सात ही सहेलीयांनै ले जावसां ।

मालू-वायक—

जद मालुडी इउं कहै छै—राज ! इठै क्यूं न रहै छै ? सीत रत आवसी, वरषा रत जावसी । आभो उजल रंग धरसी, गुडलापण दुर करसी । मोर कलासून करसी, कमोदण विकससी, वादल नकससी । आ रत जद आवैला, जसीअल मर जावैला । सूणौ नी भमर छैलां, धण छोड क्यूं चालसो गैलां ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥ दूहो ॥ देषण मुरधर देसनू, है जावणरी हांम ।
कर जोडे अरजी करां, मांनो नी म्यारांम ॥१७४॥

वादल गल जल वीषरै, एल सीतल अधकार ।
केकांणां हलवल करै, इण पुल क्यूं असवार ॥१७५॥

रिल चित मलीया राजसु, विलकुंलीया एक वार ।
चलीया जसीयल चो(छो)डनै, अलवलीया असवार ॥१७६॥

वात—मालू कहै—मांकी अरज क्यूं न मांनो छो ?

इल सीतल अवदात वायव-जव-सम वलावल ,
डार मांण डरपती नार भीडै पीउ कावल ।
भुअंग भूम माय भलत भमर दाहुंत वेजोगण ,
रूठ सगत न्हं रहृत तोमडंछंम तमोगण ।
दाजसी वनां सीतल दहृण, रहृण अठै चत रीझीयै ।
रत पलंग छाक मांणो रमण, इण रत गमण न कीजीयै ॥१७७॥

वारता—जद म्यारांम कह्यो—मांको तो मन उठै लाग रह्यो । अबारु तो जावांला, फेर थूं कहै तो आवांला । बेलीयांनूं कह्यो कमरां बांधो, सारा साज पुरणां पर सांधो । घोडां पर साकतां मंडाणी छै, जद जसां चढणकी जाणी छै । मालुनूं कह्यो—कवरजी राषीया नही रहै, अब थुं कासूं कहै । जद मालू कह्यो—आंपांके म्यारांमजी वना नही सजसी, आपां घणी करसां तो आंपांनू तजसी । जद जसां भी सारी त्यारी कीधी, लषां ग्रहणा-पौसाषां साथे लीधी । जांनी सिरदार दोढी आया, कलावंत गाया । जद म्यारांम जसांनू कह्यो—मै डेरां जावसां, सारा साज तारी करावसां । वींद-राजा घणा दनां सूं बारै आया, जानी घणा आणंद चाया । मुजरा-सलांम कोधी, हाजरी लीधी; जण दनरो दुलहो ऐसो नजर आयो, नकी लीधो । अलवर की सहेलीयां देषणनु आइ छै, आपकै तो मारवाड की छढाइ छै । वछायतां कीजे, की छकां दीजे । आप ही पीजे, जसीयांको सुहाग अर कीजै । वछायतां कराइ, दारूकी तुंगां भराइ, जसांकै दोली कनात षडी कराइ । वींदराजा वराजीया, चंद-सूरज-सा छाजीया । दारूका प्याला भराया, घोडा कायजै कराया । पणीयारीयांका टौला आवै छै, रूप देष मस्त होय जावै छै ।

दुहा ॥ कंचन-षंभ कलाइयां, मणधर जेही डं[ड] ।
गज-गत चंगी गोरडी, लांबा वैणी - डंड ॥१७९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चंद्रायणौ— मसतक कुंभ उपाड गहके मोर ज्युं,
भरीया भूषण अंग लहकै होर ज्युं।
पांणी कुंभ उपाड धरै पणीयारीयां,
परहां कहां जी, गज-गत चंगी चाल सुचंगी नारीयां ॥१८०॥
अलवेली यण रीत चलती श्रोयणां,
घमकै नेवर घाट विलोकै लोयणां।
रस-भरीया ज्यांन नरषण राजनुं,
लयौ महौलो नेह हटकौ लाजनुं ॥१८१॥

॥ दुहो ॥ लोयण मोहण लागणा, सोयण दीठ समेह।
जोयण कण विध जांननुं, भोयण भमर भमेह ॥१८२॥

वात—इसी पणींयारीयां जल भरवानै आवै छैइ, मुजरां की सडासड लगाइ। जसीयलनै पेषै छै, म्यारांमनु वेषै छै। मुधर हसै छै, आंमै रूप बसै छै।

दुहा ॥ दूपटा भूज पेछां दयण, परछल अंतरपट।
अंग-अंग उजलतौ उमंग, छक मद अनंग चट ॥१८३॥

॥ छंद्रायणा ॥ इण सरवर री पाल हींडोलौ बाधसां,
दोवड रेसम डोर जरीतर सांधसां।
कसीया भमर सूजांण हलो किण काजनै,
रीसीया मारूरांण रमाडो राजनै ॥१८४॥
लूहर लूंबा लार गुलाकं दध मांगसां,
जसीहल कंठ लगाय अबौलौ भांगसां।
जो मारूराव संजोगी छक घणां,
लासां जटाधर भेष पटाभर मेवणा ॥१८५॥

वात—इण तक अठै सारांरौ समाध्यांन कीधौ। म्यारांमजी कह्यौ–हमै ताकीद करो, सारा सभ उठां माथै धरौ। ढोलीयां-ढाढीयांनै सीष दीधी, उणांरी जसवाद लीधी। सारा सिरदार असवार हुआ। लारली सषीयांरा कहा दूहा—

विरह विमासी वालमा, भांमण गावै भींज।
इण रतमै सी आवसी, कवण रमासी तीज ॥१८६॥
म्यारै सारी महलसुं, जब मिल कोहा जुहार।
वीचडतांइ सजनां, षलक्या असूंधार ॥१८७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पी म्याराजी पौचसो, दुलहा मुरध[र] देस ।
लाडा थां विण लागसी, निज घर दुसमण नेस ॥१८८॥

सायब आज सधावसौ, रल-मल गावे रंज ।
सायब उर तीय जीयसमीं, हो मारू हीय हंज ॥१८६॥

जसां सषीयां परसीया, कमलमकरंद वरसीया। जसां मन उदास हुआै, मालकी कौ कह्यौ दूहौ—

पित-माता परवार पष, नज भ्राता तजनेस ।
म्यारा व्याह् विनोदसुं, तजीयौ अलवर देस ॥१८६॥

ओ दुहो सुंणीयौ, पाचौ म्यारांमरं षवास दूहौ भणीयौ ।—

सपनै ही इण देसडै, आय न जीवयता ।
म्याली मांडे मौहसू, आया कोस किता ॥१९०॥

जांन सारी षडीया, जसां रथ चडीया। मिजलां-मिजलां भांडयावास आया, घणंको छाकां मद छायो। ग्रहणांकौ भललाट, तेजकौ जललाट । आसाढरौ भांण, रसराग जोण । मगजां मदंध, वोप तेजबंध । ओपह दुबाह, बाषाण वाह । कांम की मूरत, रूपकी सूरत । रंगरी रली, रसरी डली । आणंदरी गली। माहरौ चंद्रमा संजोगणी कै लेषै, आसाढरौ भांण बनो जोगणी कंब पेषै, तुररैरा तार तुटता, किलंगी सोभ उठता । आंषांमै ललायां चुटती, रसरी धारीयां वुठती । डेरांनू आवें छै, भगतण-पातर गावै छै। अलवरकी सहेलीयां देषै छे। इण तक म्यारांम तंबु दाषल हुआै । जद जसां जोतसीनूं कह्यौ–जान छ(च)ढणरौ तीषौ मोरथ दीजे, मनमांनी नवाजस लीजे। जद जोसी कह्यौ–जतो वागमै प्रस्थांनौ कीजो, परभातकौ दन नीकौ छै, सारो सूभ महुरतांको टीको छै । परभातरी दुजी मजल करावी । आज तौ डेरा वागमै दरावसी । सिरदार वागनु वलीया, जसांका मनोरथ फली [या]। वाग आणंद उतरीया, जठै ठोड-ठोड कूंड भरीया। घोडा वडलांरी साष-तलै बांधीया। सिरदार उतर वागमै आया, जाजम गदरा वछवाया। भगतण-पातर गावै छे, चछ(च) लगां मचावै छे। अलवेलीया छैलानां नरषे है, वयण परस नेत्रां रस वरसै है । तंबु षडा कीया, मोतीयांरा गुछा रेसमरी लड़ां दीया। वागमै मैलायत षडो हुई, इन्द्र की पुरी हुई। चा(छा)-जा कबाणीया छूटा है, सरदरी पुनमरा चंद उग-उग उठा है। झालरी फहरै है, चांदणी चहरै है। कलस झगमगै है, अजब जेब जगै है। जण महलांमे वराज भमर आलोजां रो भूप, गंधरौ गैंद, माणीगरांको रूप। चायलांकौ तुररौ, चबीनीकौ हार; आंष्यांरो अंजन, आतमारो आधार । छोगालो छबीलो प्राण-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्यारौ, नैणांकौं नरषणो नां है छिन न्यारौ, मतवालीकौ मांणग, रसजीणैकौ जांणग । जिण वागकी छौज जेती, दीठांइ'ज वण आवै कहां केती । वसंत रत फल-फूल रही छै, आणंदमइ छै । चंद्रसरोवर छै, तीर माथै घणा तरोवर छै । केतकी, चंबेली, गुलाब, चंपाकी फुलवाद । आंबाकी मंजर, भमरांकी गुंजर । आंबांकै उपरैं कोयलां टहुका करै छै, सुवा नीलकंठ मैमंथ हुआ फरै छै, रस झरै छै । मौर मैंमंत हुआ निरत करै है, एक-एकसुं सिरै है । फुलवादीरी क्यारीयांमैं धावै है, टहुका करै है, गुदीमै गुचा धरै है ।

।। दूहा ।। महकै मीठा मोर, कहकै मीठी कोयलां ।
आठ पहर छहुं ओर, लपटांणी तरसुं लता ।।१६१।।

वात – जण वागमै आय उतरीया । रूंख सारा रसमंजरासुं भरीया । जसां महेलां दाषल वीही, रात घणी आणंदसूं गई । दीपक जगायौ, सनेह-रस पायौ । साडी जरकसी पर म्यारांमजी दुपटौ ओढायौ । भमर कली लपटायौ । हींडोल षाट भूलै छै, च्यारू पय डुलै छै । म्यारांम तन जागीया । जसां मन जागी । मदन-माहराजरी नौबत जोर बागी; कमल कलीयां वषसी, भमर गुंजार थागी । हमै सुरजरौ भास हुऔ, कमलांरौ वेकास हुऔ । तम-दालदरौ नास हुऔ, जोतरौ प्रकास हुऔ । म्यारामजी अपौढ़ी हुआ, दोढी-दस त्यार हुआ । मालूड़ी दारूरी मनुआर कीधी, दोय छक लीधी । मारवाड छा (चा)लणकी ताकीद कोधो । उठासुं कसीया चंद सरोवर आया । गौडा जाषोडा, पाया, कमरां सु कसीया छै, रंभाका रसीया छै । बेलीयांनूं दारू पावै छै, केई जलमैं नावै छै, गायणो गावै छै । जद किसतुरी अरज कीधी । जसीयाकै मडसुं वधाया ।

दूहा ।। म्यारौ अलवल देसती, आयौ जसीयल व्याह ।
गावत बांदी गीतड़ा, लीना कवर बधाय ।।१६२।।

वात – अण तक जांन आइ । जांनी सीष पाइ आपौ-आपकै घरां गया । घररा घोड़ा, आदमी रह्या । हमें इण तक सुंष मांणै छै, इंद्र भी वषांणै छै । नित सकारां जावै छै । असवारी आवै छै । सतषणां महल आकास छाया छै, आभां वादल झूक आया छै । अण देसरौ चढंती वेसरौ पडदा छूटा छै, कला-बातुंका बुंटा छै । उग-उग उठा छै । चंत्रगारी वणी, सोनै मैं वैडुरज-मणी, कडा, कंठचां, वीटचां, पुणछचां सुं भरचौ, उंनालाकौ आंवौ मंजरीसुंइ भरचौ । मोतीयांकौ गजरौ, फूलां कौ भारौ, गाहडकौ गाडौ रायजादो प्यारौ । दरीयाइकौ रेजौ आछो रंग लागो । सोनैरे कडां मे हीडोल-षाट हीडै छै । इंद्र देष-देष भुलै छै । छं(चं) दणका कपाटका जडीया छै हाटका,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गवाष छूटा है वाटका। इण तकरा महलायत वराजै। चवै म्यारांम आसमांनरै चा(छा) जे। कोक-कलाको प्रवीण वींदराजा सुजाण, रंग-भमर नादांन, चढती जवांन। जसीया कटाच करै है, म्यारांम रो मन हरै। अणांरो सुष बषांणै, रात-दन मनछौजी लो जाँणे। म्यारामसा भोगी भमर, जमी आसमाँन लग अमर।

इती वात संपुरण। म्याराँमरी आसीया बुधजीरी कही सं० १६१३ रा मती भद्रवा ब्द ७।

मुद्रित संस्करण में पृ० १६७ 'रेंवत समजै रानमै' दोहा २७; पृ० १७७ 'जेले तुरगां रेशमी' गीत और पृ० १८५, 'वन सघन लसत मनु घन वसाल' छंद पद्धरी १४०; जो प्रकाशित हुए हैं वे इस नई प्रति में प्राप्त नहीं हैं।

उक्त वार्ताओं के अतिरिक्त इसमें तीन परिशिष्ट दिये गये हैं जिनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

परिशिष्ट १ (क) में राजा रिसालू की बात का जो संक्षिप्त रूप प्राप्त हुआ है, उसे अविकल रूप से यहाँ दिया है और (ख) में इसी 'बात' के केवल जो स्वतन्त्र रूप से दोहे प्राप्त होते हैं वे ही दिये हैं। इन दोहों में राजस्थानी, गुजराती, और पंजाबी भाषा के शब्दों का मिश्रण है जिनका कि भाषा-विज्ञान की दृष्टि से महत्व है।

परिशिष्ट २ क. ख. ग. और घ. में विभक्त है। प्रत्येक वार्ता में प्रयुक्त दोहा, कवित्त, कुण्डलियाँ, चोपाई आदि छन्दों के वर्गीकरण के साथ अकाराद्य-नुक्रम अलग-अलग दिया गया है।

परिशिष्ट ३ में पांचों वातों में पद्य एवं पद्यांश के रूप में उपलब्ध कहावतें, मुहावरे और सूक्तियों का संकलन कर अकारानुक्रम से दिया गया है जो कि शोधविद्वानों के लिए उपादेय होगा।

प्रति-परिचय—

प्रेमकथाओं की प्रतिलिपियाँ अनेक हस्तलिखित संग्रहों में और संस्थाओं में बिखरी पड़ी हैं, यहाँ तक कि कई प्रसिद्ध कथाओं की बीसियों प्रतिलिपियाँ तक प्राप्त हो सकती हैं। यहाँ प्रकाशित वातों को यथासाध्य प्रामाणिक रूप देने के लिए मैंने कुछ महत्त्वपूर्ण प्रतियों का प्रयोग किया है जिनका विवरण इस प्रकार है:—

१. बगसीराम प्रोहित हीराँ की वात: इसका केवल एकमात्र गुटका राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर में है। ग्रन्थ-संख्या ५८६७ है। साइज-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेन्टी मीटर में १६.१×२७; पत्र सं० ६५, पंक्ति १६, अक्षर १६ हैं। लेखन काल २०वीं शती है। इसमें लेखन प्रशस्ति नहीं है।

२. राजा रिसालू री वात : इस बात के सम्पादन में मैंने ७ प्रतियों का प्रयोग किया है। ५ प्रतियों का मूल वार्ता में और २ प्रतियों का परिशिष्ट १. क. और ख. में। पाँचों प्रतियाँ क. ख. ग. घ. ङ. संज्ञा से अङ्कित की गई है। क. संज्ञक का पाठ आदर्श मान कर ऊपर दिया गया है और ख. ग. घ. ङ. का पाठान्तर में प्रयोग किया है।

क. संज्ञक—राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर, ग्र. सं. ३५५३; साइज १८×१२.३ से. मी.; पत्र सं.—१२७–१५६; पंक्ति १६; अक्षर ३६ है। गुटका है। लेखन प्रशस्ति इस प्रकार है :—

"संवत १८७८ रा वृषे मिति माह वद ७ गुरवासरे लिखतं चूतरां [चतुरां] नागोर नगर मध्ये: ॥श्री॥"

ख. संज्ञक—राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर सं० ६२६, साइज १३.×११ से. मी.; पत्र-७; पंक्ति १३, अक्षर ४४ है। लेखन प्रशस्ति निम्न है—

"संवत् १८६० ना कात्तिक विद ८ बुद्धे संपूर्ण। लिखितं मुनी गुलाल-कुसल। श्रीमांन कुए।

ग. संज्ञक—रा. प्रा. प्र., जोधपुर; ग्रन्थ संख्या ३६६०; साइज् २६.३×११ से. मी.; पत्र १५; पंक्ति १३; अक्षर ३३ हैं। लेखन प्रशस्ति—

"संवत् १८६० वर्षे मती वैसाष वदि ५ दिने वार आदित्य दिने लि० ऋ० रामचंद ग्राम कांगणी मध्ये॥ श्री

घ. संज्ञक—राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर; गुटका नं० ३५७३ (६०); साइज २०×२८.८ से.मी.; पत्र १७१–१७५; पंक्ति ४०; अक्षर ३२ हैं। लेखन अनुमानतः १८ वीं शती है। गुटका जीर्ण-शीर्ण है।

ङ. संज्ञक—राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर; गुटका नं० १०७०१; साइज १६.३×११.८ से. मी.; पत्र सं० ६९; पंक्ति ११; अक्षर १८ है। सचित्र प्रति है। लेखन प्रशस्ति—

"सं० १८६२ रा मिती चैत सुद ७ अर्कवासरे: ॥ मेडता नगरै ॥ श्री।"

परिशिष्ट १ (क)—राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर, गुटका नं० ४६०५; साइज १५.८×१२.५ से. मी.; पत्र २६; पंक्ति १४; अक्षर १८ हैं। लेखन प्रशस्ति—

"ली/पं/अनोपवीजयः ग।/संवत् १८७५ रा आसाढ सुद ३ दने ॥श्री॥"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट १. (ख)—राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर, गुटका नं० ३५७३ (४५); साइज २०×२८.८; से.मी. पत्र १ (१०६ वां); पंक्ति कुल ६८; अक्षर० ३२ है। लेखन प्रशस्ति नहीं है। अनुमानतः लेखन १८ वीं शती है। गुटका जीर्ण-शीर्ण है।

३. नागजी-नागवंतीरी वात : इस वात का सम्पादन दो प्रतियों के आधार पर हुआ है। क. संज्ञक आदर्श है और ख. संज्ञक के पाठान्तर दिये हैं।

क. संज्ञक—राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर, ग्रं० नं० ४३२० प्रेसकापी है। कॉपी साइज में ३८ पृष्ठ हैं। यह प्रेसकॉपी श्रीअगरचन्दजी नाहटा, बीकानेर द्वारा करवा कर मंगवाई गई थी।

ख. संज्ञक—राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर, गुटका नं० ११५८५; साइज १६×१०.६; से.मी. पत्र ३२; पंक्ति० ९; अक्षर० २० है लेखन-प्रशस्ति निम्न है :—

"इति श्रीनागवंती नें नागजीरी वात संपूर्णं। संवत् १८५२ वर्षे मिति आषाढ वदि ७ भोमवारे लपिकृतं पं० केसरविजे [जये] न विकंपुर मध्ये कोचर सु' लिछमणजी बैठनार्थं श्रीरस्तु कल्याणमस्तु।१।

४. वात दरजी मयारामरी : इसके सम्पादन में दो प्रेसकॉपियों का प्रयोग किया है। क. संज्ञक प्रेसकॉपी को आदर्श माना है और ख. संज्ञक प्रेसकॉपी के मैंने पाठान्तर दिये हैं।

क. संज्ञक—राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, शाखा कार्यालय, जयपुर में सुरक्षित 'पुरोहित हरिनारायणजी संग्रह' की है। फूल्स्कैप साइज की यह प्रेसकॉपी दो खण्डों में विभक्त है। प्रथम खण्ड ग्रन्थ नं० १२७; पत्र १९–२४ है। इस में वार्ता प्रारंभ से प्रकाशित पृष्ठ १६९ दोहा ४५ तक है और बाकी का अंश ग्रंथ नं० $\frac{२३५}{१-३}$ पृष्ठ ९ तक में है।

ख. संज्ञक—यह प्रेसकॉपी फूल्स्कैप साइज की २४ पृष्ठ की है, राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर की है। इस में 'वार्ता' का आद्यंश (४५ पद्यों तक का) नहीं है।

५. राजा चंद प्रेमलालछी री वात : इस वार्ता की भी दो प्रतियों का मैंने उपयोग किया है। क. संज्ञक आदर्श है और ख. संज्ञक के मैंने पाठान्तर दिये हैं।

क. संज्ञक—राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर, ग्रन्थ नं० १२७०९ (११); साइज २२.५×१३.१; पत्र० ८९–९७; पंक्ति० १५; अक्षर० ३५ हैं। लेखनकाल सं० १८२९ के आस-पास का है। लेखनप्रशस्ति नहीं है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ख. संज्ञक—राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर के संग्रह का यह गुटका है। साइज १४,५×१२; पत्र० १४४–१५६; पंक्ति० १४; अक्षर० २१ है। लेखन-प्रशस्ति इस प्रकार है :—

"इति श्री राजा चंदरी प्रेमलालछी रुद्रदेवरी वात संपूर्णं। संवत् १८३६ रा मती चैत्र वदि १४ चंद्रवासरेः। पंडीतचक्रचूडामणी वा०। श्री श्री श्री ७ श्रीकुशलरत्नजी तत्शिष्य पं० श्रीश्रीअनोपरत्नजी मुनि खुस्यालचंद लिपिकृतं:। श्रीगुंदवच नगरमध्ये ।। सेवग गिरधरीरी पोथी माहे सु लखी: ।"

आभार-प्रदर्शन—

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के सम्मान्य सञ्चालक, परमादरणीय 'पद्मश्री' मुनि जिनविजयजी 'पुरातत्त्वाचार्य' का मैं हृदय से अत्यन्त आभार मानता हूँ कि जिन्होंने अपने निर्देशन में मुझे प्रस्तुत 'राजस्थानी साहित्य संग्रह-भाग ३' का सम्पादनकार्य सौंप कर राजस्थानी भाषा के प्रति मेरी अभिरुचि का संवर्द्धन किया। साथ ही मैं प्रतिष्ठान के उपसंचालक, विद्यारागपरायण पं० श्रीगोपालनारायणजी बहुरा एम. ए. का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जिनका कि मुझे स्नेहसौजन्यपूर्ण सहयोग एवं सत्परामर्श सतत सुलभ रहा।

राजस्थानी भाषा के शोधविद्वान् एवं प्रतिनिधिकवि डॉ. नारायणसिंहजी भाटी ने अपने शोध-संस्थान तथा शोधप्रबन्ध-लेखनादिक अनेक महत्त्वपूर्ण कार्यों में अत्यधिक व्यस्त रहते हुए भी मेरे स्वल्प अनुरोध से ही उक्त संग्रह की विशद भूमिका लिखने का कष्ट कर अपनी सदाशयता का परिचय दिया। एतदर्थ मैं इनके प्रति धन्यवाद-पुरस्सर हार्दिक आभार प्रदर्शित करना अपना कर्त्तव्य समझता हूं।

मैं अपने सहयोगी मित्रों, विशेषतः सुहृद्वर श्रीविनयसागरजी महोपाध्याय एवं पं० श्रीठाकुरदत्तजी जोशी साहित्याचार्य का भी आभार मानता हूँ कि जिन्होंने मुझे सामग्री-संकलनादि कार्यों में अपना अपेक्षित सहयोग प्रदान किया।

आनन्द भवन, चौपासनी रोड, जोधपुर
भाद्रपद शुक्ल ५ सं० २०२२ वि०

गोस्वामी लक्ष्मीनारायण दीक्षित

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वार्त्तागत-विषयानुक्रम

१. वात बगसीरांमजी प्रोहित-हीरां की

	विषय	पृष्ठाङ्क
१.	गणपतिध्यान, उदयपुर-वर्णन, राणा भीम तथा कोटचधीश लिषमीचंद का परिचय एवं हीरां की उत्पत्ति।	१–२
२.	हीरां की बाल्याद्यवस्था का वर्णन, लिखमीचंद द्वारा हीरां की सगाई का टीका रामेसुर ब्राह्मण के साथ सेठ कपूरचंद के पुत्र माणकचंद के लिये अहदाबाद भिजवाना, हीरां का विवाह एवं अहमदाबाद के लिये उसकी विदाई, केसरी बडारण के समक्ष हीरां द्वारा अपना दुःखवर्णन, हीरां का पुनः उदयपुर-आगमन तथा अपनी सहेलियों के समक्ष विरह-दुःखवर्णन, नरवर-(निवाई)निवासी बगसीरांम प्रोहित का वर्णन।	३–७
३.	बगसीरांम का अपने ससुराल बूंदी जाना, बूंदीनगर-वर्णन, बूंदी में प्रोहित द्वारा सिंह की शिकार करना।	८–९
४.	प्रोहित का उदयपुर की ओर प्रस्थान, सहेलियों की बाड़ी का वर्णन, प्रोहित एवं उसके साथी वीरों की वीरता का वर्णन।	१०–१२
५.	हीरां का गौरीपूजनार्थ आभूषण-धारण, उदयपुर की गौरी माता की सवारी का पीछोले-आगमन, हीरां की सहेलियों की शोभा का वर्णन, नील-विहङ्ग अश्व पर आरूढ प्रोहित का अपने सुभटों सहित पीछोलै-आगमन।	१३–१७
६.	प्रोहित एवं हीरां का नयन-मिलन, केसरी बडारण द्वारा लालस्यंध से प्रोहित का परिचय प्राप्त कर हीरां को बतलाना, हीरां का प्रोहित के प्रति केसरी के साथ पत्र-प्रेषण, केसरी द्वारा प्रोहित-कथित उत्तर से हीरां को अवगत कराना।	१८–२०
७.	सन्ध्यासमय-वर्णन, हीरां-महल-वर्णन एवं आभूषण-धारण, हीरां द्वारा प्रोहित को बुलाने केसरी को भेजना, केसरी के साथ प्रोहित का महल की ओर गमन एवं हीरां के साथ सुख-विलास, प्रभात का वर्णन एवं प्रोहित का हीरां को अपने साथ ही रखने का वचन देकर वापस सहेलियों की बाड़ी में आना।	२१–२६
८.	राणा भीम का वर्णन, राणा का बगसीरांम को मिलनार्थ निमन्त्रण तथा	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषय पृष्ठाङ्क

उनका 'जगमन्दिर' स्थान पर मिलने का निश्चय, राणा का जगमन्दिर की ओर प्रस्थान एवं जगमन्दिर-निवास का वर्णन। २७–२९

९. प्रोहित का जग-मन्दिर की ओर गमन एवं राणा के साथ विवाद, राणा का कुपित होना, प्रोहित की राणा को 'बंध' पकड़ने की चेतावनी, 'बाड़ी' में प्रोहित की अपने साथियों से मंत्रणा, शिवलाल द्वारा 'सिवाणी' के राव बहादुर का शौर्य-वर्णन, प्रोहित द्वारा राव बहादुर को अपनी सहायतार्थ बुलावा भेजना, राव बहादुर का अपने सुभटों सहित उदयपुर पहुंचना। ३०–३२

१० राव बहादुर एवं प्रोहित का मिलाप, हीरां द्वारा तीज के मेले में वीरू-घाट पर मिलने का सन्देश-प्रेषण, प्रोहित एवं राव बहादुर का अपने सुभटों के साथ वीरू-घाट पर पहुंचना तथा वहां से मेवाड़ी वीरों को मार कर हीरां को उठा कर पीछोलै के पार जाना, हीरां के बन्ध की सूचना पाकर राणा का क्रुद्ध होना। ३२–३५

११ राणा के वीरों के साथ प्रोहित एवं उसके सुभटों का युद्ध, राव बहादुर-युद्ध, महम्मदयार खां का गीत, प्रोहित-युद्ध, चांदस्यंघ वाले पोता का गीत, प्रोहितजी का गीत, प्रोहित का अपने साथियों सहित युद्ध जीत कर अपने देश 'निबाई' ग्राम पहुंचना, विजयोपलक्ष में राव बहादुर को गोठ देना तथा सिवाणी के लिये उसे विदा देना। ३६–४०

१२ बगसीरांम-हीरां का विलास-वर्णन, वर्षा-शीत-वसन्तऋतु-वर्णन, हीरां का अपने देवर अभैराम तथा प्रेमी प्रोहित के साथ रंग-फाग खेलना, हीरां को महल में बुलाने निमित्त प्रोहित का सन्देश केशरी द्वारा प्राप्त होना। ४१–४४

१३ प्रोहित को केसरी द्वारा हीरां का निषेधात्मक उत्तर प्राप्त होना, मनाने पर भी हीरां की नाराजगी से क्रुद्ध प्रोहित का हीरां से वैमनस्य, केसरी द्वारा दोनों का बीच-बचाव, प्रोहित-हीरां का रस-विलास, बात का उपसंहार। ४५–५०

२. रीसालूरी वारता

१. श्रीपुर के अधिपति सालवाहन के पुत्र राजा समस्त का वर्णन। ५१–५२

२. सूअर की शिकार के लिये राजा समस्त का वन-गमन एवं उसे वहां पर श्रीगोरखनाथ का दर्शनलाभ। ५३–५६

३. श्रीगोरखनाथ के आशीर्वाद से रीसालूनामक पुत्र की उत्पत्ति, रीसालू का ११ वर्षपर्यन्त गुप्त स्थान में धाय द्वारा संरक्षण, राजा भोज तथा मान की राजकुमारियों के साथ रीसालू का खांडा-विवाह एवं राजकुमारियों का अपने-अपने पीहर वापस जाना। ५७–६३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषय	पृष्ठाङ्क
४. रीसालू को अपने गोपनीय रक्षण का कारण ज्ञात होना, उसका पण्डित पर क्रुद्ध हो कर गुरज का प्रहार करना, राजा समस्त द्वारा रीसालू को १२ वर्ष तक देश से निष्कासित करना।	६४–६८
५. रीसालू का गोरखनाथजी के आशीर्वाद से प्राप्त पासों द्वारा जूवे में पराजित अगरजीत राजा की दश मास की (दूधमुंही) बच्ची के साथ विवाह कर विदा होना।	६९–७८
६. रीसालू द्वारा कस्तूरी मृग, सूवा तथा मैना को पकड़ना, उस का 'स्योगवास' गांव से गुजर कर द्वारका नगरी में पहुँचना तथा वहाँ राक्षस को मार कर बस जाना।	७९–८२
७. रीसालू की रानी के साथ 'जलाल पट्टण' के पातसाह हठमल का प्रेम होना, सूवा-मैना द्वारा रानी को समझाना तथा वन में जाकर अवैध सम्बन्ध की रीसालू को जानकारी देना, रीसालू द्वारा युद्ध में हठमल का हनन करना।	८३–१०१
८. रीसालू के समक्ष स्त्रीवियोगी एक योगी की पुकार, रीसालू द्वारा अपनी पत्नी (रानी) को उसे दान में देकर द्वारका नगरी से कूच करना तथा रानी का योगी को चकमा देकर हठमल के शव के साथ जल जाना।	१०२–११०
९. रीसालू का राजा मांन की नगरी आणंदपुर में पहुंचना, सरोवर से पानी का कलस भरती हुई राजकुमारी (पत्नी) से नोंक-झोंक होना, राजा मांन से मिलाप एवं वार्त्तालाप, रीसालू को सुनार के साथ रानी के प्रेमसंबंध की जानकारी प्राप्त होना, रीसालू द्वारा सुनार को अपनी रानी (पत्नी) का दान कर वहाँ से प्रस्थान करना।	१२७–१३४
१० रीसालू का धारा-नगर (उज्जेन) पहुंचना, राजा भोज की पतिवियुक्ता राजकुमारी का चिता में जल कर मरजाने का निश्चय करना; रीसालू द्वारा अपना सप्रमाण परिचय देकर राजकुमारी (पत्नी) के प्राण बचाना तथा पति-पत्नी द्वारा राजलोक में आकर हर्षोल्लास के साथ सुख-विलास करना।	१२७–१३४
११ रीसालू का उज्जेण छोड़ कर उजड़ी हुई धारावती में ५ वर्ष तक रहना, महादेवजी की कृपा से वसती को फिर से आबाद करना, रतनसिंह-नामक पुत्र का जन्म, रीसालू का अकलबादर दीवाण को धारावती का कार्यभार सौंप कर अपने पिता समस्त राजा की नगरी श्रीपुर की ओर अपनी सेना के साथ प्रस्थान।	१३५–१३७
१२ राजा समस्त को किसी अन्य राजा के आक्रमण का सन्देह होना, प्रधान द्वारा पता लगा कर रीसालू के आने की सूचना देना, राजा समस्त द्वारा अपने पुत्र रीसालू की सज-धज के साथ अगवानी तथा पिता-पुत्र-बन्धु-बान्धवों का मिलन एवं वार्त्ता का उपसंहार।	१३५–१३७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. वात नागजी-नागवन्ती री

विषय पृष्ठाङ्क

१. दुष्काल से पीडित प्रजा के साथ कच्छ के स्वामी जाखड़े अहीर का राजा धोलवाला के देश 'बागड़' में जाकर बसना। १४५–१४६

२. भाटियों का 'बागड़' पर आक्रमण, धोलवाला के राजकुमार नागजी द्वारा भाटियों का दमन, तथा खेत में रह कर अपनी खेती का संरक्षण एवं नागजी के लिये उसकी भाभी परिमलदे द्वारा प्रतिदिन वहाँ जाकर भोजन पहुंचाना। १४६–१४७

३. खेत में परिमलदे द्वारा जाखड़े अहीर की राजकुमारी नागवन्ती का नागजी के साथ गान्धर्व विवाह कराना एवं नागजी का नागवन्ती से विदा लेकर पुनः गढ दाखिल होना। १४८–१५०

४. नागजी-नागवन्ती के प्रेम-सम्बन्ध का धोलवाला को ज्ञात होना, विरही नागजी की अस्वस्थता का नागवन्ती के संकेत से वैद्य द्वारा उपचार करना, नागजी-नागवन्ती का एकान्त में पुनः संगम देख कर धोलवाले द्वारा नागजी का देश-निर्वासन। १५१–१५४

५. नागजी का परिमलदे द्वारा संकेतित बाग में ३ दिन तक ठहरना, नागवन्ती को देश-निर्वासन का पता चलना, नागवन्ती का हाकड़े पड़िहार के साथ विवाह, मण्डप में नागवन्ती का परिमलदे के साथ सम्मिलित स्त्रीवेष धारी नागजी से साक्षात्कार होना तथा नागजी का बाग में पुनः आकर ठहरना। १५५–१५७

६. नागवन्ती का चँवरी से उठ कर आधी रात को बाग की ओर भागना, वहाँ भाले पर कटारी खाकर मरे हुए नागजी को देख कर उसका अत्यन्त विलाप करना, वहाँ से धोलवाला एवं जाखड़े द्वारा नागवन्ती को पुनः घर पर लाकर उसे हाकड़े के साथ विदा करना। १५८–१६२

७. मार्ग में नागजी के शव को देख कर नागवन्ती का रथ से उतरना एवं नागजी को अपनी गोद में बैठा कर चिता में प्रवेश करना, बारात का गमन, महादेव और पार्वती के प्रसाद से पुनर्जीवित नागजी का नागवन्ती के साथ पुनः नगर में प्रवेश, वात का उपसंहार। १६३वाँ

४. वात दरजी मयाराम की

१. मंगलाचरणानंतर वात का उपक्रम तथा मयाराम एवं जसां का पूर्वभव-वर्णन के साथ वर्त्तमान परिचय। १६४–१५५

२. अलवर-निवासी शिवलाल कायस्थ द्वारा रामबगस-नामक सूवे को खरीद कर उसे अपनी पुत्री जसां के पास रखना, सूवे द्वारा जसां के पूर्वभव का वर्णन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषय पृष्ठाङ्क

करना, शिवलाल का जसां के विवाह-सम्बन्धी कार्य सूवे को सौंप कर कलकत्ता जाना, सूवे का मयाराम के पास जसां का पत्र लेकर भाँडचावास जाना और वहाँ से विवाह का निश्चयपत्र लेकर वापस जसां के पास आना। १६६–१६७

३. बारात का सज-धज के साथ अलवर पहुँचना, जसाँ द्वारा मालकी दासी को अगवानी के लिये मयाराम के पास भेजना, वार्त्तालाप के साथ मालकी द्वारा मयाराम को तोरण-द्वार पर लाना, बारात की सज-धज का वर्णन, जसाँ-मयाराम-विवाह, मयाराम के डेरे पर जाती हुई जसाँ का सौन्दर्य-वर्णन, मयाराम-जसाँ-मिलन, मालू-मयाराम का हास्य-विलास। १६८–१७३

४. लाधे ब्राह्मण द्वारा प्रेषित दुहे को पढ़ कर मयाराम की 'मुरधर' की ओर जाने की तय्यारी, मालू एवं जसाँ द्वारा उसे वहीं रोके रखने का प्रयास करना, मयाराम का जसाँ पर नाराज होना। १७४–१७५

५. मालू एवं सहेलियों द्वारा मयाराम को मदविह्वल बना कर उसके मारवाड़ जाने का विचार स्थगित कराना तथा उसे रंग-विलास में लीन करना, वर्षाऋतुवर्णन। १७६–१८०

६. मयाराम का जसाँ पर पुनः नाराज होना, मालू दासी का बीच-बचाव के दौरान मयाराम से वाद-विवाद, मालू द्वारा जसाँ के रूपगुण-वर्णन के साथ वर्षा तथा बाग का वर्णन, जसाँ एवं मालू का मयाराम से अलवर छोड़ कर न जाने का आग्रह। १८१–१८५

५. राजा चंद-प्रेमलालछीरी वात

१. 'राजपुर' ग्रामवासी रुद्रदेव रजपूत एवं उसकी दोनों पत्नियों का परिचय, पत्नियों के ऐन्द्रजालिक चरित्र से भीत रुद्रदेव का नौकरी के बहाने ग्रामान्तर-गमन विचार। १८६–१८७

२. रहस्यवित् पत्नियों द्वारा पाथेय (भाथा) के रूप में अभिमन्त्रित लड्डू देकर रुद्रदेव को विदा करना, रुद्रदेव का किसी तालाब के तट पर रुकना तथा वहां उपस्थित याचक ढोली को भोजनार्थ लड्डू-दान, लड्डू के खाते ही ढोली का गधा बन कर 'राजपुर' गांव पहुंचना, रजपूतानियों द्वारा मंत्र-बल से गधे को पुनः ढोली बनाना तथा स्वयं को घोड़ी बना कर रुद्रदेव का पीछा करना। १८८वां

३. रुद्रदेव का 'देवगढ़' पहुँच कर एक अहीरणी के घर पर शरण लेना, अहीरणी का नाहर-रूप देख कर रजपूतानियों का पलायन, भयचकित रुद्रदेव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषय पृष्ठाङ्क

का 'देवगढ़' से राजा चंद को 'अंभो नगरी' जाना, दैववशात् वहाँ की राजकुमारी के साथ उसका विवाह होना। १८६वाँ

४. सांवली (चील) रूप में आती हुई रजपूतानियों के भय से रुद्रदेव का मूर्छित होना, राजकुमारी द्वारा मूर्च्छा का कारण जानना तथा 'बाज' रूप नेवरों द्वारा रजपूतानियों का हनन, जादू से त्रस्त रुद्रदेव का महल से चुपचाप भाग निकलना, राजा चंद द्वारा उसकी तलाश कर उससे भय का कारण जानना। १६०वाँ

५. राजा चंद द्वारा रुद्रदेव के समक्ष आप-बीती कहानी का उपक्रम, चंद को अपनी माता एवं रानी के साथ 'गिरनगरी' के राजा का अवैध-सम्बन्ध तथा जादुई चमत्कार का पता चलना, गिरनगरी की राजकुमारी प्रेमलालछी के साथ राजा चंद का असंभावित विवाह। १६१–१६२

६. रानी (परभावती) द्वारा राजा चंद को सूवा बना कर गुप्त स्थान में रखना, प्रेमलालछी द्वारा बराती किन्तु बनावटी पति को महल से बहिष्कृत कर स्थानापन्न किन्तु असली पति (चंद) की तलाश में तीर्थ के बहाने 'अंभो नगरी' जाना। १६३–१६४

७. नगरी की रानी एवं उसकी सास द्वारा स्वागतार्थ समाहूत प्रेमलालछी का महल में पहुँचना, चतुर दासियों द्वारा पिञ्जरबद्ध शुक (चंद) को महल से पार करना, प्रेमलालछी द्वारा शुकरूप चंद को स्वस्थ कर उसे अपना परिचय-दान, सास-बहू का चीलरूप धर कर चंद को नेत्रहीन बनाने का असफल यत्न, प्रेमलालछी द्वारा सास-बहू का हनन, चंद का अपने दामाद रुद्रदेव को आश्वस्त कर उसे अपने पास यथासुख बसाना। १६५–१६६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बात बगसीरांमजी प्रोहित हीरांकी

◈ ◈ ◈

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ बात बगसीरांमजी प्रोहित हीरांकी लिष्यते

सोरठा– डसण ऐक सुंडाल, बरदायक रिधसिध-बरण ।
विद्या बयण बिसाल, आपीजै अषिर उकत ॥ १

गाथा चोसर– डसण येक गजमुंष लंबोदर,
धरणी कनकमुकट फरसीधर ।
पीतंबर सोभा तन वुपर,
बिनांयक दायेक विद्या बर ॥ २

दोहा– चाहत चातुर अधिकचित, लेषत सुणत लुभात ।
जथा अनुक्रम सम जुगत, वरणुं अद्भुत बात ॥ ३

अथ उदय्यापुरको बरनन

कुंडलिय्या– उदिय्यापुरकी छब अधिक, संपति नगर समाज,
घर घर परजा लषपती, राणों भीम सुराज ॥
राणों भीम सुराज, तपोबल रंगसुं,
सगता चुंडा साथ, लियां दल संगसुं ॥
उजल कोट उत्तंग, इसी बिधि वोपियां,
जाण क लंकाकोट, कनकमय जोपिया ॥ ४

दरवाजा बणिया दुगम, कीना लोहकपाट ।
एक एकतैं आगला, थटै सुभटां थाट ॥
थटैं सुभटां थाट अनोषा थाहरां,
नरनायेक बलबीर पछाड़ै नाहरां ॥
किरमाला जुध कीध अरिंदां कालसा,
जाण क क्रोध अभंग जुटै जम जालसा ॥ ५

वजैं त्रंमक धौंसर बजै, नोबति सबद निराट ।
मदमत षंभु ठांण मय, थटैं गयंदां थाट ॥
थटै गयंदां 'थाट' क फोजां थांहणा,
बणैं तुरंगा बाल मृगाटां बाहणां ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऊट प्रचंड अनेक अग्राजैं उधरैं,
घणहर भादुमास क जाणें घरहरैं ॥ ६
चहुँ तरफां बणि चौहटां अटा वुतंग अषंड ।
घुमडे जांणें घनघटा दमक छटा छवि-डंड ।
दमक छटा छबिडंड पताका देषिया,
पटा हाट व्यौपार जुहांरां पेषिया ।
आभुषण नर नारि ईसी बिध वोपिया,
जाण क सुरपुर लोक इधक छबि जोपिया ॥ ७
पीछोलाको पेषबो मानसरोवर मोज,
पांणी भरै छै पदमणी चंदबदनी मुष चोज ।
चंदबदनी मुष चोज हंसगति चालबो,
हाव भाव गावंत हबोलै हालबो ॥
तार जरी पोसाष बीच तन तेहड़ी,
इंदपुरी उणियार बिराजै येहडी ॥ ८
बाग अनेक बावड़ी अदभुत फूल अपार,
कोयल मोर चकोर पिक जपत भवर गुंजार ।
जपत भवर गुंजार गुलाबां जूथमैं,
लता फूल लपटात तरोवर लूथमैं ॥
अंबा चंबा सुगंध बिराजै येहड़ा,
जाणे क बंदराबन बसंत छबि जेहड़ा ॥ ९

दोहा– ऊदयापुर राजैं ईसो, राणों भींम सुरिंद ।
कोडीधज जिणरै कैनैं, चावो लिषमीचंद ॥ १०
लिषमीचंद किरति लीयें, दे दे दोलत दाव ।
भाट गुणीजन भोजिगां, पावै लाष पसाव ॥ ११
चैत मास पष चांदणें, सातम तिथि सकाज ।
अर धनिसा बृसपत अवर, सुक (भ) नक्षत्र पुषराज ॥ १२
उण पुल कन्या अवतरी, पूरब लेष प्रताप ।
चित बृत लिषमीचंदकै, उछव घणों अमाप ॥ १३

छन्द पधरी– उपजी कोडीधज घरि आय, लषमोचंद मन उछव लगाय ।
गई निसा भईयो परभात, त दन पंचदुण बीते दिषात ॥
सेठ सबै जोतिस बुलाय, सुभ बोप्र लग्न जोये सुभाय ।
मिलि गावत कुलतिय तांन मांन,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बीच आगण स्यंघासण बणाय, आभूषण कर त्रिये बैठ आय
अंतर फुलेल चिरचंत अग, सुभलियां किनका गोद संग ।
अदभुत समं मंगल भये आंण, बांजंत्र बजे अनेक बांण ।।
द्वज बिप्र मंत्र आहुत दीन, किनका नांम हीरां सु कीन ।
चणक लेष छबि बीज चंद, बालक मरालकन रूप बृंद ।।
नागरी अंग सोभा नवीन, कनकनकै केल दोय पांन कीन ।
भई सात बरसमैं बालभाव, बिधि बिधि आभूषण तन बणाव ।।
अदभुत लसै छब गवर अंग, पदमणि कोमल चंपक प्रसंग ।
ढुलड्यां रमैं संग सषी ढूल, दमकंत अंग जरकस दकूल ।।
अग्यातजोवना भाव एम, नह जाणत जोबन आप नेम ।। १४

दोहा– सात बरसांकी समय, गोरी मुगध अग्यात ।
जोवननै नहै जाणियो, बरण सुणज्यौ बात ।। १५
कुच ऊपजे काची कली, हिवडै लागौ हाथ ।
मुगधा जाण्यो रोग मन, बिसर गई सब बात ।। १६
कह्यौ आपकी धायकूं, कीयो बीरांम अकाज ।
काल हुतैं काची कली, भई सुपारी आज ।। १७

धाय वचन

दोहा– हीरां चिंता परहरो, ऐ तो कुच ऊपजाय ।
देषैं जाकै दूषसी, थांकै पीड न थाय ।। १८
हीरां चिंता परहरी, धाये बचन उर धारि ।
सुघड सहेली साथमैं, बिहरत हंस बिहार ।। १९
बालकलीला बालपण, बीत्यो षेलत ब्रंद ।
हीरां तन सूरज हरष, आयो जोबन ईंद ।। २०

१ बात– य तैं हीरांके सरीर ऊपर सूरजरूपी जोबन आयौ छैं। हाव-भाव दरसायो छै। पाछैं सूरजपांख जागी छै। मुष शोभा लागी छै। सूरजकी अरणोदै अवरमैं भ्यासी छै। जोबनकी अरणोदै मुष ऊपर प्रकासी छै। सूरजकी उदै रषीसुर ध्यांन करण लागा छै। जोबनकै उदै ऊर ऊत्तंग जागा छै। सरीरमैं रातिरूपी बालकपणो बिलायो छै। दिनरूपी जोबन आगो छै। कवल-रूपी हीरांका नेत्र फूल्या छैं। भव[र]कवल फूल जाणकर भूल्या छै। हीरां मुगधा ग्यातजोबनां कहावे छै, दिल बीच चुंपचतराय भावै छै। अब नोंष-चोषकी बातां बणावै छै। सनेहकी चुंप जगावै छै।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोहा– चवदह् बरसै अधिक चित, जोबन तणी जिहाज ।
जोवत अब टेढ़ी निजरि, गह् चालत गजराज ।। २१
मधूर बचन छबि चंद मुष, ऊमगे ऊरज ऊतंग ।
लीलंबर ढाके ललित, सुभ कंचन-गिर-शृंग ।। २२
ऊडघन अंबर छबि अधिक, वोपत अंग अनंत ।
मानौं बदल मेघके, कंचनगिर ढाकंत ।। २३
ललित बंक छबि लोयणां, अति चंचल उभकात ।
अंजणतैं अटकायिया, अबैं नतर उड जात ।। २४

२ **बात–** अब माइतां व्यावकी हौंस कीनी छै । रामेसुर ब्राह्मणनै आग्या दीनी छै । रामेसुर अठासुं गुजरातनै ध्यायौ छै । अहृमदाबाद नगरमैं आयौ छै । तदि कपूरचंद सेठ सुणि पायो छै । सेठ आपका आदमी षिनाये रामेसुरनैं बुलायौ छै । प्रोहितको घणो सिसटाचार कीनौं छै । टीको बंधाय लीनौं छै । टीको पांचैकौ सावो थापि दीनौं छै । ब्राह्मणसूं व्यावकी ताकीदी कीनी छै । कड़ा मोती सीरोपाव बीदा दीनी छै । उदैपुर आय ब्राह्मण बधाई दीनी छै । लिषमीचंद हीरांको व्यावकी ताकीदी कीनी छै । मांणिकचंदकी जांन उदैपूर आई छै । कलावत भगतण्यां गावै छै । नेगदार नेग पावै छै । यौ बींदराजा तोरण आयो छै । हीरांनैं हीरांकी भाभी कहै छै—

भाभी वचन

दोहा– भाभी इम कहियो बयण, नणद सुणों छो नेम ।
मन कर देषो बींदमुष, तोरण आयो तेम ।। २५
आभूषण भमकत ऊठी, अंग दमकत पटवोट ।
बांके द्रगन बिलोकतां, चमक बाणकी चोट ।। २६
पंकजमुष पर लीलपट, गवणत मनु गयंद ।
मानुं बदल मेघको, चालत ढाक्यौ चंद ।। २७
बनड़ाको देष्यौ बदन, हीरां भई बिहाल ।
मानुं होय गइ कुंद मन, मुरभत चंपामाल ।। २८
दुलही बनडो देषतां, ऊलही उर बिच आग ।
संगम देषो साहिबो, कीनों हंस र काग ।। २९
हीरां मन व्याकुल भई, आयौ लेष अलेष ।
कनकथालमैंछेद करि, मारी लोहां मेष ।। ३०
हीरां मन वाकुल भई, आयो लेष अनंथ ।
चात्र हीरां चंदसी, केत-राहासो-कंथ ।। ३१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फीकै मन फेरा लीया, अंतर भई उदास ।
आंष मीच रोगी अवस, पीवत नीम प्रकास ।। ३२

३ **बात**– तीसरै दिन समठुणी करि जाननैं विदा कीनी छै । हीरांनै रथमैं बठाण केसरी बडारणनैं साथ दीनी छै । जान अहमदाबाद आई छै। कपूरचंद घण हेतसु बधाई छै । अठै हीरां घणी बेषातर रहै छै । दुष-सुषकी बात केसरी बडारणिनै कहै छै । ''सुणि केसरी, असो षांवेंद पायौ छै । कपूरको भोजन कागनैं करायौ छै । गधाड़ारै अंग पर चंदन चढायो छै । अंधकै आगैं दरपण दीषायो छै । गूंगेके आगैं रंगराग करायो छै । नागरवेलको पांन पसुनैं चबायो छै ।" यूं हीरां दन दूभर भरै छै । पीहर आबाकी आतुर करै छै । माणिकचंद कोठी सिधायो छै । पीहरयां आणौं मेल हीरांनैं ल्याया छै । सायनी सहेल्यांका झुलरा मिलबानै आया छै ।

दोहा– मोद न हीरां कुंद मन, बदन रह्यौ बिलषात ।
सनमुष आये सहेलिया, विधि विधि पूछत बात ।। ३३

हीरां बचन

सुष-सज्या समझै नहीं, गोझु बुधि गवार ।
बिडरूपी मुष दुर्बचन, तिनको मुझ भरतार ।। ३४

सहेलियां बचन

दोहा– हीरां चिंता परहरो, करो मतो मन कुंद ।
गावो मंगल गवरज्या, वा करसी आणंद ।। ३५

४ **बात**– हीरां मनमैं चिंता न कीज्यो । चित लाय र गौरि पूजिजे । आपकै पुज्यांको दूणो फल थासी । आप मनमैं चावस्यौ जीस्यौ बर आसी ।

दोहा– हीरां तणी सहेलिया, दुरस दिलासा दीन ।
वीसराई उण बातनैं, नागर ग्यात नवीन ।। ३६
सषी बचन पणि विध सुण्यौ, चिंता भई निचंत ।
अति सुषदायक अंगमैं, हीरां मन हुलसंत ।। ३७
हीरां जोवत मन हरष, मोहत तन सुकमार ।
गुणसागर गजराज गति, अदभुत रूप अपार ।। ३८
चाहत जोबन अधिक चित, मदन भई ऊनमत ।
हीरां डोलत हंसगत, सुघड सहेली सथ ।। ३९
छकी हीरां मदन छकि, वण बुध सदन वीसेष ।
चंद बदन मुलकण दमक, रदन तडतकी रेष ।। ४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५ **वारता–** अब हीरां मदकी छाकमैं छाक रही छै। मीठीसी वाणी बोल मुषम कही छ। चंदबदनीकै अंग सोभा लागी छै। आपको बदन दरपणमैं दिखावै छै। बिधि बिधि रंग पोसाषां बणावै छै। हीरांकै रूपकी समोबड कुण करै। मुनियाको मन डिगै। अपछराको वालो भोलो पडै छै। जोबना छांकमै डोढी निजरी जोवै छै। चंदमुषी हीरां चकोरसषी मोवै छै। सुंदर अलबेली हीरां अतिरूप छाजै छै। कामकंदला क ऊरबसी क रंभादिक राजै छै। सषियांनके बिचि हीरांको मुषारबिंद छै–जांणै तारा मंडलमैं पुन्यूंको चंद छै। केताकै दिन तो हीरांनैं सहेलीयां बिलमाई छै। यु' करतां बरषा रति आई छै।

अथ हीरांको विरहवर्नन

दोहा– कामातुर हीरां कहै, रबि राह बिहरंत।
चाहत चातुर अधिकचित, आतुर होत अनंत ।। ४१
हीरां मद आतुर हुई, चित प्रीतमकी चाह।
विषधर ज्यु' चंदन बिनां, दिलकी मिटै न दाह ।। ४२
हीरां चाहैं छैल चित, जोबन हुंदो जोर।
किरणालो चाहै कमल, चाहै चंद चकोर ।। ४३
पुरुष प्रीत हीरां तलफै, दुषद हीयो दाहंत।
ऐसैं बुंद आकासमैं, चात्रग मुष चाहंत ।। ४४
हीरां सूती महलमैं, सषीयां तणै समाज।
बिरषा ऋति आई विषम, गगन घटा धुन गाज ।। ४५
घणहर जल वरषत घुरत, चमकत बीजल चोज।
हीरां रोकी महलमैं, फिर गई सावण फोज ।। ४६
चमकत बीज अचाणचक, झिझकत उठत जगात।
हीरां डरपत महलमैं, थरर थरर थररात ।। ४७
मदनातुर मेरो मरण, दुसतर वृषा दूसार।
कर ऊंचो कर कहत है, हर हर सरजणहार ।। ४८
सूती सहै सहैलिया, गहरी नीद गरद।
दरद नही छै दूसरां, दुषैं जिका दरद ।। ४९
वरषत घणहर वीषरचौ, उजल्ल भयो अवास।
उडुगन जुथ अकासमैं, पूरण चंद प्रकास ।। ५०
चमकण लागी चंद्रिका, दमकत षड्ग दूधार।
ऊडगन लगे अगनिसे, विष सम लगत बयार ।। ५१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मोर-सबद लागे विषम, कोयल बोलै कराल ।
चात्रग विष बाणी चवत, हीरां रैंन बिहाल ।। ५२
घणै परकार हीरां अठै, दुभर भरै दिवस ।
तो लायेक सषिया तबै, आसी पीवें अवस ।। ५३
चाहत हीरां छैल चित, उमगत मदन अरोड ।
भावै मन रसीयो भवर, जोवत अपनी जोड़ ।। ५४

अथ न[र]वरको प्रोहित बकसीरांमजी वरननं

ढोला जकै समै हुवा

दोहा– अठै निवाई उपरैं, राजत बगसीरांम ।
प्रोहित जग मारै प्रगट, कबियां पूरण काम ।। ५५

छंद झमांल– प्रोहित बगसीरांम भमर छै कीतको,
बरदायक अरिजीतण बाटण बृत्तको ।
घोडा भड घमसाण क थाटां घेरणो,
जुटै नगी समसेर अरिंदा जोरणो ।। ५६

कुंडलिया– साथ समाजत घण सुभट, अग्राजत आथांण,
आठै विराजत ईद सो, राजत प्रोहित रांण ।
राजत प्रोहित रांण, तपोबल रूपको,
भड घोडा घमसांण, समोबड भूपको ।
बगडावत बरबंक आंकण वारको,
मालेम बगसीरांम चहुँ दिस मारिको ।। ५७
प्रोहित बूंदी परणियो, रसियो बगसीरांम,
सावण तीजां सासरै, कीनौ आवण कांम ।
कीनौ आवण कांम महोला कोडका[1],
जंगम षडे अपार लीया भड जोडका ।
देषि झरोषै नारि हरष दरसावियो,
आज अवीणो कंथ क बूंदी आवियौ ।। ५८
तीज तणौं उछव तटै बांचौं घणौं बषाण,
निरभै गढ बूंदी नगर, राजै हाडा रांण ।
राजै हाडा रांण अरिंदां रीसका,
अहंकार दुज हणौं तमोगुण ईसका ।

---

१. बूंदी नगरके पास कोडक्या नामक ग्राम है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कबियां लाष पसाव क छंदा कारणां,
मरदां हंदा मरदै क दैणा मारणां ।।५९

अथ बूंदी बरणन

दोहा– निरमल गढ बूंदी नगर, झुक परबत चहुँ ओर ।
अदभुत छबि चहुँ तरफ अति, मीठा बोलत मोर ।। ६०

छंद जाते उधोर– अति मीठा बोलत्त मोर, सुभ करत्त कोयेल सोर ।
बण बिबध बूंदीय बाग, लत लूंब तरवर लाग ।।
छबि नंदी सागर छंद, उलसंत जल अरबिंद ।
वोपत नीर अथाह, गवणंत क छिव थाह ।।
तरकंत नीर तरंग, सुर घोष दादुर संग ।
तट बाग छबि उत्तंग, ब्रछि बिबिधि बौरंग ।।
अदभूत फूल अपार, जुथ भवर करत गुंजार ।
सरसंत फूल सूगंध, मिलि पवन सीतल मंद ।।
मंजरी फल दर मोर, चलबौल करित चकोर ।
अत्यादि षग धुनि अंग, प्रति फूल फूल प्रसंग ।।
बण होद सागर ब्रंद, मिलि नीर मधु मकरंद ।
जल भरत नारीह जुह, सिगार हार समूह ।।
हालंत हंस हुलास, पद कनक नूपर पास ।
मुष चंद सोभत मंज, कर फूल लोचन कंज ।।
सोहंत कंनक सिगार, पोसाष चीर अपार ।
वण हीर हार बिहार, रुचि निपट छबि नर नारि ।।
बनखंड अबर बिराज, मिल सूर स्यंह समाज ।
ओ घाट परबत अंग, उत्तंग श्रंग अभंग ।।
षलकंत झरना षाल, नीझरत जल परनाल ।
अदभूत गिरंद अनेक, ऊं बिचैं परबत येक ।। ६१

दोहा– उण गिरवरपैं आयेकै, केहर तंडव कीन ।
घणहर मांनु इंद्रधन, भादैव जलधर मीन ।। ६२
माणत पदमणि महलमैं, रशियो बगसीरांम ।
सुष सज्यामैं सांभली, केहर तंडव ताम ।। ६३
सुष सज्या तंडव सुणी, मोहित घणैं प्रकार ।
आय बणी, रमस्यां अबै, सिघां तणी शिकार ।। ६४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंद पधड़ी– भयो प्रातकाल परकास भांन, बन पंषी जन बोलत्त बांण ।
प्रोहित बोल्यो जब ईण प्रकार, सुरमां क थाट चढस्यां सिकार ॥
ताता अपार प्राक्रम तुरंग, कूदंत छैवि जावत कुरंग ।
चढि चले प्रौहित रांण चंग, अत बल बीर जोधार अंग ॥
बण सुभट थाट हैमर बणाये, आषेट रमण कीनौ उपाये ।
घमसाण चले घण थाट घेर, बाजंत घाव नीसाण भेर ॥
चमकंत सेल पाषर प्रचंड, दमकंत ढाल नीसाण दंड ।
ध्रमकंत घोड षुर धरण धज, रमकंत गगन मग चढीये रज ॥
बनषंड एक उद्यान बाग, बन सूर स्यंघ सांबर ब्रजाग ।
झुक झोम तरोवर घेरि झुंड, पेषियो सिंघ प्रोहित प्रचंड ॥ ६५

सोरठा– केहर येक कराल, बनषंडमैं देष्यौ विहद ।
जगमग आष्या ज्वाल, पूछ कीया सिर ऊपरैं ॥ ६६
घोडा चड घमसांण, आय थया सहै येकठा ।
बिधि बिधि बोलत बांण, बतलाईजै बाघनै ॥ ६७

दोहा– केहर बतलायो कनां, थट घोडा भड थाट ।
बतलायो अब बाघनैं, नांगी षाग निराट ॥ ६८

छन्द पधडो– बतलायो ईम केहरि बडाल, कोप्यो क आय जमजाल काल ।
जग्यो क सोर ढिग अगन जोम, घडहडो घीरत घण अगन धोम ॥
दगी क तोप बुदडा दोज, विलगी क सो घणघर कडक बीज ।
छुटचौ क बांन अरजन छोह, मंडल तारा टूटचौ समोह ॥
दव्यौ क पुछधार सरप हुठ, जग्यौ क नेत्र शिव जटाजुठ ।
जोगंद अषाडै पर जगाय, यण भांति स्यंघ सनमुष आय ॥
हलकार प्रोहित कोप कीन, ललकार म्यांन तरवार लीन ।
पेष्यौ क गज धरै अनंङ पष, धायो क बाज चीडकली यधक ॥
अति जोम पीरोहत कर अपार, दमकंत तडत बाई दुधार ।
कटचौ क शीस केहरि कराल, फटचौ क मांनु तरबूज फाल ॥ ६९

दोहा– प्रोहित कीनो जग प्रगट, सिघां तणीं सिकार ।
बूंदी गढ़ आयो विहसि, सरणां ईसा धार ॥ ७०
अतरैं अदभुत आबियौ, तीजा तणौं तिवार ।
अलबेली आभूषणां, निकसी कर कर नार ॥ ७१
सावण घणौं सिरावियो, रसीयो बगसीरांम ।
निरभै गढ़ बूंदी नगर, तीज महोला तांम ॥ ७२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कर जोडे येकण कह्यौ, रसीया प्रोहित रांण।
उदिय्यापुरकी गणगवर, बाचीजै बाषाण ॥ ७३

प्रोहित बचन

प्रोहित ईण बिधि पूछियौ, बेहद गवर बषांण।
राय भाण चारण रसक, बोल्यौ तब यण बांण ॥ ७४

चारण बचन

दोहा– जगमग आभूषण जडे, भांमण अति रसभीन।
उदयापुरमैं रूप अति, नागर ग्यात नबीन ॥ ७५
ऐक ऐकतै आगली, निपट सलूंणी नारि।
उदयापुरमै सब यसी, अपछरकै ऊणियार ॥ ७६
चहुं तरफां डगर अचल, कीनां सिखर कंगूर।
बाक बिचै सागर यसो, पीछोला जलपूर ॥ ७७
प्रगट महल जलतीर पर, सोहत सहर समाज।
गवर अग्र मिल सुभटगण, बण ठण षेलत बाज ॥ ७८

प्रोहित बचन

दोहा– बोल्यौ प्रोहित बेलिया, सुणज्यो सब सिरदार।
ऊदयापुर चाला अबैं, बायक कह्यौ बिचार ॥ ७९

६ **बात–** प्रोहित बगसीरांमजी सु साथिकांको बचन–अब प्रोहितजीनै साथका कहै छै। ऐक अरज सुणीजै। चैन बुझाकड चांदसिंघजीनै बुझ लीजै।

चैनस्यंघ बुझाकड चांदस्यंघजीको बचन

दोहा– चैन बुझाकड मुष बचनै, प्रोहित पुछै प्रमांण।
उदयापुर चालो अवस, देषांला र दीवाण ॥ ८०
चांदस्यंघ बोल्यो बचन, प्रोहित सुंणू प्रकार।
उदयापुरकी गणगवर, परषांला नर नार ॥ ८१
ऊदयापुर चढियो अवस, बिबधि निसांण बजाय।
गवरचां देखण बागमैं, ऊतरीयो छैं आय ॥ ८२
वण सहेली वाडियां, बिध बिध फूल बणाय।
ऊठै प्रोहित ऊतरचौ, उदयापुरमैं आय ॥ ८३

चन्द्रायणो– ऊदयापुरमैं आयकैं प्रोहित ये रसो,
घण थट भडिजा सुभट समंदा घेरसो।

भवेंराईका पेच मगेज भ्रमाडिया,
बिध ऊतरियो आय सहैली बाडियां ।। ८४

कुंडलिया– बणी बिछायत बाडियां जाजमैं गिलम जुहार,
आप दूलीचां उपरैं अदभुत षुलै अपार ।
अदभुत षुलै अपार दूलीचा वोपिया,
जाणं क पचरंग फूल अपारा जोपिया ।
कीमषाप तकिया कसमंदा खूब है,
संजीवणकी जडी क जोत सबूब है ।। ८५
उण गदीक ऊपरैं राजत बगसीरांम,
मिल घण थट दोहूँ मिसल कीनां सुभट सकांम ।
कीनां सुभट सकांम दुसासण क्रोधका,
जग जीवण है भीम गदाधर जोधका ।
जबर बीर छाजंत अरिंदा जालका,
किरमाला घमचाल समोबड कालका ।। ८६
राजत बगसीरांमकै अभंग सुभ[ट]थट येम,
छक छायल भुजबलमछर जबरायेलस्यंघ जेम ।
जबरायेलस्यंघ जेम भभका सोरका,
जबरायेल कर षीज भुजंगम जोरका ।
भागणकी पणव्रत उपासी भांणका,
मोजां[जों]मंन महरावण क रावण मारका ।। ८७

दोहा– सुभटा जसा समाजमैं, राजैस प्रोहित-रांण ।
बणीं सहैली बाडिया, बांचूं कर बाषांण ।। ८८

अथ सहैलियां बाडीको बर्णन

७ **बात–** बिध बिध सहेली बाडियां छाजैं छै । आंबा, खजूरि, केला, नारेल, राजे छै । पिसता, छूहारा, दाष, बिदांमा समैकत की छै । चंपा, मरवा, मोगरा, जुही, जाये केतकी छै । बैवलसरी, नींबू, नारंगी, भंबीरी जुह छ । रेशमी, गुलाब, गेंद, केवड़ा, समुहै छे । और लीलडंबर तरोवर पर बेलिडियां लुंम रहै छै । सीतल सुगंध मंद तीन प्रकारको पोंन बहै छै । तरबेली सुगंध फूल मंजुरी फूलै छै । ज्यांकें उपर भवर गुंजार सबद झुलै छै । बाग बन कुंजमैं मयूर छत्र मंडै छै । नाटक निरतक ऊचै सुर तंडै छै । अंबा डाल कोयेलियां टहुका करै छै । मोहणीं सी बाणी बोल मन हरै छे । चकवा, कपोत, कीर, षग धुंन सुणें छै ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मांनु कांमदेवकी पोसाल बालक भणै छै। अनेक होद, सरोवर, दादर, मीन जल झूलै छै। तापें कमौद कवल फूलै छै। सुगंध पर सोहै छै। भमर मन मोहै छै। उण बाडीमैं अनेक महिल चत्रसाली छै। जरीका पडदा झरोषा गोष जाली छै। ऊण बाडियांमैं प्रोहित माजुम कसुंमां करै छै। साथमैं दारु दुवाराका प्याला फिरै छै। दूणां अमल चोगणां चढावै छै। ऊगाव कर सोगुणां जोसमैं आवै छै। तीरमदाज बंदुकची हृदफां उतारै छै। बालबंधी कोडी पर तोर गोली मारै छै।

अथ रजपूतांका बषाण

दोहा– षल-षायक रणषेतमैं, बरदायक मजबूत।
राजा बगसीरांमकै, पासि असा रजपूत ॥ ८९

बात– जिके रजपूत कैसा, जंगमैं मजबूत, प्रथीराजका सामंत जैसा, आकासकी बीज, कना जमराजकी षीज, आपका सीस पर षेलै, पडता आसमानकूं झेलै। केहरका प्राक्रम सोरका भभका, वाराहका जोर, जलालियका धका, कालीका कलस, सतीका नारेल, सेरुंका षेल, नंगी समसेर विजै जैतका प्यासी छै तीसुं आवधुका अभ्यासी। जोधविद्याका सागर, रजपूतीका आगर। दातासुं दातार, झुझांसूं झुझार। कीरतका कोट रजपूत कहियै, बगसीरांमका सुभट असाइ चहियै।

दोहा– सोहै जेहा जेहा सुभट, तेहा तेहा सिरदार।
वीरभद्र रजपूत बिध, प्रोहित रुद्रप्रकार ॥ ९०

अथ प्रोहितजीको वरणंन

८ बात– प्रोहित पण कैसा, दातार करण जैसा। करताका बीद प्रथी पर कहावै, षगांकी षैराते षावै र षलावै। भीमका धमचाल, कैबियांका काल। अरजुनका बांण, दुरज्यौधनका माण। रसबिलासका यंद, वचनका हरचंद। समेरका भार, कूमेरका भंडार। अनेक षानदानवला धूंकला उडावै छै, उदैपुरका बागमैं वारां बजावै छै।

दोहा– वणौं सहेली बाडियां, घोडा भड घमसांण।
अलुधो उछव रमैं, राजै प्रोहित रांण ॥ ९१
उदयापुरपति ईंद सो, निरभय सुष नर नारि।
अब आई छै गणगवरै, उछव नगर अपार ॥ ९२
हीरांकै आयो हरष, सषियां तणौ समाज।
अलबेलि ऊचारीयो, ऊछैव करस्यां आज ॥ ९३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आभूषण करस्यां अवस, हिवड लागो हेत ।
गहरीं पुजां गवरनै, मन वच करय समेत ।। ९४
सब सोलै सणगार है, मंजण आद प्रमाण ।
अब हीरां आरंभियो, बांचु कर बाषाण ।। ९५

अथ हीरां गवर पुजण आभूषण आरंभते–

छंद भूजंगी प्रायात– पटं बैठ हीरां सनानं प्रसंगं, अबीरं गुलाबं धरे नीर अंगं ।
झलै नीरकी बूंद केसं झरंते, षुलै रेसमी डोर मोती षिरंते ।। ९६
किये फूल सप्पेद बेणीं क रंगे, लसै नागणी दूधके फेण लंगे ।
बणै बादलं स्याम पाटी बिचित्रं, षुलै मांग मोती क व्योमं नषत्रं ।। ९७
पुणै मांगकी ओर सोभा प्रकारं, धसैं नीलके पबै मु गंध धारं ।
रसीली अलष्षं बणै स्याम रंगं, झुक(कै) रूपकी रासि छोटे भूजंगं ।।९८
उदारं विसालं बण(णै) भाल अंगं, तटै षेल चोगान काम तुरंगं ।
बिराजै गुलालं किये भाल बिंदं, चपेटी मनू रोहणी अंग चंदं ।। ९९
बणै नैण भूहार भालं विचत्रं, पडै दीपको काजलं हेमपत्रं ।
बिचित्रं बणी भहकी रेष बंकं, धरचौ कामदेवं कर(रां)मे धनंकं ।। १००
लसै लोचनं षंजनं मीन लीला, रचै पंकजं फूल सोभा रसीला ।
सुषं सागरं द्रग्ग पलकं सुघाटं, किधूं पेमके रूप लज्या कपाटं ।। १०१
दुत(तै) लोचनं काजलै रीष दीनें, बणैं कामदेवं विष(षै) वाण मीनै ।
बणै नासिका कीर तुंड(डे) विमोयं, लसंते किधूं तिष्षणी दीपलोयं ।।१०२
बिचैं नासिका अग्र मोती बिराजै, मनू राजकै द्वार शुक्र(क्रं) समाजै ।
बणै होट नीके सुरंगं बिसालं, लसै बिद्रमी कोमलं व्यंब लालं ।। १०३
दुतं दंतकी दाडिमी हीर दांणं, बिचित्रं पकं मोहणी मंत्र बाणं ।
किये मंजण गोर सोभा कपोलं, उजासंत हेमंत बक(क्कं) अमोलं ।। १०४
मिण(णी) माणकं हेम ताटंक मंडै, चलै भाण दोयं जगा जोत चंडै ।
लसै चंबुका बिंद जाडी लपेटयौ, चितै दूजकै चंद भ्रंगी बसटयौ ।। १०५
मुष(षं) मंडलं जोति सोभा बिमोहं, सुधासागरं पूरणं चंद सोहं ।
फबै स्वासक(का) बासनां कंज फूलै, झणंकार मत्तंगणं भ्रंग झूलै ।। १०६
बणी कंठ सोभा बिसालं बसेषा, रुचै नीलकंठं कधू संषरेषा ।
जुतं पोतकंठं मणी नील झूंबी, लसै मेरश्रृंगं नदी स्यांम लूंबी ।। १०७
बलै कंठकी सोभनां कोण भासं, पिये पांनको पीक लालं प्रकासं ।
उरज्ये प्रकासंत सोभा असंभं, विधू यम्रतंग पूरण हेमकुंभं ।। १०८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुच(चं) कंचुकी रेसमी तारकंदं, गहीरं मनो कुंभ ढाक्यौ गयंदं ।
बरं कोमलं सोभ बाहू बिराजै, छबीले मनूं कंजके नाल छाजै ।। १०६
फबै बांहैं(ह) बाजु(जू) मिण(णी) जोति फूलै, झुक्यौ चंदनी साषपै नाग झूलै ।
विराजै नगं सोवनी चु(चू)डबंधं, फबै मोहणी प्रांणकै कांम फंदं ।। ११०
जुं(जु)हारं मिणी पुंचिका हाथ जोपै, अघ(घै)पंकजं मंडलं भ्रंग वोपैं ।
कली चंपकी आगली सोभ कीनै, नषं उज्जलं चंद सोभा नवीनै ।। १११
पुनीतं नषं रंग मैंदी प्रकासै, विभूषंत मानू कणं लाल भासै ।
किय(ये) हाथफूलं झणंकार कीनै, लै(ल)सै कामकी नोबतं जीत लीनै ।।११२
हो(हि)ये फूलमालं कीये हीरहारं, दुतं चंदनी मालसी कांमद्वारं ।
सुभं त्रि(त्री)वली ऊहुकै रोम संगं, तिरै नागनी अंबुधी संतरंगं ।। ११३
सुरंगं दुती नाभि गंभीर सोहै, मनू छैलको भ्रंग रूपी बिमोहै ।
कटी कंकनी हेम झंकार कीनैं, लसै केहरी लंकपै बांधी लीनैं ।। ११४
जरी तार पट्टं बिराजै ज हरं, किये कोमलं जक (लज्जेकं) लंक पूरं ।
... ... ललीतं पदं नूपुरें घोष कीनै ।। ११५
पदं कोमलं लाल य(ए)डी प्रकासै, कील मोगरा अंगुली साबि कासै ।
सुचंगी नषाकी जगाजोत सोभा, लसै अष्टमी चंदसे प्रांण लोभा ।। ११६
विणे मोचड़ी हीर मोती बिचित्रं, पदं मोह लीनै किधूं हंस-पुत्रं ।
म(ग)ती जोबनाकी चलै मंद मंदं, गहीरं चल्यो जोम छाक्यौ गयंदं ।। ११७
विभूषै सरीरं पढं(टं) नील बूंदं, घणं बादलं मेह ढाक्यो गिरंदं ।
प्रभा चीर सोभा जगाजोति मंडै, चमं(क)कै घटामैं क बोजू प्रचंडै ।।११८
करै हावभावं कटाछं किलोलं, बिराजै पिकं यंम्रतं मंज बोलं ।
मुषं चंद्रहासं हरै प्राण मोहं, छिबं देष डोलै मुनी छंद छोहं ।। ११९
चढै अत्तरं बासना अंग चोजं, मिलया(य्या)गरं चंदनं गंध मोजं ।
किये काज हाथं चतै रूप काजं, मन(नो) मोद मांनै सहेली समाजं ।।१२०

छप्पै– सषियां तणैं समाज ललित गहणा नीलंबर ।
किसतूरी केवडा डहक परमल घण डंबर ।
ग्यातजोबनां गहर मदन छक लहर समाजत,
बणि हीरां द्रग बिकस रसक रंभादिक राजत ।
कुंकमकी बेंदी लिलाट कर, चंद बदन छिब अधक चित,
आनंदत देषण गवर, गवणी उठ गयंद गति ।। १२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उदयापुर त्रिय अवर बिबध मंन राग बणावत,
चंदमुषी मिल चलय गवर ऊचै स्वुर गावत ।
जोवण कोतुक जात नागरी ग्यात नवेली,
जुथ जुथ जगमगत अंग सोभा अलबेली ।
आई समाज देषण गवर, कनकजरी भूषण करी,
पीछोलाको पाल पर, यंद्रपरी सी ऊतरी ।। १२२

दोहा– पीछोलै आई प्रगट, हीरां उच्छव हेत ।
बांकी द्रगनि बिलोकतां, ललता मन हर लेत ।। १२३
आंनंन सषियांको अवर, आठमैं(म) तिथ(थी)उजास ।
बिचै बदन हीरां बिमल, पूरण चंद परकास ।। १२४

अथ उदयापुरकी गवर पिछोलै आगमण

दोहा– उदयापुर निकसी गवर, बिधि बिधि भूषण आण ।
गज वाजां सुभटां गरट, नरभय बजत निसांण ।। १२५
रछ्यक आये गवरके, जुथप जुथ जवांन ।
नर नारी घण थट नरष, चल छोड़ा चोगांन ।। १२६
नर नारी सोभत निपट, लाष लोक लेषंत ।
पीछोलाकै ऊपरैं, दुत गवरा देषंत ।। १२७
धजा फरकत दल सघर, बाजा बजैत बिसाल ।
गवरचां भड हय थट गरट, पीछोलाकी पाल ।। १२८
कोयल सुर मिल नांयका, गावत गीत गहीर ।
हय ध्यावत धर थरहरत, बिबध षिलावत बीर ।।१२९

९ **अथ बात–** यण परकार गोरचां पीछोलै आवै छै। नायकां बारां जुथ मिलावै छै। ऊचें स्वर गावै छै। ललिता समूहमैं हीरां मनलोभा छै। नागरवेली अलबेली अंग सोभा छै।

हीरांकी सहेलियांको वरणंन— हीरांकी सहैलियां हंसांको डार। अदभुत कवल बदन सोभा अपार। यूं कवलकी पांषडीयां एक बरोबर सोहै। वां सहैलियांमै हीरां परागरूपी मंन मोहै। कीरतियांको भूमकौ तारामंडलकी सोभा। आफूकी क्यारी पोसाष मन लोभा। केसरियां कसुमल घनंबर पाटंबर नवरंग पोसाष राजै छै। अतर फुलेल केसरि कसतुरी सुगंध छाजै छै। अतरंग बहूरंग सषियां अपार छै। पदमणी, चत्रणी सुंदर सुकुमार छै। कनक-आभूषण जरी मोती हीर हार छै। यसी सहलीयांकै बिचै हीरां बिराजै छै। मांनुं अपछरामैं रंभाकी सोभा। मनलोभा चंदमुषी उडगनमैं चंद्रमाकी सोभा। यण प्रकार हीरां

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सहलियांमै उछव करै छै। गवरकै वोली दोली घुमर दे दे फिरै छै। गोरिका गीत कोयलस्वर गावै छै, जोड़का जवांनकी संगत पाऊं ओ वर चावै छै। हीरांको रूप देष सुरंद मनमै जाणै छै। धन्य छै ऊ पुरुस जु इं नारिनै महलमैं मांणै छै।

अथ पीछोलै उपर प्रोहितको आगमण

प्रोहित बचन

दोहा– बोल्यौ प्रोहित बागमैं, सुभटां तणौ समाज।
ऊदयापुरकी गणगवर, अब देषांला आज ।। १३०
बोल्यो प्रोहित वेलियां, बिध विध रंग बषांण।
अमलां करो दुणा अथग, तुरगां करो पलांण ।। १३१
आरंभ उछव गवर, रसिया बगसीरांम।
माजिम अमलां भांगि मिल, कीनौ कैफ सकांम ।। १३२
सरस पियाला साथमैं, दारू फिरै दुवार।
चंकन धुत कैफा चढै, अदभुत सुभट अपार ।। १३३

प्रोहितकी असवारी

छंद जात ऊधोर– अदभुत सुभट अपार, उतंग अमल उदार।
वण बिवध आवध बांण, एम पनगा करत पलांण ।।
राजंत प्रोहित रांण, ··· ··· ··· ···
ओतंग भाल उदार, केसरि तिलक प्रकार ।।
आजानबाहु अभंग, ओपंत कोट अलं(न)ग।
चष रत वोपत चंग, पर कंमल फुल प्रसंग ।।
भलहलत किरणां भाग, पट तार पचरंग पाग।
पोसाष अंग अपार, कलि रंग रंग प्रकार।
कट कस्ये पेसकबज, वण षाग ढाल बिरज ।।
बंधे निषंग कंधे बषांण, कर लीय तीर कबांण।
कमर कसंत कटार, धारंत कर चोधार ।।
परचंड उठत पैंड, वण कांन मोती बैंड।

अथ नीलबिडंग घोडाको वरणनं

छंद जाते त्रोटक– तीन प्राक्रंम यक तुरंगम युं, भण नांम सनील **विडंगम** यूं।
तन पाटि कनोतिय तीषण यूं, लस दोय मनुं छिब देषण यूं ।।
कर सोहत क्रुकड कंदम यं, मषतूल रोमावल बंधम यूं।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

चष सालगरांम सुलछणसी, छवि पूंछ मयोर कि पुछनसी ।।
तन रोम प्रभा मषतूलनसी, दरसंत मयंक दरपणसी ।
उर ढाल छिबंत ओराटकसी, कर षंड बिराजत फाटकसी ।।
बण अंग असंभव तेज बली, नट नाच सहोदर जंत्र नली ।
धर पोड कठोर ध्रमंकत यूं, झल पथर आगि झिमंकत यूं ।।
ऊचकंत अपार उलटणकी, नटबंत क बालक नटणकी ।
अदभुत्त तुरंगम अंगमकै, बर जोड न नीलविडंगमकै ।। १३५

दोहा– अत बल चंचल सबल अति, अदभुत प्राक्रम अंग ।
रंग तुरंगम रणि रिसक, बणियो नीलबिडंग ।। १३६

छंद ऊधोर– भणिया किम बिडंग, अदभुत प्राक्रम अंग ।
पर पीठ कनक पलांण, तन तंग रेसम तांण ।।
चल झुल जरकस चीर, अंतर चिरचत अबीर ।
ईस बिध बण्यो केकाण, अब कीयो हाजर आंण ।।
चढि चलै प्रोहित चंग, तम अवर सुभट तुरं[ग]
रजपूत हैमर रज, धर पोड धड धड धुज ।।
सब चले मिल येक संग, अत्याद बीर अभंग ।
सब येक रंग समाज, कर गवर ऊछैवे काज ।।
घण थाट हैमर घेर, भणकंत त्रंबक भेर ।
चमकंत बरछीये चोकुल निसांण, भट बिबध आवध बांण ।।
रस रंग प्रोहित राव, बण बिबध रूप बणाव ।
बण सुभट घण थट बाज, सोभंत अधक समाज ।। १३७
राजंत बगसीरांम, किये गवर देषण कांम ।

दोहा– असबारी छब अधिक, पीछोलै सु पियार ।
रसिया बगसीरांमकुं, निरषत सब नर नारि ।। १३८

१०. **बात–** प्रोहितकी असवारी पीछोलै आई । अलबेली नायकाकै मन भाई । अलबेलिया असवार घोडा षिलावै छै, पांच पांच बरछीका टेका दिरावै छै । प्रोहितकी असवारीको घोडो नीलबिडंग फरै छै । नाना प्रकारकी गतामैं ईगां-ईगां करै छै । केसरिया कसुमल लपेटा पर सोनांका तुररा लटकै छै । भवराईका पेचषवा ऊपर लटकै छै । पीछोलाकै पांणी उपर गुलाबका फूल तिरावै छै । आलीजा असवार घुडचडीकी बंदुकां सु हदफां लेजावे छै । रायेजादा रजपूतांनै ऊदैपुरको लोग घणा रंग दाषै छै, अर ऐ बातां प्रोहित ऊदैपुरमैं अमर राषै छै ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ प्रोहित-हीरांको नैन मिलाप

दोहा– मिणधारी छिबतैं उछर, प्रोहित प्रेम प्रकास ।
देष्यो हीरांको बदन, हरषत उमंग हुलास ।। १३९
करहुंता पाछै करै, हीरां रूप निहार ।
देषण दो षेडा चढ्या, अलबैलिया असवार ।। १४०

छप्पै– अलेवेलिया असवार यण बिध देषण आई,
गजगांमन गुसा गहर छोक मदन छत छाई ।
भाजन ग्रहणां भार पदमणी रूप प्रकासत,
कुंनण तन दमकंत बिबध पोसाष बिलासत ।
चंदमुषी मृगलोचनी, कर कटाछै हीरां कहुं,
हाव-भाव करि मोह्यो रसियो बगसीरांमहु ।। १४१
घोड़ा भड घमसांण पाषरा बगतर पूरा,
चोधारा चमकंत जबर षग ढाल जंबूरा ।
जबरायल जोधार छाक मन मछर छाया,
अलबेलियां असवार आजै पीछौलै आया ।।
वा विचै पिरोहत यंद, बदन तेज अधिको वहै,
सुण बडारण केसरी, करे षबरि हीरां कहै ।। १४२

हीरां बचन

दोहा– सुण बडारण केसरी, हरिष हीयमैं होत ।
ऐ धुलो भलै आबियौ, देषौं बहै देसोत ।। १४३
मो मनमैं रसियो भवर, लागत प्यारो लोय ।
आष्यां देष्यो आज मैं, जोडी हूंदो जोय ।। १४४
करि गमण अब केसरी, षबरि ल्याव कुस्याल ।
कवण नाम रहै छै कठै, सांचो कोहो सवाल ।। १४५

११. बारता— केसरी बडारंणि रूपकी सागर, गुणांकी आगर । आधी कह्यां सरब जांणै, पैलाका मंनकी पछांणै । हीरांका वचन सुंणि केसरी ध्याई, बगसीरांमकी असवारीकै नजीक आई । प्रोहितनै देष्यौं, साष्यात कांमदेव पेष्यौं । बगसीरांमकै सनमुख आय ऊभी, नीलविडंग घोड़ाकी बागनैं बिलूंबी ।

केसरी बडारण बचन

दौहा– काई नाव क जातिय्या, किण देस किण गांम ।
ऊदयापुरमैं आईया, कहै दीजै किण कांम ।। १४६

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

अथ लालस्यंघ दरोगाको बचन

लाल दरोगो बोलियो, मुछां कर बिमरोड ।
अवर देस नह छै इसो, जिण ऊप[र] सर जोड ।। १४७
वृछ सरोवर छबि बिमल, परघल झूरत पाहाड ।
बाग अनेक नदिया वहै, बन छै देस ढूढाड ।। १४८
रहै जतै उ राजवी, कोट निवाई कीध ।
सुजस बिजै चहूं दिस सरस, लायेक भुजबल लीध ।। १४९

१२. बात—कमबेस घोडाको असवार लालस्यंघ दरोगो कहै छै — प्रोहित हेल हमीर ढुढाडै देसमैं रहै छै। निरभयगढ निवाई गांम छै, देगतेग बरदायेक बगसीरांम नाव छै। देस परदेसमै मारको कहावै छै, षाग त्याग अण गंज बीर(व) बजावै छै। सहलियां बाडियांमैं डेरा करवाया छै, उदैपुरकी गवर देषण आया छै।

दोहा– सुणत बडारण केसरी, गमण करी गजगत ।
हीरांनै कहिया हरष, समाचार सरबत ।। १५०
प्रोहित आयौ पेमसुं, भाग तमीरां भाम ।
जोय तमीणो जोडको, रसियो बगसीरांम ।। १५१
ऐ धूलो छिब सयअतै, अब देषीजै आप ।
मन वंछित ओ छै मदंन, मन कर करो मिलाप ।। १५२
आप जोड देष्यौ अबै, राषो प्रोहित रीत ।
औ बर दीनो गवरज्या, प्यारी करलै प्रीत ।। १५३
आलीजो छिब अंगमैं, बर जोडी बाषाण ।
प्रीत करीजै पदमणीं, अवर नहीं अवसाण ।। १५४

प्रोहितजीनै हीरां कागद लषते

दोहा– हीरां मनमैं अति हरष, कागद लिषो प्रबीन ।
समाचार बिध विध सकल, नागर हेत नबीन ।। १५५

१३. बारता– केसरी बडारणै हीरांका हाथको कागद ले गमण कीनो, राधाकृष्ण षवासका हाथमैं दीनो। केसरी भणै छै, राधाकृष्ण सुणै छै।

केसरी बचन

दोहा– कहैत बडारण केसरी, राधाकृष्ण सुणंत ।
मालुम कर माहाराजसुं, तन-मन कागद तंत ।। १५६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कर जोड्या राधाकृष्ण, प्रोहित अरज प्रकास ।
कागद नजरचा कर दीयो, हीरां हेत हुलास ।। १५७

१४. बात– राधाकृष्ण षवास अरजको हुकम लीनुं, कागद प्रोहितकै हाथमैं दीनुं। बगसीरांम बांचै छै, मन मोद राचै छै। हेतको प्रकार, कागदका समाचार।

दोहा– हीरां यम लषियो हरष, करस्यां पूरण कांम ।
बिध बिध कागद बांचज्यौं, रसिया बगसीरांम ।। १५८
बणियाणी चातुर घणी, आपतणी आधीन ।
बिध बिध कृपा कर मो घरैं, आज्यौ बिलंब न कीन ।। १५९

प्रोहित बचन

दोहा– पर घर करां न प्रीतड़ी, प्रोहित बचन प्रकास ।
दाषां म्हे छां काच दिढ, रमां न धिय रत रास ।। १६०
बोल सुणत तब केसरी, हीरां अग्र विहार ।
कहियां बन मलाय का ··· ··· ··· ···   ।। १६१
प्रोहित सुरभै प्रेमसु कर गहै मालुम कीन ।।

१५. बात– दूसरो समांचार प्रोहितनै बचायो, मदनमैं छायो, कामदेव दरसायो ।।

हीरां बचन

दोहा– यम फंद फसिया प्रगट, कसमसियेव सुकांम ।
घर बसिया आयो घरां, रसिया बगसीरांम ।। १६२
सिरपै वारूं साहिबा, प्यारा तन मन प्राण ।
मो सुगणीरा महलमैं, रहज्ये प्रोहित रांण ।। १६३
हसज्यौ कसज्यौ षेलज्यौ, लीज्यो जोबन लेह ।
पलक न न्यारा पोढज्यौ, नाजक धणरा नेह ।। १६४
आप नहीं जौ आवस्यौ, हीरां कवण हवाल ।
महिला पदमण मांणज्यौ, जोडीतणा जलाल ।। १६५
आप नहीं जो आवस्यो, रसिया प्रोहितराय ।
आपघात मरस्युं अवस, मरूं कटारी षाय ।। १६६

१६. बात– यण प्रकार कागद प्रोहितनै बचायो, समंचार बाचतां हरष आयो। प्रोहित मिलापको बचन कहै छै। केसरी बडारण हेतका कांन दे छै।

प्रोहित बचन

दोहा– कह दीजे तु केसरी, सांचा बचन सुणाय ।
हीरां हुंदा महलमैं, आज्ये रंमाला आय ।। १६७

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

केसरी बचन

दोहा– हीरांसुं कही केसरी, बिध बिध निसचै बात ।
हीरां प्रोहित हेतसुं, रंग रमासी रात ॥ १६८

१७. **बात–** केसरी समाचार भरणै छै। हीरां हेत कर सुरणैं छै। प्रोहितजी महलां आसी, तोनै रंगको राते रमासी। ईतरी बात हुई—प्रोहितकी असवारी सहैलियां बाडी गई। हीरां पणि आपकै महल प्राप्त हुई। हीरां झरोषै बैठी छै। सहैलियां बाडी कानी जोवै छै। अबै तो सूरज्य असतंग हूवौ छै। पुजारी पुजा करण मंदर परसै छै, अब तो संझ्या दरसै छै।

अथ संझ्या समै वरणन

छप्पै– अब सूरज्य आथम गहर सुनो बति गजिये,
मंदर संझ्या समय संषधूनि सजिय ।
चमकत घर घर दीप मोद संजोगन मंडत,
कलबलाव कोचरी तीषसुर घुघु तंडत ॥
जब कवल कुंद बिछुड़े चकव, इधक चंद छवि उडगनिय ।
उदयापुर सागर अवर, कहर प्रफुलित कमोदनिय ॥ १६९

दोहा– इण विध सूरज आथयो, पुरकर चंद प्रकास ।
अब बरणत सोभा अधिक, हीरां महल हुलास ॥ १७०

अथ हीरांका महलको वरननं

छंद जात पधरी– वणि महल सपतष म[ड] गगन वाट,
कण हेम जटत चंदण कपाट ।
ऊतंग झरोषे बण अलंग, पट पाट जरी पड़दा प्रसंग ॥
बिद्रमी थंथ[भ] अनेक बान, बण बिबध रंग जाली बितांन ।
उण बीच बिछायेत नरम अंग, रेसम दुलीचा चांदणी रंग ॥
छिब हेम रंग चित्रांम बंध, सरसंत झपट नाना सुगंध ।
चहुं वोर महिल छिब रंग चोज, मांनु अनग असमान मोज ॥
ढोलियो मद्ध चंदण सुढाल, बिद्रमी ईस सोभा बिलास ।
रेसमी बणत कोमल सुरंग, प्रतिफुल गंध सज्या प्रसंग ॥
मिसरु गलीम गदरा मसंद, सज्या कसंत विध विध सुगंध ।
विछयु प्रजेक सोभा विराज, सुष सागरको मानु समाज ॥ १७१

दोहा– यण प्रकार सोहत महल, दमकत छवि ऊद्योत ।
दीपग लग प्रतिबिंब दुत, हिलमल जगमग होत ॥ १७२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ हीरां आभूषण आरंभते

दोहा– आभूषण आरंभयो, केसर मंजण कीन ।
प्रोहित मलबा पेमसुं, आतुर होत अधीन ।। १७३
मंजण नीर गुलाब मिल, केस पास मुकरात ।
बैणी फूल सुगंध बर, लेषत मन लोभात ।। १७४
तिलक तेल तंबोल मिल, द्रग अंजन ऊदार ।
ललित मुकत पाटी अलष, मिल सुगंध सुकमार ।। १७५
मुगत मंग सिंदूर मिल, कनक फूल छिब कीन ।
मंज तिलक छबि चंदमणि, पंकज बदन प्रबीण ।। १७६
करण फूल मोती कनक, जगमग नगमणि जोत ।
लटकत मुकट लिलाट लै, उडगन छबि उद्योत ।। १७७
अगमद कुंकम चंद मिल, द्रग अंजन छबि दीन ।
नकबेसर झमकत किनक, नाग पांन मुष लीन ।। १७८
कंज कंठ त्रेवट किनक, परस लील मणि वोत ।
मुकता माल बिद्रुम बिमल, उजल हीर ऊदोत ।। १७९
सपत लडी कंचन सुभग, हांस हार सुहेल ।
नवसर कण नव रंगके, चोसर फूल चमेल ।। १८०
चंद्रहार ऊपर चमक, कंचु[क] जरकस कीन ।
दमकत कूंदण धुगधुगी, नग प्रतिबिंब नवीन ।। १८१
कामल भुज अणवट किनक, बाजुबंध बिचार ।
कीय चुड नग जुत किनक, कर कंकण झणकार ।। १८२
पहुची नग बिध बिधि प्रगट, पांन फूल परकास ।
लालरंग महदी ललत, अदभुत नख ऊजास ।। १८३
किनक मुद्रिका बज्रकरण, दुत सोभा दमकंत ।
हाव भाव पोसाष हित, चपलासी चमकंत ।। १८४
ललवत किनक सहेलड़ी, विमल करत बिहार ।
नील जरी अंबर लुकी, करत बिबध झूंकार ।। १८५
छुद्र घंटका अधक छव, कटि प्रदेस दुत पुंज ।
पग नूपुर पायेल प्रगट, गत मुराल धूनि गुंज ।। १८६
विमल किनकके बिछये जावक पग थल जोप ।
लाल नषन मैंदी ललत, अरध चंद छबि वोप ।। १८७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पावपोस मोती प्रगट, गणवत मनुं गयंद ।
हीरां प्रोहित मिलन हित, ऊर ऊपजंत अणंद ॥ १८८

छंद पधरी– आभुषण तन झमकत असेष, वण अंग संग सोभा विसेष।
बिबध रंग रंग पोसाक बृंद, अंतर फुलेल चिरचत अनंद ॥
कैसर कसतुरी मिल कपूर, निरमल तन चंदन बिरचत नूर ।
परमल अनेक मंजन प्रसंग, रंभादिक सोभा रूप रंग ॥
अपरंग सषी केसरो आय, दीपक जोति दरपण दिषाय ।
हीरां मन अति कीनूं हूलास, प्रोहित प्रचंड मिलवो प्रकास ॥
मदनातुर हीरां मन मलाप, बर प्रोहितकी संगम वयाप ।
ललिता ज भई बस कांमलीन, केसरी बडारणन बदा कीन ॥
बाडियां केसरी कर बिहार, प्रोहित मिलबो मन मोद प्यार ।
अब कहू बचन रस बस अनेक, हीरां मिलाप हित हेक हेक ॥ १८९

दोहा– अरध निसा आई अली, प्रोहित प्रेम प्रकास ।
हीरां मिलबा हेतकी, वातां कहत बिलास ॥ १९०

केसरी बचन प्रोहितजीसूं

अरज करूं चालो अबैं, आपतणी आधीन ।
कांमातुर हीरां कहर, दुष पावै छै दीन ॥ १९१
चकोर चाहे चंदकूं, मोर चहै घण मंड ।
हीरां चाहे आपकूं, प्रोहितराये प्रचंड ॥ १९२

१८. **बात–** साहिब जेज न कीजै, रसिया भवर बेग पधारीजै । कोडे महोरकी राति जावै छै, हीरां पणे महलम येकली दुष पावै छै ।

प्रोहित बचन साथकासुं

छप्पै– प्रोहित यण प्रकार साथनै बात सुणाई,
हीरां मिलबा हेत अरध निस दूती आई ।
हरषण मिलण हुलास चाहै अब अवसर चुकत,
मुरछैत नारी महल मदनजुर प्राण स मुकत ॥
दिलको न कोई जाणे दरद, मुव्रत नहीं नारी मरद,
फिरै बव(च)न पाछो फरक, युं नहचै कर भुगते नरक ॥ १९३

अथ प्रोहित हीरांको महल गमण आरंभते

दोहा– हय चढियो परघय हुकम, चाकर लियो सु चंग ।
मांणीगर रसियो भवर, रंग प्रोहित रंग ॥ १९४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असवारी हद वोपियो, बणियो नीलबिडंग ।
अधूल्यौ छबि इंद सो, रंग प्रोहित रंग ।। १९५
कमर कटारी असी हथा, आयुध बिबंध अभंग ।
चकाधूत कैफां चढचौ, रंग प्रोहित रंग ।। ९६
हीरां मदन बिलास हित, अति मनमैं ऊछरंग ।
बचनको बांध्यो बहै, रंग प्रोहित रंग ।। १९७
बहत अगाडी बीर बर, सेवो चाकर संग ।
दारण चाल्यौ चित निडर, रंग पिरोहित रंग ।। ९८
सहर कोट आयो सिधर, ऊतंगत ऊनाड ।
दरवाजा मंगल दुगम, किलफां जडी कवाड ।। १९९
दरवाजै प्रोहित दूगम, ऊभौ जोम अनंत ।
चाकर सेवो केसरी, नासकमैं निकसंत ।। २००

१९. बात– प्रोहित मनमैं बिचार करै छै। कवाड टुटै न घोडो कुदावाको दावा रै छै। प्रोहितका मनमैं दाव आयो, नीलबिडंग घोडानैं कोटकी सफील कुदायो।

दोहा– दाबत अतबल कूदियो, तूरत सफील तुरंग ।
ऐल नहीं असवारनुं, कुद्यो जाण कूरंग ।। २०१
वेग तुरंगम अति विहद, प्राक्रम तन भरपूर ।
गढ सफील झंप्यौ गिगन, लंफ्यौ जांण लगूर ।। २०२
नीलबिडंग कुद्यौ लहर, प्रोहित मन हूलसंत ।
कर जोडी यम केसरी, 'षमा षमा' आषंत ।। २०३

२०. बात– प्रोहित इण प्रकार घोडो डकायौ, हीरांका महलकै झरोषै नीचै आयौ। सेवै चाकर घोडाकी बाग पकड़ लीनी, केसरी बडारणि हीरांनैं बधाई दीनी। हीरां केसरीनैं बधाईमैं नवसर हार दीनो। केसरी मुजरो कर लीनो। रेसमका रसां प्रोहित चढि आयौ, हीरां गवर पूजबाको फल पायौ। हीरां बार बार मुंजरो कर हरष धरै छै, मोती मोहोर भुंगियासं निछरावल करैछै।

हीरां बचन

दोहा– रमस्यां सेजां रंग, रली, [करस्यां] पूरण कांम ।
आजि भला घर आबिया, जोडीतणा जलाल   २०४
आजि भलाई आबिया, रति पूरण अनुराग ।
दरस तमीणो देषियो, भलो अमीणो भाग ।। २०५
गहर प्रजंक सुगंध अति, प्रोहित मदंन प्रकास ।
प्रोहत चितवत सदनमैं, हीरां बदन हुलास ।। २०६

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

चातुर बोल्यो मुष बचन, आतुर हीरां आप ।
तिरषातुर मेटो त्रया, तनु मदनातुर ताप ॥ २०७
प्यारी आवो प्रजंक पर, हावै भाव कर हेत ।
दंपत रत रमस्यां मदन, मन बच ऊमग समेत ॥ २०८

छप्पै– सुणत गवर संक्रमी झणण, आभूषण झमकत,
हाव भाव मंन हरत दरस तानगो(पो)र ध्रमंकत ।
मधुर मधुर मुलकंत अधर पुलकंत अरण अति,
ललत विलोकत ललत चहत हित मंत्र अधिक चित ॥
हीरां ऊमगत मन ऊलस, कसमसर स ऊर कांमकै,
ऊभी सनमुष आयकै, रसिया बगसीरांमकै ॥ २०९

दोहा– ऊभी सनमुष आयेकै, हीरां मन हुलसंत ।
देष देष आनंद अति, मंद मंद मुसकंत ॥ २१०
प्रोहित रसक प्रजंक पर, ललित अंक भर लीन ।
चूबत अधर निसंक चित, डंक रदनको दीन ॥ २११
हीरां व्याकुल थरहरत, चमकत डरत चकीन ।
बंद करत रित मदन छिब, देष बदन हस दीन ॥ २१२
दंपत दरस प्रजंक पर, संपत करत हुलास ।
हीरां बगसीरांम हित, कद्रप मुदत प्रकास ॥ २१३
प्यारी पीव प्रजंक पर, ऊलही उर अवलूब ।
मानुं चंदन बृच्छ मिल, झुकी क नागणि झूब ॥ २१४

२१. **बात–** यूं रंगमै राति बितीत भई। हीरांकी अबलाषा पूरण भई। रंगमहलको समाज बणायो, प्राणपियारीनै रतिविलासको सुवाद आयो।

बगसीरांमजीको बचन

बगसीरांमजी कहै छै—प्राणपीयारी अब डेरानै हुकम दीज्ये, प्रभातिको आगमणै छै जेजै न कीज्ये।

हीरां बचन

दोहा– अरज करत हीरां अधिकै, बायेक प्रेम बषान ।
मो सुगणीनै माणज्ये, रंग तणी छै रात ॥ २१५
प्यारा पलकां ऊपरै, राषालां चित रीत ।
रातै घणी छै राजवी, प्रीतम अधिकी प्रीत ॥ २१६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रोहित बचन

प्रोहित प्यारीनै कह्यौ, प्रितष हुवो प्रभात ।
पुजारी मंदर प्रगट, झालर घंट बजात ।। २१७

२२. **बात**– बगसीरांम कहै छै– परभात हूवो, मंदर झालर घंटा बजायो । हीरां कहै छै – बालम, परभात नहीं, बधाई बाजै छै । अऊत घर पुत्र जायो । प्रोहित कहै छै -- प्यारी, प्रभात हुई, मुरगी बोल रही छै । हीरां कहै छै – कुकड़ा मिलाप नहीं छै । प्रोहित कहै छै – प्यारी, प्रभात हुवो, चडिय्यां बोलै छै । हीरां कहै छै – बालिम, प्रभाति नहीं, यांका आलांमे सरप डोलै छै । प्रोहित कहै छै – प्यारी, प्रभात हूवो, चकई चुपकी रही छै । हीरां कहै छै--बालम, बोल बोल थाकी भई छै । प्रोहित कहै छै – दीपगकी जोति मंदी भई छै । हीरां कहै छै – तेलको पूर नहीं छै । बगसीरांम कहै छै – सहरको लोग जाग्यो छै । हीरां कहै छै – कोईक सहरमै चोर लाग्यौ छै । प्यारो कहे छै – प्यारी, हठ न कीज्ये, अब बहूत कर डेरानै हूकम दीज्ये ।

दोहा– रंग रात बीती असक, अरुणोदय आभास ।
बन पंछी बोलत विमल, पंकज फूल प्रकास ।। २१८
अंक छोड प्रोहित उठयौ, प्यारी रहो प्रजंक ।
हीरां मुछित पर रही, डसी भुजंगम डंक ।। २१९
हिया पीतम परहरत, स्वातग भई सुभाय ।
भीर तबै कर अंक भर, प्रोहित ऊर लपटाय ।। २२०

हीरां बचन

कर जोडी हीरां कहैत, अब कद मलस्यौ आप ।
एक घडी नै आवडै, तनकी मटै न ताप ।। २२१
लारै मोने लेवज्यौ, आपतणी आधीन ।
आप बना मरस्यूं अवस, मरत नीर बिन मीन ।। २२२
वेले मिलीजै बालिमां, प्यारा तन मन प्रांण ।
हिवडै राषूं हेतसुं, रसिया प्रोहित रांण ।। २२३
मो मन मलियो बालमां, कहुक प्यारा कंत ।
दीसत यक सम दूधमैं, मानुं नीर मिलंत ।। २२४

प्रोहित बचनं

दोहरा–बिलकुल बोल्यौ मुष वचन, रसियो बगसीराम ।
प्यारी साथ पधारस्यां, जुदी नही यक जांम ।। २२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्यारी कर गह प्रेमसुं, बचन दीयो मुष बांण ।
रहस्यां भेलारा वयण, ईसटदेवकी आंण ॥ २२६
अबै झरोषै ऊतरचौ, बचन कथन बर बीर ।
चाकर संग तुरंग चढि, रावत मघ मन धीर ॥ २२७
बणी सहैली बाडियां, आयो बीर अभंग ।
बण बैठो गादी बिमल, सुभट समाजत संग ॥ २२८

बात– अथ राणाभीम बगसीरांमको मिलाप आरंभते ॥

राणाको बरणन

दोहा– बुदयापुर राजै यधक, रांणों भीम सुरिंद ।
सुभट समाजत सूरमां, आजत राजत ईद ॥ २२९

२३. **बात–** यण प्रकार रांणो भीम, कीरतिको कोम, भोजतालाबिंद, चितकौ समंद, आचारकौ ईद, सरणाया साधार, हींदुपति पातस्याह, यकलंकको अवतार, महिमा अपार, यसो रांणों भीम। जोको दरगामै येक समैं बात आई, ढिकडीये अरज गुदराई।

ढिकडीयाको बचन

बात– प्रतप श्रीदिवांन, येक ढूंढाड देसको प्रोहित आयो छै, सातबीसी असवार घोडां आंडंबर बणायौ छै। सहलियां बाडियांमै ज्यौकौ ऊतारौ छै, कीरतको भारौ छै, अनेकांनै रीझ मोजा करै छै. मनमै हजूरेसूं मिलवाकी ऊमग धरै छै। दातारको दातार, झूझारको झूझार, हेला हमेर ईंदको अवतार। बगसीरांमनावैं कहावै छै, मिलयां हजूरिकीभी दाये आवै छै।

दिवानकोबचन

जब दिवान फूरमांई – म्हे भी मलस्यां, देषणां स भुलणां नही, रूप, गुण देष(षां)ला, प्रोहितनै पेषोलां। रांणैजी हुकम कीयौ – प्रोहित बेग आवै, मिलबाकी मन भावै। यण प्रकार दीवान हुकम दीनो, छडीदारनै बदा कीनौ। चोपदार सहैलियां बाडी आयौ, सुभटांका साजमै प्रोहित दरसायौ। अधुलौ प्रोहित माजम कसुमा लैछै, परगहैनै फुलमदका प्याला दैछै। विधविध षुबी कसबोई लगावै छै, अनेक प्रकार बलां-धुकलां उडावै छै। बगसीरांमकी हजूरे छडीदार आयौ, मुजरो करे दीवाणको हुकम गुदरायौ।

अथ छडीदारको बचन

बात– प्रोहित साहिब, अपनै श्रीदीवांन याद करैछे, आपका मलवाकी मनमै धरै छै, सुभटांन साथ लीजै, सताब असवारी कीजै।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रोहित बचन

बात– प्रोहित कहै छै -- मैं तो ऊदैपुरकी गवर देषण आयो छो, म्हाकै सासरै बूंदीमै चारण बषाण सुणायो छो । एक बार तो घरांनै जावस्यां, दीवान ईती कृपा करै छै तो फेर आवस्यां ।

चोपदार बचन

चोपदार अरज करै छै – दीवान तो आपसुं मिलवाकी आजी धरै छै । दीवांणनै आप राजी राषस्यौ, मिलायकी दाषस्यौ ।

प्रोहित बचन

जो दीवान मिलबाकी धारसी तो आजि जगमंदर पधारसो । पीछोलै पेषांला, दीवांणनै भो देषांला ।

दोहा– जगमंदर जगनीवांसमैं, जुगत आवै जो दीवांन ।
प्रोहितरांण मिलायकै, प्रगट कह्यौ प्रमांण ।। २३०

दीवांण जगमंदार पधारवाकी असवारी बरणन

छडीदार बचन

छंद भुजंगी– धर(रे) बात निरधारर छडीदार ध्यायौ, अबै सांनकुल दरबार आयौ ।
कह(हे) रांण भीम(मो) कहो बात कैसे, उचारी दुजाती सबै तु(तू) ऐसें ।।
छडीदार बोल्यौ सुणौ भीम बातं, दिवाणं मलापं मगेजं दुजातं ।
प्रथीनाथ आपे पीछोलै पधारं, जग(गे)मंदरं राम रामं जुहारं ।।

राणो भीम बचन

तबैं भीम बोल्यौ सुणौ बेगतामं, अबै जेज कीज्ये नही येक जामं ।
जग(गे)मंदरं आज तो बेग जोहै, मन(ने)मांन दानं दुजात(ती)बिमोहै ।।
तबै चोपदारं फरचौ बेगतामं, जणायो सुभट(ट्टं)चलौ जामजामं ।।
फुबै रांण भीमं फुर(रै)मांण फेरं, बज्यौ दूक धूसा करं नाल भेरं ।
जरी तारपटं(ट्टं)षुलै झंडचंडं, बिपंचित्र मंने षहोदं ब यंडं(यंडं) ।
रचै स्याम लीला गज(जैं) ढाल रुडं, पटं आबृतं रेसमी झूल पंडं ।।
सनं बीर ऊतंग ततै तुरंगं, सुभं हीरहारं बनाथ(थं)सुरंगं ।
लसंतं नगं पाटहेमं पलानं, मन(नै)मोद मांनै चढंतै बिमांनं ।।
रचै चंदनं के जटं हेमं(म)रथ्रं, अदू तारपट(ट्टं)लपेटंत मथ्रं ।
रसे रसम हेम रंजु टरावै, मनं बेगबानं धनं घोष मावै ।।
षुलै जोत नंगं जट(टे)हेम षासं, लसै पालकी रंग रंगं विलासं ।
थटै नेष नेषं छडीदार थंडं, चमंकार हेमं जटे डंड चंडं ।।
बिभूषत्त अग्रं बर(रै)दार मालं, रचै मंजघोषं नकीबं रस्यालं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हलै बेठ भीमंग जरी तार पट(ट्टं), भुकै चामरं सेत सोभा, झपट(ट्टं) ॥
मनुं बदं(द्द)लं हेमकौ छत्र मंडं, दमंकार बज्रं कणं सोभ डंडं ।
चल्यौ भीमरांणं समाज(जै)बिचित्रं, नट(टै)नाये(य)का रंगरागं निरंत्रं ॥
दहूंधा बजे ताल भेरी म्रदंगं, रचे ग्रार भीतसिक(का, कै) रंगरंगं ।
विमु(भू,मू)षत्त शस्त्रं पन(नै,ना)जोधबृंदं, करै कीतकी हाक भद्रं कवंदं ॥
उडै हैमरं पोड रज ग्राषंडं, तटं व्योम भासी ढक्यौ मारतंडं ।
थटै संग लीनै सबै सेन थाटं, घुमंडे पीछोलै गई बीर घाटं ॥
नरिंदं तबै बैठयू नीरं नावं, सुभट(ट्टं) हजूर सबै संग भावैं(वं) ।
जग(गै)मंदरं प्रापत(ते)ईद्र जैसै, ग्रत(ती)सोभमांनं विराजत्त ऐसे ॥
मिलेयूं चहूंगा महानीर मंडं, चलै मच्छ कि(की)लोंल लोलं प्रचंडं ॥२३०

दोहा– सगता चांडा संग सभट, यम जगमंदर ग्राय ।
बिबध बिछायत भीमबर, बैठे सभा बनाय ॥ २३१

ग्रथ जगमंदर जगनिवासको बरणं

जाति पधरी– उपत जगमंदर जगनिवास, पर दोहूनको सोभा प्रकास ।
बण थंभ लाल बिद्रूम बसेस, ग्रतरंग रंग पथर ग्रसेस ॥
ऊतंग षंभ सोभा ग्रतूल, द(दी)पंत लपट रेसम दुकूल ।
गयदंत किरम छिब रंग रंग, सोभा बितांन जर तार संग ॥
बण त्रिबध गोष जालीन बृंद, छित्र चित्र काच मकरंद बिंद ।
ऊतंग भरोषा गिगन बंक, बण छाजा तिखण धनक बंक ॥
बण पडदा छटकत बिबध रंग..................... ।
पुलकंठ जडत मोती प्रसंग, ग्रतरंग रावटी छिव ऊतंग ॥
सोभंत क वैलगिरि किनक श्रंग, थित माल सुगंधन फूल थाट ।
कुंदन चित्र म चंदन कपाट, बण बाग तेरावर विध विधांन ॥
पर गहर सषा फल फूल पांन, जष ग्रोमन बेली गहर झूंड ।
मिल पवन सुंगंधन फूल..., झंकार ससट गण ग्रंग भूल ॥
मिलकोर पिक है तंडत मयोर, सुर चकव कपोतन बिबध सोर ।
यह बिध जगमंदर जग निवास, परस पर विमल सोभा प्रकास ॥ २३१

दोहा– होद नीर चादर वहत, ग्ररु फुलवा दिस बोय ।
मुष समाज सोभा सरस, जगमिंदर द्रग जोय ॥ २३२

छप्पै– जगमिंदर इंम जोप राण भीमेण बिराजत,
ऊछव कर्त ग्रनेक सुभट थट स्यंघ समाजत ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दाषे हूकम दीवान बगसरांम बुलायेहु,
मंन मानत मिलाय जेज नै बेगा जाय हूं ।।
जब पीछोला ऊपरैं, चोपदार नावक चले,
बिबध सहैली बाडियां, माहाबीर प्रोहीत मिलै ।। २३३
चोपदार सुण बचन प्रोहित ऊसस,
सज पुनीत पोसाष किनक संनाह भलकस ।
ढाल षस षडगबंध कट षूब सुभट थट आवध संगम,
भीमराण मेटवा तामस चढ चले तुरंगम ।।
मालम अषंड नवषंड मय, अनमी धिर प्रचंड अत,
मारतंड भल हरत मुष प्रलंब भुज डंडवत ।। २३४

दोहा– प्रोहित अब चाल्यौ प्रगट, सुभट लियां षण स्यंघ ।
बीर घाट प्रापत भये, अतबल बीर अभंग ।। २३५
चाले नाव जिहाज चढ़, परघ संग प्रचंड ।
जगमंदर आयौ जबै, अनमी मगज अषंड ।। २३६
दरगहै रांणा की दरस, अनमी प्रोहित अंग ।
मांनु जुथ गयंदमै, आयो स्यंग अभंग ।। २३७

२४. **बारता–** यण प्रकार राणाकी दरगामैं सुभट समाजसुं प्रोहित आयौ । जिण प्रकार सुण्यौ तिण प्रकार दरसायौ । तबै रांणै प्रोहितनुं नमसकार कीनो, तबै प्रोहित रांम रांम कीनो । तब राण रोस कीनो – आसरीवाद कुं न दीनों ।

प्रोहित वचन

बात– प्रोहित कहै छै--अनमी छूं, रूघबंस बना ओर नरवर बना नमुं नहीं । आपका सीस पर षेलुं, औरनै हाथ मांडू नही ।

राणा बचन

तब राणो कहै छै – अनमी पणों तो मांहानै चाहिज्ये । यूं आप ब्राह्मण छौ, आपनैं क्यूं ?

प्रोहित बचन

आप जांण्‌ सो ब्राह्मण नहीं । जोध विद्याको साधिक, ईसटकौ आराधिकै छु सही ।

राणा बचन

जोधबद्या छित्रीबंसमैं छै, जिका महाभारथमै कैरवां पांडवां दिषाई ।

प्रोहित बचन

माहाका बंसमैं द्रोणाचार्यजी हूवा, जिका वा बनां वानैं किण पढाई ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रांणा बचन

छित्रीबंसमै म्हाकै छ चक्रव (व)रती हूवा, जिका प्रथवी जीत लीनी ।

प्रोहित बचन

माहाका बंसमै श्रीपरसरांमजी हुवा, जिका ईकईस बार प्रथी नछत्री कीनी । बगसीरांमका वचन सुण रांणै भीम रोस कीनो, मनमैं अहंकार आंण यो जबाब दीनो ।

रांणा बचन

दोहा– क्रोध कर रांणौ कह्यौ, दल बल लेऊंगा देष ।
ऊदय्यापुर बंधा अवस, पकड़ी जो हद पेष ॥

प्रोहित बचन

प्रोहित बोल्यौ दिल प्रघल, आप जतन बांधो दीवाण ।
ऊदय्यापुरकी बाधु अवस, पकड़ पकडूंलो प्रमांण ॥ २३८
रतनांवत दिल रोसमैं, प्रोहित चले पयांण ।
बचन बचन बांधी बिथा, जग्यौ अग्नि घ्रत जांण ॥ २३९
चले प्रोहत नाव चढ़ि, ध्यावत क्रोध अधीर ।
सुभट सजोरा संगमैं, बाड़ी आयो बीर ॥ २४०

छप्पै– चढे रीस चष चोल मुंछ मिल अगट अमांवत,
अषाड़ै पर आय जाणैं जौगेन्द्र जगावत ।
कोप्यौ भीम कराल कनां जमजाल क्रोधकस,
जगी सो(से)र ढिग ज्वाल इण बिध प्रोहित उसस ॥
क्रोड़ बात नही चूकस्यूं, सुणलीजो सांची सुभट,
ऊदयापुर बंधा अवस, पकड़ांला भुजबल प्रगट ॥ २४१

राजपुतां बचन

दोहा– प्रोहित रांण प्रचंडका, सुभट बोल यक संग ।
बंध पकड़स्यां बीरबर, जुटस्यां षांगा जंग ॥ २४२
कर जोड़ी सुभटां कह्यौ, आज असाढ अभंग ।
सावण स लेस्यां सही, तीजां चाढ तुरंग ॥ २४३
भली बात प्रोहित भणै, तीजां तणै विवार ।
पकड़ांला बंधा प्रगट, सब देषत संसार ॥ २४४

२५. बारता– इतनै प्रोहितजीनै सिवलाल धाभाई कहै छै – आज तो तीजां आड़ा पचीस दन कहै छै । माहाकी आ अरज छै – सिवांणी गावै छै । वो हूं पाघड़ी-बदल भाई छा । कांम पड़्यां मेहे(म्हे), वै जावां आवां छा । सो बड़ो धाड़वी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छै। म्हाकै र ऊकै बचन गाढौ घणौ छै। ऊमै कांम पड़यां तो हु जाऊ, मैमै कांम पड़यां वो आवै। लाषां बातां रहै नही, ऊ ईसोईज छै। ऊधारा झगड़ाको लेबा वालो छै। भारथको भीम, सूरमाको सीम। केबियांको काल, नगी किरमाल। नेक बषत तमाण, देषते षबरियांण। जाक समसेर दसु देख संका, पाधरां सु पधरा, बंकासुं त्रिबंका। झगड़ेकी अरदास्त, सस्त्रूंका अभ्यासत। प्राक्रमका प्रथीराज, बुधिका समाज। सोरका जोर कवारी घड़ारां यारुंका यार। आड़ूते आडा, ऐसे नागर सिवाणी बज्रकी ढाल, जैजै रावै बाहाद्र षलुका नाटसाल।

दोहा– कटक बिकट घण थट कियां, घोड़ा घमसांणीह।
राव बाहादुर राजबी, सुर ईंद्र सिवांणींह ॥ २४५
राव बाहाद्र सुभट रंग, बाच घण बाषाण।
पर घट षेलै सीस पर, है झेले अस प्रांण ॥ २४६

२६. **वारता–** यू राव बाहादरनै कागद लषीजै, हलकारानै बदा कीजै। प्रोहित राणांक ऊदैपुरमै नोष-चोषै हूई, जिण बातको कागद सिवाणीनै लष दीनौ, गीरधारी हलकारानै बदा कीनो। प्रोहितनैं सिवलाल कहै छै – अब तो गिरधारी हलकारो बाटां बहै छै। सो अठै ऊदैपुर आये राणां झगड़ा ऊपर आसी। लाषां बातां टलै नही। अगजीत षांगा बजासी। अब गिरधारी हलकारो सिवाणो गयो छै। प्रोहितको कागद रावनै दीयौ छै। राव कागद बांच परगहैनै सुणायो छै।

परगह बचन

परगहै कहै छै बड़ो अवैसांण आयौ, रावनै सूरवीर जांण कागद पढायौ।

राव बचन

लाषां बातां ऊदैपुर गया राहांला, मेवाड़ांका रजपुतां सु फूल धारा षेलांला। कैतो मेंवाड़ांनै चापड़ै षेत मारलेस्यां, जै आपां मरस्यां तो प्रोहितजीकै अवसांण अपछैरा बरस्यां। यूं बात करतां दिन असतंग हुवौ। राति बृतीतमान हुई। सूरजकौ प्रकासमांन हुवौ। रावै कटकनै कहै छै -- ठाकुरां, जेज न कीज्ये, ऊदैपुर दूर छै मनमैं विचार लीज्ये। बलां घोकलां करीजै, घोड़ा काठी धरी लीज्ये। तब सारै साथ बणां कर लीनी। चरवादार घोड़ां काठी धर लीनी। इतै नगारची नगारै चोभ दीनी और कटकानै तो कोट तालकै कीना, सात बीसी पायर हित साथ लीना। घोड़ाकै तो सछी पाषर अवारकै बगतर, टोप, झिलम जरै च्यार आंनी दस्ताना चलितैं, इतरा समाजकी सिलै सरब असबारांकी पा, राव चढयौ। रावका रजपूत कैसा ? वैता कालकी चालकूं पकड़ै ऐसा। रावका रजपूत, जंगमैं मजबूत, आवधाम कड़ा जुड़, अड़ाभीड़का ओनांड़, षलांका बिभाड़, नाहरां पछाड़।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रावका रजपूतका बचन

दौहा– हक मल हल हुकलै, घुरै नंगारां घावै ।
गढ उदैयापुरपै गवैण, रचै बाहदर राव ।। २४७

छप्पै– रचे बाहादर रावै गवणत्र वाट गरज्ये ,
चढे कटक थट चलै करण भारत स कज्ये ।
अड़ा भीड़ आवधां करी बगतरां षणकत ,
बेग भगाटां बहत भिड़ ज फोरणाट भणकत ।।
ससत्र हजारां सु लिये, भला सजन मन भाबियौ ,
सीवांणीपति सूरमों येम उदैपुर आवियौ ।। २४८

दौहा– हलकारां मालुंमै करी, प्रोहित सुणी प्रचंड ।
सात बीस सुभटां सहत, आयौ रावै अषंड ।। २४९
सुभटां थट सनमुष मले, प्रोहित कर अतप्रीत ।
रावै भला आयौ किधूं, राषण पणबृत रीत ।। २५०

२७. **बारता–** प्रोहित कहै छै–रावत भलां आयो, मोयर चाकरीरो हुकम दीज्ये ।

रावै बचन

रावै कहै छै– या चाकरी सहरै बारै गवर छै, बंधा पकड़ज्ये ।

प्रोहित बचन

राव ठीक फूरमांइ, मेवाड़ां नै तरवारचां मार बंधा पकड़ लेस्यां । लाषां बातां चूकस्यां नहीं । रांणां भीमको ऊदैपुर तिणकी आबरू पाड़ घोड़ा ताता षड़स्यां । लारै बरां पूगसी तो वांसु भी फूलधारा षेलस्यां ।

रावर बचन

प्रोहित घणा रंग छै । आप जमाषात्रे कीजै । झगड़ाको कांम पड़ियां म्हांकी भी हाजरी लीजै । यण प्रकार प्रोहितकै, रावै बाहादरकै बतलावण हूई । राव बाहादर चोगांनमैं डेरा दीना । प्रोहित आ[प]णी सहलियां बाड़ी छोड बाहर डेरा कीनां । चाकर घोड़ा बांधबा वास्ते मेषांपर मेषचा बजावै छै, अगाड़ी-पछाड़ी घोड़ा अटकावै छै । दोनुंही सिरदारांकी बछायेत, जाजिम चांदण्यां छटक रही छै । रसोईदार रसोईकी संजत कीनी छै । नैम स्यांमके बषत रजपूतांको मुजरो मोहलै लीनो छै । त्यूक आयौ । हीरां लषियो–रांणां भीमकै, आपकै नोंष-चोष हूई छै । राज्ये ! हूं तो अबै हूकमकी चाकरै छूं । आप मोनै कांई फूरमावो छौ ? हीरां कागदमैं समाचार साथै चालबा का लषिया, प्रोहित परषिया ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोहा– हूतो चाकर हूकमकी, दुषी घणी छूं दीन ।
लारै मोनै लेवज्यो, आप तणो आधीन ।। २५१
धन जोबनका थे धणी, तन मन अरपूं तोय ।।
साथि लीज्यौ बालिमां, मति बीसरज्यो मोय ।। २५२
अरज लिषी छै बालिमां, मांनज्यौ मेरी ह ।
साथि चालुं साहिबा, चरणांकी चेरी ह ।। २५३
प्रोहित ममत पछाणियो, जोड़ी हुंदो जोये ।
मत बीसरज्यौ बालमां, मर जाऊंलो मोये ।। २५४

छप्पै– मरत नीर बिन मीन आप बिन मो दुष ऐसौ ।
अच्छ बना बेलड़ी कहो अवलंबन कैसौ ।।
रसिया प्रोहित रांण लोयेणां अंति हित लागै ,
रहस्यु दासी रीत आपकी रांणी आगै ।।
परगट मोन पकड़ज्यौ, कर लीज्यौ तन बध कस ,
बामि(लि)म मति बीसरज्यौ, आप बना मरस्यूं अवस । २५५
प्रोहित लषियो प्रगट आज तीजां आडंबर ,
साघ(ध)ण कांमण सुषद अंग आभूषण अंबर ।
तीजां ऊंछव तांम गावै त्रिय मंगल गासी ,
पहर बषत पाछैलै आज पीछौलै आसी ।।
उण बषत आप सज आवैज्यौ, प्यारी वीरू घाट पर,
प्रगट तोनैं पकड़स्यां, ये बातां राषण अमर ।। २५६
कर गवण केसरी चलत मंन बात हरष चित ,
बणियांणी उर धार ऊमग आई सनमुष अत ।
हीरां पुछत हरष कैहो कैसी किम कीजै ,
कह्यौ अबै केसरी किनक संगार करीजै ।।
बीरू घाट कीनो बचन, मो तो येकण संग मिल ,
प्यारी साथ पधारस्यां, अबलाषा पूरण असिल ।। २५७
हीरां मंनमैं अति हरष बिवध पोसाष बनाई ,
तीज पहर तीसरै ऊमंग पीछौलै आई ।
बीरू घाट बसेष केसरी संघ(ध) कहावत ,
प्यारी चाहत पीव षूटकन है जेज षटावत ।।
अछै उडीकंत आतुरी, अतचंचल जोवत गढी ,
प्रोहित आजि न पेषियो, तंन तालाबेली चढी ।। २५८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोहा– ऊदैयापूर निकसी गवर, तीज महोला तांम ।
अति आभूषण किनंक पट, बण बण घण छबि वांन ।। २५६

प्रोहितको र रावको पीछोल आगमण और हीरां बांध पकड़ जुध आरंभते

२८. **बात**– अबै राव प्रोहित गवर देषबाकी असवारीकी तयारी कीनी । पोतदारनै अमल गलबाकी ताकीद दीनी । दोनुं सिरदार कहै छै– घोड़ा जीन कीजै, कमरयां सताव बांधे लीजै । सारै साथ मल चोगुणां अमल चढाया, ऊगाव कर सोगुणां जोस मैं आया । रावका, प्रोहितका चवदा बीसी असवार घोड़ा घमसांणरी छी, पाषर, बगतर, आवध, कडाजुड बणवाया । राव तो पवन-वेग नांम घोड़ै असवार, प्रोहितकै नीलबिडंग प्रकार । दोनुं सिरदारांको कटक चढ चाल्यौ । मांनु श्री रामचंद्रजीको कटक लंका ऊपर हाल्यौ ।

राव बचन

बात– राव कहै छै– बंध पकड़, झगड़ो कर पीछोलामै घोडा डकास्यां, चवदा बीसी असवारांसुं मगरो ऊतर जास्यां । यूं बातां करतां पीछोलै आया, बीरू घाट दरसाया ।

दोहा– प्रोहित हीरां पेषीयो, तीष नोष छिब तोर ।
दूषी तिषातुर देषिया, मांनु घणहर मोज ।। २६०

२६. **बारता**–अबै हजारां लोग तीजका तमासगीर, आवधा मैं कड़ा बीर प्रोहितकै मेवाड़ाकै धमचाल बाग्यौ, तरवार पडी सो पचास आदमी मेवाड़ांका काम आया। प्रोहितजीका साथमै चैन बूझाकड़कै लोह लागा। हीरांनै पकड़ी । हीरानै प्रोहितजी नीलबिडंग घोड़ाकी पीठ पर विसालाका बंध आपक(कै) पाछै चढाई । अर परत काली घोडीको असवार गुजरगोड़ आजारकै पाछै केसरीनै बैठाई ।

राव बचन

बात– इतै राव बाहादर कहै छै– पीछौलै घोड़ा डकावो, नहीं तो झगड़ा पर लोग जुड़ेलो । आपांनें भाजवाकी प्रंतग्या छै, सो मरणो पड़ैलो । जेज न कोज्ये, घोड़ा डकाईजै । अबै चवदा बीसी असवार घोड़ा पीछौलामै डकाया । अणीरा भमर जगमंदर आया । जगमंदरको बाग बाढचौ । नंगी तरवार,यां(पां)णीं-पंथ घोड़ा पीछौलाकै पैला पार चवदै बीसी असवारांसुं मगरो उतर गया । हीरां पकड़ी, बाग बाढचौ, ऊदैयापुरमै अनोषी कर गया । अबै ऊदैयापुरमै भयानक कुक पड़ी । हलकारै रांणांनूं मालुंमै करी । प्रोहित, कोडीधजकी बेटीनै बंध पकड़ी । राजका सलैपोस सो-दोसै तरवारयांकी धार कांम आया । वै तो चवदा बीसी असवारांसुं मंगरो चढ गया ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छप्पै– भीम रांण सांभले कहर प्रजले कोप कर ,
मूंछ भ्रकुटत मिले धूत चष चोल रंग धर ।
कहृत वचन कोपियो पिरोहृत जांण व यावै ,
मांन मार मेवाड़ जीत आपणो जणांवै ।।
ऊमरावां ऊपर हूकम, अतराई कालि फेरिया ,
मेवाड़ धण थट मिले, स घाट ईण बिधी रोकिया ।। २६१
ऊट चढै आकलो यम राईको आयो ,
चढचौ चढचौ मुष चबै बिबध निज भेद बतायौ ।
बीर धीर बे(पै)दल चढै चहूँवांण च कारंण ,
चढै नंगारै चोट डेल वाड़ै भाला डारण ।
प्रोहित अबै पधारसी, अठै बणैंली आवैतां ,
चीरवो घाट अचाणचक रोक्यौ इण बिध रावतां ।। २६२
बा बात करतां यतै पणि प्रोहित आयौ ,
चढै घाट चीरबै दूठ जबर दरसायौ ।
चढे नगारै चोट दोहू चढ़े कटक है ,
सबल चढे सूरमां चढ़े कायेर भये चक है ।।
चहूबांण इतै भाला अचल, ऊत राव प्रोहित ऊरड़ै ,
वीर हाक-धमच विषम, भुके बंदूका सो कड(डै) ।। २६३
हणण मांच हैमरांण गणण घोषा रवै डूंगर ,
षणण बाजया ज पाषरां धुज षूरताल धरणधर ।
ठणण बंदुकां ठोर गोलियां गिणण गिण गनगत ,
टणण धनस टंकार भणण पर तीर भणंकत ।।
सिंधबा राग समागमण गणण भेर त्रमक बज्जे ,
चीरबै घाट परचा पड़ै, विषमं थाट भारथ बजे ।। २६४
धरण फोड धड़ै धड़े गहिर गडे त्रमा गल ,
चोल रंग लड़ चढे बीरबर रडे दोहू ह[य?]बल ।
पवंन मंदगत पड़ी भांण रथ षडे णभुयण ,
जब ऊरड़ जोगणी जुडे नारद रण जोयंण ।।
गरड़ी बंदुक धायां, गिगन तीर सो क जडतड़े ,
चीरबै घाट परचा पड़ै, जंग थाट प्रोहित जुड़े ।। २६५

अथ रावं बाहादर युधबरणन

छंद जाते त्रोटक– अब राव बहादर कोप कियूं, ललकारत सेल त्रभाग लियूं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तन भीड कडी र बगत्तर यूं, करबार बाहादर राव किधूं ।।
कर जोप जग्यौ सिवनेत्र किधूं, भिड भीड भुवा रंन ऊभ रयूं ।
गण देषत चंडै(ड) गत (तै,तं) थन यूं, मा(म) नु कोप तै भुंड मयंदन यूं ।।
अति क्रोध बी (बि) रोध म अंगम यूं, जबरायल जग्यौ क भुजंगम यूं ।
बरण धु (धू) धल जोग विकट (ट्ट)ण यूं,
पर कोप उलट (ट्ट)ण पट (ट्ट)रण यूं ।।
यम राव बाहादर कोपित तै, मिल सु(सू)र समागम युध(द्ध) मतै ।
तब ऊपडै(ड़) बाग तुरंगनकी, धर हेमल योर धमंकत यूं ।।
मिल पाषर होट ठमंकत यूं, रण रोष चढे मुष सूरंन के ।
नर भीत दिनंकर नूरंन के, चष जोल सुरंग चमंकत यूं ।।
दरसंत क आग द्रमंकत यूं.................................. ।
मिल राव बाहादर जोध मिल(ले), भिड भारथमें तरवारि भले ।। २६६

३०. **बात–** ईण तरै महाभारथको झगड़ो जुडचौ झगड़ाको भार सारो राव ऊपर पडचौ । अठचाव को परधांन ममदयारषां षेत पड़चौ ।

अथ महमदय्यारषांको गीत

बागी धमचाल कटक दोहू ऐ वैल कढि किरमाल कराली ,
प्रलैकाल भिलो उण षुलमै किलम तुरंगत काली ।
वाज अटं झुझ वलोबल बीजल षाग बिलगे ,
राव तणौ प्रधांन प्रघल रंण भेडंता षल दल भगे ।।
जुड़ घमसांण ग्रीधणी जोवण बीर बषांण बजाडी ,
रंग पठांण मेवाड़ पर रूठौ बिढ(ठ)के वांण बिभाडी ।
पिसणां घणां तणा मद पाड़े पतद लोहां पूरां ,
पूगौ मैहमदषां ऊचै पद बरेगो हूरां ।। २६७

अथ प्रोहित जुध बरणंन

छंद जाते पधरी– कोप्यो क अबै प्रोहित कराल, जग्यौ क सोर ढिग अगन ज्वाल ।
छुटचौ क बांन असमान छोहै, टूटचौ क घोष षण बीज तो है ।।
जग्यौ क मांनु योगेंद्र जोत, दग्यौ क तोप गौला उदोत ।
रूठचौ क भीम चढे जंग रीस, फूटचौ क सिंध जल धार कीस ।।
जौप्यौ क जग सुग्रीव जोध, कौप्यौ क अंगहून हनुंवंत क्रोध ।
फूंकार सेस पुछटचौ फूणद्र, बिछटचौ क सिव जटा बीर भद्र ।।
यण भांति प्रोहित कोप अंग, जबरायल सुभट मिल संग जंग ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऊपडंत बाग हैमर अपार, धजकंत कढी त[र]वार धार ।।
बीजलियो षांडो इम बहुत बार, कर बीज मनु घण चमटकार ।
मुष मार ललकार मंड, प्रकार भले प्रोहित प्रचंड ।।
ईत रमै संसिरबाहू अमांम, राजंत प्रोहित फरसरांम ।
चहूवांण देव झाला सुचित, ईत राव बाहादर यंद्रजीत ।।
मिल राव प्रोहित जुग संमेर, घण थाट सुरंगम सुभट घेर ।
चालंत षांगा दहूंगा प्रचंड, रण धार बीर कटै रुंड मंड ।।
बिछड़त सीस घावन बिघाटै, फरसी क अग्र तरबूज फाटै ।
ऊछलत भेजी मगज येम, तरलंत दहडी फाटैत एम ।।
कुटंत सीस तरवार तंग, साहमीं क रंग छूटचौ प्रसंग ।
घण तुट भूजा तरवार घावै, वण राये साष पड़ बीज भावै ।।
छाती पर बरछी बहैत छेक, किचकार धार छबि रत्र पेष ।
दोहू तरफ बगतर फोड दीन, मानुं तुछ कढचौ जलधार मीन ।।
तन फोड़ कारीय यार तंस, बय फोड़ि सिला ऊकसंत बंस ।
किरमाल धार हेमर कटंत, मनु आन हौय मिल धर बटंत ।।
धण षाग जोध पछड़ंत धावै, भभकंत रैत्र परंनाल भावै ।
जोगणी पत्र भरत्र जेम, अथांण दुहारी दूध एम ।।
मिल स्यंभु झेलंत रुंडमाल, बंगु षेलंत लेवंत बाल ।
जोगणी वीर नाचंत जेम, अदभूत कांन गोपंग येम ।।
मिल बीर कहैत मुष मार मार, नाचत हरष नारद निहार ।
झूझार मरत किरमाल जंग, अपछरा माल पहरंत अंग ।।
मानंत विवांण चढ प्राण पेष, लेषंत गवण कर यंदु लोक ।
झड़पड़त गिगन मग ग्रीध झुंड, मुष लेवत गुद पल रुंड मुंड ।।
झड़पड़त घाव रत कीच भीन, मनुं त(तु)छ नीर तड़फड़त मीन ।
यक पोहर बजी केवांण भांण, भारथ देष थंभ्यो क भांन ।।
अदभुत जंग मंडचौ ऊषेल, बड़ पड़े षेत चहूवांण भेल ।
झाला पड़िया घण षेत जंघ, अब जीत्यौ प्रोहित बल अभंघ ।। २६८
ईण राव बाहादर बड़ी रीत, जोधार षडचौ यण रंग जीत ।

छप्पै– रण केते नर रहे जिते भड़ सनमुष जुंटे,
चढ झाला चहूंवांण फूलधारां तन फूटे ।
चमु घाट चीरबै विषम षग झाट बजाडे,
कायल भागे केते अवर घायल ऊबारे ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मेवाड़ देस प्रोहित मंडे बर गला अभंग यूं ,
बिजैत्र मागल बाजिया जीत्यौ यण बिध जंग यूं ।। २६९

३१ **बात–** अठी प्रोहित, राव बाहादर, उठी चहूवांण, झाला; येक पहर तरवारि वही। हीरां अर केसरी बडारणे परबतकी किंनरीमैं रही। राव बाहादरका सिपाही भला लड़िया, अर तीन बीसी असवार षेत पड़िया। प्रोहितका भी रजपूत भला घमचाल बागा, पचास तो कांम आया, पचीसकै लोह लागा। घोड़ो नीलबिडंग कांम आयौ, प्रौहितजी गरड़ादे घोड़ी असवार हूवा रणषेत सुझायौ। अब चांदस्यंघ वालै पोतो रसालदार कांम आयौ। चैन बुझाकड़कै लोह लागा, चहूवांण झाला भागा।

अथ गीत चांद स्यंघ वालै पोताका

धु(धु)रेत्र माला मचायौ जंग मेवाड़ चीरवो घाट वुयो जिण ,
बेलां कंलां नाग सौदे धीया राडा धार तीजो नयण ।
ज्वाला सो जगायो जेम ससंधू करालो, रूप आयो चांद स्यंघ ।। २७०
बगी हाक दवा सुगो गोलियां,
ऊजाले म छुठै जगै क्रोधबांन मह बोला बीर जंग।
मुकांन दव धुलासैं नगी षाग षलां माथै तोप,
दगी गोला जिम भेलियो तुरंग ।। २७१
चंद्रहासां षागांके प्रचंडा झुंड बीर चालै,
षुलैं रुंडमुंडाके प्रजालै लोही षाल ।
पोतरै बिहारी वालरि मांथंडाके पिछाडे,
करे सुर धीरां धा(घा)वा बिहंडा कराल ।। २७२
षरे गोषालानु मार मंडे फूल धारां षैत धरैगो,
बिजैत नांम झूझार सधीर ।
करेगो प्रतिरां पुर लोही धार छके काली बरैगौ,
अपछरा वाल पोता माहावीर ।। २७३

३२. **बात–** सातसै असवार झालांका भी कांम आया, अर पांचसै असवार चहूवांणां भी मरवाया। यण प्रकार प्रोहित झगड़ो जीत लीनो। उदैपुरकौ रांणै भीम माहा सोच कीनो।

गीत प्रोयेतजीको

घरे घण कटक चीरवै घोटे चढ़ि झाला चहूंवांण ,
चढ़े प्रोहित रांण बका रण चापड़ै बर बीजैं ।
षग झाट वीट्टे बेहू तरफां बाज बंदूकां गुणियण स्यंधु गाई,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अरदलकै उपर रतनावत बिहद षागा बजाई ॥
तांम करे केता षल तंडल मिल जोगण रत मांची ,
गैलां पूर पलंचर मिलं ग्रधरण रुंड मिल सिव रांची ।
ऊदैयापुरमैं कीध अनोषी दारण हाथ दिषायौ ,
औ जोय बगसीरांम निवाई यम हीरां लै आयौ ॥ २७४

दोहा– बंध पकड़ ल्याय बिहद, कियो अनोषो काम ।
यम निवाई आवियो, रसियो बगसीरांम ॥ २७५

प्रोहित बचन

दोहा– आप बिना होये न असी, जीतायो मम जंग ।
कर जोडयां प्रोहित कैहै, राव बाहादर रंग ॥ २७६
बिहद लोह बजाययो, समर रह्यौ मम संग ।
कैरे षता त रुलकिता, राव बाहादर रंग ॥ २७७
मै तो कागद मेलयौ, आयौ चाल अभंग ।
मेवाड़ा तो हथ मुवा, राव बाहादर रंग ॥ २७८
मो पणबृत राषो मुदे, आयौ बीर अभंग ।
आप जस्यौ कुण छै अवर, राव बाहादर रंग ॥ २७९
राव कहै जीती किधूं, तैं मेवाड़ तमाम ।
किरमाला धोकल कियौ, रंग बगसीरांम ॥ २८०
चहूंवांण चढै चापड़ै, ईत झाला थट थाम ।
भेड़ा षला दल भाजिया, रंग बगसीरांम ॥ २८१
चालो घाट चीरवै, झुक षाग यक जांम ।
बिजैत्र-मागल बाजिया, रंग बगसीरांम ॥ २८२
अबै निवाई वुपरै, करो पुरण कांम ॥

राव गोड(ठ) बरणनं

रची बाहादर रावनै, प्रोयत गोठ प्रवीण ।
मिल सुभटां फुल मद, अत बंटे अफीण ॥ २८३
रची गोठ यम राव नुं, मन तन करै ईत मांन ।
बिध बिध भुंजाई बिमल, जीमै षलक जिहांन ॥ २८४

३३. **वार्ता–** प्रोहित रावनैं कहै छै– हूं तो आपका हूकमैकी आधीन छूं । आपमैं कांम पडयां याद करस्यौ । कांम पडयां मांथौ हाजरि छै । देही फूलधारां षरसी । रावनै बलदेव बगस घोड़ो येक गांवै बीजलियो षांडो दे सिवाणी बिदा कीनौ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छप्पै– अब निवाई ऊपरै हीरां दिल प्रोहित ,
महल रंग माणंत सुषद संमारस मोहित ।
कोक भेद बहू करत चिरत आसण चवरासी ,
रत विलास अनुराग बदन पर मदन विकासी ।।
कर हावै भावै मन बस करत, बचन विलासत वामकै ,
माहा मनोरथ सिध मिल, रसिया बगसीरांमकै ।। २८५
प्यारी महल प्रजंक पर सपुष सेज फूल पर,
मिल सुगंध सुकमार कांम लीला प्रकास कर ।
नव जोबन नत्यान दरस प्रतबिंब दषावत ,
रसकत बगसीरांम भांम मनमैं अति भावत ।।
यण प्रकार भुगावत अतुल, धार अधिक सुष धामना ,
हीरां प्रोहित हितसुं, करी संपुरण कांमना ।। २८६

बरषा रति बरणंन

अब बरषा रत घुमत घुमंड घनहर घूमत ,
धर बरषत जलधार ललत बादल गिर लूंबत ।
झमक बीज झमलत झपट पर पाय झोलत ,
सागर षादर भरै बिमल दादर तट बोलत ।।
बनराय फूल दल विकस, सूर मयोर सुष सहलमैं ,
चत्र मास प्रोहित चतुर, मांणत हीरां महलमैं ।। २८७
गिगन मलत घन घोर चपला चमकारुत ,
सागर नदी समाज मिलत सीतल मारुत ।
बिस कमांन बेलड़ी मंजरा फुल सुगंध मिल ,
गिरवर तरवर गहर डहक डंबर ता फल ।।
दल साधक मनो संयोगतां, चत्र मास अधिकौ चहैत ,
मिल हीरां प्रोहित महलमैं, रत विलास निस दिन रहैत ।। २८८
दोहा– चत्र मास नीला चिरत, बीत्यौ षेलत बांम ।
सीतल काल आयौ सरस, संजोगण मिल स्यांम ।। २८९

सीत रति बरणन

छप्पै– सीतल जल थल सरस पवन सीतल ऊतर पर ,
संजोगण सुष स्यांम होत वृहणी-जन थरहर ।
नाग षां(पां)न तंबोल गरम ऊषदी मदन गुन ,
तपत अगन 'नापणी तेल' मरदंन चंपक तंन ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुभ सीतकाल सकल, गरम ऊरज वामांगना,
प्यारी प्रोहित ऊर लय करी सिध मंन कांमना ।। २९०

अथ वसंत रति बरणन

ऊसन धरण आकास उसन चल पवन असंभवै,
जल थल व्याकुल जीव पुन मंग देत निरषिवै ।
प्यारी प्रीतम परस चंदन चरचितै केसर मलत,
.........कपुर अवर किसतुरी अरचित ।।
छुटत फवारा कुसमाद छबि, अति सुगंध छिडकत अवर ।
सुष समाज प्रोहित सरस, प्यारी हीरां महल पर ।। २९१

दोहा– यण प्रकार प्रोहित अठ, तन काल सुष तांम ।
नीत नबीन प्यारी नरष, हरषित पूरण हाम ।। २९२
रसक बृतीकी सीत रुत, हीरां परम सुहाग ।
अब बसंत आई ऊमग, फबते होरी फाग ।। २९३
तरवर पत चंदण त, वा सरवर मांनसोरोर ।
छव रुत पतंकि यधकं छैवि, यू बसंत रुत ऒर ।। २९४
अपछरमैं ऒर न यसी, रंभा छबि सारीष ।
षटरुतमैं नही पेषजें, रति बसंत सारीष ।। २९५
राजत ईधक वसंत रुत, तरवर मंजरि ताब ।
बहै रत पवन सुगंधवर, गहै रत फूल गुलाब ।। २९६
बन उपबन फूलत बिषम, कवल फूल जल कीन ।
मन मोहत फुलवाद मिल, निरमल फूल नवीन ।। २९७
कंज प्रफुलत सोभ कर, निरमल पुजत नीर ।
रंजत मधुर सुगंध कच, गुंजत भवर गहीर ।। २९८
आंबा पोहो रत छबि अधिक, निरषत सोभ नवीन ।
लालत मोनत स्वर लता, कोयल षग धुन कीन ।। २९९
मांनत फूल सुगंध मिल, सीतल मधुर समीर ।
वन ऊपवन पंछी बिमल, कलरव कोकल कीर ।। ३००

होली का ख्याल वरनन

हीरां मनमैं अति हरष, सोहै प्रोहित संग ।
अभैराम देवर अवर, रमत फाग रस रंग ।। ३०१
अवर त्रिया मिल येकठी, गावत होली गांन ।
ऊडत गुलाल अबीर अत, अरंण भयो असमांन ।। ३०२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केसर होद भराय कर, आंगण फाग असेष ।
नीर पतंग गुलाब नवै, बिध बिध रंग बसेष ।। ३०३
प्रोहित प्यारी षेल पर, अति भारी छवि येम ।
कर धारी सोभा किनक, पिचकारी रंग पेम ।। ३०४
कर हीरां डोली करग, भरत रंग भरपूर ।
रसिया बगसीरांमकै, नाषत सनमुष नूर ३०५
रंग भरत प्रोहित रसक, अदभुत हास ऊदोत ।
पिचकारी लागे प्रगट, हीरां थरहर होत ।। ३०६
प्यारी फाग बसंत पर, रसक तपी वर साल ।
लसत गुलाल सूरंगमै, लसत अंग छबि लाल ३०७ ।।
बकि चितवन तन बदन, मोंहत छबि सुकमार ।
भांमण डारत रंग भर, प्रीतम पर पिचकार ।। ३०८
चंदमुषी अगलोचनी, संक्रम चपल सभाव ।
भेली पिचकारी भुलत, डोली बाह म डाव ।। ३०९
केसर अग्र कपूरको, मोहत कीच म काय ।
रंग पतंग गुलाब रुच, राती अंगण राय ।। ३१०
अभैरांम हीरां अवर, लेवत भयर गुलाल ।
देवर भोजाई दोऊ, षेलत फाग खुस्याल ।। ३११
धमकत पग घुघरा तड़त दमकंत ।
सोभा तन कड कंकण भमकंत ।।
रसक हस चमकरत दन वदन चंद्र दिक(विक)संत ।
घरण रमभम छबि ध्यावत ,
कुंमकुम जल भर कर गद्गुगत डोली फटकावत ।
पिचकारी यथा र पतंग, जल धिर फिर भर भर चंपलगत ,
भाभी देवर ईधक चित, रंग भा(फा)ग होली रमत ।। ३१२ *

दोहा– भाभी डोलत बहत भर, कर देवर पिचकार ।
ऊठ गुलाब धक बोल इन, धरण गिगन इकधार ।। ३१३

* [बम] धमकत पग घूघरा कर कंकरण भमकंत ,
रसक हास चमकत रदन बदन चन्द्र विकसंत ।
तन सोभा दमकत तडत धरण रमभम छबि ध्यावत ,
कुंमकुम जल भर गड्डगत कर डोली भटकावत ।।
पिचकारी यथा र पतंग, जलधिर फिर भर भर चंपलगत ,
भाभी देवर ईधक चित, रंग फाग होली रमत ।। ३०९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छुटत दड़ी गुलाब छिब, फुलकत ऊर फुर फाव ।
देवर मुष पर डोलचा, सटकत बहुत सताव ।। ३१४
देषत घुंघट ओट दे, बंको द्रगनि बिसाल ।
लीन बसंत गुलालमैं, लसत अंग छबि लाल ।। ३१५
अभैरांम हीरां अवर, हीरां भाभी हेत ।
षेलत फाग बसंत गुल, लायक फगवा लेत ।। ३१६
रमत फाग बीत्यौ रिसक, संझ्या समय प्रसंग ।
प्यारीनैं प्रोहित कहै, रमस्यां अब रतरंग ।। ३१७
रंग ष्याल रा व्यापगत, रात वष्यात ऊमंत ।
चंद गिगन ऊडन चमक, संजोगण हुलसंत ।। ३१८
सुष सज्या संझ्या समय, रंगमहल रस रीत ।
परमल फूल प्रजंक पर, प्रोहित बैठ पुनीत ।। ३१९

प्रोहित बचन

कए बडारणि केसरी, प्यारी महल प्रजंक ।
रंग रु(लु)टांला राज्येकौ, आज भरे कर अंक ।। ३२०

केसरी बचन

प्यारी राज पधारज्यो, हीरां ईधक हुलास ।
माणीजै रत रंग महिल, प्रोहित मदन प्रकास ।। ३२१

हीरां बचन

प्यारी चाहत महल पर, जिण रो ईतनो जीव ।
कहै तोनु किण बिधि कह्यौ, प्रगट अमीणै षीव ।। ३२२

केसरी बचन

चाहत बेगी इधक चित, जादा कवण जबाब ।
प्यारी बेगी महल य(म), स्यांमां लाब सताब ।। ३२३
बिध बिध कर कहियौ बयण, प्रोहित हेत प्रकार ।
प्यारी आव महल पर, अब बेगी ईण बार ।। ३२४
बले येम कहियौ बचन, भेटांला कर भावै ।
महला पदमण माणस्या, ललिता वैंगी लावै ।। ३२५
आप पधारीजै अबै, जेजै न कीज्ये जोये ।
वाटा जोवै बालमां, महिलां हेत समोय ।। ३२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हीरां बचन

पिचकारी मो ऊपरै, नांष्यौ भर कर नीर ।
षेलत डारचौ ष्यात कर, आष्यां बीच [अ]बीर ।। ३२७
पिचकारी झटकत प्रगट, रटकत प्रोहित राये ।
अटकी नहै पट ऊतटै, सटकत आंष दुषाये ।। ३२८
पिचकारी धारां प्रगट, षटकत आंष दुषेम ।
लाषां वातां महलमै, आज न आस्यां ऐम ।। ३२९
पिचकारी कत जोर पर, अत डारी भर अंग ।
आज[न] महिलां आवस्यां, प्रोहित सेज प्रसंग ।। ३३०
गड गड दड़ी गुलाबकी, प्रीतम जोर प्रकास ।
आज नही म्हे आवस्यां, तन दूषत तन त्रास ।। ३३१
गोटत गेंद गुलाबकी, चाली फर हर चोट ।
पटकी लगी कपोल पर, अटकन घुंघट ओट ।। ३३२
डोली झपटी डाव कर, रपटी पाप(य) गिरीन ।
जोये बातां अटपटी, कपटी प्रीतम कीन ।। ३३३
कहै दीज्ये तु केसरी, निरमल बात निसा[ये]पे ।
लोभी मैं ओलष लीया, अत कपटी छौ आप ।। ३३४
कर गमण तब केसरी, आई महल ऊदार ।
मन मगेज मुलकत मली, प्रोहित हेत प्रकार ।। ३३५

प्रोहित बचन

कहै बडारण केसरी, प्यारी कठै प्रबीण ।
गुणसागर गजगरत, ललत कांम लव लीण ।। ३३६

केसरी बचन

राजतणी वा रायधण, मन कर बैठी मांण ।
आज न महलां आवसी, रसिया प्रोहित रांण ।। ३३७
पिचकारी लग[गि] पीवकै, सीतल भयौ सरीर ।
षटकत लोही षेलकौ, आंष्या बीच अबीर ।। ३३८
कहियो हीरां इम कथन, मंद मंद मुसकात ।
आज न महलां आवस्यां, रंग न रमस्यां रात ।। ३३९
कह्यौ बडारण केसरी, हीरां मांण अथाह ।
आप विना नहै आवसी, नाजक घणरा नाह ।। ३४०
ऊतर आयौ आंगणै, ऊभो सनमुष आय ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हाथ पकड़ हीरां तणो, रसियो प्रोहित राय ।। ३४१
कर पकड़ी इम कहत है, चंद बदनी मुष चोज ।
प्यारी हठनै परहरो, महलां कीज्ये मोज ।। ३४२
नरषो मो पर शुभ नंजरि, कर मत हठ बे कांम ।
प्यारी चालो महल पर, तन मन अरपूं तांम ।। ३४३
अरज करूं छूं आपसुं, निपट पियारी नारि ।
महिलां चालो पदमणी, बाद न कीजै बार ।। ३४४
प्यारी सागर प्रेमका, मती करो हठ भां[मां]ण ।
रंगमहला चालौ रमां, सुन्दर चत्र सुजांण ।। ३४५

हीरां बचन

बंक भुकट बोली बयण, ऊभी हाथ ऊभाड़ ।
आज न महलां आवस्यां, राज्ये करूंली राड़ ।। ३४६

प्रोहित बचन

हीरां सुणज्यौ हेतकी, निरषत सनमुष नूर ।
प्यारी ऊभो हुकम पर, कर मत नैण करूर ।। ३४७

हीरां बचन

दिल कपटी मैं देषिया, अत बल ले ऊपावै ।
पिचकारो मो ऊपरै, डारी भर भर डावै ।। ३४८
कोमल तन पर जोर कर, मो पिचकारी मार ।
पैला कीऐ पीडनै, लावै नहीं लगार ।। ३४९
दाब कर बाही दड़ी, ताकत चोट सताब ।
अत कोमल मो अंग पर, गड गड पंष गुलाब ।। ३५०
गैंदा छटक गुलाबका, नटतां बायौ नीर ।
अंग चटक थरहरत अत, आष्यां षटक अबीर ।। ३५१

केसरी बचन

कहै बडारण केसरी, हीरां देषो हेत ।
पीतम बड़ो अधीन पर, मांनां बचन समेत ।। ३५२

हीरां बचन

लाष बात चालूं नहीं, टालुं नहै मंन टेक ।
तपसी बालक और नूप, त्रिया हठ छै येक ।। ३५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बचन अफटा बहै गया, अब झुंठो अवसांण ।
ऊठ्या कर मंन क्रोध अत, रूठ्यौ प्रोहित रांण ।। ३५४

प्रोहित बचन

रुप गरबकी राजवणि, मत मेलज्यौ मांण ।
ज्येज नहीं अब जावस्यां, पर घर करे पयाण ।। ३५५
सामां भेटण सासरै, हरषत मन हुलसात ।
गढ बूंदी करस्यां गमण, रहां नहीं इक रात ।। ३५६
रहस्यां बूंदी सासरै, अब चालांला आज ।
मुझ बिणा यण महलमैं, रहज्यौ नीकां राज ।। ३५७
ऊठ चाल्यौ घर आंगणै, रूठ्यौ प्रोहित रांण ।
नहै बोलां इण नारिसुं, अब ठाकूरकी आंण ।। ३५८
पीतम कारण पदमणी, ऊठ गमणी आधीन ।
कर गहै फैटो कमरको, लोयण जल भर लीन ।। ३५९

हीरां बचन

मैं नु धणी विमुढ मंन, आप गरीबनिवाज ।
त्यागीजै तकसीरनु, रसिया बालिम राज ।। ३६०
बाटौ तोनै जीभड़ी, कुटल बचन कहाय ।
रीस निवारो राजबी, मो पर कर मयाह ।। ३६१
मांनै तागो बालिमा, प्रांण तणै प्याराह ।
कंथ निवारो कोधनै, नहै करस्यां वाराह ।। ३६२
मांनोजी रसिया भमर, जपुं तिहारां जाप ।
प्रीतम मन हठ परहरो, अरज सुणीजो आप ।। ३६३
लोभी देषौ लोयेणा, एमी नजरि भर ऐम ।
मुष बांणी बोलै मधुर, प्रीतम करि हित प्रेम ।। ३६४
लाषां बातां लाडला, मांणो महिल मंनाय ।
हिवड़ै नवसर हार ज्यूं, लेस्यां कंठ लगाय ।। ३६५

प्रोहित बचन

कर फैटो तजि कमरको, लपट मती हट लोय ।
रीस चढी छै राजवणि, मत बतलावे मोय ।। ३६६

हीरां बचन

बतलास्यां म्हे बालमां, आप बिनां कुण वोर ।
प्राण अवारू पीव पर, जिदा कसंन जोर ।। ३६७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राज कीयो छै रुसणो, ऊर मो दहत कदोत ।
आप न मांनो मो अरज, मरू कटारी मोत ।। ३६८

केसर बचन

आप तणी आधीनता, हीरां हाजर होय ।
जोवो इण पर शुभ नंजरि, करो मती हठ कोय ।। ३६९
राषीजै षांवंद सरस, नाजक घणरा नेम ।
प्रांण दुषी प्यारी तणौ, कीजै अति हठ केम ।। ३७०
चाल विलूंबो इधक चित, वेलत रोवत चांण ।
लपटावो गल लाडली, रसिया प्रोहित रांण ।। ३७१
मीठा बोलो बचन मुष, हीरां पर कर हेत ।
महलां जोयण माणज्यौ, सेझां पेम समेत ।। ३७२

प्रोहित बचन

सुण बडारण केसरी, कथन पुराण कहंत ।
लछण बाद लुगाईयां, अकलि य[प]छै ऊपजंत ।। ३७३

हीरां बचन

करो षमो हीरां कहै, पीतम करजै प्यार ।
पगां बिलूंमी पदमणी, आष्यां नीर अपार ।। ३७४
प्रोहित हीरां कर पकड़, लीनी ऊर लपटाय ।
अत देषत आधीनता, मनकी रीस मिटाय ।। ३७५

प्रोहित बचन

प्रोहित कहियो पदमणी, सुण लीज्यौ शुकमार ।
प्यारी थांका बचन पर, ऊपजी रीस अपार ।। ३७६

हीरां बचन

दोहा-- आप बड़ा छो ईसवर, मैं छुं बुधि गवार ।
ऐधुला मांणो अबै, पीतम सेजां प्यार ।। ३७७

केसरी बचन

दंपति बिलसो सुष मदन, तन की मेटो ताप ।
रंगमहिलमैं राजबी, अबै पधारो आप ।। ३७८
प्यारी पीतम हेत पर, चालो महिल सुचंग ।
रति मिंदर सुंदर सकै, औपत मनो अभंग ।। ३७९

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

फुल अपार प्रजंक फब, ऋत परमल डहीकाय ।
रंगमहिल विलि सरसकै, ऊसत बैठो आय ।। ३८०

हसत लसत निरषत हरष, सर दो करत सुभाय ।
हीरां सोभत मन हरत, ऊभी सनमुष आय ।। ३८१
कला प्रकासत दीपकी, दूणां भासत दीप ।
रंभा दिषा छैबि रूपकी, स्यांमा षडी समीप ।। ३८२
कहु ता दीनो कुरब, प्रीतम हेत ऊपाय ।
गादी ढली गलीमकी, ऊपर बैठी आय ।। ३८३
मिले कसुंबा माजमा, कैफ अपारी कीन ।
तन मन मिल दोहुं तरफ, ऊमगत पेम अधीन ।। ३८४
पीतम प्यारी सेझ पर, अति छिब प्रेम ऊदार ।
करत हरष अत केसरी, बारत लूण अपार ।। ३८५
भांमण प्यारी अंक भर, पीतम परस प्रजंक ।
बंक सरीर बिलासमैं, लसत कबुतर लंक ।। ३८६
पीतमकै उर सेझ पर, चंदमुषी चिपटंत ।
मानुं भादवै मासकी, लता ब्रछ लपटंत ।। ३८७

अर्द्धाली–प्रीतम प्यारी पेम पर, सरस थाहत पेम अथाग ।
सर[रस] लुटत रत रंगको, प्यारी पीतम सेज ।।
चंदना नागनसीं चपर, ऊलही दुलही रेम(ज) ।। ३८८

प्यारी छै अत प्राणकी, राष प्रीतम रीत ।
रंगमहिल बिलसण रमण, प्रतदन इधकी प्रीत ।। ३८९

छप्पै– रति बिलास अनुराग करत निसदन कैतूहल ,
सुष सज्या सुषमादि महल मांणंत दंपत मल ।
समै सार सिंगार रिसकै झला मंन राजत ,
मास मास रुत मिलत सुष आंनंद समाजत ।।
सरसंत बडारणि केसरी, रहत निरंतर प्रीत रत ,
हीरां प्रीत हुलासकी, चली बात प्रोहित-चिरत ।। ३९०

दोहा– वात सही यण विधि बणी, जिण बिधि सुणी जणाय ।
कबी तेण इण बिधि कही, इण विधि हीरां आय ।। ३९१
कहूं छंद चंद्रायेणा, कहुं छपै सोरठा कीन ।
कहुं कुंडलिया बारता, दुहा प्रगट धर दीन ।। ३९२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राचत कहुं सिंगार रस, कहुं बीर रस कामकी ।
बणी बात हीरां बिमल, रसिया बगसीरांम की ।। ३९३
हीरां बगसीरांम हित, बात बणी बष्यात ।
सूर बीर हरषत सुणत, लेषत रसक लुभात ।। ३९४

ईति श्री बार्ता बगसीरांमजी प्रोहित हीरांकी बात संपूर्णम्: ।। शुभमस्तु ।। यद्रसं पूस्तकं द्रष्टां तद्रसं लीषतं मया । सुद्ध अशुद्ध मशुद्धो वा मम दोसो न दीयते ।। श्रीरामचंद्राय नम : ।। श्री : ।।

+++++++++++++++++

(श्री नारायणसिंह भाटी, सञ्चालक-राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर के सौजन्य से)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रीसालूरी वारता

◈ ◈ ◈

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अथ रीसालूरी[1] वारता[2] लिष्यते[3] ।

[दूहा– गणपत देव मनाय की, समस्त(रु) सारद माय ।
वात रसालू रायकी, कहूं रसिक सूषदा[य] ॥ १
लेष विधाताजि लीष्या, तीमही ज भुगतै सोय ।
सूगण नरां मन जाणज्यो, वात तणो रस जोय ॥ २
वेधालूं मन बीधयौ, मूरष हासो होय ।
जांणै सोई सूजाण नर, अवर न जांन कोय ॥ ३
कथा रसिक कविराय की, जोभा कहत वनाय ।
रिसालू नृप विध कहू, वाचो चित्त लगाय ॥ ४
राग रंग रसकी कथा, प्रेम प्रीयास विलास ।
वात भेद स पै कहुं सूंगणा पूरण आस ॥ ५][4]

१. अथ वारत्ता[5] — श्रीपूर नाम नगर, तिणरै[6] विषै राजा सालवाहन[7] राज करै छै। [[8] यूं ईम घणा दिन विता। तरै सालिवाहण देवगत हूंवौ। तरैं प्रधांन उम्रांवा भेला हुयनै वडो पूत्र समस्त कुंमर नामै, तिणनै पाट वेसाणियौ। बालक-वयमै जूवांनपणौ आयौ। तरै सारी वातमै, राज-काजरी रीतमैं समभीयो। भली भांत राज करै छै। राजारो तप-तेज जोरावर बधीयो। वीण स[म्यै] सीह, वाकरी भेला चरै छै। भोमीया, ग्रासीया साराहि आणनै श्रीहजूररी चाकरी करै छै। दुनीया घणी सूष पावै छै। व्योपारी परदेसा(सी) घणा आवै, जावै छै। तीणरो हासल घणौ आवै छै। सारै ही सोभा राजरी घणी बधी छै। राजा समस्त देवतारा विलास ज्यूं साता रांणीसूं करै छै।

---

१. ख. रीसालुकुमररी। ग. रीसालुकुंग्ररी चोपई। घ. रीसालुकुंवरकी।
२. ख. घ. वात। ३. घ. में नहीं है। ४. चिन्हान्तर्गत दोहे ख. ग. घ. प्रतियों में नहीं हैं।

५. ख. ग. घ. में नहीं है। ६ ख. रे। ग. कै। ७. ख. सालीवाहनरो पुत्र समस्त राजा। ग. सालिवाहनको बेटो राजा समस्त (घ. समसत राजा)। ८. कोष्ठकान्तर्गत पाठ ख. ग. घ. में निम्न रूप में मिलता है—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहा– **षट रीत भोगी भमर ज्यूं, वीलस्यै राय विलास वैं।**
मांणीगर मोजां दीयै, सहुकी पूरे आस वैं ॥ ६

२. **वारता**—हिवै सूष-विलास करता घणा दीवस हुवा। राजारै पीण पूत्र नहीं]। [तीणरो घणौ सोच हुवौ। घणा देवी-देवता मांनै छै, षटु दर-सणनै पोषै छै, छतीस पाषंड, चोरासी चेटक घणा दाय-उपाय करै छै। पीण पूत्र कोई नही हुवौ। तठै राजानै घणौ सोच लाग रह्यौ छै। राज तौ करै छै पीण पूत्ररी चीता आग क्यूई आवेडै नही। मनमैं विचार छै—पूत्र वीना राज किण कारैम।][1]

दूहा[2] – **सिंगालौ[3] अरि[4] षीलणौ[5], जिण कुल एक न थाय[6] वे।**
तास पूरांणी[7] वाड ज्यूं, दिन दिन माथै पाय[8] वैं ॥ ७
पूत्र नही ईक मांहरै, तद घर सूनौ होय वैं।
ईम राजा नित चिंतवै, लेष विधाता जौय वैं ॥ ८[9]

ख. तीको वडो सुरवीर, दातार छै, मोटी रीधनो धणी छै। तीणरै सात अस्त्री छै, पीण पुत्र कोणहीरे नही।

ग. घ. तिण (घ. तीणी) राजारै सात रांणी छै। पिण (घ. पीण) कोणहीरै (घ. कुणीरै) पुत्र नही।

१. कोष्ठबद्ध वाक्यावली ख. ग. घ. में निम्न रूप में है—ख. तीणरे वास्ते राजा ऐ घणा देवी, देवता, षट् दरसण, छत्रीस पाषंड, चोरासी चेटक, बीजा ही दाय उपाय करी पूछ्या, पुज्या तो पीण पुत्र नही। पुत्र वीना राजानै चींता उपनी। राजा इसो मनमे वीचारीयो—पुत्र वीना राज्य कीसा कांमरो।

श्लोक—अपुत्रस्य गृहं सुन्यं दीससुन्यं च बंधवा।
मुर्षस्य रीदयं सुन्यं सर्वसुन्य दरिद्रता ॥ १
अपुत्रस्य गतं नास्ती स्वर्गं धर्मो च नेव च।
तसमात पुत्रं मुषं दृष्ट्या पछात धर्मं समाचरत् ॥ २

ग. घ.–राजा घणा दाय-उपाय कीधा तो पीण (घ. पीण कुंणीरै) पुत्र नही। राजानै चीता घणी—बेटा वीगर राज कीस्या (घ. कुंणी) कांमरो नही।

२. ख.–अथ पंजाबी। ग. घ. में ये दोनों दूहे नहीं हैं। ३. ख. सीगालो. ४. ख. अरी। ५. ख. षेलणो। ६. ख. होय। ७. ख. परांणी। ८. ख. घाव। ९. यह दूहा ख. ग. घ. प्रतियों में नहीं है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. वारता—Aईण भांतसूं सौच करतां घणा दिन हुवा। ईकदा समाजौगरै विषै एक गायांरै एवालो आयनै पूकार घाली—जौ माहार गाया चरावा जावा, जिण रोहीमैं सूर एक हाल्यौ छै, सू गायान दुष दैवै छै, तीणरौ जावतो कीजौ, ज्यूँ गायान सूष होवै। तर राजा सूणै नै मूछा हाथ फेरै नै वट घाल नै नगारचीन कह्यौ—नगारै सताब हुवैं। ईसौ कैहनै रजवूत सीरदार सर्व तईयार हुंवा। सारा ही सीरदार मूछा हाथ घाल नै हथीयार सरवस किया। घोडा पिलांण हुंवां। नगारारी धूस पडी। सूरा पूरा असवार हूवा। राजा असवार हूय नै सिकार चालीयो।A

दूहा – **हथीयांरा पाषल जूडै, कलहलोया कै कोण बै।**[1] ९
हडवड आग होसता, वन वीस आयै दौर बै।
एवालीयौ मारग चलै, वाजै नगारां ठौर बै।। १०

४. वारता— [इण भांत सूरनै सौधतां, चालतांन घणी वार हूई, पिण सूर लाधो नही। तठै सूरज आथव पीण लागौ। तरै रजपूतां उमरावांरा, सीरदारा सगलाइ राजाजीसूं अरजै कीधी—महाराजै! सूरजै आथमो छै, तिणसूं पाछा चाल्यौ। तठै राजा सूण नै कहै छै—वडा सीरदारा! वलै पाछा कुण आवसी? अठै ही डैरा कर दैवौ; परभातरा वलै सूरजै सोधनै सिकार करस्या। ईसो वचन सू राजा कह्यौ। तठै डैरा रौहीमैं कीया। रात घडो चार पांच गई छै। तद एक आथूनी कांणी अलगौ थको एक भाषर उपर अगन वलतीरौ चानणौ दीठौ। तठै राजाजी चांनणौ देष नै सारा ही उमरावानौ कह्यौ—जौ डूगर उपर अगन बलै छै, तीणरी षबर ल्यावौ। देखा उठ काई छै? तरै उमरावा सूण नै बोलीया—माहाराजै! आधी रातमै वादेव षबर करणनै जावा, सौ इण रोजगारमै काई मीलै? तरै बलै राजाजी कहीयौ—ईण वातरी खबर ल्यावो तिणनै मोटी रीझ करूं नै उणनै मोटा करूं। तरा उमरावा कह्यौ—माहाराज! मारी तो आसंग कोई नई, कुमूत कुण मरै, काई जांणा, उठै कांई चरित्र छै?]

A–A. चिन्हान्तर्गत पाठ ख. ग. घ. में इस प्रकार लिखित है—

ख. इसो चींतातुर थको राजा सदा ही रहे छे। हीवे एकदा समयरे वीषे राजा समस्त सीकार चढीया।

ग. घ.–तद ऐक सीमै (घ. तदी एक दीन) राजा सीकार चढो (घ. गयो)

१. २. –. उक्त दोनों दूहे ख. ग. घ. प्रतियों में नहीं मिलते हैं।

[–]. कोष्ठकान्तर्गत पाठ ख. ग. घ. प्रतियों में निम्न रूप में वर्णित है—

ख. सुअर वांसे घणा अलगा गया। दीन अस्त हुउं। तरे वनमांही ज रहीया। गोठ गुघरी, वल त्यार हुई छै। सारो साथ जीम्या पछे रात घड़ी च्यार जातां राजाए डुगर उपर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Aतठै एक ईवाल्यो बोल्यौ—महाराजै ! आपरो हुकम हूवै तो हूं षबर ल्याउ। तरै राजाजी कह्यौ—तु षबर ल्यावै तो तोन मोटौ करू।A

तरै इवाल्यो भाषररै चांनणै सांमो चालीयो। रायन भाषर उपर चढीयौ। आगै देषै तौ Cवडी बडी कठफाडा बल रही छैC। केसरी, सीघ नाहर[1] बैठौ[2] छै। Dश्रीगोर्षनाथजी जोगैस्वर मूद्रामै तपस्यामै बैठा छयै; ध्यानमै पल लगाई रह्य छै; आया-गयांरी षबर नही राषै छै। ईण भातसूं एवालीयो देष नै पाछो आय नै राजाजीनू सारा ही समाचार कहीया—माहाराज! सिलामत, श्रीगोरषनाथजी तपसाम वीराजीया छैजी। सूण नै राजाजी सवा लाख रो रीझ दीवी।D

आग बलती दीठी। तरे राजा उबरावांनु कहीयो—आ अगन बले, तीणरी ठीक ल्यावो तो तीणनै रीझ देउं, मोटो करूं, पटो वधारूं। तदी उंबरावां वीचार नै कहीयो—माहाराज! जुध, लड़ाइ होइ तो जावां, पीण अकालमीचमे तो मे कोइ जावा नही। कांइ जाणां आगे कुण छै?

ग. घ. घणो अलगो गयो। दीन असुर (घ. पहाडांमै दीन अस्त) हुवो। तदी वनमै (घ. उठै) रह्यो। घणी रात गयां पछै (घ. घडी ४ रात गई छै तठै) राजाऐ डुंगरी (घ. डुंगर) उपरै आग बलती दीठी। तदि राजा उमरावांनै कह्यौ—अणी (घ. ईण) डुंगरी उपरै आग (घ. अगन) बलै छै, तीणरी ठीक ल्यावो; तीणनै मोटो करूं। तदी उमराव कह्यौ (घ. बोल्यौ)—कठैई (घ. महाराज, कठैइ) रण, संग्राम-जुध होवै तो जावां; पिण अकालमीचतो जावां नही। कांई जांणां, कोइ (घ. कांई) छै?

A–A. चिन्हाङ्कित पाठ ख. ग. घ. में इस प्रकार है—

ख. तीण समे एक गोवालीयो उभो हुतो। तीणनु उबरावां कहीयो—तु इण अगनरी ठीक ल्यावे तो तोनु मोटो करां।

ग. घ. तदी तीण समै गुंवाल उभो थो (घ. तठै गुवालीयौ पीण उभौ थौ) तणनै उमराव बुलावे नै कह्यौ—अण आगरी (घ. तणीनै बुलायौ, उमरावां कह्यौ—आगकी) ठीक ल्यावै तो तोनै मोटो करां।

B–B. ख. तदी गोवालीयो डुंगर उपर चढीयो। ग. तदी गुंवालीयो डुंगरी चढचो। घ. तदी गुवाल डुगर उपरै चढचो। C–C. ख. ग. घ. वडा वडा लाकडा (ख. लकड) वलै छै। १. ख. नाहर आगे। २. ग. घ. बैठा।

D–D–चिन्हित पाठ ख. ग. घ. प्रतियों में निम्न प्रकार है—ख. श्रीगोरषनाथजी बेठा तपस्या करे छे। गोवालीयो इसो वरतंत देष नै पाछो फीरचो। आयनै राजाने कहीयो—माहाराज! जोगीस्वर बेठा तपस्या करे छे। राजा इसो सुणने राजी हुआ। गोवालीयाने रीझ-मोझ दीधी।

ग. गोरषनाथजी बैठा तपस्या करै छै। तदी देषी राजाजीनै आय कह्यो।

घ. तदी राजानै आवै कह्यौ—माहाराज! गोरषनाथजी तपस्या करै छै।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Aरीझ कर नै राजाजी एकला उभराणा पगा भाषर चलीया। चलतां-चलतां भाषर उपर चढ नै श्रीगोरखनाथजीरो दरसण कीधो। गोरषनाथ पल षोल नई। तरे राजा एक पगरै पांन मूंहडा आगै उभौ रह्यौ; दोय हाथ जोडि रह्यौ छै, श्री गोरषनाथजीरौ ध्यांन करै छै। ईण तरै सवा पोहर तांई राजा उभौ रह्योA।

तठै[1] श्रीगोरषनाथजी पल षोली[2]। आगै[3] Bदेषे तो राजा एक पगरे पांण उभो दीठौ। तठै श्रीगोरषनाथजी तुष्टमांन हुय नै बोलीयाB—राजा! मांग तन तूठो, चाहीजै सो मागलैB। Cइसौ राजा सुण नै सिलांम कर नै बोलीयौC—माहाराज! आपरै[4] परसादकरनै[5] सारी वातरी[6] दोलत छै, Dपिण ईक पूत्र कोई नही। तिणरौ मांनै घणौ दूष छै सो आप तूठा छौ तो पूत्र दिरावौD।

[ईसो गोरषनाथजी सूणनै आपरा हाथम गुलाबरी छडी थी, सौ राजानौ दीधी नै कहीयौ—जै आबारौ रूष छै, तिणरे एक वार छडीरी दीजै; सौ अबांरी करी येक पडसी, तिका ताहारी रांणीनै षवायजै, तिणसूं ताहरै पूत्र होसी, तिण पूत्ररो नांम रीसालू दीजै; ईसौ कह्यौ। तठै राजा छडो लै नै चालीयौ]—

A–A. चिन्हान्तर्गत पाठ ख. ग. घ. में निम्न रूप में वर्णित है—

ख. पछे राजा समसत एकलो अलवाणो डुगर उपर चढीयो। आगे देषे तो श्री गोरषनाथजी ध्यानमे बेठा छै। राजा पण उठे एक पगवरांणो सवा पोर तांई उभो रहे ने सेवा करे छे।

ग. तदी राजाजी ऐकलांई डुंगरी चढ्या। गोरषनाथजी नै देख्या। तदी उठाईसुं उभा रह्या। एक पगवरांणा सवा पोहर तांई सेवा कीधी।

घ. तदी राजा पालौ एकलौ डुगर उपरै चढ्यौ। गोरषनाथजीनै दीठा। तदी परक्रमा दे एकण पगवरांणा सवा पोहर तांई सेवा कीधी।

१. ख इतरे। ग. घ. तदी। २. ख. उघाड। ग. उघाडे। घ. उघाडी। ३. ख. कर। ग. घ. नै।

B–B. ख. देषे तो राजा उभो छे। इतरे श्रीगोरषनाथजी बोल्या—राजा। मांग मांग, हु तोनु तूठो, जे मांगे सो देउं।

ग. घ. कह्यौ—राजा मांग मांग, तोनै (घ. में नहीं है) तुष्टमांन हुवां।

C–C. ख. तरै राजा हाथ जोड ने कहे। ग. घ. राजा कहै (घ. कह्यौ)
४. ख. ग. घ. आपरी। ५ ख. ग. दीधी। घ. ऋपाथी। ६. घ. में नहीं है।

D–D. चिन्हगर्भित पाठ ख. ग. घ. में यह है—ख. राज तुठा तो प्रमांण। माहरे पुत्र नहीं, सो एक पुत्र दीउं। ग. पिण ऐक मांगुं छुं–सो ऐक पुत्र नही। घ. पण बेटो नही।

[—]. ख. ग. घ. प्रतियों में ऐसा पाठ मिलता है—ख. तदी जोगीस्वर एक च(छ)डी दीधी। जा, माहरे बागमे आंबारो गोठ छे, तीणरी इण छडीसु एक केरी पाडजे;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढाल पंजाबी[1]

दूहा – सालवाहण[2] नृपरावका[3] , श्रीपूरनगरक[4] राय[5] बे ।
पूत्र नही जीस[6] कारणैं, सेब्या सिद्धका[7] पांव बे ॥ ११
चाल्यौ आंबां आगलै, धीमा पगला धरायबे ।[8]

५. वारता—Aईण वीधसू राजा डूंगरसूं उतर नै आंबा हैठे आयो नै छडीरी दै नै आंबो ले नै आपरी फोजमै आयौ । सारा ही उमरांव 'षमा षमा' करनै हकीगत पूछी । राजा हकीगत सारी कही । उमरांवां सूण नै घणा राजी हूवा । इतरे रात्र गई, परभात हूवौ । तरै उमरावां अरज कीवी—श्रीमाहाराज ! अबे सोकार मनै करावो, नेगरमे हालो; श्रीगोरषनाथजीरो प्रमांण सिध करोA ।

Bतरे राजा वात मांनी नै कुच कर नै नगरमै आया । संभा जोडि नै सवा पोहर दिन चढीया राजा राजैलोकमै गयौ । तठा पछै रांणीनै बुलाय नै आंबो दीधो न कह्यौ—हे रांणी ! राते श्रीगोरषनाथजी संतुष्ट हुवा । ते फल दीधो । ओ थे फल षावौ, ज्यू थार पूत्र हौवै । तरै रांणी श्रीगोरषनाथजीनै दिसांग सीलांम करै नै फल आरोगीयौ न तुरत आस्या रही । वडो हरष उपनोB ।

थारी पटरांणी गुणसुंदरीने षवाडजे; ज्यु एक पुत्र होसी । माहरी रसालरे नांमे तीण पुत्ररो नांम कुं रसालु दीजे ।

ग. घ. अतरायकमै (घ तदी) गोरषनाथजी कहै छै (घ. कह्यौ आ)—मांहरा हाथरी छडी ले जा, आंबारै देजे (घ. दीजै) कैरी एक पाडजै (घ. एक कैरी पडे जदी) रसरै नांमै रसालू कुंअर नांम देजे (घ. माहानांमै रीसालुरै नांमें बेटारौ नांम दीजै) ।

१. ख. दुहो पंजाबी । ग. गोरषनाथजी वायक । घ. में नहीं है । २. ग सालीवाहन । ३. ग. नरपरावका । घ. नृपरायरा । ४. ख. श्रीपुरनगरका । घ. श्रीनगरका । ५. ख. ग. घ. राव । ६. ख. तस । ग घ. जस । ७. ख. सीध का । ग. सीधांरा । घ. सिद्धांका ८. यह अर्द्धाली ख. ग घ. में नहीं है ।

A–A. ख. हीवे राजा नमस्कार कर नीचो उतरचो । आय सीरदारनु मील्यो । प्रभात हुओ । ग. घ. तदी राजा आंबो ले नै नीचो उतरचो ।

B–B. ख. घोडे असवार होय वागमे पधारचा । उठासु आंबो ले नै नगर माहे आया । राजलोकमे जाय पटरांणीसुं मील्या । राजा समस्त गुणसुंदरीनु कह्यो—आपणे भाग्य जाग्यो । श्रीगोरषनाथजी तुठा, एक आंबो दीधो छे सो थे षावो । आंपणे पुत्र होसी । तद रांणी सात सलांम करी फल आरोगीया । तीण दीनथी गर्भ रह्यो ।

ग. नगरमै आव्या । राजलोकांमै पधारचा । तदी पटरांणीनै कह्यो—आंपणो भाग्य जाग्यौ । गोरषनाथजी तुष्टमांन हूवा, सो फल दीधो छैं, पुत्र होसी, ओ फल थे आरोगो । अतरायकमै पटरांणी सात सलांम करी नै फल खाधो ।

घ. सैहरमै आया । राजलोकांमै आया । तदी पटरांणीनै कह्यो—आंपणो भाग्य जाग्यौ । औ फल दीधो छै । श्रीगोरषनाथजी तुसटमांन हुवा छै, पुत्र होसी । तदी पटरांणी सात सलांम करे नै फल षाधो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहा– थाल भरी दाल चांवला, लहै कटौरे हीयैं बै ।
पडित पूछै वरण मछली, पूत्र सहै कीध यक बै ॥ १२A

६. वारता—(अबे गरभ पालणा करतां नव महीना हूवा, साढा सात दीन गया थका पूत्र जनमीयौ । श्री गोरषनाथजीरी वाचासू रीसालू नाम दीधौ । घरंरा प्रोहित ते डेरे गया छै) ।

अथ[1] दूहा[2] –वाजा[3] छत्रीस[4] वाजीया, पली[5] वाज्यौ[6] थाल बै ।
राजा[7] घर पुत्र जनमीयो[8], रजवटकै रषवाल बै ॥ १३
राजा मिल नांम थापीयो[9], कवर[10] रीसालू नांम[11] बै ।
घर घर रंग[12] वधावणा, नृप[13] घर मंगल गांम[14] बै[15] ॥ १४
[नांटिक छंद गुण गाजीया, गोरी गाव गीत बै ।
पान सूपारी बाटता, धन अजूनो आदीत वे ॥ १५
मांगणहारा मंगता, दीजै त्यूंनू दांन बे ।
पंडित वेली ज्यौतसी, वधतो वधारो मान बे ॥ १६
हीव धरे जोतसी तेडीया, वेला लेवण धाम बे ।
आया राजा आगलै, साझै अपणा कांम बे ॥ १७
लगन लेई नै जोईयौ, मोहूरत रूडो न होय बे ।
अगम तिगण सासौ लहौ, राजानै कहै जोय बे] ॥ १८

A–यह दूहा ख. ग. घ. प्रतियों में नहीं है । (—)कोष्ठकान्तर्गत पाठ अन्य प्रतियों में इस प्रकार है—ख. नव मास साढी सात दीन पुत्र रो जनम हुउं । गोरषनाथजी रो वचन फल्यो । ग. घ.–महीना साढा सात दीन ७ जातां (घ. महीना प्रतीपुर हुवा तदी) पुत्र हूओ । गोरषनाथजीरी रसालरै नांमै रसालुकूंवर (घ. रीसालु) नांम दीधो । घररो परोहीत (घ. प्रौहीत) बुलायो ।

१. ग. पडावाक । ख. ग. में नहीं है । ख. २ दुहो । ३. ख. वाजो । ४. ख. छत्री से । ५. ख. पेली । ख. वाजी । ७. ख. समस्त । ८. ख. जनमीया । ९. ख. समस्त घर पुत्र जनमीया । १०. ख. भया । ११. ख. रसालु । १२. ख. आणंद । १३. ख. घर । १४ ख. च्यार । १५ ग. घ. प्रतियों में १३ वें और १४ वें दूहे की जगह उलट फेर से एक ही दूहा निम्न रूप में मिलता है—

समस्तपुर पुत्र जनमीयो, भया रीसालू नांम बे ।
घर घर आणंद वधांवणा, घर घर मंगल चार बे ॥

[—] कोष्ठकान्तर्गत दूहे ख. ग. घ. प्रतियों में अनुपलब्ध हैं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सारी वीध बालकरी करतां थकां ईग्यारै वरस हूवा। तठै एकदा समाजौगरै विषै राजा भौजरा घररा नै राजा मांनरा घररा नालेर आंया। तिणां साथें मंत्रीसर आया छै। सूं आय नै मीलीया, मूजरौ कीयौ, बाह् पासाव कीया, आमी-सामी हकीगत, कुसल पूछीया। वडी षूस्याली हूई। तठै राजा मंत्रीसरानू कहै—मांहा तांई आवणौ हूवौ सौं कांई कारण छै ? सौ म्हानैं कह्यौ।]

Aतठै प्रधान बोलीयौ—श्रीमाहाराज ! राजा भौजजी, श्रीमांनजीरी बेटी ईयांरी सगाइरो नालेर ल्याया छां; आपरा कुंवर दीषावो। इण कारण आयां छां। सो आप कुवरजी ने तेडावो, ज्यूं नालेर बधांवां इंसौ सूंन नै राजाजी मनमैं वीचारीयौ—'कुवरनै वरस इग्यारे हूवा नै इक वरस वलै घटै छै, सो बार काढणौ, मढ्यौ देषणौ जोग नई, नै परधानै नालेर ल्याया सौ अबै ईणनै कांई जाव देउ, सौ राजा समस्त मनमैं वीचारीयौ। तठै आपरा ठाव पांच सात उमरांवानै लै नै आघा जाय नै राजा समस्त मनमैं वीचारीयै उमरावानै कहेयौ—तठै ईणरौ जाव काइ देवौ। तरै उमराव बोलीयौ—श्रीमाहाराजाजी, ईणरो उतर तौ औ छै—अवारै तो ईणनै डेरा दीरावौ, षांणा दानारा जतन करावौ नै रातै सभा माड नै उमरावा, प्रधान सारा ही भेला हुय नै मनसौबौ कर न सारो ही जाबतौ कर देस्या।A

Bतरै राजा समस्त पाछौ आयनै प्रधानैनू कहीयौ—आज तो आप डेरा करावो, भोजन करावो; सूवारे जबाब सारो ही हुय नासी, इसौ कह्यौ तठ प्रधांन बोलीया—जौ हूकम, आपरो कह्यौ सो प्रमांण छै। इतरौ कैह नै प्रधान उठीयो। परधान रा डेरा दीराया। षाणा-दाणारा जैतन कराया।B

[—] कोष्ठकान्तर्गत पाठ के स्थान में ग. घ. प्रतियों में निम्न पंक्तियां ही उपलब्ध हैं—

ख.–हीवे राजा इसो जाब सुण ने कुवर ने पांच धायां साथे महीलांमें राख्या। इम करतां वरस इग्यारे वतीत हुआ। तद उजेणीरो धणी राजा भोज तीण री बेटीरा नालेर आया। फेर राजा मांनरी बेटीरा पीण नालेर आया।

ग. तदी कुंअर नै च्यार धाअ लगाई। महीलांमै राख्ये। तदी वरस अग्यांरांरा हूवा। तदी नालेर आयो।

घ. तदी कुंवरनै ऊचा अवास छै, मैहलांसु अलगा छै। तठै च्यार धायां ले गई। धायांनै कह्यौ—मैहलांमै राषजौ। तदी वरस १२ हूवा। तदी नालेर आया।

A–A. कोष्ठकगत पाठ ख. प्र. में नहीं है तथा इसके स्थान में ग. में निम्न पंक्तियाँ ही उपलब्ध हैं—

ग. तदि राजा समस्तनै कह्यौ—सगाई करो।

B–B. चिन्हमध्यग पाठ ख. ग. घ प्रतियों में अनुपलब्ध है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सारी वीध बालकरी करतां थकां ईग्यारै वरस हूवा। तठै एकदा समाजौगरै विषै राजा भौजरा घररा नै राजा मांनरा घररा नालेर आंया। तिणां साथें मंत्रीसर आया छै। सूं आय नैं मीलीया, मूजरौ कीयौ, बाह पासाव कीया, आमी-सामी हकीगत, कुसल पूछीया। वडी षूस्याली हूई। तठै राजा मंत्रीसरानू कहै—मांहा तांई आवणौ हूवौ सौं कांई कारण छै? सौ म्हानै कहौ।]

Aतठै प्रधान बोलीयौ—श्रीमाहाराज! राजा भौजजी, श्रीमांनजीरी बेटी ईयांरी सगाइरो नालेर ल्याया छां; आपरा कुंवर दीषावो। इण कारण आयां छां। सो आप कुवरजी ने तेडावो, ज्यूं नालेर बधांवां इंसौ सूंन नै राजाजी मनमै वीचारीयौ—'कुवरनै वरस इग्यारे हूवा नै इक वरस वलै घटै छै, सो बार काढणौ, मूढचौ देषणौ जोग नई, नै परधानै नालेर ल्याया सौ अबै ईणनै कांई जाव देउ, सौ राजा समस्त मनमैं वीचारीयौ। तठै आपरा ठाव पांच सात उमरांवानै लै नै आघा जाय नै राजा समस्त मनमै वीचारीयै उमरावानै कहेयौ—तठै ईणरौ जाव काइ देवौ। तरै उमराव बोलीयौ—श्रीमाहाराजाजी, ईणरो उतर तौ औ छै—अबारै तो ईणांनै डेरा दीरावौ, षांणा दानारा जतन करावौ नै रातै सभा माड नै उमरावा, प्रधान सारा ही भेला हुय नै मनसौबौ कर न सारो ही जाबतौ कर देस्या।A

Bतरै राजा समस्त पाछौ आयनै प्रधानैनू कहीयौ—आज तो आप डेरा करावो, भोजन करावो; सूवारे जबाब सारो ही हुय नासी, इसौ कह्यौ तठ प्रधांन बोलीया—जौ हूकम, आपरो कह्यौ सौ प्रमांण छै। इतरौ कैह नै प्रधान उठीयो। परधान रा डेरा दीराया। षाणा-दाणारा जैतन कराया।B

[—] कोष्ठकान्तर्गत पाठ के स्थान में ग. घ. प्रतियों में निम्न पंक्तियां ही उपलब्ध हैं—

ख.-हीवे राजा इसो जाब सुण ने कुवर ने पांच धायां साथे महीलांमै राष्या। इम करतां वरस इग्यारे वतीत हुआ। तद उजेणीरो धणी राजा भोज तीण री बेटीरा नालेर आया। फेर राजा मांनरी बेटीरा पीण नालेर आया।

ग. तदी कुंअर नै च्यार धाअ लगाई। महीलांमैं राष्ये। तदी वरस अग्यांरांरा हूवा। तदी नालेर आयो।

घ. तदी कुंवरनै ऊचा अवास छै, मेंहलांसु अलगा छै। तठै च्यार धायां ले गई। धायांनै कह्यौ—मैहलांमै राषजौ। तदी वरस १२ हूवा। तदी नालेर आया।

A–A, कोष्ठकगत पाठ ख. प्र. में नहीं है तथा इसके स्थान में ग. में निम्न पंक्तियाँ ही उपलब्ध हैं—

ग. तदि राजा समस्तनै कह्यौ—सगाई करो।

B–B. चिन्हमध्यग पाठ ख. ग. घ प्रतियों में अनुपलब्ध है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

A हीवं राजा समस्त रातरै पूहर सभा जोडनै सारा ही उमरांवानै, प्रधाननै भेला करै नै मनसूबौ पूछीयो—अबै काई कीयौ चाहीजै। तठै इक प्रधान बोलीयो—श्री माहाराजा साहिबा ! सारा ही मनसोबा जाण देवौ। हु कहु सो कीजै—प्रभातरै प्रो प्रधान आवै तरै श्री कुमरजीरा हाथरो षडौ(षांडो) मगाय नै नालेरं वंदावो नें जांनरी तारी करो। षाडो हाथीरे होद मेलने परणाय लावास्यां। इसी राजाजी सून नै वात मांनी। साराहीरै वात दाय बेठी। अबै सभा बोहोड नै मेहला दाषल हूवा।

परभात हूवौ, तठै राजाजी सभा जोडी। तठै प्रधांन नालेर लेने आया। तठै राजा समस्तजी बोलीया—जावौ, उप्रावा कुवररो य(षां)डो ले आवौ। तठै प्रधान सून ने बोलीया—श्रीमाहाराजै ! सिलामत, षांडौ मंगावौ छौ ने कुमरजीन नही तेडौ, तीनरौ कांइ कारण छै ? तठै रातवालो प्रधान वो नामै 'जालमैसीघ' तिको वोलीयौ—श्री प्रधांनना साहिबा ! मांहरै घररी आ रीत छै—'वालक बांरे वरसमै हूवै, तठा पछै सगलै माहादेवजीरी जात करै, तठा पछै तिन बालकरौ माता-पिता मूहडौ देषे। सौ कुंमर वरस इग्यारमै हुवो छै, एक वरस घटै छै। तिणांसूं आ रीत छै—माइत मूहडौ देषै नही। नै तांहरै मनमै कोई भरम हुवै तो थे देष आवौ'। तठै प्रधानै बोलीयौ—म्हांरै कोई भरम नही, थे करसौ सौइ ठीक छै। तठै राजा समस्तजी कहीयौ—प्रधांनां ! राजाजीरै जैज हूवौ तौ बारे बरसरो कुंवरनै हुणनै दैवौ, पछै सगाई करज्यौ। तठै प्रधान बोलीया—कोई कारण नई, आप षांडो मगावौ। A

B दूहा— हुकम भलो माहाराजैरो, नालेर दीधां ताम बे।
जांन तयारी कीजीयौ, ज्यूं सीज सगलां कांम बे॥ १९
माहा[रा]ज धणी हूकमथी, जैज न होवै काय वै।
षासौ(डौ)वंदावी पूजीयौ, टीका अक्षत दाय बै॥ २०

A–A. चिन्हमध्यगत पाठ ख. ग. घ. प्रतियों में निम्न वाक्यावली के रूप में ही द्रष्टव्य है—

ख. तद राजा समस्त कह्यो—वरस बारां माहे एक वरस थाके छे, सो कुवरनु बारे तो काढ़ां नही ने षडग मेलने परणावस्यां।

ग. बारै वरसमैं वरस एक घटै छै सो बारणै काढा नही। घ. तदी राजा समसत मनमै जांणौ—बारै वरस वरसमै एक घटै छै सो तो बारणै काढां नही।

B–B. ख. ग. घ. प्रतियों में चिन्हान्तर्गत १९ से ३४ पर्यन्त दूहे एवं ८ वीं वार्ता के स्थान में केवल निम्न पंक्तियाँ ही समुपलब्ध हैं—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. वारता—हीवै जांनरी सभाई करी। वडा वडा उम्राव साथै कीया। भेला केसरीषा(या) कसूवा सीरपावै करचा। भेला गेहणासूं जंडाव जडीयौ छै। सौभा सूरजैरी कीरणरी जलाहल लाग रही छै। तुरंग सोनारी साष ते करी सोभैतै, वडा वडा हाथी सीणगारचौ छै।

दूहा— हय गरथ सीणगारीया, गुघरैरा घमकार बे।
षांडो मेघाडंबरैं, वेसारचौ सूषकार बै ॥ २१
चढीया सहु जांनीया घणा, जांनी कीधां बनाव बै।
मलपंता मोजो थका, देतां नगारां घाव बे ॥ २२
उजेणीपूर आवीया, संभेला सिणगार बै।
बांह पासावे सहु मील्या, सगली धरी मनवार बै ॥ २३
जाचक जै जै बोलीया, मे आगम जिम मोर बे।
दांनै करी राजी कीया, तोरण बांध्या तोर बे ॥ २४
राजा भोजजी ·······, पूछै वात उदार बै।
कवर नईकौ कारणै, मंत्रीसर तिण वार बै ॥
बात क सारा नृप सूणी, राजी मन धर धयै[ध्यार]बै २५
हीव चवरी मंडप तणे, फैरा लीया च्यार बे।
दत्त घणा वड दायचा, दीधा राज अपार बे ॥ २६
तीहांथी मांन नृपत तणी, चंवरी पूंहता जाय बै।
पूरब बिध सहु जांणज्यौ, हरष मगल फूरमाय बै ॥ २७
गाव मंगल नारीयां, परण्यौ षांड्यौ नार बे।
दत्त घणा नृप आपीया, कर कर बहु मनवार ॥ २८
जाचक बहु धन पोषीयो, सरीष किवी सारी जांनै बे।
चलतां आया आंपणौ, नगर वधाई मान बै ॥ २९

ख. तठा पछे राजाइ जोतषीनु बोलाया। आछा लग्न जोवाडीया। व्याव मांडीयो। राजाए पोतारा उबरावा साथे रसालुरो षांडो मेलीयो। उबरावे षांडासुं रसालुजीरे दोय रांणीयां परणे लाया।

ग. घ. तदी आपरा उमराव षांन (घ. वाषो) सुलतांण, मुंगलां, पठांण रसालुरा (घ. समसत राजा कुंवरजीरा) हाथरो षडग मोकल्यो (घ. षंजर दीधो)। परणी ल्याया (घ. जांन करे हाथीरी आंबावाडीमैं छै सो षंजरसु पर परणी ल्याया)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हरष बधाइनै आवीया, महिलां ते दौउं नार बै ।
कुवर देषी मन रांजीयौ, ए अपछैर अनूंहार बौ ।। ३०
कुंण छै बाल वडी, सहीयां जपै तांम बो ।
श्रीमाहराजा कुमरजी, राजा-राणी ए धांम बो ।। ३१
राजा तणौ षडग परणैनै, आज सूंपी तुझ हाथ बो ।
राजा रांणी बौ रांवली, विलसौ तन घन नाथ बौ ।। ३२
कुमर सूणनै चीतवै, कीम षडग परण्यौ जाय बे ।
मूझनें बींद बणाइये तौ, न कीयौ नृप कहायाय बौ ।। ३३
एहनो काइ पटंतरो, निगे लहै सू साचै बौ ।
इम चींतवी हसि हस मिल्यौ, थाईसू वातां राच बौB ।। ३४

९. [वारता—इण भांतसूं सहेलियासू बात कीवी । समोभामा हुडनै रांणीयासूं राजी-वाजी हूवा । घणी रांणीजी वांतां कीवी । इम करता दीन १५ तथा वीस हूवा । तठै भोज, मांनरा असवार, रथ, पालषी, चकडोल आंणो आयो । वडा मंत्रीसर लेवा सारू आया । आय नै समस्त राजासूं मील्या । बाहू-पसाव हुवा । आमा-स्यामा कुसल पूंछचा । घणी मानवार हुई । असल आराईरा फूल साभा माहै फीरीया । वडो गोठ गुघरीया हुई ।

हीवै रातरा पोररी रांणीया कुवरजी पासै आई । घणा रग-विलासरी वांत हूंई । तितरां मांहै कुवरजी बोलीया—थारा घरांरां आणा आया छै सौ पीहर दोसा पधारो; मेह पिण वेगा आवस्या ।]

दूहा— रांणी सूण पीउतै भणै, वेगा पधारण वार बौ ।
विरहन पामस्यां तुम तणौ, विछडीया नीरधार बो ।। ३५

[—] कोष्ठगत पाठान्तर ख. ग घ. प्रतियों में निम्न प्रकार है—

ख. हीवे कुवरजी दोय रांणीयां साथे सुष-विलास भोगवे छे । राजा भोजरी बेटी माहा रूपवंत छे । तीण सु आप लयलीन रहे छे । इम करता दीन पचीस व्रतीत हुआ । तदी उजेणीसु आंणो आयो । दुजी रांणी ने पीण आंणो आयो । तदी राजा भोजरी बेटीनु कुवर-जी कहे—थे थांरे पीहर जावो; मे पीण वेगा आवां छां ।

ग. दीन दस तथा वीस'रह्या । परणे ल्याया' पछे आंणो आयो । तदी 'रीसालु' राजा भोजरी बेटीने कह्यो—हुं पिण (घ. परणवा) आवुं छू । '—' घ. प्रति में चिन्हगत पाठ अनुपलब्ध है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संग सूहेलो पीउ तणौ, दुहिलौ विछड़वार बै ।
पीउ र अक्षर जीभ थी, नहीं छूटसी नार बै ।। ३६
कुमर कहैजी गोरीया, बहली करस्या वार बै ।
मृगरणा सरीषो लोयरणां, वेध्यां बांम नूहार बै ।। ३७
राजा भोजरी मांनरी, थे पूत्र गुणवंत ।
रूपवती रलीयांमणी, सौ क्यूं भूल कंत बै ।। ३८
वेलारा साजन भणी, वीसर सोई गीवार बै ।
इण वोध माहोमाहैथी, कीधी वान करार बै[1] ।। ३९

१० [वार्ता—ईण वीधसू कुवरजी, रांणीग्रा वातां कीवी । तठै कुवरजी आपरा हाथरी सवा लाषरी मूंदड़ी सहीनांण वासत रीभ दीवी – आ मूंदडी हाथ थे परीहजौ । न कडिया षजुर नावा सहित रीभ कीवी सू रीभ मान बेटीनै दीजौ । कवरजी बोलीया । राजा भोजरी बेटीनै कहै—आपणै थाहारै ओ सनाण छै – माहरी वाडी मांहै एक आबौ अमृतफल नामै छै, तिणरै सात कैरी-यारो भूबषो छै, तिको सदाइ कालो लागो रहै छै, (प)डियौ देषो तद जाणजो जू कवरैजी आवसी । ओ सनाण छै । तरै राजा भोजरी बेटी बोली—श्रीमाहा-राज कुवार ! इण सेहनाणीरी षबर कुंकर पडसी, आबा आठै नै उठै हुआ, जोड किसि विध लागसी ? तठै कुमरजी कह्यो—ओ आबौ देवांसी छै । साथै चीत सांमरौ आंवौ कराय देवौ भूबषा सहित सौ अठै पडसी । तरै थाहरा चितरांम मो भूबषौ पडसी तरै नगै पडसी । इसौ कह्यौ तठै भोजरी बेटी कहै—श्रीमाहा-राज कुवार ! ओ सेनाणै ठीक वतायो । इण भातसू परभातेरै राजा परधांननै बूलाव नै घणी भोलावण देधी नै रांणीयान सीष दीवी । सौ आप रा ठीकाणा पूहती ।]

---

१. ३६ से ३९ संख्या वाले दूहे ख. ग. घ. प्रतियों में नहीं मिलते हैं ।

[—] कोष्ठकान्तर्गत पाठ भेद ख. ग. घ. प्रतियों में इस प्रकार मिलता है—

ख. इम कहे ने हाथरी मुद्रडी, कररो षंजर दीधो । वले कहीयो—थांरी वाडीमे एक अमृतफल नांमे आबो छे । तीणरो सात केरी रो जुबषो एकण चोटसु पाडु तद मांने डायां जांणजो । इम सुषवीलास करतां प्रभात हुओ । तद आणो करायो । वहु दोनु पीहर गई ।

ग. घ. तद 'नीसांणी दाषल' हाथरो मुंदडो दीधो । रसालु षंजर (घ. रीसालुं जन) दीधो । आंबारी सात केरी पडै जदी मुंनै आयो जाणजे । तदी वहू दोई पीहरां गई ।

'—' चिन्हित पाठ घ. में नहीं है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहा– नवल सनेह पीहर तणौ, पीण सासरीयौ परधान बै ।
सासरीयौ जुग जुग तणौ, सूष पीहर उन मान बै ।। ४०
कुलवटनी कामणि तणौ, सासरीयौ सीरदार बै ।
इश्वर गत जांणै षरी, आदर पुं(कुं)जी नार बै ।।[1] ४१

११. वारता—इण भातसूं षेम-कुसलथी पोहरै गई, माइतासूं मीली । साराहीनै सूष हुवौ । हिवै कोईक दिन विता । हिव कुवरजीरा मनमै पूठली वात रात-दिन मनमै लाग रही छै । इंतरा मांहै धायमानारी बेटी 'मूधमाला नांमै' तिका कुमरजी पासै कि काम आई । तर कुंमरजी तीणनै पूछैवा लागा—जो मोने बाहिर नीकलवा नही दैवै नै षांडानै परणायौ, मोनें वीद वणायतो न कीयौ, सू काई जांणीजै छै ? इण वातरी षवर वतावै तो तुंनै घणी मोटी करूं, मूह माग्यौ धन देउ ।

तठै इसा समाचार सूणन धायरो बेटी बोली—श्रीमाहाराजै कुमार ! आपरो जनम हूवो छो, तर घररो जोसो नै घररो प्रोयत तिण तो लगन देषो न कहीयौ—श्री माहाराजा ! इण बालकरो जनमै षोटी वेलारो छै, नषत्र षोटो छै, तीणसू वार वरस ताई कुमरजी नै गुपतै राषज्योजो नै वार वरस तांई मा-बापरो मूडो देषे नही । ज्यौ मूडो देषै तो विगाड उपजै, मोन घात ज्यूं छै, सो कवरजी न तो [मह]ला दाषल करज्यौ, इण भातसू प्रोहीतजी कहीयौ । तिणसूं थांनै मौलामै राषै छै नै मूंहडौ देषै नही छै । इणही जै कारणथी दोय रांणी परणाइ छै । इसो जाब कुमरजी सूणनै मनैम विचारीयौ[2]—

---

१. ३९ एवं ४०वां दूहा ख. ग. घ. प्रतियों में अप्राप्त है ।

२. इस ११वीं वारता की वाक्यावली ख. ग. घ. प्रतियों मे निम्न रूप में वर्णित है—

ख. हीवे एक दीन कुवरजी हजुरीया चाकरनु पूछे—मांनु महीलां मांहे क्यूं राष्या, बारे निकलवा न्हो दीए सो कोण वास्ते ? तद सघलेइ हजुरीये अरज कीनी—माहाराज कवरजी ! आपनुं करडा ग्रहांमे जनमीया । तीणथी वरस बारे सुधी महील मांहे राषे छे । प्रोहीतजी जोतसीए कहीयो छे ।

ग. अर रीसालु कहुपाअनै कह्यौ—मांनै महलां मैं क्यु राष्या छै, बारणै क्यु नीकलवा दे नही ? तदी धाय कह्यो—माहाराज ! आपरा घररो प्रोहीत बारां वरस तांई राष्या छै ।

घ. अर रसालु कह्यौ—धायनै पुछ्यौ—मांनै महलांमै क्यु राषै छै, बारै क्यु नीकलवा दे नही ? तदी रसालुनै धाय कह्यौ—माहाराज ! आपरा घर रै प्रोहितजी कह्यो—कुंवरनै बारै वरस तांई मैहलांमै राष्या छै ।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

दूहा– देषो छोरू(डू)मूष सदा, माईत देषै मास बे ।
बार बरसरौ बंध करौ, राष्यौ माता निरास बै ।। ४२
एह्वो माता-पिता तणौ, मोह् जगतमे जांण बे ।
मुझनू केदतणी बिधै, कीधो परवस प्रांण बै ।। ४३
सीह् तणा जेवा बाछडा, किम बंधीया रहै बध बै ।
होणहार सो होयसी, विधना कांमना अध बै ।। ४४
पूत्र तणी वांछा घणी, होव जगमै जाण बै ।
ईण थोडै हु जनमीयो, तो मुझ बंध्या प्रांण बै ।। ४५
तो इहां बंधमै सरचा, रेह्वो उ जूगतो एह् बे ।
होणहार सौ होयसी, वूरी य भली को जेह् बै ।।[1] ४६

१२. Aबारता—ईण भातसू कुवर मनमै वीचार नै पचास मोहरांरो संकलो दीयौ न वरजै राषी—षवरदार, कठहि जाब काढजे मती । इसौ कैहनै कुंवरजी उठ नै महिलां बारै आया नै चाकरानै कहीयौ—जे श्रीमाहराज कठै वीराज्या छै ? तत चाकर बोलीया—कुवरजी साहबजी ! श्रीमाहाराज तो सीकार षेलण गया छै । तठै इसो कुवरजी सूण नै महला हेठ उतरचा । उतर नै दरीषानै पधारचा ।A

Bसभा जोड तठै तिणही ज वार माहै राजाजीरी प्रोहीत दरबार आयो । नाव आजबादास छै । तीणनै आवतो देष न कुमरजी आदमीयान पूछीया—ओ उजलायत आंपण दरवारम कुण आवै छै ? तठै चाकर बोलीया—श्रीमाहाराजै कुंवार ! ओ घररो प्रोहीत छै । आपरी वेला लीधो तीको है । सो सूणन कुवरजी

---

१. ४२ से ४६ तक के दोहे ख. ग. घ. प्रतियों में अप्राप्त हैं ।

A–A. चिन्हान्तर्गत पाठ के स्थान में ख. ग. घ. में निम्नांश ही उल्लिखित है—

ख. हीवे एकदा राजा समस्त सीकार चढीया । उठासु कुवरजी जाय दरीषांनो कीधो ।

ग. घ.–तदी रीसालु म्हैलांमैथी उतरे बारनै दरीषांनै आया । राजा तो सीकार गया था ।

B–B. चिन्हित पाठान्तर ख. ग. घ. प्रतियों में निम्न प्रकार से उद्धृत है—

ख. एह्वे राजरो प्रोहीत जोतषी छे, सो आदमी त्रीस-पेत्रीस लीयां दुरबार आवे छे । एह्वे प्रोहीत पुछ्यो—जे दरीषाने डावडो कुण बेठो छे ? प्रोहीतजी ! ए माहाराजकुमांर छे । तद प्रोहीत षीजने कहे—अबारुही ज डावडानु कांई उतावळी हती, बारे वरस मांहे मास ६ थाकता हता ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाणोयौ—जैहि पापो उहि ज कुकरमारो करणहार छै। इतैरा मांहै प्रोहितजी सभाने देषने उला(ठा)पेला चाकरनै पूछीयो—श्रो रै ! श्रो छै(छो)करो कुंण छै ? ईतरा श्रादमी कु बैठाछै ? तठै कुवचन सूणने चाकर बोलीया—प्रोहितजी ! श्रीमाहाराज कुवार दरीषांने पधारचा छै। तठै प्रोहित बोलीयो—अरै आज कुंवर दरीषांणौ कीधौ, सूं कीणरा हुकमसूं कोधो छै ? B

[इसो चाकरांनू सूणायनूं बडी ठसक राष नै कुवरजी कनै श्राय नै वडी रीस कीधी नै कह्यौ—कुवरजी ! इसा उतावला हूवा सो तो मास इक घटै छै, पछै ही बारै श्राया हूंता। तठै कुंमरजी बोलोया—प्रोहीत साहिबाजी ! थे मोंनू बारै बरस तांई महलांमै राषीया, ईसो कांई कारण जाणीयो ? ततौ प्रोहितजी बोलीया—जे कुमरजि ! नक्षत्र ग्रहांरी तरफसूं कांम करचौ छै नै मास इक घटै छै, सौ वलै मलैम राषस्यां। तठै कुंवरजी बोल्या—प्रोहितजी ! इतरा दीनै रचै हो सू घणी वात छै; अबै श्रापा सारू कोई नई। तठै प्रोहीत बोलीयो—श्रा वार तौ थांहरी कीतरीक वाता सारी वातम भोलो छु; थानूं पीण अबारू मला दाषल करस्या। तठ कुवरजी रीस कर न उठीया। हाथम सोनारो गुरजै हूती सौ प्रोहितजीरा माथाम दीवी ने कह्यौ—तुं म्हारै सीरायैत मारषम हुवो तो विर माहाराजरै वलै कोय नही ? पीण राजवीयांरै थाका सरोषा घणा छै। इसौ कहीयौ।]

ग. घ.—तदि ईतरायकमै (घ. अतरामै) प्रोहित आदमी वीस-तीससुं आवै छै। तदी (घ. तदी कुंवर देष्यौ यौ कुण श्रावै छै ?) उमराव कह्यौ—श्रो यापरा घररो प्रोहित छै। आपनै बारै बरसतांई (घ. तांई मांहे) अणी राष्या छै। तदी प्रोहीत श्रापरा आदम्यांसु पूछ्यौ—श्रौ कुण बैठो छै ? 'तदी आदम्यां कह्यो—राजाजीरो बेटो रीसालुंजी छै।' तदी प्रोहितजी षीज्या—छोकरांनै अबारूं ज कांई हुवो छै ? महीना पांच 'पछै' नीकालणो। थो। '–' चिन्हित वाक्य एवं शब्द घ. प्रति में अनुपलब्ध हैं।

[–] ख. ग. घ. प्रतियों में पाठभेद इस प्रकार है—

ख.—तठा उप्रंत प्रोहीतजी श्राय(प) कुवरजीनु आसीर्बाद दीधो। तद प्रोहीतजी[ने] कहे—प्रोहीतजी ! थे मांनु महीलां माहे क्युं राष्या ? तद प्रोहीत बोल्यो—कुवरजी ! आपने करेडे नषीत्रे, क्रूर ग्रहे महीलांमे राष्या। तद कुवरजी कहे—ना ना, मांनु तो थे राष्या छे। जदी प्रोहीत कहे—जाश्रो, मे राष्या छे उने फेर राषसां। इसो सुण ने कुवरजीनु रीस चढी। हाथमे सोनारी गुरज हती तीणरी प्रोहीतरा माथामे दीधी।

ग. घ.—तदी प्रोहित 'श्रावी' आसरीबाद दीधो। अतरायकमै (घ. तदी) कुंअरजी बोल्या—क्युं प्रोहितजी ! बारा वरसां तांई 'मांनै' क्युं (घ. थे) राष्या था ? तदी प्रोहित कह्यौ—हुं कांई राषुं; नषत्र प्रमांणै रह्या। तदी (घ. तदी कुंअर) कह्यौ—न, मांनै तो थे राष्या छै। तदी प्रोहीत कह्यौ—'नां' मै राष्या, नै फेर राष्या (घ. फर राष्या छै)। तदी कुअरजीनै रीस चढी। तदी हाथमै गुंरज थी, तीणोरी माथामै पाडी (घ. तीणरी उपाडनै माथामै दीधी।) '–' चिन्हित शब्द घ. प्रति में अप्राप्त हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

A तरै प्रौयतजी डेरै थकसू डेर नाठा, सो रोही काणी नीसरचां। आगै माहाराज समस्तजी सीकार करनै आंबारी छांह सरौव[र]री पांलै विराजीया छै। तठै प्रोहीतजी जाय पूकार घाली—श्रीमाहाराजा ! श्रीराज ! आज कुमार महीलां बारे नीकल्यौ नै सभा जोड न बेठा छै। तठै हु जाय नै सीष देतो छो, तठै कुवरजी रोस करनै माहारी आबरू गमाई नै मांहैरै माथामै सोनारा गुरजैरी दीवी। तठै राजाजी सूंणनै न रोस करनै बोलीया·—देषो हो ठाकुर, अबार थकौ मांहरा प्रोहितरौ माजनौ गमायो, इसो त ईण पूत्र वीना इ सारसू; सोनारी छुरी पेटाम मारी न जाय, तो अबै कुंअरनै काई करणौ। तठै प्रोहीतजी बोलीया—माहाराज ! घरमै राषै सौ तो फेर कोई विघनकार हुसी। इणनै नीनाणौनै सीष देवो। तठै राजाजी बोलीया—मांहरै इण कवररो काम नही, इणनै दंसवटौ देस्यां। देसोटा वीना कवर पाधरो हूव नई। तठै उमरावां सूणनै श्रीमाहाराजनै कहैण लागाA–

दूहा– एवडी रीस नै कीजीयै, बनै वासै बहु दुष बे।
बालक वयम नानडौ, देषो मती हिव मूष बै॥ ४७
जो तुमै रीसवतां हूवा, तो राषो घर मांह बै।
पीण दीसोटौ देवता, राजवीया नही राह बै॥ ४८
वस राज(जी)रो राषणी, कुण धणी आयत होय बै।
वनवास अती दुष घणा, क्यां जांणां क्या जोय बे। ४९
राजा सूणनै बोलीयो, मूष मूषतो माहरौ बोल बै।
नीसरचो ते साचो हूसी, साचो प्रोहीजै बोलै बे॥ ५०

A–A. ख. ग. घ. प्रतियों में निम्न लिखित पाठ है—

ख. तद प्रोहीत जाय राजा पासे पुकार कीधी। तद राजा कहै—बारै नीकलीयां पहीलै दीन घररा प्रोहीतने हाथ उपाड़चो, पछे कांई करसी ? सोनारी छुरी तो पेट मारणी तो कही नही। माहरे इण बेटा सुं कांम नही।

ग. तदी ब्रांह्मण राजा नषै गयो, कह्यो—माहाराज ! रीसालु माहरै दीधी। तदी कह्यो—माहरै अण बेटासुं कांम नही। तदी कह्यो—अणनै म्हैलांमैसुं नीकलतां तो वेला न हुई, दन पण को न हूवा अनै घररो प्रोहीत मारचो। अबै कांइं जाणां कांई करसी ? ऐसो मनमैं चीतव्यो अर राजा दरबार आया।

घ. तदी ब्राह्मण सगला राजा नषै गया, पुकारचा। तदी ब्राह्मण सगला बौल्या—माहाराज ! म्हांनै रसालु कुंवर मोनै मारचौ। तदी राजा मनमैं डरप्यौ—अबै कांई जाणां कांई करसी ? इणीनै महलांमै नीकलतां कौईक दीन नही हुवा, तदी घरांरा प्रोहितनै मारचौ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उमरावा वरज्या घणा, राज न मान्यौ कोय बै ।
वीधना लेष हुवै तीकै, उ टले टलीया टलाय बै ।। ५१
होणहार सौही ज हूवौ, स्यांणपथी क्या होय बै ।
राजा कोपे भी भर्यौ, वरजण सकौ कोय बै ।।* ५२

१३. **वारता**—Aईण भातसू उमरावा घणाई वरजीया, पीण रीसरै वसै राजा वाद चढीयौ थकौ कालो घोडो, कालो सीरपाव लै नै आपरा जीव-जोगरा आदमीयानै साथै मेलीया न वले राजांजी कहीयो—करडांवणै करै तौ माटी पणै काढेजौ कुवरनै काढसौ; तद दरवारमै आवस्यौ ।A

B इतरौ सूणनै सीरपाव ले नै दरबार आया । आगै कुवरजी आदमीयानै देष न मारी जूलसाई देषी । देषनै मनम विचारीयौ—दीस छै प्रौहितरो उपगार हुवौ । इतरो वीचार करता आदीमी कुवरजी साँमा आया नै मूझरौ कीयौ न बोलीया—श्रीमाहाराजरो हुकम हुवौ छै—आप औ सीरपाव कीजौ, इण घोड चडै नै वनम पधारीजै । इसा समाचार श्रीकवरजी सूंणनै सारा ही साथसू मूजरौ करी नै बोलीयौ—बाबा ठाकुरै, बाईजी साहिवारौ हूकम प्रमाण न करू तौ हरामषोर वाजु; तीणसूं आबै सारे ही साथसू राम रांम छै; परमेसर मीलासी तरै मीलस्यां । इतरो कन घोड असैवार हुवा नै सीरपावैसू हेत कीयो, राजारो मोह छोडीयौ । तरै आपरी धाय माता वलै षवास, पासवान सूनणै(णनै) दीलगीर हूवा पोंचावान साथै चलीया । सारा ही नगरमै षवर हूई । हिवै कुवरजी सारा ही साथसूं सेहररे दरवाजै आया । तठै आबै वीछडतां आपरा सनैई कुवरजीनै कहै छै B—

*** ४७ से ५२ संख्या वाले दोहे ख. ग. घ. प्रतियों में अप्राप्त हैं ।**

A–A. **चिन्हान्तर्गत अंश का पाठान्तर ख. ग. घ. प्रतियों में निम्न रूप में वर्णित हैं—**

ख. इसो चीतवी राजाई चाकरी साथे कालो घोडो, कालो सीरपाव, त्रीपांनीयो बीडो मेलीयो, कहीजे—राजा मां जोग नही ।

ग. अर चाकर हाथ तीन पांनको बीडो मोकल्यौ । कालो घोडो, कालो सरपाव दे नै देसोटो दीधो—थे मां जोगा नही ।

घ. तदी राजा चाकरी हाथै तीन पांनरौ बीडौ दीधौ । तदी कालौ घोडौ, कालौ सीरपाव दे नै सीष दीधी ।

B–B. **ख. ग. घ. प्रतियों में चिन्हित अंश इस प्रकार है—**

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

दूहा– सीधावौ सीध करो, पूरौ थाह्री आस वे ।
जतन करैजौ मारगा, मानै कीधो नीरास बै ।। ५३
राज विना दिन जावसी, सो इक मास समांन बे ।
पीण थे मांनै मत भूलज्यौ, थै म्हारै जीवन-प्राण बै ।। ५२
थांसूं कटती रातड़ी, रहती मै धणीयात बै ।
हिव मे परवस होयस्यां, कीणसू करस्यां वात बै ।। ५५
ईम केहतां आंसू ढल्या, बीलषा सारा साथ बै ।
कुवरजी मील मील रोईया, सहु हुवा अनाथ बे ।। ५६
साथ घिरचौ पूठो हीवै, कुवरजी मारग जाय वै ।
मनमै चीत धीरपै, लेष विधाता आय बै ।। ५७
देषो सूषम दुषै हुवौ, होणहार सौ होय बै ।

ही वेलारै रांणी तो कठिन छै; पिण आपरै अ(प्र)साद सारो हि जाब हुय जासी ।

दूहा– गोरषनाथजीरी सेवा करो, दीधा पासा हाथ बे ।
जाउ कुवर रीसालूंवा, वेगो परण घर आव बै ।।A ५८

ख. तद चाकरे आय कुवरजीनु तसलीम कर बीडो नीजर कीधो। तद रसालुए जांण्यो—राजाइं मानु सीष दीधी दीसे छै । एसो वीचार आप बीडो वांद ने एकलो घोड़े असवार होयने चालीया । कीणहीने कह्यो नही । तीण समीए धाय जाय कुवरजीरी मातानें कहीयो—आज राजाजी कुवर रसालु उपर रीस कीधी, देसवटो दीधो । तद माता इसो सुणने पांणीपंथो घोडो, तोबरा दोय मोहरासु भरने दीना । रसालु मातारा महीलां नीचे होयने आगे नीकलीयो— तद माता रसालुने देषने कांइ कहे छे—

ग. तदी रीसालुनै तो आगमच षबर पड़ी–मोनै सीष दीधी । तदी कोणहीनै पुछ्यौ नही । एकलो असवार होवे नै चाल्या । माउनै ठीक हुई—रीसालु कंवरनै देसोटो दीधो । तदी माउ ऐक पांणीपांथो घोडो दीधो । तोबरा दोअ मोहरांरा भरे दीधा । रीसालु माउरा गोषडा नीचै नीकल्यौ । माता रीसालुनै कांई कहै—

घ. तदी कुणीनै पुछो नही । तदी असवार होयनै एकलौ चाल्यौ । तदी माउ कणीनै पुछ्यौ । तदी धाय कह्यो—माउजी ! कुवरजीनै देसोटौ दीधौ । माउ तदी घोडो १ पांणीपंथौ दीधो । तोबरा दोय मोहरांका दीधा । तदी रसालु मारा मैहलां नीचै नीकल्यौ । रसालुनै मांउ कांइ कहै—

A. ख. ग. घ. प्रतियों में ५३ से ५८ तक के दोहों के स्थान पर गद्यपद्यात्मक अंश इस प्रकार उपलब्ध है—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ख. दुहा—पीउ रे दुध रसालु आ, रुडा रे सुकन मनाय बे।
रसालु चाल्या परणवा, वेग परणी घर आय बे ॥ ७

रसालुवाक्यं

माय वीडांणी पीता पारकां, हम ही-वीडांणा जाय बे।
षेवटीयाकी नाव ज्युं, कोइक संजोग मीलाय बे ॥ ८

तद माता मृग प्रते कांई कहे छे—

काला रे मृग उजाड का, रसालु पाछा फेर बे।
सोवन सीग मढावसुं, गले रुपारी डोर बे ॥ ९

रसालुवाक्यं

हीरण भला केहर भला, सुकन भला के साम बे।
उठो र अरजुन बाण ल्यो, सीध करे श्रीरांम बे ॥ १०

वारता—इतरो कहे रसालु आघा चाल्या। वनषंड सारु षडीया। आगे वनगहनमे जातां संध्या समीए डुगर उपर आग बळती दीषी। तरे रसालु घोडो तले ही बांधी, डुगर उपर पालो चढीयो। उचो चढने श्रीगोरषनाथजीनु भेटचा। तद श्री गोरषनाथजी तुष्टमांन हुआ, कहीयो—आव बचा! मांग मांग, हु तुठो। तदी रसालु कहे—माहाराजा साहीब! आपरी दीधी सारी दोलत छे, पीण समुद्ररे पेले कांठे राजा अंगजीत राज करे छे, तीण अंगजीतरी बेटी परणु, सो वर द्यो। तद श्रीगोरषनाथजी अनलपंषीरी नलीरा पासा दीधा; जा बचा! तु इण हमारा पासासुं चोपड षेलजे; तु जीपसी। रसालुए तीन सलाम कर पासा उरा लीधा।

दुहा—गोरषनाथजी सेवा करी, लीधा पासा हाथ बे।
जाज्यो कुंवर रसलुआ, वेगा परणी घर आव बे ॥ ११

ग. दुहा—पीया दुध फली करो, (रीसालुंवा)रूडा सुंकन मनाय बे।
रीसालुं चाल्यौ परणवा, वेग परण घरी आव बे ॥ ३

रीसालुं मातानै फेर पांछो कांइ कहै—

दूहा—माथ षीडाणी बाप वड, हम ही मांभ वडा।
षेवटीआकी नावजुं, कोईक संजोग मीलाव बे ॥ ४

मातावायक—

दूहा—काला मृग उजाडका, रीसालुं पाछा फेर बे।
सोवन सीगी मढावसुं, रूपाकी गल डोर बे ॥ ५

तदी रीसालुं मृगनै कांइ कहै—

दूहा—हीरण भला कैहर भला, सुंकन भला कै स्यांम बे।
उठो उरजण बाण ल्यो, सारैगा सब कांम बे ॥ ६

अथ बात— ईतरी वात अतरो कहै रीसालुं आघो चाल्यो। आगै देषै तो रीसालुं डुंगरी उपरै आग बलै छै। बलती दीठी तदी डुंगरी चढचौ। पल मेल्यां थका गोरषनाथजी बैठा छै। पगे लागा। गोरषनाथजी कह्यो—रे बच्चा! मांग, मांग, तुष्टमान हुवा। तदी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१४. वारता—ईसौ समाचार सूणनै श्रीगोरषनाथजीरे पगे लागौ नै कुंवरजी घोड चढनै प्रभाते चालीयो। सो समुद्र तीरै गया। तठै समुद्रै उपर पांणीपथो घोडो चलायो सौ पार पूहंता।

रीसालु' कह्यो--माहाराज! आपरी दीधी सारी दोलत छै, पिण एक मांगु' छु'—समुदररै पैलै कांनै राजा आंगजीत छै, तीणरी बेटी हूं परणु'। तदी गोरषनाथजी नलीरा पासा काढनै हाथ दीधा। अणी पासासूं षेलजै। जा बचा! जीतसी। तदी रीसालु' पगे लाग नै पासा लीधा।

गोरषनाथजीवाक

दुहा—गोरषनाथजीरी सेवा कीधी, दीधा पासा हाथ बे।
जा जा कुंवर रीसालुंवा, वेग प[र]ण घर आव बे॥ ७

ष. दुहा—पीया दुधा थली करौ, (रसालु) ऊठा हीसु' सुकनवां दीवे वे।
रीसालु' चाल्यौ परणवा, वेग परण घरी आव बे॥

तदी रीसालु माउनै कांइ कहै—

माय वडारण बाप वड, हम ही माहु जी वडा।
षेवटीया षीवै नाव ज्यु', कोइ क संजोग मीलीया॥ ३

तदी माता मृगलानै कांइ कहै—

काला मृग उजाडका, रीसालु' पाछो फेर बे।
सोवन सींग मढावसु', रूपाकी गल्ल डोर बे॥ ४

तदी रीसालु' फेर कांई कहै—

दुहा—हरण्या भला केहरी भला, सुणो भला कै स्यांम बे।
उठो राजन बांण ल्यो, सरैगा सब कांम बे॥ ५

अतरा बोल वचन कहै नै आघो चाल्यौ। आगै डुगर उपरै आग बलै छै। आग बलती दीठी तदी डुगर उपरै चढयौ। तदी गौरषनाथजीनै दीठा। तदी एक पगवरांणो सवा पोहर तांई सेवा कीधी तदी गौरषनाथजी पल उघाडी नै कह्यौ—रे बचा! तु बैठ। तदी रसालु पगां लागौ। तदी गौरषनाथजी तुस्टमांन हूंवा। तदी रसालु बोल्यौ—माहाराज! आपरी दीधी भारी दौलत छै, पीण एक वात मांगु' छूं—समुद्रतटै अपजीत राजारी बेटी हुं परणु'। तदी गौरषनाथजी नलीरा पासा करे दीधा। अणी पासासु' षेलजे, जा बचा! जीतसी। तदी गौरषनाथजीकै पगे लागौ, पासा लीधा। तदी गौरषनाथजी कांई कहै—

गोरषनाथजीवाक

दुहा—गोरषनाथजीरी सेवा कीधी, दीधा पासा हाथ बे।
जा बचा तु' जीतसी, वेगौ जीत घर आव बे॥ ६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहा— समूद्रै घोडै चालीयौ, पांणीपंथौ जाय बै ।
नीरै आय न उतरचौ, नगर नगै निरषाय बै ।। ५९
हिवे कुवरजी हालोया, आया नदीया मझार बै ।
आगै अचंभम देषीयौ, चमक्यौ चित मझार(बै) ।। ६०

१५. वारता—इतरे कुवरजी नदीमै आया । आगै देषो तो घणा रूंड-मूड मिनषारा माथा पडा देषीया । तठै कूवरजीनै रूंड-मूड माथा हसीया । तठै कुवरजी वोलीया—रे रूंड-मूड ! हसीया, जिणरौ कारण वतावो । तठै माथा कहै—

दूहा— कुंण तु इहा आयो अठै, किण ठांमें किण ठोर बै ।
कीहांथी आयो कीहां जावसी, साह अछै किनू चोर बै ।। ६१
इण देसै तु आवोयौ, माणसषांणौ देस बै ।
ओ सोर ताहरो तूटसी, तुम हमरा कन पडसी आय बै ।। ६२
इण कारण हसीया अमे, अब तु ताहारो बोल दे ।
मे साचा तुझनै कही, चोकस थांरी पोल बे ।। ६३]

[—] १४ वीं, १५ वीं वारता तथा ५९ से ६३ तक के दूहों का पाठ ख. ग. घ. प्रतियों में निम्नाङ्कित है—

ख. वारता— रसालु सलाम कर नीचो उतरचो । इतरे प्रभात हूओ । घोडे चढ आघो चाल्यो । चालता चालता कीतरेके दीने समुद्र आयो । नावमे बेसने समुद्र पार उतरचा । आगे अगजीतरो देस आयो । आगे चालता राजा अगजीतरो सहीर आयो । तीण सहीर कनारे रसालु गया । दरवाजा कने मनषांरा माथा पडचा छे । तीके माथा रसालुने देष ने हसवा लागा । रसालु पूछचौ—थे क्युं हसो छो ? माथा कहे—इतरा माथांमे थारो मांथो आवे पडसी ।

मस्तकवाक्यं

क्युं चाल्यो रे मांनवी, मांणसषाणा देस बे ।
ओ सीर थारो तुटसी, आय पडसी हम पास बे ।। १२

ग. अथ वारता— अतरायकमै रीसालुं असवार होवेनै चाल्या । चाल्या चाल्या समुद्र पार हूवा । तदी अंगजीत राजारो सैहर आयो । आगे देषै तो मनषांरा माथा पडचा छै । जके माथा रीसालुंनै देष नै हसवा लागा । तदी रीसालुं कह्यो—थे क्युं हंसौ छौ ? तद मुंडीक्या कह्यौ—मांका अतरांका माथा पडचा छै, तणीमै थारो पीण माथो पडसी । तदी मुंडका फेरे रीसालुंनै कांई कहै—

मुंडीवाक्यं

दुहा— कांहां चालो रे राजवी, मांणसषाणो गांम बे ।
सीर थारो पीण तुटसी, तुं आसी माहरी ठांम बे ।। ८

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

१६. [वारता—ईसा समांचार कुवरजी सूणनै माथानूं कहै छै—हु तो अगरजी राजारी बेटी परणवा आयौ छु, राजा समस्तरो बेटौ छु। अठै माथा वढ छै, तिणरो कारण काई छै ? तठै माथा कहै छै—अरे रीसालू कवर ! राजारा पोलरा मूढ आगै नोबत द(डं)कौ देवै छै, सो हार-जीत कर छै। हारै, तिणरौ माथो वाढनै अठै नाष छै। सो इतरा माथा इण रीत भेला हुवा छै। सूं इतरा माहलो काई जीतो नही। सो तु पीण जीतौ कोई नई।]

तठै कुवरजी माथांनू कहै[1] —

दूहा– म्है[2] राजा राजवी, म्है[3] रावां उमराव[4] बे।
के तो सीर द्यां आपणौ, क राजारो ल्याय बे ॥ ६४
म्हे मारचा किण रांमरा, ईण रीतै ईण ठोर बे।
जीतने परण्या सूंदरी, राजासूं कर जोर बे ॥[5] ६५

१७. वारता—इसा समाचार माथानूं कह न चाल्या सहर तुरत। सेहरमै जाय नै किल्लैरै दरवाजे जाय ने उभा रहिया। नोबतरो डंको दीयो। एक दोय डंको देत प्रमांण राजा माहै सूण्यौ। मनमै जांणीयो—कोई क तौ आजै राजा फेर आयौ छै। मनमें राजी हूवौ अबार जीत लेसू। इतरै रीसालूंरौ डंकौ सूणत प्रमांण राजा अगरजीतजी जाणीयौ कोई क तो रमवावालौ आयौ। तठै राजा बार नीकल नै नोबतषांन आयौ। कवरजो मुझरौ कीयौ; माहोमांह मीलीया। राजा अगरजीत पूछीयौ—कठासू आया, कीणरा बेटा नै थे क्यूं आयाछौ ? तठै रीसालू बोलीयौ—माहाराज ! सेरसू आयो छु। राजा समस्तजीरौ बेटो छु। मांहरौ नांम रीसालू छै। थासू चोपड जीतवा आयां छां। ईसो कहीयो।[6]

घ. तदी रसालु असवार हुई चाल्या। रसालु समुद्रा पैसार हुवा। तदी आगै अपजीत राजारो सैहर आयो। तदी अगजीत राजारा सैहर पाषती मनुषना माथा पडचा छै। तहां रसालुनै देषी नै हस्या। तदी रीसालु कहियौ—थे कुं हस्या ? अतरा मांका माथा पडचा छै, पणथमांको पणाथौ अठै पडसो। फेर मुंडचाक्यां कांई कहै—

दुहा– काहां चाल्या वे राजवी, मांणसषाणो गांम बे।
सीर थारो पीण तुटसी, तुं आवसी ईंण ठांम बे॥

[—] कोष्ठान्तर्गत पाठ ख. ग. घ. प्रतियों में अप्राप्त है।

१. ख. रसालु वाक्यं। ग. तदी रीसालुं मुंडीक्यांनै कांई कहै। घ. तदी रीसालुं काई कहै। २. ख. मे। ग. मेह। ३. ख. में नहीं है। ग. मेह। ४. ख. उपरला राव। ग. घ. उपरलो राव। ५. यह दूहा ख. ग. घ. प्रतियों में अप्राप्त है। ६. १७वीं वार्ताका गद्यांश ख. ग. घ. में इस प्रकार है—

तठे राजा अगरजीत विछायत कराय ने चोपड मगाई। रमवा बेठा तठै हारजीत कीवी। कुंवरजी कैहै—म्हे हांरा तौ पांणीपंथौ घोडौ परा देवा, थे हारो तो ईसडौ घोडो उरो लेवां। इसो कोल करनै रमवा बैठा। तठै राजा अगरजीत बोलीयौ। पछै दूजी रांमत वले मांडी। तठै राजा अगरजीत बोलीयौ-तठै सीरपावरो साटौ कीयौ। तठे वले कुंवरजी हारीया। तठै तीजी रांमत मांडी। तठै राजा अगरजीत बोलीयौ—अबै कांई हार-जीत करस्यौ ? जौ म्हौ हारीयौ तौ मांहरौ माथौ थे लीजौ न थे हारोया तौ थाहारौ माथौ में लैस्यां। ईसी हार-जीप कीवी। तठै कुवरजी बोलीया—दूरस छै। आप कहौ सौ परमांण छै। पिण आव(प)तो मोटा छै। इण बातरौ लीषत करवौ, साष घालौ। तठै राजा अगरजीतजी लीषत करायौ। हार-जीत करा सू सघ लीया। तठै कुवरजी लघु-लाघवी कला सू गोरषनाथजीरा पासा काढ मेलीया, आगला छीपाय लीया। हिवै सायदवाला आयने बेठा छै। जीवततम झूठ बोलै नही, झूठी साष भरे नई। इसडां आदमी षांणदानरा बेठा छै। तठै दोनूं ही चोपड रमतां कुवरजी श्रीगोरष-नाथजीरा परतापसू जीतीया। सारा ही साष भरी।

ख. रसालु इतरो कहे ने सेहर मांहे गया। नोबतषांने जाय डंको दीधो। फेर दोय, तीन डंका दीधा। षेलवाकी तलासमे रहे। जद राजा अगजीत जांण्यो—आज दोय तथा तीन जणा षेलणनु आया दीसे छे। जद राजा अंगजीत जीमतो उठी रसालु कने आया, जुहार कर मील्या।

ग. अथ[१] रीसालुं कह्यौ[२] अर[३] आघा[४] चाल्या[५] सैहरमै आया,[६] दरबार आव्या[७], नोबत नषै गया[८]। कोई राजासुं षेलवा आवै, 'ततरा डाका नगाराकै दै', जतरा[९] जांणै[१०] षेलवा आव्या[११]। तदी रीसालूं[१२] जातां ही[१३] डाका दीधा। [तदी राजा अंगजीत जांण्यो-आजे जणा दोय-तीन षेलवा सारूं आया दीसै छै।] तदी राजा जीमतो[१४] उठ्यौ, रसालुं नषै आया।

घ. १. अतरो। २. कहै राजा। ३. नहीं है। ४. आघो। ५. चाल्यो। ६. रसालु सैहरमै आव्यौ। ७. गयौ। ८. दरीषांनै जाय बैठौ। '–'. जदी दोय तीन डाका दे। ९. तदी। १०. जांणै कोई राजासु। ११. आयो छे। १२. रसालु। १३. जाय दोय-तीन [—] नहीं है। १४. जीमता।

—. ख. ग. घ. प्रतियोंमें चिह्नित अंश निम्न रूप में प्राप्त है—

ख. पछे ष्याल मांडीयो। तद रसालुए पेली रांमत तो घोडो हारचो। बीजी बाजी मोरारा तोबरा दोय हारचा। तीजी बाजी फेर मांडी। तद रसालुए राजारा पासा परा छीपाया। श्रीगोरषनाथजीरा दीधा पासा काढचा। राजा अगरजीतनें कहे—अबे कौण बातरी हार-जीप करसां ? तद रसालु कहे—माथारी हार-जीप करसां। तीजी बाजी रमतां थकां रसालु जीतो।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

[तठै कुवरजी बोलीया—हिवै माहाराज माथो दीरावो। तठै राजाजी बोलीया—म्हारो माथो परो देसू थानै; पिण आप राजी हूंवौ तो राजलोकसू मीलीयावू। तठै कुवरजी बोलीया—दुरस छै, भलांई मीली आवौ। ईतरौ सूण-नै राजाजी मांहै गया। रांणीयासूं मीलीया। सारी हकीकत कही। तठै रांणी दलगीर हुई। तरै राजाजी दुहौ कहै छै]—

दुहा— उची मीदर मालीया, अवल सेझडली रूप बै।
रिद्ध भंडार ए देसडो, तो सरसी रांणी नूप बै॥[1] ६६
सारा विडाणा हिव हूवा, जासी हमारा सीस बै॥
सीस घणारा डूंचीया, अब आया मूझ चोर बै॥[2] ६७

रांणीवायक्यं[3]

किणस्यूं[4] राजा थे रम्या,[5] किणथी बाजी अनूप बै[6]।
मैं थांनू[7] राजा[8] वरजीया, मति[9] षेलौ वाजी[10] भूप बै॥ ६८

राजावायक[11]

होणहार सौ[12] नही मिटै[13], लैष लिष्या छैठी[14] रात बै।
भलो बूरो[15] सहु मांहरौ[16], करसी विधाता मात बै॥[17] ६९

ग. घ. ष्याल मांडचो (घ. दरीषांना उपरै चौपड मांडी, ष्याल मांडचौ)। पहलि तो (घ. तदी पैहला तो) घोडो हारचौ। पछै मोहरांरा भरचा दोय तोबरा हारचा (घ. पछै तोबरा दोय मोहरांका हारचौ) तीजी (घ. पछै तीजी) बाजी मांडी। राजारा तो पासा छपाडे मेल्या (घ. छीपाडे राष्या)। गोरषनाथजीरा दीधा (घ. गोरषनाथजीरा) पासा काढचा। तदी कह्यौ—अबै कांई लगावस्यां (घ. पछै ष्याल मांडचौ। राजाजीरो माथौ लगायौ। रसालु कह्यौ—हुं पीण माथो लगावसु)। तीजी बाजी रीसालुं जीता (घ. तदी रसालु बाजी जीत्या।)

[—] कोष्ठवर्त्ती अंश ख. ग. घ. में निम्न रूप में वर्णित है—

ख. तद राजा अगजीतने रसालु कहे—थांरो माथो दीयो। राजा कहे—माथो त्यार छे, पीण थे एक बार मनु राजलोकमे जांणद्यो। रसालु कहे—भलांई पीधारो। जद अगजीत राजालोकमे जाय रांणीने कांइ कहे छे। राजा वाक्यं—

ग. घ तद राजानै कह्यौ—माथो ल्यावो (घ. ल्याव)। तदी (घ. तदी राजा) कह्यौ—ऐक वार (घ. मोनै एक वार) राजलोकांमै जावण द्यौ (घ. जावा द्यौ)। तदी रीसालुं कह्यौ—भलां (घ. में नहीं है)। तदी राजा आगजीत कह्यौ—हुं छुं, राजा चाल्यो (घ. तदी राजलोकमै जाय कहै। अंगजीतवाक्यं

१. २. ख. ग. घ. प्रतियोंमें उक्त दोनों दूहों के स्थान में निम्न एक ही दूहा उपलब्ध है—

ख. उंचा महिल[18] आवास हे, गया हमारा छूट[19] बे।
सोर हमारा जीतीया, आया परषंडी[20] चोर बे॥

३. ख. रांणी वाक्यं। ग. घ. रांणी (घ. तदी रांणी) कांई कहै। ४. ख. ग. घ. कीण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समस्तसूत[1] रीसालूबो[2] , श्रीपूरनगरका राव बे।
षेलत बाजी हारीयौ[3] , जीता[4] हमारा डाव[5] बै ॥[6] ७०

रांणीवायक[7]

रांणी कहै सूण रावजी,[8] म[9] करौ चिंता[10] काय[11] बै।
सूंकलीणी हू[12] बूध थी,[13] काज करेस्यूं समाय बै[14] ॥ ७१

१८. **वारता**—Aईसो राजानै रांणी कहीयौ। राजी राजी हूवौ। तठै रांणी आपरी दासीनै बोलाय नै कहै—समस्तरायरौ बेटै रीसालूंनै जायने केहजे—श्रीकुंवरजी साहैवा ! रांणीजी कहै छै-मांहरी वडकुमारपुत्री आपनै दीधी; आप परणीज ने घरे पधारौ। माहाराज कुंवर ! भला ही पधारया मारो भाग जाग्यो; मार तो राजा बाला सगा छो; येक मारी कीन्या परणौ। ईसौ सूणने वडारण बारे आय नै कुवरजीनू कहीयौ—माहाराजकुंवार ! रांणीजी आपन आसीस कहिछै नै वडी बेटी अनै इनात कीवी छै, सौ आप परणीजौA।

षै। ५. ख. राजींद हारीया। ग. घ. राजा हारीयो। ६. ख. कीणने दीया अनुप बे ग. घ. कीण नषै दीग्रो सीस बे। ७. ख. थांने। ग. घ. तोनै। ८. ख. राजींद। ९. ख. ग. घ. मत। १०. ख. ग. घ. तुम। ११. ख. ग. राजा वाक्यं। १२. ख. ग. सो (ग. तो) रांणी। १३. ख. मीटे। ग. मटै। १४. ख. ग. लेष (ख. लेषे) लीख्या (ग. लख्या) छठी। १५. ग. भला बुरा। १६ ग. माहरा। १७. यह दूहा घ. प्रति में नहीं है।

१८. ग. घ. म्हैल। १९. ग. घ. छुंट। २० ग. षंड। घ. षग।

१. ख. ग. समसतसुत। २. ख. रसालुग्रा। ग. रीसालुंग्रा। ३. ख. हारीया। ग. जीतीयो। ४. ख. उण जीत्या। ग. जीत्या। ५. ख. ग. सीस। ६. यह दूहा घ. में अप्राप्त है। ७. ख. रांणीवाक्यं। ग. तदी रांणी कांई कहै—दूहा। घ. में नहीं है। ८. ख. ग. घ. राजवी। ९. ख. थे मत। ग. घ. मत। १०. ग. घ. सोच। ११. ख. ग. घ. राज। १२. ग. हूं सुकलीणी। घ. जौ सुकलीणी। १३. ख. ग. घ. असतरी। १४. ख. तो करु तुमारो काज बे। ग. घ. करूं तुंमारा काज बे।

A–A. ख. चिन्हित अंश ख. ग. ग. में इस प्रकार हैं–रांणी राजा प्रते इसो कहेने दासीने बुलाई कहीयो—थु जाइंने रसालुने कहे—कुवरजी ! थे राजारो माथो लेने कांइ करसो ? राजा अगजीतरी बेटी परणो। तरे दासी आय रसालुने इसो जाब कह्यो।

ग. राजा रांणीनै ऐसो कह्यौ। दासीनै बुलावै कह्यौ—रसालु नषै जा कैहजे-माहाराज ! भलां पधारया, मांहरै माथै भाग्य; आप पधारया तो कन्या परणो।

घ. तदी राजानै कह्यौ। कहै नै दासीनै बुलाई। रसालु नषै जाय कहै—ज्यौ माहाराज ! भलां पधारीया, माहरै माथै भाग्य; राज ! कन्या परणौ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[कुवरजी इसौ सोणने बोलीया—थे कहो सो परमांण छै। पिण मार एण वातरी षूस कोई नई ने वलै कुवरीनी मथै घणा आदमी मूंवा, सौ आ कुवरी मांहा पापणी छै; सौ म्है इणरो मूढो देषा नई। इसौ सूणन दासी पाछी जायनै रांणीनै हकीकत कही। तठै वलै दासीनै रांणी कह छै—जा, तु कवरजीन कजै—श्रीमाहाराज कुवार! परणीजो, न आप माथो लेस्यो तीणनै आपने हाथमें काई आवसी? माहरो राज षराब हूय जासी। आप सगै छो, षत्रीवस छो। इतरो अरजै मांहारी मांनो। तठै कुवरजीनै दासो सारा समाचार कहोया। तठै कुवरजी बोल्या—दुरस छै, पिण ईन तो म्हे कोई परणोजा नही नै दुसरी कवरी हूव तो परणाय देवो, नही तर मै परा जासा। तठै दासी बोली—माराज-कुवांर! दुजी तो वेटी मास दसरी छै, सो वालक छै। तिका थानूं परणावा कूकंर? तठै कुवरजी बोला—मानै दस मासरी डीकरी परणावोजो। म्हारे कोइ अटकाव नही।]

A तठै दासी सूणनै रांणीनै कहौ। तठै रांणी मास दस री कन्यारो व्याव कीनो। घणा कोड कीया। सूसरै जमाइनें घणौ प्यार वध्यौ। हीव कुवरजी दिन २० रह्य सीष मागी। तठै राजाजी बौल्या—कुवरजो साहब! इतरा वेगा पधारो, निणरो काइ जाब जाणीजै? तठै कुवरजी कहीयौ—श्रीमाहाराज धीरजै,

---

[—] ख. ग. घ. प्रतियों में निम्नाङ्कित पाठ है—

ख. तद रसालु कहे—इण हत्यारीरो नांम मत लीयो। इणरे वास्ते घणा पुरस मुआ छै। सो नही परणां। तदी दासी कहे— मे तो कन्या परणावारे वासते करता हता। माथो लीयां राजरे हाथे कांइ आवसी? अर ओ गुनो मांने बगसीस करो अर आप परणो। रसालु कहे—आ तो कन्या न परणां। दुजी वे तो परणां। इसो समाचार दासी आय रांणीनु कह्यो। रांणी कहे—दुजी कन्या तो मास छरी छै। सो परणे तो परणावां। दासी जाय रसालुने कह्यो—दुजी कन्या तो मास छरी छै। तदी रसालु कहे उवाहीज परणसां।

ग. घ. तदी (घ. तदी रसालु) कह्यो—'कन्या तो नही परणां' ('—' घ. में नहीं है) अणहुंतसरी कन्यारो (घ. ईण हत्यारीको) नांम ल्यो मति। राजाको माथो ल्यावो। तदी (घ. तदी दासी) कह्यौ (घ. कही)—माहाराज! माथो लीधां कांई हाथमैं आवसी? 'माने गुनो बगसो' ('—' घ. में अप्राप्त है) थे कन्या (घ. राजकीन्या) परणो। तदी (घ. तदी रींसालु) कह्यौ—आ तो नही परणूं, ओर कोई होवे (घ. हुवै) तो परणूं। 'तदी रांण्या कह्यो—माहाराज! मे तो ईणरै वासतै करता था' ('—' घ. में यह पाठ नहीं है)। तदी रांणी कह्यौ (घ. कयौ)—ओर तो छ मासरी छै (ग. और तो मांह सरीषी छै)। 'तदी रांणी ओ कह्यौ' ('—' घ. में नहीं है)। तदी रीसालूंजी कह्यौ (घ. रसालु कहीयौ) वाहीज (घ. उवाहीज) परणस्यां (घ. परंणसु)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

म्हारै बारै वरस वनवास करणौ छै। सो तौ कीया ही जा(ज)वरासी। तीणसू मानै सीष दीराइजै, ठीक लागसी। तरै रांणीजी कहायौ—कुवरजी साहब ! वालक कुवरी छै। सौ थै लै जावौ तो थाहरी सला छै अने रिण देवो तो मोटी वात छै। तठै कुवरजी कहीयौ—थे कहै सो दुरस छै, पीण मेह तो लेजावस्या। दाण-पांणी छै तो मे वेगा ही मीलसा। तठै टीको औभणौ करने कुवरजीने सीष दीवी। हीवै कुंवरजी राजाजीसूं मीलनै घोडै चढीया। तरे वाइनै साथै चलाइ कुवर रीसालूजी च्याल्या जाये से। वाछेथी रांणी सोकरीने कह्यौ—जायो, वाइने ले आवो, जूं वाइने धवरावा। ती वारे दासी आवने कह्यौ—वाइ तो सासरै पधारीया। तठै रांणी दूहौ कह्यो छैA—

दूहा[1] –जलज्यो[2] पासा षेलणा, जलज्यो[3] षेलणहार बे।
दस मासारी ह डीकरी[4], ले गयो कुवर सार[5] बे ॥ ७२

A–A. चिह्नित अंश की वाक्यावली ख. ग. घ. में अधोलिखित है—

ख. तदी राजा अगजीत पंडीतांनु बुलाया। आछा लग्न जोवाया। आला-नीला कलस कर घणा ऊछावसु रसालुने परणाया तठे कुवरजी दीन १५ रह्या, चालवारो कह्यौ—जेउ जणो आंणो करवो, मांने सीष दीयो; मांरे अस्त्री मां साथे मेलो। तद राजा अगजीत कह्यो—बाइ नांनी छै, मोटी होसी जद मेलसां। जद रसालु कहे—आंणो त्यार करावो, ज्यु चालां। तदी राजा अगजीत पोतारी रांणी छांने आंणो करायो। बाइने वीदा कीधी। रसालु सारा सीरदारासु मील, घोडे असवार होय वीदा हुआ चाल्या जाए छै। पुठाथी अगजीत राजारी रांणी दासीने कहे—बाईनु ल्यावो, ज्यु दुध पावां धवारां। तदी दासी कहे—बाइजी तो सासरे पधारया। रांणी कहे—बाइ नांनी छै। भुष लागी होसी, मा वीगर कीम कर रेहसी ? तदी दासी कहे—कांइ वीलाप करो छो ? रांणी कहे—पेटरी उपनी छे, तीणथी मोह आवे छे।

ग. तदी रीसालुजीनै परणाव्या। घणा महोछव कीधा। दन दस रहे नै चालवा लागा तदी कह्यो—माहरी परणी मां साथें मेलो। तदी कह्यो—बाई नांनी छै, मोटी होसी जदी मेलस्यां। जदी रीसालु कह्यौ—मे तो लेई जास्यां। तदी बाईनै साथै ले चाल्या। बाईनै साथै दीधा। तदि रसालु मनमै चितव्यो—अगजीत राजानै उरो बुलावो, अबै तो सगा हूवा छां। रांणीनै कह्यौ—थांरा राजानै उरो बोलावो, माहोमाहे जुहार करां, मेल करे नै मे चालां। तदी रांणी कह्यौ—मोटा छो, बहुजांण छो, रांणीआं थे राजानै कहो। राजा रीसालु माहो माहे जुहार कीधो, घणो रस रह्यो। रीसालुजी चाल्या तदी रांणी दासीनै कह्यो—बाइनै ल्यावो, धवावु। ते दासी कह्यो—बाई सासरै गया।

घ. तदी रसालुनै ओछव-महोछव करेनै परणायौ। दन १० तथा वी[स] २० सु चालवा लागौ तदी कहे—माहरी परणी मो साथे मेलो। तदी मा कह्यो—बाई नांनी छै, मोटी होसी जदी मेलस्यां। तदी माउ दासी कह्यौ—बाईजी तो सासरै गया। तदी माउ कांइ कहै—।

१. ख. रांणी वाक्यं। २. ग. जलजो। घ. जलयो। ३. ग. घ. जलजो। ४. ख.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६. वारता—[हेव रीसालू कवर चाल्यौ । सू कठइ तो वसती लाभै छै, कठैई क रोहीमैं रहै छै नै रांणीनै भूष लागौ तरै व्याई हीरणीनैं पकडनै चूंघाय देवौ । ईण रीतसूं जावतां चालता ईक दिनरै समै मारगमैं हालता येक कस्तूरीयो मृग केरके हेठै कुवरजी दीठौ । तरै लघू-लाघवी कला करने मृगलानैं पकड लीधो । कोई क गांम आयां तठै हिरणनूं घणूं सीणगार करायौ । भला गुघरा गलामै राषीया । पटु गलारे बांधीयौ । सौनारा सींघ मंढाया । मृषमलरी गादी मोरा उपर राषी । ईसां जतनसूं हिरणनै लियां वहै छै । तठै येक दिनरै समै येक रुंष उपरे सूवटो ने मेंणा बेठा कल कर छै । कोणीहीरा पढाया छै । मीनष-रो भाषा बौलै छै । तठै कुवरजी लघू-लाघवी कलासूं सूवा ने मेनानै पकड लीया । कीणही गावमै आयनै पींजरौ करावणौ तेवड्यो । इसौ विचार करता एक स्यौगवास नांवै गांव आयौ । तठै कुंवरजी सूथार रो घर पूछ नै सूथाररै घरे गया । जायनै सूथारनै कहै छै]—

दूहा— रे सूथारजीरा डीकरा, पिंजरीयो घड देय वे ।
तास मोहर इक मोलडी, ले तुं. पिंजर देव वे ।। ७३

मेरी छ मासकी कुंवरी । ग. घ. छ मासकी डीकरी । ५. ख. रसालु कुमार । ग. घ. कुँअर रसाल ।

[–]. ख. ग. घ. प्रतियों में निम्न वाक्यावली प्राप्त है—

ख. एहवे समे रसालु कुमर आगे चाल्या जाए छे । जातां थकां ऐक कस्तुरीयो मृग, एक हरणी जाड नीचे उभा छे । सो रसालुए पकड्या । रांणीनु धवरावे । मृगनु पण पाली मोटो करे छे । फेर मारगे जातां एक सुबटो, एक मेनां दीठां । सो पकडीया, साथे लीधा । तेहने भणावे छे, गुणावे, षवाडे, षेलावे । मृग, हरणी, सुबटो ने मेनां इण चारांरा ही घणा जतन करे छे ।

ग. ऐस्यौ रांणी कह्यौ । अबै रीसालु चाल्या जाय छै । जठै रांणीनै भुष लागै तठै हरण्यां पकडैनै चुषावै । ईम करतां वरस ऐक हूवो । एक दीन वीषै चाल्या जाय छै । जातां थकां ऐक म्रग हरणी स्मेथ झाड नीचै रसालुयै दिठा । तदि हरण, हरणी आपड्या । कस-तुरीया म्रगनै तो राष्यो । हरणीनैं तो छोडे दीधी । सो वनमृगनै तो मातो करै छै । ऐक समै रीसालु कोइक गांम गया । तठै सूंवो, मैनां दीठी । ती वारे रीसालुं सुवो-मैणां लीधी । घणा जतनसुं राषै छै ।

घ. तदी रसालु चाल्या-चल्या जायै छै । जठै भुष लागी जठै हीरणी पकडी नै चुषावै छै । ईम करतां वरस पंच । इक दीन समीयौ सौ वनमृग दीठौ । तणीनै उरो पकड, नै सौ वनमृगनै तो राष्यौ अर मैनांनै छोड दीधा । तदी एक गांममै आया । तठै सुवौ, मैना दीठा तणीनै उरा लीधा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुरत मोहर लेई करी, घडीयो पंजर घाट बे।
सूवडौ मैंना बेसाडीया, जडिया बेहुं कवाड बे॥ ७४
जतन करै च्यारुं जीवतणां, एक ल्यौ कुंवर अपार बे।
पांणी-पंथौ हयवरौ, च्याव्यै ज्यां तां जात बे॥* ७५

२०. [वार्त्ता—इण विध सूषमै च्यारांहिरा जतन करता थकां घणा दिन हुवा छै। इतरै द्वारका नगरी आया। आगै दरवाजा मांहे वडीया। तठै नगरी सूंनी दीठो। तठै सूवानै कुवरजी पूछीयौ—ओ काई जाणीजै। सूनी नगरी सगली दीसै छै? तठै सूवौ, मैंनां कुवरजीन कहै छै—श्रीमाहाराज कुंवार! आजसू छ महीना पहली अमै आया छौं। सू अठै म्हारा साथरो सूवौ बैठो छौ। म्है पिण उडता आया छा। तठै मील बेठा वातां कर छा। तठै म्है पोण पूछीयौ—ओ नगर सूंनो क्यूं दीस छै? तरै उण सूवौ कह्यौ—इण सेहरमै राक्षस होल्यौ छै। सौ आदमीयानै मार षाधा। घणा ज्यान कीया। तिण डरसूं वलै मनष्य हुंता सो नासी गया। ईण तरे आ वात सूंणी छौं। सौ कुवरजी साहैबा ईसा वचन मांहेना उण सूवै कह्या। ईण प्रकारै ओ नगर सूनौ हुवो छै।]

[तठै कुवरजी कहीयौ सू सारी हकीकत सूंणनै सैहरमै चालीया। हाटै २ बाजार सूणा पडीया छै। तेल, घीरत, मौहरा, कपडौ, चावल, दाल, दुसाला, गैहणा, मोती, मांणक, हीरा, पना, पूषराज, पीरौजा, वासन, थाली, वाटका अनेक प्रकार की वसता पडो छै। पीण कोइ धणी नई। इण भांत देषतां देषतां राजा भूवनमे गया। तठै सतभूमीयै अवासै चढीया। मेहलामै डेरो कीयो ने सूवाने कुवरजी कह्यौ—हु रसोई लेनै आवू छुं, जीतरै जाबतौ कीजौ। इतरौ कुवरजी बजारमै आयनें कांसेटीयांरी हाटमै थाली, लोटा, चरी लीवी नै आटो, घरत, षांड लेने पाछा आया। रसोई जीमण करनें जीमीया। ताजा हुवा। हिवै सूवानै कुवरजी कहीयौ—हुं रांणीरे वास्तै व्यई हीरनी ल्याउं छुं; थे जाबतो कीजौ। ईसौ केहनै घोड चढी नै रौहीमें जावता एक तुरतरी व्याई हीरणी बच्चानै चूंघावती देषी नै वचा सूधी लघू-लाघवी कलासूं रांणीनै वास्तै पकड

---

*७३–७५ तक के दूहे ख. ग. घ. में अप्राप्त हैं।

[—] ख. इम करतां वरस पांच हुआ। ऐक दिन कीरतां द्वारीका नगरी गया। देषे तो सर्व सुनी पडी छे।

ग. ईम करतां घणा दीन हूवा। एक दिनकै वीषै धारावास नगर आव्या। आगै देषै तो धारावास नगरी सुनी पड़ी छै, दैतां मारी छै। नगरी मे लोक कोई नही।

घ. तदी धारावास नगरी गया। नगरी सुनी दीठी, देवतां मारी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लाया। रांणीनै चूंघाई, हीरणीरा जतन करनै आछी जगा राषी। षांन-पांणरौ जतनै मोकलो कीयौ। हीवैं दीन अस्त हूवौ। तठै कुवरजी सूंवानै कह्यौ—थ जाबतो घणी करज्यौ; हु राक्षसरौ जाब करी आऊं छु। तठै सूवो बौलीयौ]—

दोहा— राकस धूतारो अछै, मार्‌या पूरना लौक बे।
आप ईकलडा वाहरू, जतना करज्यौ जोग बे॥ ७६
था वीना सारी वातडी, सूनी हौय सोसार बै।
कुवर कहहै रे सूवटा, आइ राकस हार बे॥ ७७
मारी नै माथौ ल्यावसू, तौ आगल ततकाल बे।
ईम कहीयो लने बारने, उभौ कुमर न उजाल बै॥ ७८
गोरषनाथजीनै ध्याईयौ, मनमै साहस धीर बे।
इतरै राकस आयौ, वरड करड कुक्कार बे॥ ७९
दंत कटका कुदतो, पवन उडावै धूल बै।
ईम चलतो पोले निकट, आयौ राकस मूल बे॥ ८०
कुंमर चल्यौ सांमो जवे, काढी षडग मूष बोल बे।
बल संभाय रे भूतड़ा, मांरु वाजत ढोल बौ॥ ८१
तब राकस रूपै रवौ, ददुर पग धूज बो।
हुंकार वक्कर हुलसीयौ, कुंवर षडग करि पूज बै॥ ८२
श्रीगोरषनाथजीरे ध्यांनसू, षडगथी काढ्यौ सीस बो।
राकस वले नही चालीयौ, मारयौ विस्वा वीस बौ॥ ८३*

२१. Aवारता—ईण भांतसूं राषसनै मारनै माथो लेन कुंवरजो सूवां कनै आया। सारी हकीकत कही नै कुवरजो सूवानै कहीयौ—सूंवाजी! दाणा-

---

[–]. कोष्ठवर्त्ती अंश ख. ग. में निम्न रूपमें वर्णित है।

ख. घर, हाट, बाजार, सर्व सुना पडीया छे। रसालु राजद्वारे गया। देषे तो सर्व सभाइ पडी छे। पीण सर्व नगरी मांहे जीवमात्र इके ही नही। पछे रसालु नवषंडे महीले चढया। उठे डेरा कीधा। घोडो नीचे परो बांधीयो। रांणीरा मृग, सुवटो, हीरण, मेनारा, घोडारा जतन करे छे। रसालु रांणी ने कहे–आ नगरी आंपे वसावसां। एहवो वीचार करतां दीन तीन हु[आ]।

ग. तदि पैलां-पैल रीसालू आव्या। सुना घर, हाट देष्या। नवषंडै मैहल चढया। तिठै आप वीसरांम लीधो। आपरो सुवो, मैणा, मृग, घोडो, रांणी सूषै रहै छै। ईम करतां दिन तीन हूवा।

घ. तदी राजारी पौल गयो। मैहलां चढयौ। रांणीनै मैहलांमे ऊतारी। घोडौ पायंगा बांध्यौ। सुवौ, मैनां उंचा बांध्या। सुवो मैनासुं घणो हेत।

* ख. ग. प्रतियों में उक्त आठों दूहों के स्थान पर निम्न गद्यांश उपलब्ध है—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रहै जासी । तठै सूवौजी कहै—श्रीमाहाराजकुंवार ! श्रा वात जोग छै। थां करतां सारी वात श्रासीण हुसी ।

हीव कूंवरजी सदारा सदाई परभातरै समै घोड़ै चढणै नीकलै। सौ पांच सौ पांच पांच कोस तांई सहिररे गिरदाव घोडौ फैरै । तठै कोईक वटाउं निकलै तिननै ल्यावै, हवैली भौलाय देवै । धांन, द्रव्य मोकलौ वतावै । ईण भांतैंसूं वस्ती करवा मांडी । ईण भांतसूं वरस इग्यारे हुइ गया छै । थोडीसी सहरमैं वसती हुई । पांचसै ५०० घररी जमीत हुई । रांणी वरस ग्यारेमे हुई ।A

हिवै हिरण इकदा समाजौगै मृगलो नै कुंवरजी वांता करता मृगलौ वोलीयौ—श्रीमाहाराजकुंवार ! म्हारा जतन श्राप घणा करौ छो; षांण दाणारी कुंमी कांई न छै । पिण म्हे रोहिरा जिनाव[र] छों । सो रोहिमै फिरनै चारां, पाणी छै तौ श्रा नगरी सारी पाछी वसाय देवस्यां । ज्यूं श्रापणौ धरतीमैं नांमगौ

ख. रसाल महील उपर बेठा छे । एहवे एक राषसनु रसालु श्रावतो दीठो । तीको राष्यस माहाक्रोधवंत, वीकराल, क्रूड-नेत्र. हाथमे काती छे, इसो दुष्ट राष्यस छे । तीणनु सहीरमे श्रावतो जांणी रसालु दरवाजे श्राय उभा रह्या । कमाड जडचा । इतरे श्राधी रात्र गयां देत्य श्रायो । कमाड तोड ने माहे श्रायो । रसालुए श्रावतो देषी षडगरी दीधी । देतां थकां माथो, धड श्रलगो जाय पडचो । जद रसालुए षांच श्रलगो समुद्रमे नांष दीधो ।

ग. रिसालु दैतने हल्यौ । दैत जांण्यौ । श्रधरात्रे श्राप हल्यो जांणयै श्राप दरबाररै दरवाजै ऊभा रह्या । कमाड़ जडचा छै । रात पोहर दोय गई छै । श्रतरायकमै दैत श्रायो । रीसालुरा हाथमैं षडग काढचौ छै। कमाड तोडे दैत श्रायो । रीसालुंयै जांण्यौ, षडगरी दीधी । माथो श्रलगो जाय पड्यौ । तदि रीसालुं दैतनै श्रलगौ जायै नांष्यौ ।

घ. प्रति में न तो उक्त दूहे ही हैं श्रौर न इस राक्षस का वर्णन ही है ।

A–A. ख. पछे रसालु महीलां गयो । रांणीनु कहै – जीण नगरी उजड कीधी हती, तीणनु श्राज मे मारीयो । हीवे श्रा नगरी सुषे वससी । ईसो सुणीनें सर्व राजी हुश्रा । हीवे सुषे समाधे रहे छे । कस्तुरीयो मृग सूर्य उगां पहीली चरवा जाए छे । पोहर १ दीन चढतां घरे श्रावे छे । पछे रसालु सीकार जाए छे । दीन पाछलो पोर एक रहे, तरे घरे श्रावे छे । इम सदा हो रहे । इम करतां रांणी वरस इग्यारेरी हुई ।

ग. राजी होई रांणीनै श्राय कह्यो—गाम उजड कीधो छै, तिणीनै तो मारचौ छै । श्रबै गांममैं बसती करावां । श्रस्यो मनमैं वीचारचौ । तदी रिसालुं पोहर दीन चढता सीकार जायै छै पोहर दीन पाछलो रैहतां सीकारथी श्रावै छै ।

घ. रसालु कुंवर सीकार जायै । पाछलो पोहर रहै जदी पाछौ श्रावै । रांणी वरस श्राठरी हुई ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तरा मन षूसी हुवै । तीणसू थे आग्या देवै तो रोहिमे चरवा जावा । तठै कुवरजी बोलीया—हीरजी ! आ वात तो थे सा कही । पिण थान बंध षोलनै सीष देवा नै पाछा आवो नही तो पछै थानै कठै जोवता फिरा । तठै हीरण बोलीयो—श्रीमाहाराजकुंवार ! आप सरीषा हेतुं माणस छोड ने जाता रहु, सो आ वात कदेही जाणज्यो मती ।

दूहा— **जो सूरज आथूणमै, उगै दिनमै हजार बे ।**
आगन जो सीतल पण करे, तो पिण हुं नही बार बे ।। ८४
उत्तम जननी प्रीतड़ी, कीणही क वेला होय बे ।
ते छोडीनै वीसरे, ते जग मूरष होय बे ।। ८५
कुवरजी छाया माहरी, काया नानो मित बे ।
राज सला राजी हुवो, तो मूझ सोष द्यौ हित्य बे ।। ८६
घणा दीनारी प्रीतडी, कीम मुझ छांडी जाय बै ।
रूडा राजिद परषज्यौ, जीवूं ज्यां लग काय बे ।। ८७
कुंवर कहै अहो हीरणजी, थां म्हां ईधक सनेह बे ।
जावो चरवा रोहीया, वहिलां आज्यौ तेह बे ।। ८८]

२२ *वारता—इण भांतसूं कूंवरजी होरणने सीष दीवी । हिवे सदाई रोहिमै चर-पी आवै । एकदा समाजोगन द्वारकासूं सात कोस उपर जलालपटन नगर छे । तठे हठमल पातसाह राज करै छै । उण राकसरा भयसूं घणा पीरानू पूजतां ने राकसने मारीयो सूणीयौ ने नगर वसावांनौ नाम सूणीयौ । तरे पातसा घणौ राजी हूवौ । घणी सीरणी-वधाइ वेटी । तिको हठमल पातसा आपरा नगरसूं कोस दोय उपर द्वारका सहमी नदी मीठा पाणीरी हुती, तीण माथै वाग लगावांनी सला थी, सू राकसरा भयसूं हुवो नही । ने(ते) भय मिटयो जांण ने नदी उपरै वाग लगायौ छै । माहौवला फूल हुवै छै । घणी वेलां, घणी वेलडीया, गी(नी)लोतरी चीभडा, षरबूजा, नीला गोहुं, साल, दाल घणी नीपजै छै । इसडो वाग छै ।*

[–]. ग. घ. में कोष्ठकगत पाठ अप्राप्त है तथा ख. प्रति में केवल इतना ही अंश प्राप्त है—तदी रांणी मृग, सूंबटा, मेनांरी जाबता करे । ष्याल, वीनोद, हास्य रांमण करे । इसी तरेसु दीन गुदार करे ।

– चिह्नगत पाठ ग. घ. प्रति में अप्राप्त है तथा ख. प्रति का पाठ निम्न प्रकार है—पाषतो एक सहीर छे । तठे पातसाह हठमल राज करे छे । तीणरे नवलषो वाग छे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[सौ येकदा समाजोगमे हीरणजी मजलसां करतां कोस पांच तांई जाय निसरच्या । तठै आगै बाग आयौ । देषनै मांहै ऐठा मल फल-फूल षाया; पिण बागमें जाबतो घणो दीठो । तठै तौ पिण हीरण वीचारीयौ—जौ आ जागा भली छै, मांरो चारौ पिण मौकलौ छै, पिण दिनरा तो वेत लागे नही, अवै रातरो चरवानै आवस्यां । इसौ विचारन हीरण पाछो वल्यौ । सूं कुमरजीनै आयनै कह्यौ । तठै कुंवरजी बोलीया—आज तौ हीरणजी मोडा कु आवीया ? तठै हीरणजी सारी हकीकत कही । तठै कुंवरजी सूणनै हीरणीने कहै—

दूहा– **भौम पराई विगाडीया, वांगां हंदा फूल वे ।**

रषंयआ जडीमै पडौ, तौ हुयसी सहु धूल वे ।। ८९

हिरणवाक्यां

थांह सरीषा म्हारा वांहरू, सो क्यू डरपां जाय वे ।

षांसा म्हे फल-फूलडा, नीलडा मांहरे दाय वे ।। ९०]

२३. Aवारता—ईसौ सूणत प्रांण कुवरजी मूंछा हाथ घालनै राजी हुयनै कहीयौ—हिरणजो ! हिवै हुं थांहरै पूठीरषौ छु । आप नित्य सदाई हंगाम करौ । हीवै हीरण संझ्यां पडीया जावै सौ आधि रातरौ पाछौ आवै । यूं करतां घणा दीन हुवा । अबै तिण बागवाला रषवाला माली पातसाहरी निजरांनै फल-फूल लागा दीसै । ईण भांतसूं दातरां सेहनांण देषनें पातसाह बोलीयौ— अरे वनमाली ! आज काल फल-फूल ईसा सेहनाण सहोत ने थोडा आवै; सो कांई जांणीजै ? तठै माली बोलीयौ—माहाराज ! आज काल कोई क जानवर हील्यौ छै । सौ दीनरां जावतां घणी करां छां, पीण रातरा वीगाड कर जावै छै । तठै पातसाह रीस करनै बोलीयो—अब गुलाम काफर, ईतनै रौज हमकुं षबर क्यु कही नही ? मरदुद अपना माल षराब हुवौ छै, सो तु(ह)मारे ताई सोच नही छै, पीण आज तोने गुण माफ कीया । पिण आज बागमै हम आवगें; बीच अछी जगा बनवाय रषणी हम आवंगौ, उस जनावर की सीकार करेगे ।A

[—]. कोष्ठगत गद्य एवं पद्य ख. ग. घ. प्रतियों में अनुपलब्ध हैं ।

A–A. ख. ग. घ. प्रतियों का पाठान्तर इस प्रकार है—

ख. जठे मृग जाय पातसाह हठमलरे बागमे हमेस चरने आवे छे । इम करतां घणा दीन वतीत हुआ । एक दीन पातसाह तीरे बागवांन फल-फुल ले गयो । पातसाह हठमल फल-फुल कांणा-कोचरा दीठा । बागवांनने पुछ्यों—क्यु बे बागवांन ! बहुत दीनंसे एसा फल-फुल क्युं लांया, सो कारण कांइ छे ? तदी बागवान कही—हजरत, सलांमत कवलेयांन, अधरातकु बागमे हमेस क्या वलाय आवती हे, सो बाग बीगाडे छे । पातसाह वाक्यं—

दुहो– क्यारी[1] केसर द्राषकी[2], फल्या केल अनार बे ।

कंण चंटे[3] इण बागमे, पुछु उणकी[4] सार बे ।।

[ईसौ सून नै माली बागमै आय ने छानी जायगा आछी कर राषी। फूलांरी बिछायत आछी कीवी छै। ईतरै संझ्या पडो। तठै हठमल पातसाह आपरा तन-मनरा दोय चाकर ले नें कबान, तीर, आवध लेने बाग पधारीया। माली या(आ)यनै हारज(हाजर) हुवौ; मूजरौ कर नै जागा बताई। तठै पातसाह तिण जायगा बेठ नै मालीनै कहै—

दुहा— क्यांरा केसर नीलडा, फूली केल अनार वे।
इण कोटै इण बागमै, आसी ते लहसी सार वे॥ ६१
माली कहै पातसाहजी, मूझकुं सीष दिराय वे।
भोजनकी वीरीया हुई, सौ हुं जांउं बार वे॥ ६२
सूण सूण साहिब हठमला, आवेगा तेडा चोर वे।
हमकु दीजै सीषडी, बहलौ आउं इण ठोर वे॥ ६३
पातसाह अग्या तेहनै, दीधी माली जाय वे।
हिव ते हीरणजी हालीया, चारो चरवा आय वै॥ ६४
संझ्यासूं घडी च्यारडी, रात गई तिहां हिरण वै।
धीमे पग ठवतो वहै, देषी नं(चं)दनी कीरण वै॥ ६५]

ग. घ. अनै (घ. में नहीं है) कसतुरचो (घ. कसतूरीयौ) मृग हठिमल पातसाहरी वाडी चर चर घर आवै छै नीत प्रतै (घ. चरै चरै आवै) ईम करतां घणा दिन (घ. दन घणा) हूवा। ऐक दिनकै समै वागवांन फल-फूल लेई पातसाहजी हजुर गयो (घ. फल-फूल ले आयौ, पातसाहरी नीजरै फल-फूल कीधा)। कोई आधो, कोई आषो (घ. कोईक कांणो) ईस्या (घ. ईसा) फल-फुल (घ. फुल-फल) देष्या। अतरायकमै (घ. तदी) पातसाहजी बोल्या— (घ. पातसाह बौल्या) क्युं बे बागवांन! 'ईतरा दिनमै ईस्या फल-फूल क्यु ल्यायो' ('–' घ. में नहीं है)। तदि (घ. तद) वागवांन कह्यौ—माहाराज! 'कोई आधी रात्रै आवै छे, कोई बलाय छै, सो वाग वीगाडी जाय छै, नीत प्रतै आवै छै'। ('–' घ. कोईक अधरात रो वागमै आवै छै, बाग वीगाड जायै छै)। तदी हठीमल पातस्याहनै वागवांन कांई कहै छै (घ. तदी पातसाह बौल्यो—आपै आथमतारा वेगा पदारज्यौ। वागवांन कांई कहै)—। वागवांन वाक्यं। १. ग. घ. क्यारा। २. ग. घ. दाष का। ३. ग. घ. ईण कोट। ४. ग. घ. पुंछुं अणंकी।

[—]. ख. ग. घ प्रतियों में निम्न पाठ मिलता है—

ख. वारता—पातसाह सांझरे समीए घोडे असवार होय वागमे पधारचा। पातसाह घोडो बांध, कबांण कसनें बेठो छे। वागवांन पीण कने बेठो छे। एहवे रात्र पोहर तीन गई। तरे वागवांन पातसाहनु कहे—हजरत, आपरे चउ(रु)आ आया हे। तेरे मरजी होवे सो करणा। पीण हमकुं तो घरा वीसा सीष देणा। वागवांन वाक्यं—

सुण सुण साहीब हठमला, आया तुमारा चोर बे।
हमकुं तो घर सीष द्यो, करयजे राजींद जोर बे॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४. [वारता—तठै कुंवरजी हीरणने हालतो देषीनै आपनै ठीक हुई। तठै कुमरजी हीरणनै बोलाय नै केह छै—

दुहा– सुणीयै मृगजो आजरी, रयणी गई रे सबे ।
अंग-फूरक ठीक पीण, ए सूकनै दुषल सबै ॥ ६६
सौ तुम आज इहा रवै, कालै करज्यौ काम बै ।
आज अजाडी उपजै, तीणसू रहौ ईहा धाम बै ॥ ६७

हिरणवायक्य—

सूणीयै रीसालूराय की, चरीया वीण मुझ प्राण बे ।
रहता नही साहिब इहा, प्रभु करसी सौ प्रमांण बे ॥ ६८
चालता ठी(छी)क छटकीया, सौ वहिलौ आवस बे ।
ईम कही हीरण उतावलो, चाल्यौ मारग देस बे ॥ ६६
घूघरीयांरा सौरसूं, भागो जावे एण वे ।
तुरत वागमें आवीयो, हठमल ज्यांण्यो नेण बे ॥ १००]

A २५. वार्ता—तठै पातसाह गुघरीयांरा झमकसूं धरतीरा धमकारसूं तीरकवांण सावचेंत करनें रूषांरा ओटामें जोवै छै। छांनो-मांनो चालै छै नै मनमै जांणै छै—आज मारा वाग विगाडनवालानूं मारसूं। ईसौ चिंतव्यौ थकौ रूषारी बिडमै आवै छै। तठै हठमलरी छाया डीलरी हीरणमै पडी। तठै हीरण उचौ देषीयौ। तठै तीर सांधियां थकी पातशाहनै देषीयौ। तठै हीरण पाल सांधनै वागरी भींत कुदीयौ। तठै पातसाह लारै भागौ। सो हिरण सताबीसूं आपरे

वारता—तद पातसाह हठमले वागवांनकुं सीष दीधी।

ग. घ. ऐस्यो पातस्या[ह] वागवांनकै तांई कह्यौ—भलां पातस्याह! सलांमत, आप दीन आथमतां ऐकला पधारज्यो। तदि पातस्याजि दीन आथमतै ऐकला पधारया। वागवांन वागमै एकलो बैठो छै। आधी रात्र गई छै। अतरायकमै वागवांन घुघरा वाजता सांभलने पातस्याहजीसुं कह्यो—माहाराज मांनै सीष दिजै, थांरो चोर आयो छै, अबै आपरी आप जांणो। वागवांन पातस्यानै कांई कहै[1]—

दूहा– सुणो पातस्या[2] हठीमल[3], आयो थांरो[4] चोर बे।
मांने तो घर सीष द्यौ, करज्यौ[5] साहीब चोर बे॥

अथ वारता—तदी पातस्याहजी कह्यौ तुं घरजा।

१. घ. में यह गद्य नहीं है। २. घ. पातसाह। ३. घ. हठमलां। ४. घ. थांहरो। ५. घ. कीज्यौ।

[—] ख. ग. घ. प्रतियों में कुंवरजी एवं हिरणका गद्य-पद्यात्मक संवाद अनुपलब्ध है।

A–A. ख. ग. घ. प्रतियों में २५, २६ एवं २७वीं वार्ताओं की वाक्य-रचना इस प्रकार है—

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

ठीकाणे आयौ; नै पातसाह षोज जोवतो चंद्रमारे चांदणासू लार आवै छै। रात आधीरा पातसाह षिण सतभोमीया हेठो आयौ। हिरण पातसाने देषने छीप बेठौ नै पातसाह जोवे छै। तितर पंषारो जावताईरो मांहे कुवरजी कीयौ। तठै पातसाह षषारो सूणने वीचारीयौ-ओ हिरण रीसालूरौ छै ने रीसालू जागै छै; कदाचित षबर पडजावै तौ षराबी हुवै; तौ अवार तौ कठैई छांनौ रहणौ जोग छै नै परभाते हिरणनै सौधनै सीकार करस्यां। ईसौ वीचारनै महीलांरे पूठवाडे जावण लागौ। तठै महिलांरै पूठै आग्ली वाडी फल-फूलांरी हुती नै रीसालूंरा परतापसू घणी फली-फूली छै। तिका वाडी पातसाह देष नै मांहें जाय सूतौ।

तठै रिसालूनै हिरण याद आयो—रषे आज छींक हुई छै, हिरण कुशलै आवै तो भलो। यू सोच रीसालू करै छै। तरै पौहर एक हुई। तठै कुंवरजी हिरणरै षूटै आया। हिरणनै देष्यौ नही नै हिरण पातसाहरा डरसू अलगौ ढुढामै छीपीयो। नै कुमरजी सौच करै छै।

दूहा— **रे फूटरमल हिरणला, रयणी गई सहु साथ वे।**
आयो नही रे हिरणला, हुवौ वैरी हाथ बे॥ १०१

ख. एहवे मृग घुघरा वाजतां वागरो कोट डाक मांहे परचो। हठमल कहे—सुण बे, घणा दीन का जाता हता, अब कांहा जाएगो। इसो मृग सुणके पाछो भागो। तद पीछे हठमल घोडे असवार होय मृग पुठे दोडीयो। मृग जांणे—आज मने मारसी। मेले नही(नई) पाछो जोवतो, जीभ काढतो, डरतो पाछो जाए छे। वांसे हठमल होयके यु कहे—अब तेरी ठीक ल्यु। तदी मृग फीरतो फीरतो रात्ररो मारग भुलो, दीसा चुक हुउ, रसालुरा महीलां नीचे होय आगे नीसरचो। तद हठमलवाक्यं—

दुहा— जष्य राष्यस वेताल हे, साहुकार के चोर बे।
भागा भागा कहां जात हे, क्यु न करे फीर सोर बे॥ २२

मृग वाक्यं

होणहार सो बुध उपजे, भवीतव्य कीणही न हाथ बे।
तेरा नाम हे हठमला, आवो कर मुझ साथ बे॥ २३

वारता— मृग इसो हठमलनु कह्यो। रसालुरा महीला दीसा मृग पाछो फीरचो। हठमल पीण पाछा फीर मृग दीसा दोडचो। मृग नासने नवषंडे महीले चढचो। हठमल बीचारे— क्यां जांणां, कांइ जीनावर छे? कठे ई बेस रह्यो होसी। ओर दीनां मृग चरने पाछो आवतो जद रसालु सीकार जाता। जीण दीन मृग आया पेली सीकार चढीया। वांसाथी मृग रांणी तीरे धुजतो, डरतो, नासतो, भागतो, जीभ काढतो, आयो। रांणी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२६. वार्ता—इसौ विचारनै कुंवरजी रांणीनै आयनै कहीयौ—आज हिरण आयौ नही, तिणरी षबर करणे जावूं छुं; थे जाबताई करज्यौ। हिरण आवै तो जाबतो कीज्यौ। इतरौ कही नै घोडे चढी नै हथीयारां कसीयौ थकौ रोहीरो मारग सोधतो जाय छै। इतरै सूरज उगौ जाणनै हिरण उठ नै च्यारै ही कांनी जोवतौ, हलवै हलवै हालतो थकौ महिलां आयौ। आगै कुवरजीनै नही दीठा। तठै रांणीनै पूछै छे—

दूहा— किहां गया कुंवरजी प्रभातका, किण ठामै किण ठोर बे।
रांणी कहै रे हिरणला, ताहरी बाहर जोय बे ॥ १०२
रातै नायौ तुं हिरणीया, तिणसू षबरनै काज बे।
किहां तुं हुंतौ हिरणला, कहै तुं कारण आज बे ॥ १०३
कुंवरजी सोच घणो कीयो, तारै कारण रात बै।
तुं इहां कुंवरजी रोहीया, ताहरी कहि तुं वात बै ॥ १०४

हिरणवाक्यं

हिरण कहै रांणी रातरी, वात नही कही जाय बे।
मै जीवत मिलीया तिकौ, लहज्यौ अचंभो माय बे ॥ १०५
वागां नीलडा चरणनूं, पूहता बाहर षी(धी)ठ बे।
लागी हुं आगै चल्यौ, इंहा हुं आयौ नीठ बे ॥ १०६

वीचारीयो—आज मृगने डर घणो छै, सो कांइ क तो कारण दीसे छे? तदी रांणी नवषंडे महीले चढी। उप[र]ली भोम चढने देषे तो एक नर रूपवंत, कबांण कसीया वाग मांहे झाडांरा गोठ जोवे छै। इसो देषने रांणी हठमलनु कहे—

ग. अतरायकमै घुघरा वाजता थका वागमै डाके पडचौ। अतरायकमै हठीमल पातस्या बोल्या—घणा दिनरो जातो थो, पीण आज ठीक पडसी। अतरो सांभले म्रग पाछोही ज दोडचो। तदी हठीमल पीण पाछै हुवो। म्रग मन थकी जांण्यो—आज मोनै छोडै नही। पातस्याहजी कहै—घणा दीनरो जातो थो पिण आज ठिक पडसी। म्रग पाछो नाल नै जिभ काढतो दोडचो। तदि म्रग रातकै समै डरको मारचौ दसा भुल गयो। तदि म्हैलां आगलि नीकल गयो। ते पातस्या मृगनै कांई कहै—

दूहा— जाण्या रीण्या विवताल है, साहूकार कै चोर बे।
भाग भाग काहा जात है, क्युं न करै तु सोर बे॥ १८

पातस्या मृगनै कांई कहै—

दुहा— होणहार बुध उपजै, भवतव्या कणीहार बे।
तेरा नाम छै हठीमला, आयो कर मुज साथ बे॥ १९

अथ बात– ऐस्यो मृग कह्यो—कहे नै म्रग दोडचो। आगै जातां मारगै सोच्यौ—हुं तो दसा भुले गयो, मैंहल तो पाछै रह्यो। तदि मृग पाछो फिरचो। मैंहलांमै आयो। पाछै

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छीपायौ तबेला ठाणमै, बाहर पूठै जोर बे ।
जाणू महिलरी वाडीयां, बाहर होसी को र बे ।। १०७
तिनसूं आयो थां कनै, इतरै उगो भोर बे ।
थांसूं मीलवा आवीयौ, वोतो मूझमै जोर बे ।। १०८

२७. वार्ता—रांणी हिरण-वातां सांभलनै मैलां चढी, पूठली वाडीयां सांमो देषै छै । तठै हठमल पातसाह पिण सूतौ जागीयौ । सौ दाढीरा केसानै फूरकावै छै, आलस मोडै छै । तठै रांणी जांणीयौ—हिरणरी वाहर दीसै छै । पिण वरस सोलै अठारै रहतांनै हूवा, सो कुंवरजीरा तप-तेजसूं कोई आपणै नैडो फूरक्यौ नही, नै ओ परौ आदमी वाडीमौ आयनै सूंतौ छौ नै परभात हुंवां जाग्यौ । निरभय थकौ उभौ, तिकौ तौ कोई तरेदार दिसै छै ? इसौ रांणी वीचार न वतलावण कीधी—A

दूहा— वाडी मेहलां आदमी, साह अछै किनू चोर बै ।
रूषां छीपायौ क्यूं रह्यौ, ढीलौ हुवो जू ढौर बै ।।[1] १०९
पर घर पर धरती तणा, भय नही मांनौ छौ मन बे ।
भौम वीडाणी होयसी, धरणी भौमनौ तन बै ।।[2] ११०
काची कली मत लूबीयै, पाका लागेगा हाथ बै ।
जीवत जावैगा मानवी, नहि कौ बिजा साथ बै ।।[3] १११

पातस्याह पीण आवै छै । आगै मृग हाफतो-कांपतो राणी नषै आयो; राणी आगै आय ऊभौ रह्यौ । रीसालू सीकार गयो छै । तदि राणी वीचारचौ—आज मृगने डर क्युं छै ? तदी राणी नवषंडै मैहल चढी देख्यौ । देषै तो एक आदमी बाणसुं झाड हेरै छै—जाणे मृग झाडमै छप्यौ छै । तदि हठीम्ल पातस्यानै कांई कहै— ।

घ. तदी पातसाहा बागमै आया । अतरै घुघरा वाजता सुणीया । तदी पातसाह बौल्यौ—घणा दीना रो जातो थौ पण आज ठीक पडसी । मृग सांभलि पाछौ नाठौ । पातसाह पाछै आवै छै । मृग रांणी कनै आयौ । जदी राणी जांण्यौ-आज मृगनै डर घणौ छै । जदी गोषडै आये नै देषै तो एक आदमी कबांण-तीर लेनै आवै छै । मृग डरको मारचौ छीप्यौ छै । जदी राणी कांई कहै—

१. ख. ग. घ. का पाठान्तर निम्नलिखित है—

रांणी वाक्यं

दुहा— वागां 'मांहेला' मानवी, साहुकार 'के' चोर बे ।
'दरषत हीं' छीपतो फीरे, ढांढो 'गमायो के' ढोर बे ।। २४

'–' ग. घ. माहीला । कै । वागां माहि । हेरै कै ।

२. ३. दोनों दूहे ख. ग. घ. प्रतियों में अप्राप्त है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पातसाहवाक्यं[1]

किसका बै[2] आंबां आवली[3] , कीसका बै दाष अनार बै[4] ।
किण पूरष हंदी गोरडी, कीसका बै दरबार बै[5] ॥ ११२

रांणीवाक्यं[6]

रीसालू हंदी गोरडी, उनका हं[दा] दरबार बै ।
तुं कारण क्यूं पूछ बै, तांहरै पष वार बै ॥
ईहां तु उभो किम रह्यौ, कैसौ तुं हुसीयार बै[7] । ११३

[२८. बारता—ईसी वात कही । तठै हठमल पांतसाह वाडी वाहरै आयौ । तठे रांणी पातसाहरौ रूप देषतै मूस्ताग हुई । नैण-बांण आमा-सामा छुटा । तठै पातसाह मनमै जांणीयौ—जै आ तौ मूस्ताक हुई तौ फतै हुई, सारी ही वात सफ्रगै । ईसौ वीचारनै हठमल बोलीयौ—अरी रांणी ! मारो घोडौ तीसायौ छै, थौरोसौ पांनी पावौ तौ भलौ कांम करौ । तठै रांणो कहै—

दूहा— तौरा नाम हठमला, हठिया छै मैरा भी नाम बै ।
विषकी बेली जौ चरै, तो ईण आंदर आम बै ॥ ११४
विष बेलीका ईहा षरा, वाग ई चतुर सूंजांण बै ।
आसी चरवा घौडलौ, तौ हु करिस प्रमाण बै ॥ ११५

---

१. ख. हठमलवाक्यं । ग. तदी हठमल पातस्याह कांई कहै । घ. तदी पातस्याह कांई कहै ।

२. ख. कीसका रे । ग. घ. कीण हंदा । ३ ख. ग. आंबली । घ. आंबली बे राणी ।

४. ख. कीसका रे दारम द्राष बे । ग. घ. कौण 'हंदी तुं' ('–' घ. हंदा) अनार बे ।

५. ख. ग. घ. कौण हंदी तुं गोरडी, कौण हंदा दरबार (ख. दुरबार) बे ।

६. ग. रांणी हठीमल पातस्यानै कांई कहै-घ. अप्राप्त है ।

७. ख. ग. घ. प्रतियों में ११३वें पद्य एवं अर्द्धाली की जगह निम्न दूहा प्राप्त है—

रसालु हंदा आंबा आंबली, रसालु हंदा दारम द्राष बे (घ. रसालु सीच्या अनार बे) ।
रसालु हंदी हुं गोरडी, उण हंदा दुरबार बे ॥ २६

[—] ख. ग घ. प्रतियों में २८, २६ तथा ३०वीं वार्ताओं एवं पद्यों का पाठभेद अधोलिखित रूप में मिलता है—

ख. वारता—रांणी हठमल प्रते इसो जाब दीधो । तद हठमल कहे—मांरो घोडो तरस्यो छे, सो पांणी पावो । जदी रांणी डरवा लागी । तद हठमलवाक्यं—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पातसाहवाक्या

मे हठीया छुं हठमला, हठ पातसाह मैरा नांम बे ।
अमृत-वेली मे चरू, जो सीर जावै तौ जाय बै ।। ११६

रांणीवाक्य

अमृतवेली जो चरौ, तौ धरस्यौ ईहा सीस बे ।
तब आवौ इण मेहलमे, जीवन विस्वा वीस बै ।। ११७
सूण हौ साहीब हठमला, सूरां हंदा कांम वे ।
कायर षडग न बावसी, रकण दैसी दांम बै ।। ११८
सूरा पूरा सौ हुसौ, आसी तै मैहल मझार बै ।
साई सोसनै दोय नै, आवौ मेहल अटार बै ।। ११९
हठमल मन काठौ करी, मौह्यौ रूप सनेह बै ।
चंढवा लागौ चूपसूं, पर त्रिय जोडव नि(ने)ह बै ।। १२०
एक षंड चढ दूसरै, तीजै षंडै जाय बै ।
सातमै चढनै बोलीयौ, थौडासा पांणी पाय बै ।। १२१
म्हे परदेसी डीसावरा, आया तालो जाय बै ।
नानासी नाजक गोरडी, थोडासा पांणी पाय बै ।। १२२
रांणी झारी भर लेई, सीतल आछी नीर वै ।
अबल सूगंधा सांमूडी, उभी आय नै तीर बै ।। १२३
झारी हठमल हाथ लै, पाणी पीवन हाथ बै ।
झूंकीयो सूंगणीरकां चूवै(भ्रूवै), जांणै गहलौ वाथ वै ।। १२४

रांणीवाक्य

कर ढीला घट सांघूडां, नीर ढुलो ढल जाय बै ।
पंथीडौ तिरस्यौ नही, नेयणां रहीयौ लूभाय बै ।। १२५

हु हठालु हठमला, हठीया हमारा नाम बे ।
मेरी पाग बत्रीस वड, उपर छोगा च्यार बे ।। २७

रांणीवाक्यं

तुं हठालु हठमन्ना, हठीया तुमारा नांम बे ।
वीषकी वेलडीं जो चरे, तो सीर धरी इहां आव बे ।। २८

हठमलवाक्यं

हुं हठालु हठमलो, हठीया हमारा नमां बे ।
ए अमृतवेलडी मे चरु, जो सीर जावे तो नांष बे ।। २९

इसो कहे हठमल महोले चढयो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हठमलवाक्यं

हम परदेसी पंथीया, आया तीरस्या आज बे ।
जों सूगणी मन रंजी कै, आपौ तौ सीभै काज बे ।। १२६
षरीय उ(दु)हेलि छातीयां, बांधी नैणां-बांण बे ।
ताकी त्रीस लागी षरी, रांणी करीयै पिछांण बे ।। १२७
रांणी सूण मोहित हूई, कोधी घणू मनूंहार बे ।
रीसालू हंदी गौरडी, चोरडी करवा त्यार बौ ।। १२८
मांणस ते न्ही ढोरडा, पर त्रीय राषै नेह बे ।
नारी पत छोडो तुरत, पर पूरषांसूं नेह बै ।। १२९
ते नारी गढसूरडी, होवै जगमै हरांम वै ।
त्यूं ए रीसालूरी गोरडी, हठमलसूं हित कांम बे ।। १३०

२९. वारता—इण भांतसूं जाब-साल करनै हठमल नै रांणी बिछायत बैठा । माहो सनेहरी वातां करतां, चौपड रमतां पातसाह सारी ही वीध रीसालूरी पूछ लीवी, मनरी वात सारो ही लीवी । चतुराईरी कलासूं रांणीनै मोहत कीवी ।

हठमलवाक्यं

एक षंड चढी दुसरे, तीसरे षंडे आय बे ।
मे परदेसी पंथीया, थोडासा पांणी पाव बे ।। ३०

वारता– हठमल इसो कहीयो । तरे रांणी कुंजो भर पांणी पावा गई । हठमल पांणी पीवा लागो ।

रांणीवाक्यं

दुहो– कर चीदा दारु घणो, नीर ढुले ढुल जाय बे ।
पंथी नही तुं तरसीयो, नेणा रह्यो लोभाय बे ।। ३१

वारता—जद हठमल पातसाह राजी हुऊ । रांणी पीण षुसी हुई । दोनुं नव षंडे महीले चढ्या । चोपड षेल्या ।

हठमल वाक्यं

दुहो– चोपड षेले चतुर नर, दस दस मोहर लीगाव बे ।
नटण न पावे सुंदरी, द्यो धुर अष्यर दाव बै ।। ३२

रांणीवाक्यं

नाहर सेती अधीक बल, साहीब चतुर सुजांण बे ।
हस हस वातां करत सु, बगां (डा)सु कीसो गुमांन बे ।। ३३

वारता—इम आमा-सांह्मा दुहा-गाहा कहीया, रम्या-षेल्या, भोग-वीलास कीया । हठमल रसालुकी षबर पुछी—सीकार कीण वेला जाए छे, कीण वेलां पाछा आवे छे तीका कहो । तद रांणी कहे—पोहर १ दीन चढतां जावे छे, पोहर १ दीन पाछलो रहे, तरे आवे छे । इसो सुण ने हठमल असवार होयने घरे गयो । तठा पछे महीलारे बारणे मेना हती. सो बोली—भलां भाभीजी ! सषरा हुआ, थांने छ मीनारा पाली मोटा कीया था, सो आज आछी कीनी; पीण रसालु भाइने आवणद्यो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहा– जे पर पूरषां कामनी, हील-मील षेलणहार बे ।
ते पतिनै काकर-समो, गिणै नित की नार बे ।। १३१

३०. **वार्ता**—इसो पातसाह मनमै वीचारी नै रांणीनै कहों–'तैरे तांई पातसाहकी मूदी करूं, तैरा हाल हुकम, तैरा हुकम सारी पातसाहीमै करूंगा । तेरी आंण-दांण कोई लोपन पावै नही । धनकी धनीयानी करूंगां । हुस वातकै वीचै जौ कछु कूड है तो षूदा मैरै तांइ सभा देवेगा । या वातमै कसीर न जांणीयौ । तुमांरा हीताकी कबूलायत इस तरफ रहैगी । अरी मेरा नगर नेहडा है । अब तुमारा मनकी तुम करो ।' तठै रांणी बोली—पांतसाह ! सीलामत, अबी ले चालौ तो ठीक है; नही तो रीसालू आवैगा तो वेत वनैगा नही । तठै पातसाह रांणीनै लैनें उठीयो । तठै सूवो नै मेंणां पीजरमै बेठो थी । तरै मेंना केहवा लागो—

दुहा– दस मास हुंदी परणीया, कुंवर रीसालूं तौय बे ।
सेवतां सोलह वरसमै, कीधी तो मनमें जोय बे ।। १३२
रीसालूं कुंवरने छोडनें, क्यूं जावै घर ओर वे ।
पर पूरषांसूं नेहडौ, किम कीजै निज जौर वे ।। १३३

ग. ऐस्यो हठमल पातस्याहनै कह्यौ । तदी पातस्याहजी कांई कहै—थोडो सो पांणी पावो, तीरस लागी छै । तदी रांणी नीची उतरवा लागी । तद रांणी पातस्याहरो नांम पूछ्यौ । तदी पातस्याह रांणीनै कांई कहै—

दूहा— मेरा नांम छै हठीमला, नवहथा हठी होय बे ।
मेरी पाघ बतीस वड, उपर छोगा च्यार बे ।। २३

रांणी पातस्यानै कांई कहै-रांणीवाक्यं

दूहा—तुं हठीमल तुं हठीमला, हठीया तेरा नांम बे ।
रषी वेली जो चरै, सीर धरीयां आव बे ।। २४

तदि हठीमल रांणीनै कांई कहै—

दुहा—हुं हठवा हठीमला, हठीया मेरा नांम बे ।
रषी वेली जे चरै, सीर जाऐ तो जाग्र बे ।। २५

तदि म्हैल चढचा । रांणीवाक्यं—

दुहा—ऐक षंड दुजै षंड, तीजै षंड आय बे ।
मे परदेसी पांथीया, थोडो सो पांणी पाव बे ।। २६

वात—रांणी पांणीको कुंजो भर लाई । पांणी पीवा लागा । रांणी कांई कहै—

दूहा—कर छीदो क्यु कर पीवै, नीर ढुल ढुल जाय बे ।
पंथी नही तीसाईयो, नयणां रह्यो लोभाय बे ।। २७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३१. वार्ता—A. इसा दूहां मेंणा रांणीनै कह्या । तठै रांणी पींजरो षोल नै मेणानै काढीनै पांषा षोस नाषी ने छुरो लेवाने उठी । तठै सूवै विचारीयौ—रांडडी मेनैंन मारसी तो अबै डाव काढणौ । दूसो विचारने पीजरा मांहैथी सूवौ नीकल नै मैंनाने चांचमें पकडै नै उडीयौ । सू सेहर बारे दिषणा दिसै कांनी माहादेवरो देहरो छौ, तिणरै वारणै एक मोटो ग्रांबौ छै, तिणरे पेडरै षोषाल छै, तिणमै मेनानै वैसाण नै कहै छै—

दूहा– **कांमरण हीयडा कोरणी, जीवत रही तुं श्राज वे ।**
हिव सारी सीध होयसी, नेह विलूधी नाज वे ॥ १३४

३२. वार्ता—हिवै नाम्रकंण रांड कनासूं जीवती छुटी छै । सो हमैं पांषां-परा वेगी ही श्रावसी । षोंण पीणोरा जतन करबौ करसूं । कीण ही वार्तमे कसर

बात—तदी पातस्याह रजाबंध हुवा । नव षंडे म्हैल चढया, चोपड षेल्या । तदी रीसालूको वेई पुछयौ–कदी सीकार जाऐ छै, कदी श्रावै छै ? तदि रांणी कह्यो—पोहर दिन सकार चढतां जाऐ छै, पोहर पाछलो रैहतां श्रावै छै । तदि हठीमल पातस्याह नै रांणीरो चीत-मन एक-मेक हुवो । जांणे-श्रस्त्री रंभा छै, ईणसुं भोग भोगवुं, ऐसी तो देवतांरै घर नही । तदि हठीमल भोग-वीलास करी नर-भवनो लाहो लीधो, ऐक-मेक हुंवा । पोहर दोय रहे नै सीष मांगी । तदि रांणी कह्यो—तुम्हें नीत-प्रत ईण वेला श्रावजो, ईम कैहनै सीष दीधी । श्राप घरे गया । ईतरै मैंणां बोली–भलां, भाभी ! थे ऐसा हूवा । थांनै महीनाका पाल्या था । सो थांरा तो ऐसा लषण छै । पिण रीसालुं भाईनै श्रावाद्यो ।

घ.–वारता—तदी पातसाह बोल्यौ—थोडौ सो पांणी पावो । तदी रांणी पावण लागी ।

दूहा—कर छीदौ पांणी पीवै, नीर ढुली ढुली जाय बे ।
पंथी नही तीसाइयौ, नैणां रह्यौ लुभाय बे ॥ १७

तदी रांणी पातसाहारो नांम पुछयौ—

दूहा—मेरा नांम हठ भला, नवहठ हठीया होय बे ।
मेरी पाघ वती पुड, उपर लुगा च्यार बे ॥ १८

वारता–तदी रांणी कह्यौ—उंचा पदारो । पछै नव षंडे चढयौ । रसालु वेई पुछयौ–कदीयक सकार जायै छै ? पोहर दींन रैहतां श्रावै छै । पछै पातसाहा रांणी माहो-माहे हसै, रमैं छै । मानव-भवरो लाहो ले नैं सीष मांगी । तदी रांणी कह्यौ–थे सदाई श्रावज्यौ । पातसाह परो गयौ । पछै मेणां बोली–भाभीजी ! थे पण श्राछा हूवा ! भाई रसालुनै श्रावादौ । .

A-A. चिह्नगर्भित पाठ ख. ग. घ. प्रतियों में इस प्रकार प्राप्त है—

ख. इतरो कहीयो । तरे रांणीनु रीस चढी । सो पंजरा माहेथी मेनाने काढने मार नांषी । तदी सुवटे जांणीयो–मोनु पीण मार नांषसी । तद ल्ल-पल कर मीठे वचने कहीयो–बाईजी ! मोनु गरमी घणी होवे छे, सो बारे काढो । तद रांणीइं पीजरा माहेथी सुवाने बारे काढीयो । तद सुवटो उडने ग्रांबे जाय बेठो ।

Jain Education International	For Private & Personal Use Only	www.jainelibrary.org

कोई पडण देउं नही। नै लारै रांणी नै पातसाह सोच कीयौ। पातसाह कही–बेटै सूवटै घणी कीवो। अबै तो कांम तरेदार छे। दूसो विचारै छे। तिण वेला सूवौ उडने सतभूमीया मेहलां उपर आय बेठौ रांणी नै पातसाहनै दूहो केह छै A—

[दूहा– है सूगणी म्हे पंषीया, किणरे आंवा हाथ वे।
पिण छल कर म्हे छै तरचा, बलि मांहरो नही नाथ वे॥ १३५
पिण थे जावो गोरडी, पातसाहरे साथ वै।
मांहरो धणी जब आवसी, तद म्हे हौस्यां सूनाथ वे॥ १३६
साइद भरस्यां गोरडी, चौरडी कीधी चोर बै।
सांहां घर पूंहती गोरडी, करि करि बहु मनवार वे॥ १३७
पिण को दाय-उपायथी, लासां थांनै इण ठोर वे।
रीसालूरी तुं गोरडी, म्है मैतै कीधी जोर वे॥ १३८
भला तुम्हे सुषीया हुवौ, म्हे दुषीयारो देह वे।
साहिब करसी सौ भला, पंषी पंषी सा लेह वे॥ १३९
आजूनौ दिन अति भलो, जीवत रहीया म्हेह वे।
हिव सारा ही थौकडा, करस्यां सारा जेह वे॥ १४०

३३. वार्ता—तठै पातसाह नै रांणी सूवारा दूहा सूण्या। तरै मनमै जांणीयो–जे सूवटो कांम षराब करे तो आज तो ओ कांम न करणौ, सूवारै कोइ वतां करस्या। इसौ पातसाह विचारने रांणीनै कहै—है रांणी! आज तो थे अठे ही ज रहौ, साथै ले जाऊं तो सूवौ छटैपग छै, सौ उडनै कुंवरजीनै कहै। कुंवर घोडौ दपटायने आंपांने पोच ने दोन्हांहीनै मार नाषै। तिणसूं आज मांनै सीष हुवै छै नै सूवारे येक पवनवेग घोडो छै सो ल्यावूं छूं। तिण माथे थांनै चढाय नै एक घोडी मे लेज्यावस्यां।]

ग. ईतरो कह्यो। ती वारे रांणीनै रीस चढी। तदी मैणांको गलो पकडचौ, पीजरा माही थी काढीने मारी। तदि सुंवटो डरप्यो; जांण्यौ–मोनै पीण मारसी। तदी सुंवै चकोर थकै दाव कीधो। मोनै गरम घणी होवै छै। सुवानै पीजराम्हैथी परो काढचो। तदी सुंवो मैणांनै मारी तदी सुवो ऊचो जाय बैठो।

घ. तदी रांणीनै रीस आई। तदी मैणांरौ गलो काटचौ। तदी सुवौ डरप्यौ। सुवौ कैहवा लागौ–मोने गरमाई घणी हूवै छै। पीजरा माहीथी परो काढीयौ। सुवो उडे नै नवषंडा मैहल उपरै जाये बैठौ।

[–] ख. ग. घ. में कोष्ठगत दोहे एवं गद्यांश अप्राप्त हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

A तठे रांणी सूंणने बोली–पातसाह ! सिलांमत, आप कयां सू प्रमाण छै । तिण षौज रमायां सारा हि थोक होसी । आप दिन पांच सात तौ घोडै चंढिनै इण ही वेला पधारबो करो; विलास करे नै पधारबो करो । दिन पांच-सात पछै दाव लागसी, सो ही करस्यां । धिरां कांम सिध हूवै ।

दूहा– उतावल कीया अलूभीयै, सनै सनै सहु हौय वे ।
मालो सींचै सो घडा, रीत आया फल होय वे ।। १४१
कांम विचारीने कहो, रहसी तिणारी लाज वे ।
ऊठ कहो उतावला, तो विणसाडै काज वे ।। १४२
षिजमत-बंधी रावली, जांणो चित्त मझार वे ।
रीसालूंनै छोडस्यूं, कोइ क डाव अटार वे ।। १४३
सूष करस्यूं सारी वातरी, पंषीडारी पूकार बे ।
लागवा नही द्यूं एक ही, करस्यूं हुय हुसीयार बे ।। १४४
आप षूसी पीउं पधारीयौ, दुष म करो कोई आज बे ।
साहिब सारा हो हुसी, आंपणा चिंत्या काज बे ।। १४५

३४. वार्ता—इसा समाचार पातसाहनै कहीया । तठै हठमल सेंणासूं सीष करनें घरां दीसा हालीयो सो घरे पूहता । नें रांणी दीलगीर हुयने सूती । सूवौ सतभौमीया मेहलां चढीयौ थको कुवरजीरी वात जोवै छै । A

B इतरै सागी वीरीया हुई । तठै कुंवर घोडौ षिलावतां आया । आगे सूवानै मेहीलरे इंडारे बेठो दीठौ । तठै सूवानै कुवरजी पूछै—

दूहा– आज उजाडा देसमै, फरहरीयां पंषाल वै ।
चिहु दिसी जावौ चमकतौ, नैणा करीय विसाल वे ।। १४६
पींजरीयारा पोढणा, सौ इहा किम तुमे आज वे ।
क्या विध वीत क दाषीयौ, कैसा हूवा आज काज बे ।। १४७ B

A-A. चिह्नगर्भित पाठ ख. ग. घ. प्रतियों में नहीं है ।

B-B. ख. ग. घ. प्रतियों में गद्यांश एवं पद्यों के स्थान में निम्नांश ही प्राप्त है—

ख. एहवे रसालु आया । तदी सुवटो रसालु प्रते कांई कहे छे—

ग. अतरायकमै रीसालुंजी पीण आव्या । अनै सुंवो बोल्यो । सुवो रीसालुनै कांई कहै—

घ. अतरै रसालु आयौ । सुवो कांई कहै— ।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

सूवावाक्यं[1]

पंच[2] पंखेरू सात[3] सूवटा[4], नव[5] तीतर दस[6] मोर बे ।
राजा रीसालूरा मेहलमै[7], चोरी[8] कर गयां चोर बे ॥ १४८

रीसालूवाक्यं[9]

चोर इहां कुंण आवीयो, एहवो इहां कुण सूर बे ।
साच कहै रे सूवटा, मत बोलेजे कूर बे ॥ १४९[10]

सूवावाक्यं[11]

अंहो अंहो कुंवरजी रीसालूवा, मे नही बोलां झूठ बे ।
म्है पिंजरारा वासिया, सो किम मंदिर पूठ बे ॥ १५०[12]

[३५. **वार्त्ता**—तठै कुंवरजी मनमै वीचारीयौ—सूवो-मेंणा पिंजरमै हुंता; सो सूवौ महिलां उपरे बेठो; तिणरो कारण कांईक तो छै? इसौ विचारनै कुंवर मेहलां चढिया। तठै सारा हि चरित्र दीठा। सेझ रूंदोली, विछातां सल दीठा, पांनारां पिक ठांमर दीठा। तठै रांणीनै जगायनै कुंवरजी पूछै छै—

दूहा- **आज मेहिल आछौं वणी, पर हथ लीधो लूंट बे ।**
साचौ कहै बै सूवटौ, रांणी कहो पर पूठ बे ॥ १५१
स्यूं कीधो रांणी एहवो, चारित्र सलूणा नैण बे ।
लट काली नारी कहौ, साच कहौ मोरी सैण बे ॥ १५२

३६. **वार्त्ता**—हे रांणी! सूवै वात कही, सौ साची कै कूडी? तठै रांणी विचारीयों—इण सूवौ हरांमषोर मारा चरित्र कुंमरजीनुं कहिया दिसै छै; पिण मांहरा चरित्र आगै कुवरजी कठै पूगसी, कठा तांई साच कढावसी? इसो विचारनै कुंवरजीनै रांणी कहै छै—]

---

१ ख. सुकवाक्यं दुहो। ग. घ. दुहो। २. ख. पांच। ३. ४. ग. घ. उड गया। ५. ग. घ. दस। ६. ग. न. दोय। ७. ख. राजा रसालुरे मालीये। ग. घ. रीसालु हुंदा धवलहर। ८. ग. घ. कोई चोरी। ९. १०. ११. १२. ख. ग. घ. में अनुपलब्ध हैं।

[—]. ख. ग. घ. प्रतियों में केवल निम्न वाक्य ही प्राप्त हैं—

ख. वारता–रसालु सुवटारा इसा वचन सुण ने रांणीने कहे-जुउं रांणी! सुबटो कांई कहे छे? रांणी कहै—

ग. वारता–ऐस्यो त्रीभाव सुंण नै रीसालुं रांणीनै कांई कहे—रांणी! सुवो कांई कहै छै? तदी कह्यौ—

घ. वारता – तदी रसालु कहै—रांणी! सुवौ कांई कहै छै? तदी रांणी कहै—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहा– कूडौ बोलै छै सूवटौ, मेंना गई अवनास बे ।
तिणसूं चूंका बोलडा, राज सूण्याया तास बे ।। १५३A
हम की लोंयण लोइया, हमथो तोरचा हार बे ।
हम ही सेभ ही रूंदली, हम हो न्हीष्या तंबोल बे ।। १५४B

[कुंमरजीवाक्यं

पिलंग छपीयां छाटीयां, ढीली भई यबंदांण बे ।
तीर भया वीष हौ रोया, किम कर चढीय कबांण बे ।। १५५

रांणीवाक्यं

ऊं एकलडी महीलमै, तीणथी कीधी चोल बे ।
साच न वौल्यौ सूवटौ, गलां हंदी रोल बे ।। १५६]

A. इस दूहेके स्थानमें ख. ग. घ. में केवल निम्न वाक्य ही प्राप्त हैं—
ख. सुबटो जुठ बोले छे। ग. जुंठो बोलै छै। घ. सुवो धूल षायै छै।
B. ख. ग. घ. में निम्न दो दूहे प्राप्त हैं—

रसालुवाक्यं

दुहो– कीण ए लोयण लोइया, कीण ए तोडया हार बे ।
कीण ए सेजां मुगदली, कीण राल्या तंबोल बे ।। ३५

रांणीवाक्यं

हम ही लोयण लोइया, हम ही तोडया हार बे ।
हम ही सेभ्भां मुगदली, हम राल्या तंबोल बे ।। ३६

ग. तदी रीसालु रांणी नै कांई कहै छै[1]—

दूहा– कोण[2] ही लोयण लोईया[3] बे रांणी[4], कोणही[5] तोडया हार बे ।
कोणहो[6] सेजां रूंदली, कीण ही नांष्या[7] तंबोल बे ।। २६

रांणीवाक्यं

मे ही लोयण लोईया[8] बे कंवर[9], मे ही तोडया हार बे ।
मे ही सेजां रूंवली, मे ही नाष्या[10] तंबोल बे ।। ३०

घ. १. तदी रसालु कहै—। २. घ. कण ही। ३. घ. लुईया। ४. घ. में नहीं है। ५. घ. कीण। ६. घ. कीणी। ७. घ. राल्या। ८. घ. लुहीया। ९. घ. में नहीं है। १०. घ. राल्या।

[—]. कोष्ठगत संदर्भ एवं १५५ तथा १५६वाँ दूहा ग. घ. में अप्राप्त है तथा ख. प्रति में एक ही दूहा प्राप्त है जो इस प्रकार है—

रीसालुवाक्यं

पलंग छीपाए छांटीये, ढीली भई अबदांण बे ।
तीर भाथा हम ले चले, कीम कर चाढी कबांण बे ।। ३७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

A ३७. **वार्त्ता**—इसो सूंण नै कुंवरजी उंचा जोवा लागा। तठै छातरै पीक नीजर आयों। तठै कुंवरजी बोलीया—रांणीजी साहिब ! ओर काम तौ थे कीया, पिण छातरे पिक किण लगायों ? ओ पीकरो तौ जोधार हुवै नै सवा मण लोह डील उपर राषै; तिण विना इतरो उंचो न लागै। तरै रांणी बोली–माहाराज कुवार ! ओ पीक तो में लगायो छै। ढोलीयै चीती सूती थी तरे मै छातनै वाह्यो। तठै कुंवर बोलीया—दूरस कही छै; पिण कांना सूणीयां तो न पतिज्यूं, आंष्यां दीठा पतिज्यूं। सौ ओ ढोलीयो छै, तिण माथै सूय ने पीक बाहा। तठै रांणी ढोलीया चित्ती सूय ने पिक नाष्यौ। सौ पीक पूठौ माथा उपर आय पडयौ। इम दोय-तिन वार घणो मेहनत कीवी, पिण पीक पूठो आय पडै। तठै कुवरजी बोलीया—रांणीजी ! घणी मेहनत कीवी, थांहरा गुण निजर आया।A

Bइतरै सूवौ पिण महिलरा इंडांसूं उडनै कुंवररो हाथरो अंगुठा उपरे बेठौ। सूंवासूं कुंवरजी सारी हकीगत केह दीवी। मनमैं जांणीयौ–जे कोई पूरष बलवंत जोरावर छै, पिण दांणा-पांणी छै तो सारो हि जाबतो कर लेस्यां। इसो विचार नें कुंवरजी सूंवानै पूछीयो—सूवाजी ! मेना कठै गई ? तरै सूवों मनमै जांणीयौ–जै अवै सागै वात कहुं तौ रांणीरो नांम हूवों, तरै सूवैं कह्यौ–माहाराज कूंवार ! मनैं छोडनै जाती रही। तरै कुंवरजो बोलीया—सूवाजी ! अस्त्ररी कीणही री नही छै।B

Cय्यूं वांतां करतां कुवरजीरो बोल हीरण सूणीयौ। तठै हीरण कुंवरजीसूं मीलवा आयो। वीती, तीका बात अहमी-सांमी पूछी। तठै कुंवरजी जांणीयों—निश्चौ हठीयौ पातसाह कहीजै, तीकोइ ज दिसै छै। इसौ विचार नै हीरणनै वरज ने कुंवरजी सोय रह्या।C

A–A. चिन्हगत पाठभेद ख. ग. घ. प्रतियों में निम्नोल्लिखित है—

ख. बारता– रसालु कहे—देषा, थे मां देषतां नवषंडाके छाजे तंबोल नांषो। तदी रांणीइं पांन-बीडी चावने छाजा सारु तंबोल नांष्यो। सो रांणीरे पाछो माथा उपर आय पडयो। जद रसालु कहीयो—थांरा गुण जांण्या; थे बेसे रहो।

ग. बारता– तदि रीसालु कह्यो—म्हां देषतां नांषो। तंबोल नवषंडै छाजै नांष देषालो तो थे साचा। तदि पांन चाव्या। तंबोल नांष्यो। माथा ऊपरै पाछो आवी पडयौ। तदी रीसालुं कह्यौ—अबै बैसो। म्हे जाण्यां यां(थां)नै।

घ. तदी रसालू कहै—मांह देषतां पांन तमाषु षावौ, नवषंडयाके छाजै तांबोल नांषो। तदी रांणी पीक नांष्यो, सो पाछो माथा उपरै आवो पडयौ। रसालु कह्यौ—थे ठकांणै बैसो, थंहरौ जांणौ।

B–B. यह अंश ख. ग. घ. प्रतियों में अनुपलब्ध है।

C–C. ख. ग. घ. प्रतियों में चिह्नित अप्राप्त है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Aपरभातरो पूहर हुवौ। तठै घोडै असवार हुई यनै सूवानै ले सीकार चढिया। रांणीनै जाबता दिवी। तठै सूबो नै कुंवर सहिर बारे जायनै घोडौ छांनी जायगामे राषीयौ नै सूवौ ने कुंवरजी छांनेसे उपरवाडै होय ने मेहलरी वांडीयां आयने बेठा।

Bतठै सवा पूहर दिन चढीयो। तठै हठमल पातसाह नवलषै घोडै चढी नै रांणीरा मेहलां आयो। तठै सूवानै कुंवरजी कहीयो—जावो, थे षबर ल्यावो। देषां, रांणी एकली छै कै दौकली छै? तठै सूवोजी छांनेसे महिलां देषने पाछौ कुंवरजी पासै आयौ। आय नें दूहौ कहौ—B

[दूहौ– **करसूं कर मेलावीया, सेझां लेत सवाद बे।**
डर किणरो नही कुंवरजी, अब मत करी थै वाद बे॥ १५७

३८. **वार्त्ता**—तठै कुंवरजी हथीयांरां सझिनै पातसाहरो मारग जाय रूधीयौ छै। पांणीपथौ घोडो पीलावै छै। तठै सूवानें कुवरजी कहीयो—जा, तु षबर दे आव। तठै सूवौ उडनै मैहिलां उपर आय बेठौ। टहुका दिया नै समस्यां-बंध दूहौ केह छै—

दूहा– **आइयो लेष आलाहका, दूष-सूषका विरतंत बे।**
आवेगी यारो मोतडी, पर-बधी कुलवंत बै॥ १५८

३९. **वार्त्ता**—इसौ दूहौ केहने किलोल कर बेठो छे। पांषां फरफराट करै छै। रोम रोम चांचसूं समारे छै। इण भांतसूं घडी येक चरित्र करनें पातसाहनैं सूनाय नै बोलीयो—

A–A. ख. ग. घ. में निम्न पाठ है—

ख. इम करतां तीको दीवस वतीत हुउं। बीजे दीन रसालु सीकार चढीया। सुबटानुं साथे लीयो। महीला नीचे छांना जाय बेठ रह्या।

ग. तदी रीसालु दुजै दीन सीकार जातां सुबानै लारै ले गया। आप सीकाररो मीस करेनै मैहलांमै ऐकंत जाए बैठा।

घ. दूजै दीन सकारको मस करेनै गयौ। सुवा नै हीरणनै ले गयौ। सो आघोसो जाये नीचली भुंममै छांनोसौ बैठौ।

B–B. ख. ग. घ. का पाठ इस प्रकार है—

ख. इतरे हठमल फेर आयो। उंचो महीले चढयो। रसालु चढण दीधो।

ग. अतरायकमै पातस्याजी आया। हठीमल उचा चढया। रीसालुयै चढवा दीधो।

घ. अतरै दोरैरकै वषत हठमल पातीसाह मैहल ऊपरै चढयौ। रसालु जावा दीधो।

[—]. ख. ग. घ. प्रतियों में कोष्ठगत गद्यपद्यात्मक अंश अप्राप्त है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहा– आईयो कुंवरजी आवीया, सेहर कनै आश्रांम बे ।
रमो रे पंथीडा समझिनें, उड जावो निज धांम बे १५९
इम टहुक्का सरला दीया, सतभौमीनै धांम बे ।
रांणी-हठमल तिहा सूण्यौ, उठीया छोडी कांम बे ।। १६०]

* ४०. वार्त्ता—इसा समाचार सूणनै पातसाह सावचेत हूयनें, हथीयार पडिहार लेइनें, आपरै घोडै आय नै पागडै पग दीधो । तठै रांणी घणी वीरहमे मत्त हूई । तठै पातसाह राजा-मारी चाल पकडनै केह छै—

दूहा– रयणी दुषकी राश भी, भरसी गुंण संताब बे ।
ढोली सहु ढीली पडी, जावो कलेजा काप बे ।। १६१
में विरहणी विरहा तणी, फोट सूवटा तुझ फोट बे ।
सूषरी घडीय छुटाय दी, जीवत वीधी चोट बे ।। १६२
हठमल हठ कर चालीयौ, निज मारग मन रंग बे ।
आगे रीसालू देषीयो, तुरंग कुदाबे अभंग बे ।। १६३*

[४१. वार्त्ता—पातसाहजी आपरा मारगमे चालतां आगै रीसालू कुवरनै घोडौ कुदावतौ दीठौ । तठै पातसाह जांण्यौ—आज चोट हुंसी । इम चालतां आंमा-साहमां मिल्यां, वतलावण हुई । तठै कुंवरजी कहै—रे हठमला बावला ! माहरा महिलां मांहि चोरी कीधी, तिणरो जाब दिरावो । तठै पातसाह बोलीयौ—तेरा मेहिलका चोर में हूं; तेरे करणा हुवै, सूं ते करलै । तठै कुंवर बोलीयौ—तुं सूरबीर छै तो पेहली हथीयांरां हाथ करो । तठै पातसाह बोलीयौ—हुं हाथ करस्यूं तरै थे कीतरीक वार रेहस्यौ ? यूं मनवार करतां कुंवर-पातसाह मूंछां वट घाल्यौ । तरै रीसा करनै पातसाह सवा मणरो भालौ कांधै हुतो, सो कुंवर साहमौ वाह्यो । तठै कुंवरजी कलासूं टालीयौ । सो भालो दूर जातो षल्यौ । तठै रीसालं आपरो भालो लेनें पाछो वाह्यौ । तिण पातसाहरे छातीमे षूतो बाहिर पार निकल गयो । तरे हठमलजी घोडासूं हेठा पडीया । तठे कुंवर हेठो उतर ने पातसाह कनै आयने कहै छै—

दुहा– नार पराई विलसतां, कांटा षूर तूटाय बे ।
सीस साई जव दीजीये, मोच पडै सूचि काय बे ।। १६४

– ४०वीं वार्ता का गद्य-पद्यांश ख. ग. घ. प्रतियों में नहीं है ।

[—]. कोष्ठकान्तर्वर्ती ४१वीं वार्ता के गद्य-पद्यात्मक अंश की वाक्यरचना ख. ग. घ. प्रतियों में इस प्रकार वर्णित है—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूरण रे हठीया पातसा, ताहरो बल हिव फोर बे।
हठमल धरती लोटातो, चोरी पडी सीर चोर बे ।। १६५
हिव रीसालूं सीस कूं, वाह्या अपणा षग्ग बे।
हठमलका सीस कपीया, ते मारगने वगाव बे।। १६६]

४२. वार्ता—तठै पातसाहनो कालजो काढ, नै घोडारा तोबरामै घाल, नें माथारो लोही छांगलामै लेने सेहरमै कुंवरजी आया। आगै कीणही री हाटमे चरी लेइ, ने तेलरा घडा भरीया था सूनी हाट मांहै, तिण चरीमे तेल लेने लोही भेला कीया, नै आपरे घोडै असवार हुय, ने नवलषो घोडो हाथे षांचने आपरा मेहलांरी वाडीमै बांध दीयौ; नैं आपरो घोडो सदाई जागा बांधीयो, ने सूवाने कहीयो—पातसाहनै मारीयौ छौ। इतरो केहने तोबरो, चरी जे(ले)ने मेहलां कुंवरजी आया। आयने रांणीने कहीयौ—जे आज सीकार आछी कीवी छै। बडा सीरदारांरा साथ भेला हुवा छा सो मेह तो आरोगीयासा ने ताहरै वास्तै लायां छां, सो संभाल लीज्यौ। इतरों कहीने हेठा उतरीया ने हीरण कने गया। अबे थै निसंक थका तिण वागमैं हगाम करि आवो। इसो केहनें सूवाने कहीयौ—जावौ, थे रांणीनै जितावणी कर देवज्यौ। तठै रांणी मांस तोबरासू लेने रांध्यौ ने तेलरो दीवो कीयो छै। हिवै मांसने रांधने षाधौ। तठै सूवो थांभै वेसने रांणीनै सूणावै छै—A

ख. हास-वीलास कर पाछो उतरतां रसालुए वाट बांधी हती, तीण माहे आय पडचो। रसालु बोलीयो—हठमल! तुं घणा दीनांरो जातो हतो पीण आज हुसीयार हुज्यों; हुं मारीया टाल मेलु नही। तद हठमल कहे—हु ताहरो चोर छु; तीण वास्ते पेलो लोह तुं कर। तद रसालु कह्यो—पेली लोह तु कर। जदी हठमल कहे—माहरा हाथरी जागा तुं कोणने मारसी? तो ही पीण रसालु पेली लोह न कोधो। तरे हठमल नवहथो जोध-घोडे चढने सवा मणरो भलको साधने रसालुने भलको वाह्यो। तद रसालुए असवार थके टालीयो। अर रसालुए भलको सांध हठमलनु वाह्यो। जद माथो आय आगे पडीयो।

ग. तीहां जाए भोग-वीलास कीधो। पोहर एक तांई रहे नै पाछो ऊतरचौ। तदि रीसालुं बोल्यो, कह्यो—हठीमल! घणा दीनरो जातो थो, आज ठीक पडसी; अबै तुं समाव। तदी पातस्याह कह्यो—हू तो थांहरो चोर छुं, पेहली तो तुं दै। तदी रीसालूं कह्यौ—हू तो पैहली लोह न करूं। तदी हठीमल कह्यौ—मेरा हाथकी ध्याकर पीछै कीसकै देगा? तदि हठीमल पातसाह नवहथै घोडै चढचौ छै। तदि सवा मणकौ भलकौ सांध्यो। रीसालुं टाल्यो। रीसालुं हठीमल सांमो भलकौ संध्यौ, हठीमलरै दीधी। माथौ अलगो जाअ पडचौ।

घ. पातसाह रमे-षेले नै नीचै उतरचौ। तद रसालु कह्यौ—घणा दीनरो जातो थौ पण आज ठीक पडसी। रसालु भलकौ सांधै नै हठमाल पातसाहरै दीधी। पातसाह हेठौ पडचौ। माथो वाढीयौ।

A. ४२वीं वार्त्ता की वाक्य-रचना ख. ग. घ. प्रतियोंमें निम्न रूप में लिखित है—

ख. जद रसालुऐ हठमलरो कालजो काढ लीधो। चरबो की तेल काढीयो। पछे घरे

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

दूहा[1]– पीउ[2] कचोलै पीउ[3] वाटके, पीउ[4] वीबलैरी[5] धार बे ।
पीउ तो[6] पेटमे संचरयौ, अजे न धापी[7] नार[8] बे ।। १६७[9]
हाथ पीउ[10] मूष[11] परजले[12], छिन[13] भर[14] रह्यो[15] छिपाय[16] बे ।
जीवतड़ां[17] जूंग मांणीयो[18], मूवा[19] पीछे[20] रांणी[21] षाय बे ।। १६८

रांणीवाक्यं[22]

थे दीनां में[23] जीमीया[24] मृगला[25] हुंदा[26] साहब[27] बे ।
जो जांणत[28] पीउ मारीयौ, तो[29] करती कटारी[30] घाव बे ।। १६९[31]

४३. वार्ता—इसी वात सूवेजी रांणीने कही । कुँवरजी छांना थका बातां सूणी । तरै मनमै वीचारीयौ—आ अस्त्ररी मांरे कांमरी नही ।[32]

आया । कालजो ने तेल रांणीनु दीधा । रांणी जांण्यो—मृगरो कालजो दीसे छे । सो कालजो रांधी षाधो । संध्याए तेल दीवे सीचीयो । तदी सुवटो रांणी प्रते कांइ कहे छे—

ग. तदि रीसालु हठीमलरो कालिजो काढि रांणी नषै ले गयो । रांणीऐ रांध्यो, षाधो, दीवलै बाल्यो । तदि सुंवो बोल्यो—

घ. पातसाहरो कालजो रांणी नषै आंण्यौ । रांणी तीरासु रांधायो, दीवामै घाल्यौ । तदी सुवो बोलीयो—

१. ख. सुकवाक्यं । २. ३. ४. ख. प्रीउ । ५. ख. दीवलाकी । ६. ख. में नहीं है । ७. ख. आयो । ८. ख. सार । ९. यह दूहा ग. घ. में नहीं है । १०. ख. प्रीउ । घ. सैण । ११. ग. मुंष । घ. मुवै । १२ ग. पीउ । घ. सैण । १३. ख. षीण । ग. पीउ । घ. सैण । १४. १५. ग. दिवलो । घ. दीवलै । १६. ख. छीपाय । ग. घ. जलाय । १७. घ. जीवतां । १८. ग. मांणीयो रांणी । १९. ख. मुआ । ग. घ. मुवां । २०. ख. पछे । ग. केडै । २१. ग. पीन । घ. में नहीं है । २२. ग. रांणी सुंवानै कांई कहै । घ. में अप्राप्त है । २३. ख. दीधो मे । २४. ख. जीमीयो । २५. २६. ख. कांइ मृग हुंदो । २७. ख. साव । २८. ख. जांणु । २९. ख. में नहीं है । ३०. ख. कटारीयां । ३१. ग. प्रति में यह दूहा इस प्रकार है—

मै जांण्यो मृग मारीओ बे सुंवा, मुझ देषणरी चाह बे ।
जो हठीयो मुओ जांणतो, तो करतो कटारचां घाव बे ।। ३२

घ. प्रति में यह दूहा नहीं है । ३२. ख. ग. घ. में ४३वीं वार्ता के निम्न वाक्य ही प्राप्त हैं—

ख. वारता – तरे रसालु जांणीयो–आ अस्त्री मां जोग नही ।

ग. वात – तदी रीसालु जांण्यो–आ यसत्री मां जोगी नही ।

घ. वारता – रसालु मंनमै जांण्यौ–असत्री मांह जोगी न्ही ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहा– देषो हुंती दस मासनी, पाली किण विध पोष बे।
हिव पर घर मंडप करी, अस्त्रीजातरी ओष बे ।। १७०[१]
केहनी अस्त्री न जांणज्यौ, कुडो नेह रचंत बे।
पूठ पराई नारीयां, न धरे एक ही कंत बे ।। १७१[२]
सासरीया पीहर तणा, कुलनै करती षराब बे।
परपूरूषां मनडो रंजे, सकल गमावे आब बे ।। १७२[३]

४४ वार्ता—इण भांतसूं कुंवरजी चिंतवना करे छे। इतरे रात गई देषनै, सारी जाबता करने, रांणीने मेहलांमै जडनै दूजै मेहलांमे सूंता। हिरण चरत्रा गयो। सूत्रो मेंणा पास गयो। जतन-जाबता साराहीरी हुंई। हिवे परभात हुवो। तठै कोई क जोगो, अस्त्रीरो विजोग हूवो, नगर देषने पुकारवा आयो। आगे नगर कठेई क सूनो, कठेई क वस्ती देषने कोणही कने पूछीयो—रे भइया! इ नगरका राव कहां है? तठै आदमी बोलीयो—अहो जोगीजी माहाराज! म्हे तो राजारा मेहलांसूं घणा आगलै रहां छां। ए साहमा, सतभोमीया आवास सौनेरा कलस चिलकै, तिके रावरी जायगा छै। म्हे तो रावजीने कदेई देषीया न छै। थांहरें कांम छै तो थे जावौ। तठै अतीत रावजी जायगा आयं। सारी ही सूनी दीठी।[४]

दूहा– नही घोडा रथ उंटीयां, हाथी ने सूषपाल बे।
चाकर-बाबर को नही, ए नृप केहा हवाल बे ।। १७३[५]
इम चितवता आवीयो, रीसालू मेहलां हेठ बे।
घोडो देष्यौ हिरणेने, वसती जांणी नेट बे। १७४[६]

४५. वार्ता—तठे मेहलां हैठै अतीत उभो रेहनै पूकार कीवी—अरे बाबा! मेरा धणी कोउं नांहि है, तेरे पास आया हुं; सो मेरो वाहर करीयौ माहाराज! मेरी अस्त्रीके तांइ मांटी पणैं एक जोगी लेगया; सो मेरी दिराय देवौ। ज्यूं मेरा जीव मोरो हुवै; तेरे तांइ वडा पूंन्य हुवेगा। इसी पूकार कीवी। तठै रीसालूं सूणने हेठो उतरीयो; जोगी पासै आय हकीकत पूछी। तठै जोगी रोयवा लागो। तरे रीसालूं कहै—[७]

---

१. २. ३. तीनों दूहे ख. ग. घ. प्रतियों में नहीं हैं।

४. ४४वीं वार्ता का अंश ख. ग. घ. में निम्न वाक्यों में ही लिखित है—

ख. इतरे प्रभात हुओ। एक अतीत मेहलां नीचे आय उभो रह्यो।

ग. तदी सवार हुंवो। एक अतीत म्हैलां नीचैं आये ऊभो रह्यौ।

घ. में यह अंश बिलकुल ही नहीं है।

५. ६. दोनों दूहे ख. ग. घ. में नहीं हैं। ७. ४५वीं वार्ता के स्थान में निम्न वाक्य ही ख. ग. प्रतियों में उपलब्ध हैं—ख. वीलाप करतो रोवे छे। तरे रसालु पुछ्यो—क्यु रोवे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहा– जोगीडा रसभोगीया[1] , भर भर नयंण[2] मत[3] रोय बे ।
आसी[4] म[5] जांणो[6] आपरी, घर तुंमारा[7] जोय बे ।। १७५[8]

जोगीबाक्यं[9]

राजा मेरी वालही, मो प्यारी मन मांह बे ।
बलै न मूझ एहवो मिलै, सूंदर रूप सरांह बे ।। १७६[10]
मे अस्त्री विन सूनडा, जीवडा जात है दोड बे ।
मांडाइं जोगी ले गयो, मांहरां जीवरी मोर बे ।। १७७[11]
में मरहुं त्रिस कारणें, करीये मांहरी सार बे ।
तेरे आगै पूकारीया, सूणीये मांहरी पूकार बे ।। १७८[12]

४६. वार्ता– तठै कुंवरजी मनमै वीचारीयौ-जे रांणीनै इण जोगीनै परी देउं तो पाप कटै । इसौ मनमे विचार करने जोगिने कहै छै[13]—

दूहा[14]– आय सजोगी ध्यांनमै, रहोये[15] जटा वनाय[16] बे ।
माहरी परणी प्रेमकी[17], चाढी[18] ताहरै[19] पाय[20] बे ।। १७९

४७. वार्ता– इसो सूणनै, जोगी राजी हुयनै केह छै–तेरा परमेश्वर भला करीयो; मेरा जीव षूस कोया । तुंमारी रांणी पाउं जहां मेरे किस वातकी कुमी है । तठै कुंवरजी लेनै पांणीरी [झा] रीसूं संकलप कीधी, नै रांणीनै मैहलांसू काढ नै जोगीने परी दीवी ने कहै छै[21]–

छे ? तरे जोगी कहे—माहरी अस्त्री मने मोकसे हुओ जांणी मने छोड ओर जोगी लारे गई । तीण वास्ते रोवुं छुं । रसालुवाक्यं—। ग. गोरष जगायो । तदि रीसालूं कांई कहै— घ. प्रति में इस वार्ता का कुछ भी अंश लिखित नहीं है । १. ख. रसभोगीडा । २. ख. नेण । ३. ख. म. । ४. ५. ६. ख. आीया न होवे । ७. ख हमारा । ८. ग. और घ. प्रति में यह दूहा नहीं है । ९. १०. ११. १२. सन्दर्भ एवं दूहे ख. ग. घ. में अप्राप्त हैं ।

१३. ४६वीं वार्ताका अंश ग. घ. प्रतियोंमें अप्राप्त है तथा ख. प्रतिमें इस प्रकार लिखित है—

वारता—रसालु जोगीनु रोवतो देषी मनमा वीचारीयो—आ अस्त्री इण जोगीने द्यु तो भली । रसालुवाक्यं—। १४. ख. दुहो । १५. ख. रहो २ । ग. रहि । १६. ख. वनाव । १७. ख. माहरी अस्त्री परणी जीके । ग. मांहरी अस्त्री परणी । १८. ग. चोहडी । १९. ख. ग. तुंमारे । २०. घ. में यह दूहा नहीं है । २१. ४७वीं वार्ता घ. प्रतिमें नहीं है किन्तु ख. ग. प्रतियोंमें इसका रूपान्तर इस प्रकार है—

ख. वारता—रसालु एसो कहि योगीने अस्त्री-दांन दीधो । हाथ पांणी घालीयो; श्रीकृष्णारपुन्य कीधो । जोगी बहुत राजी हुओ ।

ग. वारता—तदि रीसालू असत्री दीधी । तदि जोगी हुयो । जोगीरा हाथ मै पांणी मुंक्यौ; रांणीनै परै दीधी ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहा– **जावो रांणी विडांणीया, जोगी लार जूगत बे ।**
थे मंदा सीर गयो हिवै, पर वणीयां गत चित्त बे ।। १८०[१]

४८. **वार्ता**– इसो कहिनै जोगीने सीष दीवी । अबे मृगला ने सूवा ने मेंनां न सर्वने साथ लेने कुंवरजी असवार हुवा सेहर बारे आया । तठै सूंवे विचारीयों– कुंवरजी सह तो आज नगर छोडीयौ ने कठेइ क आघा जावसी । तठे सूवो केह छै[२]–

दूहा– **अहो रीसालू कुंवरजी, क्यूं छोड्या रूडा धांम बे ।**
किण दिस मजल करावस्यौ, किण पूर केहने गांम बै ।। १८१[३]

कुंवरजीवाक्यं[४]

सूवा किण देशे चलां, सूरां किसा विदेस बे ।
जिहां अपणां अंन्न-पांणीया, जिहां करस्यां पर सेव(वेस)बे ।। १८२[५]

४६. **वार्ता**– तठै सूवेजी बोलीयो–माहाराजा कुंवर ! आप घडी एक पंग थंभजो, सो मेंनांने लेने आउं । तठै कुंवरजी बोलीया–मेंनां तो जाती रही थी, सो अबे थे कठासूं ल्यावज्यो ? तरे वासली हकीकत सूवै सारी कही । तठै कुंवरजी जांणीयो–जे सूवो वडो पर उपगारी छै । रांणीने जीवती राषी; नहीं तो हु आ वात सूंणतो तो रांणीने मार नांषतो । पिण स्यावास इंण पंषोरी बूद्धमें ।[६]

दूहा– **उत्तम जीव हुवे जिके, जिण तिणसूं उपगार बे ।**
करतां न जांणें हांण बे, राषे सूष पर कार बे ।। १८३[७]

५०. **वार्ता**– इसो विचारने कुंवरजी बोलीया–जे सूवाजी मेंनांने किण तरे ल्यावस्यौ; हुं साथे हि चालूं; पींजरामें लेने आघा चालस्यां । इसो कहीनें कुंवरजीने सूवो मांहादेवजीरे देहरे ले गयो । आगे कुंवरजी माहादेवजीरो दरसण कीयौ, पूजा कीवी, अरक पूफ घणा चढाया, ढुपद कीया, सूत कीवी । पछे मेंनां नें सूवानें पीजरामे घालने कुंवर आघा चालीया ।[८]

---

१. यह दूहा ख. ग. घ. प्रतियोंमें नहीं है ।

२. ४८वीं वार्ता के स्थान पर ख. ग. घ. प्रतियोंमें निम्न वाक्यांश ही उपलब्ध हैं—

ख. रसालु घोडे असवार होय आगे चाल्या । मृग, सुबटो साथे छे । राजा मांनरी देस सारु षडीया ।

ग. पछै रीसालु असवार होय नै मृगनै साथ लेई परो गयो ।

घ. सवेरै छोडे परी रसालु परा चाल्या ।

३. ४. ५. ६. ७. ८. गद्य-पद्यात्मक अंश ख. ग. घ. में नहीं है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[हिवै रांणी सामीजी कने ऊभी थकी विचारीयौ-ओ कांम षोटो हुवो; सांमीरा लारे किसो तरे जाउं; पिण दांणा-पांणीरी वात इसीहीज हुई; हूंणहारने कोई पूग सके नहीं।

दूहा– दईवांधीन लिष्या जिके, अंकण भिसलें सीस बे।
जेसा दुष-सूष सीरजीया, जेसा लहै नर दोस बे ॥ १८४
रांमसरीसा भोगव्या, वारै वरस बनवास बे।
तो हुं गीण (ती) केतली, दईव लिष्या ते आस बे ॥ १८५]

५१. वार्त्ता– इसो मनमें रांणी पीछतावो कोयो ने मनमें वीचारीयो–जे दांणा-पांणी छै तो सारा ही थोक करस्यूं। इसो विचारनें रांणी जोगीनै कहै— सांमोजी माहाराज! अठे तो सून्याड छै ने अठासूं सात कोस उपर जलालपूर पाटण छै, तठै हठमल पातसाह जा (राज) कर छै, तठै हालो, जाय वस्या; आंपणौ गुंदरांण करस्यां। तठै सांमीजी रांणीनै साथे लेने चालीयो। सेहर बारे जायने जलालपूर पटनरो मारग लेने चालोया। आगै हालतां थकां मारग मांहे पातसाह मूवो पडीयो छै। तठै रांणी देष नें मनमें विचार छै–देषो, पातसाहसूं रंग-विलास करतां, तिके आज माष्यां भिण-भिणाट करै छै ने कागला सीस कुंचूरे छै।*

दूहा– हठीया[1] रावत[2] वाकडां[3], तो त्रिण[4] रेन[5] विहाय[6] बे।
तेज[7] पराक्रम[8] ताहरो[9], 'सो हिव'[10] कागा[11] षाय[12] बे॥ १८६

[–]. कोष्ठगत गद्यपद्यांश ख. ग. घ. प्रतियों में अप्राप्त हैं।

*. ५१वीं वार्ताके चिह्नित अंश का पाठ-भेद ख. ग. घ. ङ. प्रतियों में इस प्रकार है—

ख. 'पुठाथी'[१] रांणी 'महीलांसु'[२] 'नीची उतरी'[३] 'अतीतनु कहे'[४]— 'मो साथे आवो'[५] 'जदी जोगी साथे हुओ'[६] 'रांणी चाली चाली'[७] 'हठमल मुओ पडचो हतो, तठे आई'[८]। 'रांणी वाक्यं'[९] —।

'–'. १. ग. पछे। घ पाछासुं। ङ. हिवें वांसाथी। २. ङ. महीलां थी। ग में नहीं है। ३. घ. में नहीं है. ४. घ. जोगी तीरै आई। ङ. जोगीने कयो। ५. घ. में नहीं है। ङ. मौ सांथे हुवौ। ६. घ. ङ. में नहीं है। ७. घ जोगी, रांणी। ८. ग. हटीमल पातस्याह मुवो पडचौ छै, जठै आवी नै त्रीभाव देष्यौ। घ. हठमल मुवौ पडचौ, जठे आई ऊभी। ङ. हठमल पातसा मारीयौ हुतौ जठे आइ। ९. ग. रांणीवाक्यं झुरणा। घ. कांई कहै। ङ. राणी वायक।

1. ग. घ. हठीआ। 2. ख. सामत। ग. घ. सांवत। ङ. सांमी। 3. ख. घ. ङ. वंकडा। 4. ग. छोण। घ. वन। 5. ख. रयणी न। ग. रयण। घ. रह्यो न। ङ रेण। 6 ख वीहाय। घ. जाय। 7. ग. काले। घ. काले। 8. ग. मुंडके। घ. मुषै। ङ प्रताप। 9. ग. घ. कागले(लें)। 10. ख. ङ. अब। ग. ऊड ऊड। घ. उर उर। 11. ख. काग ने कुता। ग. पडै। घ. परे। ङ. काग कुत्ता। 12. ग. विजाय। घ. रोजाय।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हरिया[1] हुयजो[2] वालमा[3], ज्यू[4] वाडीके[5] सिंग[6] बे।
मो नगुणीकै[7] कारणै, करक[8] वेसांण्या[9] काग बे ।। १८७[10]
[रावत भिडियां वांकडा, ताहरा हाथ सलूर बे।
मो निगुणीकै कारणै, काया कीधी दूर बे ।। १८८
हरीयां वागारां राजवी, फूलां हंदा हार बे।
तोतो छेती बहु पडी, कूडै इण संसार बे ।। १८९
बालापणरी प्रीतडी, पूरण कीधी पीर बे।
लागा हाथ छयलका, हिव तोसूं हुंवो सीर बे ।। १९०
कारीगर किरतारका, छयल किया तसु हाथे बे।
जीहां पीउं थांरी छांहडी, तीहां पीउं मांहरो साथ बे ।। १९१
मो सरषी निगुणी तणे, कारण काया छोड बे।
हुं आभागणी जीवती, रहीय करडका मोर बै ।। १९२
फिट फिट कुबधी सज्जनां, कोनो नहो मूझ साथ बे।
षबर न का मूझनै पडी, तो मीलती भर बाथ बे ।। १९३
रस रमतां मैहलां विपे(षे) चोपड पासा सार बे।
ते छोडी धर पाथरचा, सीस धड जूवा वारे बे ।। १९४
प्रेम-गहिली हुं थइ, मांहरा पीउंरे संग बे।
यूं नहीं जांण्यौ हठमला, तो करती रंगमे भंग बे ।। १९५
जांण न पाई हठमला, नवि पूगो मूझ डाव बे।
जे हुं मारचो जांणती, तो करती कटारचां घाव बे ।। १९६
रूंडा रांजिद जांणज्यौ, मूंझने चूक न कोय बे।
जे हुं जांणती मारीयौ, तौ हुं करती दोय बे ।। १९७

---

१. ख. हठीया। ग. हरीग्रा। घ. ङ. हरीया। २. ख. ङ. होज्यो। ग. होऐ। घ. होयो। ३. ख. ग. घ. ङ. वलहा। ४. ख. ज्यु। ग. घ. ङ. ज्युं। ५. ख. वाडी-केरा। ग. घ. वाडीको। ङ. वाडोकै। ६. ख. साग। ग. घ संग। ङ. वाग। ७. ख. ग. नीगुणीकै। घ. मगणकै। ङ. निगुणीके। ८. ख. क्रमे। ग. करंक। घ. करांक। ङ. करकै। ९. ख. बेसारचा। ग. वसाया। घ. बैठा। ङ बेसारचौ। १०. इस दूहे के पहले एक और निम्न दूहा ख. प्रति में मिलता है—

काला मुहके कागले, उड उड परहो जाय बे।
माहरा प्रीउकी पासली, हम देषत मत षायबे ।। ४४

[–]. कोष्ठान्तर्गत दूहे ख. ग. घ. ङ. प्रतियों में अनुपलब्ध हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

व्याप्यारी ज्यूं वटाउडा, वालद ज्यूं विणजार बे ।
लदीयां लोथ पडी रही, कागा कुचरे षार बे ।। १९८
पांना फूलां मांहिला, सीस रषूंगा सोड बे ।
के नाराज्यू साजनां, लहुं मूझ हीयडै जोड बे ।। १९९
अब बेगा मिलज्यौ हठमला, भाज्यूं मांहरा देह बे ।
ज्यां हठमल ज्यां हु षरी, साचो जांणज्यौ नेह बे ।। २००]

५२. वार्ता—इसा विरहरा दूहा कह्या । मनरा मनमे समझ कीया । पिण केहणकी वात नही बणै । इसो विचारने रांणो सांमीजीने कह्यो—सांमीजी मांहाराज ! पर उपगार रो कांम छै । हिव हुंका धर्म छै—ओ मडो पडीयो छै, तिणनै अगन भेलो करणो जोग छै । तठै सांमीजी वात मांनी । वात मांनणे रोहिमे लकडा भेला कीया । चारे षाई दे नै वहरवी माहे पातसाहरी बूथ मेली । तठै सांमीजी कहै—आ तो हींदु तो नहि दीसै छै; ए तो तुरक दिसै छै । तठै रांणी दुहो कहै छै ।[1]

दूहा— मांणस देह विडांणीया, क्यां हींदु मूशलमांन बे ।
आग जलाया कायने, हींदु-धर्म निदांन बे।। २०१[2]

[५३. वार्ता—तठे चहमे बूथ मेले ने उपरे चेजो करने कंसघसस्ं आग लगाई । झालो-झाल हुई । तठे सांमीजीने वांणी कहै—माहाराज ! इण तलावसूं पांणीरी तुंबी भर ल्यावो; ज्यूं मडाने भीटीया छै, सो छांटो लेवा ने आघा चालां । तठै सांमीजी तुंबी लेनें तलाव कांनी गया ने लारे रांणी कहै—

---

१. ५२वीं वार्ता निम्न प्रतियों में निम्न रूप में है—

ख. वारता—इसो कहे रांणी घणी झुरणा कीधा । पछे अतीतनु केहे—वनषंड मांहेसु लकडा ल्याव्यो, ज्युं आपे इणनु दागद्यां । जदी जोगी वनमे फीरने लकडा ल्यायो ।

ग. ऐसो रांणी कह्यो । घणा झुरणा कीधा । पछै अतीतनै कह्यौ—लाकडा लावो जौ आपे अणीनै दागदां । तदि अतीत लाकडा ल्यायौ ।

घ. में उक्त अंश ही नहीं है । ङ. इसो राणी कहै नै झूरणा घणा झूरीया छै । पछै अतीतनै कयो—सूका लाकडा वनमांहिथी ल्यायौ ।

२. ख. ग. घ. ङ. प्रतियों में यह दूहा नहीं है ।

[—]. ख. ग. घ. ङ. प्रतियों में ५३, ५४ तथा ५५वीं वार्ताओं के गद्य-पद्यांशों के स्थान पर केवल यही गद्यांश उपलब्ध है—

ख. चेह चुणने रांणी मांहे बेठी ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहा– हठमल मीलज्यो साहिबा, बहुला म रहज्यौ दूर बे ।
आई अगन प्रजालने, लहज्यौ हित भरपूर बे ।। २०२
अगन सरण ताहरो करूं, माहरो पीउ मीलाय बे ।
साहिब साषी मांहरो, साथ दीज्यौ संभाय बे ।। २०३

५४. वार्ता—इसा दुहा कहिने परमेसररो नांम ले ने 'हो हठमल ! थांरो साथ बेगा हुयज्यौ, इसो कहीने चहीमे पडी, रांम-सरण हुई । तठे सांमीजी सीनांन कर ने तुंबी भरने पाछा आया । तठै रांणीनै चेहमे बलती दीठी । तठे सांमीजी कहै—

दूहा– रंडी राजी ना हुंई, कुंमर थकी कर कूड बे ।
मे विदनांमी रच गई, नार देई तुझ धूड बे ।। २०४
सत कीधो ने साह बण, हिंदु-तुरक समांन बे ।
जस षाटी जालमतणौ, जलण धरचौ ए प्रांण बे ।। २०५
रंडी भूंडी ते करी, मांण मूकायो मोह बे ।
षार दीयौ मूझ छातीयां, भली करी मूझ दोह बे ।। २०६
तो सरसी नार तणा, षेलतणा मन षेल बे ।
प्रांणतणा पासा ढल्या, में मत कीधा मेल बे ।। २०७
कांमण कारीगरतणी, कांमण केथ पडेह बे ।
सात कीयो सासें गई, भलो दिषायो नेंह बे ।। २०८
साली मो मन माहरो, भूंडी रांड भडांण बे ।
तो सरसी वाली वरस, देषी लोह थडांह बे ।। २०९

५५ वार्ता—इसा दुहा सांमीजी रांणोनै बलतीने सूणाया; पिण ज्यां राज्यांसू मन वेधीया तेके दूजी तथ न जांणै । हिव रांणी हठमल लारे सत की[धो] सो बल भस्म हुई । सांमीजीने दो वडा साल हुवा । सो घणो वोषास करवा लागा, पिण गरज कांई सरे नहि ।

अगन लगाई ! रांणोइ हठमल पुठे सत कोधो । अतीत रोवतो पाछो गयो—जा रंडी, तेरा बुरा हुइंगा ।

ग. आग ल्यायो । लाकडा सलगाया नै रांणी माहे बेठी । लाकडा लगाया, हठींमल साथै सत कीधो ।

घ. तदी रांणी छाती-माथा कुट नै हठमल वांसै सत कीधौ ।

ङ. पछै चेहै चुणी नें रांणी चेहे माहै बैठी हठमल पातसाह साथै बली, सत कीधो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहा– एक गई दूजी गई, हिव तीजी की मेल बे ।
नारी नही का आपरी, कुंडी जगमैं केल बे ।। २१०
विधना तुं तो वावली किसका ले किसकुं देस(य) बे ।
रोतो सांमी चालीयो, पाटण मारग लेय बे ।। २११
नारी न जांण्यौ आपरी, जगनें न सूंणी कोय बे ।
मूणस मरावे हाथ सूं, पाछैसूं सती होय बे ।। २१२]

A५६. वार्त्ता—इसो सांमीजी सोच करता पाटण गया । कांइ क मंढोकी वसती लेने गूज करवा लागा ।

हिवै रीसालूं कुंवरजी मारग चालीया जाय छै । कठेइ क वस्तीमे रहै छै; कठेइ क रोहीमे रहै छै । साहसीकपणै रेहै छै—

श्लोकः—उद्यमं साहसं धीर्यं बलं बूधी पराक्रमं ।
षडेते जस्य विद्यंते तस्य देवोपि संकते ।। २१३

५७ वार्त्ता—तठे कुंवरजीने हालतांनै मास क हुवो छै । तठे राजा मांनरो नगर आणंदपूर नांमे, तिण नगररे सरोवर आयो । सेहरसूं नेडा छै; वडो पिणघट छै । वांसली पोहर राततासूं पीणघट सरू हुव छै; सो दोय घडी रात जावै, जठा तांई वाहबो कर छै । इसी पोठ पीणघट री छै । बले सरोवर दोला वाग छै । भली हरीयाल वाडोयांरी चांरू फेंर छै । वडी आडारा कडषां उपर भला नीला रुंष-दरषत सोभे छै ।

दूहा– सरवर निरमल नीरडै भरीयो हंसा केल बे ।
वागां फूली सूगीधीयां, वास वलै वहु मेल बे ।। २१४
सोभा मांनसरोवरां, जिम वण रहीयो तलाव बे ।
घोडो आंबै अटकावीयो, पाणी पीवण आव बे ।। २१५

५८ वार्त्ता—इण भांतसूं कुंवरजो पांणी पीवै छै । तठै पीणहारियां साथे राजा मांनरो बेटी सोनारो घडो ने जाडावरी इंढोणी लीयां थकां तिण सरोवर चाली आवै । तठै रीसालूजी आपरा वागांरी चाल उपर षेहू लागी देषन तिण पांणीसूं धोवण लागा छै । इतरे पणिहारी तलावमें आई । सारा ही कुंवरजी

A–A. चिन्हान्तर्गत ५६, ५७, ५८वीं वार्ताओं के गद्य-पद्यात्मक अंश का पाठान्तर ख. ग. घ. ङ. में निम्नगद्यांश के रूप में प्राप्त है—

ख. हीवे रसालु कीतरेके दीने राजा मांनरे प्राहुणा गया । तलाव उपर गया । घोडो चंपारे गोढे बांधीयो । कपडा धोया । स्नांन संपाडा कीधा । कुवरजी पाग बांधे छे । इतरे राजा मांनरी कुवरी सहेलियां साथे पांणी भरवा आई । सो रसालुने देषने पांणीरो घडो नषसुं भरवा बेठी, रसालु सांमो जोवती रहे, पीण रसालु जोवे नही । तद कुमरीवाक्यं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कांनी जोवै छै नै राजा मांनरी बेटीन जोवै छै। रसदती नारीतणा नैण-षतांग वह रहा छै। तठै राजा मांनरी बेटी एक आंगलो अंगूठासूं कलस भरेने उंचाय नें बाहिर ल्याउं।A

दूहा– सरवर कपड[1] धोइया[2], सूथण[3] सल[4] सिर पाव[5] बे।
षेह उतारे षेगकी, तो हि न समझै दाव बे।।[6] २१६
नष अंगूठे अंगूली, भरीयौ कलस अभ्रूग बे।
अजे यस मारू साहिबो, बोलै नही ओ वूंग बे।।२१७[7]

रीसालूवाक्यं[8]

देस[9] वीडांणो[10] भूय[11] पारकी[12], तुं राजाकी धीय बे।
तुझ[13]कारण हुं[14]माररपूं[15], कुण[16] छोडावण[17]हार[18] बे।।२१८[19]

ग. अवै रीसालु कतराएक दीनांमै राजा मांनरै पांहुणा गया। तलावै बैठा, कपडा धोव्या। ईतरै राजा मांनरी बेटी छोरचां साथै पांणी आई; पणीहारियां साथै तलाव आई। रसालु कपडा धोआ पाग बांधवा लागा। नषैसुं घडो भरचौ, रसालु सांमी देषती जायै; पिण रीसालुं देषै नही। तदि रीसालुजीनै रांणी कांई कहै— ।

घ. तदी रसालु चाल्यौ चाल्यौ राजा मांनरै जमाइ आयो। तलावरी पाल कपड़ा धोया। अतरै राजा मांनरी बेटी पांणी भरवा ताऊ आई नषसुं घाडो भरचौ। रसालु देषै नही। तदी रांणी कांई कहै— ।

ङ. अवै रीसालु कितरेक दिनै राजा मांनरै पावणा हुवा। तलाव कपडा धोया नै पाग बाधै छै। इतरै राजा मांनरी बैटी परणीयांरीयां साथै सोनारो घडो, जडावरी इढोणी पांणी भरवा बैठी। कुमर रीसालून देष ने सगली जोवा लागी छै; पिण रीसालू सांमो जोव नही छै। कुमरिवाक्यं— ।

१. ख. ग. घ. ङ. कपड़ा। २. ख. धोवीया। ग. धोईया बे। घ. धोईया बे कुंवरां। ३. ग. घ. बांधी। ४. ख. अंगी। ग. घ. पाघ। ङ. आंगी। ५. पाघ। ग. घ. अजब। ङ. पाग। ६. ख. ङ. नषसुं घडलो मे भरचो, अजे अन (ङ अजे न) बोल्यो बग बे। ग. घ. नषल्यांसुं घडलो (घ. चुकल्यौ) भरचो, अजु न चोग्यो बग (घ. बुग) बे। ७ यह दूहा ख ग. ङ. प्रतियों में अप्राप्त है। घ. प्रति में इसका रूपान्तर इस प्रकार मिलता है—

झगो धोयो फेंटो धोयौ, धोई सुथण पाग बे।
नषल्यासु चुकल्यौ भरचौ, तो ही न देव्यौ ठग बे।। २६

८. ध. में नहीं है। ९. ग. घ. भोम। १०. ख. वीडांणा। ग. घ. पराई। ११. ख. भुइ। ग घ. पर। ङ भूइ। १२. ग. घ. मंडलो। १३. ग. घ. तुज। १४. ख. मुझ। ग. घ. मुज। १५. ख. ग. मारीजे। १६. ख. ग. तो कुण। घ. तो मुआं। १७. ख. ग. छोडावे। घ. न मलै। १८. ख. ग. जीव। घ. अग। १९. ङ प्रति में इस पद्य के अंतिम दोनों चरण अप्राप्त हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कंवरीवाक्यं[1]

चंदन[2] कटाउ.....[3], चरहमे[4] जालू[5] अंग[6] बे।
मो[7] कारण तुमै[8] मारज्यौ[9], तो[10] दोनू[11] वसा स्वर्ग[12] बे॥२१६[13]

५६. वार्त्ता—इसा दुहा मांहो केहने सेहरमे गई। तठै कुंवरजी सेहरमे आया। राजारी मालणरो घर पूछ नै मालिणरे घरे आया। पूरजी(जा) में सू मोहर से(ए)क मालनने दीधी ने मालनने कहै—जावो, थे राजाजीसूं मीलीयावौ नै कहज्यौ—श्रीमाहाराजाधिराज ! आपरो जमाई मांहरे घरे उतरीयो छै। इसो सूणने मालिण मांन राजा कनें जाय ने सारी हकीकत कही। तठै राजा मांन आपरो कुंवरने मेलने रीसालूने मेलां दाषल कीया। तठे राजा मांन कुंवरजीसूं मीलीयो ने कहै—कुंवरजी ! एकला क्यूं पधारीया ? तठै सारी देसवटारी वात कही। तठे राजा घणी धीरज दीवी। हिवै कुंवरजी महिलांमै घणी षूसालीसूं बेठा छै। तठै रात्र पूहर एक गई। तठै कुंवरी सीणगार करने मेहला आई। आगै कुंवरजी मेहीला किमाडने [जडीने] कपटी निद्रामे सूता छै। हिवै रांणो घणा जबाब समस्या कीवी; पिण बोलीया नही।*

---

१. ख. ङ. कुमरी वाक्यं। ग. घ. राजकुवरी वा०। २. ख. ग. ङ. चंपए। ३. ख. कटावु चेह रचुं। ग. काटसलो रचुं। ङ. कटावुं सैहरसूं। ४. ख. चेहर च। ग. सलो रचु। ङ. चैमै। ५. ख. ङ. जालुं। ग. बालु। ६. ग. ङ. आग। ७. ख. ग. मुझ। ङ. मुज। ८. ख. ग. तुझ। ङ. तुं। ९. ख. ग. ङ. मारोजं। १०. ख. घ. में नहीं है। ङ. तौ। ११. ख. तुम हम। ग. दोनुं। १२. ख. ङ. खरंग। ग. सुरंग। १३. घ. में दूहा निम्न प्रकार है—

अगर चंदणरा ज(ल) कडा, देवाऊं जंगी ढोल बे।
कागा रोलै कर मरु, तो पंथीकी गैल वे॥ २८

* ५६वीं वार्त्ताकी वाक्यावली ख. ग. घ. ङ. प्रतियोंमें इस प्रकार है—

ख. इम कही कुमरी घरे गई। रसालु पीए घोडे असवार होय सहीरमे गया। सघले लोके कह्यो—राजा मांनरे जमाई आया छै। समस्त राजारो पुत्र रसालु कुमर नांम छे। यु करतां रसालु दुरबार गया; साराई साथसुं मील्या। रसालु थाल आरोगीया। घोडारे दांणारी, सारी वातरी जाबता हुई। रात्र घडी २ जातां रसालु महीलां दाषल हुआ। रसालु पोढीया छे। कमाड जडया छै; पोहरायत बेठा छे। इतरे पोहर १ रात जातां रांणी आई। ज(क)माड जडया देषने रांणी समस्याबंध दुहासुं हेला दीये छे।

ग. ईतरौ कहीनै घरां गई। रीसालू आया गाममै तदि नगरमै षबर हूई—राजा मांनरै जमाई आव्या। रीसालुकुंवर राजा समस्तरो बेटो मील्यां, जा(रा)भा जुहार माहो-माहे हूवा; डेरा दिवाडया; सगलो जाबतो कीधो। रात पडी रीसालुजी मेहलांमे पोढया छै। पोलसोत बलै छै। रांणी आवी। कमाड जडे दीधा छै। तदी रांणी हेलो पाडयौ। कमाड षोल्या नही। ऐस्यो त्रीभाव वण रह्यौ छै।

रांणीवाक्यं[1]

दूहा– कडकड नांषूं[2] काकरा[3] , वाजैला[4] किमाड[5] बे ।
के थे मूवां[6] के[7] मारीया, के[8] भांकोया[9] ग्रमार[10] बे ।। २२०
साहिबडा[11] तुमै[12] सांभलो, 'रयणं सारी य[13] विहाय[14] बे ।
सवा कोडरो[15] मूंदडो[16], भांज्यौ[17] वज्र[18] कोमाड[19] बे ।। २२१[20]

रीसालूवाक्यं[21]

ना[22] म्हे[23] मूवा[24] नवि[25] मारीया[26] , ना[27] म्हे[28] जंपया[29] ग्रमारबे[30]।
सूरवर[31] बोल्या वोलडा[32], वोही[33] वेण[34] संभाल[35] बे ।। २२२

घ. ग्रतरा दूहा कहैनै घरे गई। रसालु गांममै ग्रायौ। राजा मांनरै घरे गयौ। राज मांन जाबता कीधी। रात पडी रसालु सुतो छै। ग्रतरै रांणी ग्राई कींवाडकै दीधी। रसालु बोल्यौ नही।

ङ. इतरौ कहिनै घरै गई। रीसालू गाव माहै ग्रायौ। तद सघले लोकै कयौ—राजा मांनरै जमाइ ग्रायो छे। तिणरै नांम रीसालू छै; राजा समस्तरो बेटो छै। तद महिलां माहै डेरा दिराया; जाबता कीधो। रात पडी तद रीसालू महिला पोढीया छै; कपट नीद कर सुतो छै। राणीं ग्रावी समस्या कीधी। पिण उघाडै नही

१. घ. रांणी कांई कहै। २. ख. नांषु। ङ. नाषु। ३. ख. काकडा। ४. ख. वाजे लोह। ङ. बाजै लाल। ५. ख. कमाड। ङ. किवाड। ६. ख. ङ. मुग्रा। ७. ८. ङ. कै। ९. ख. जंप्या। ङ. भंपीया। १०. ख. तुभ नाग। ११. ख. साहीबजी। १२. ङ. थे। १३. ख. सारी रयण। ङ. सारी रेण। १४. ख. गवो हाय। ङ गइ विहाय। १५. ख. कोडरी। ङ. कोडकौ। १६. ख. मुदडीं। ङ. मुंदडो। १७. ख. भांजी। १८ ङ. वजर। १९. ख. कमाड। ङ. किवाड। २० ख. प्रतिमें यह दूहा २२१ वें से पहले है तथा इन दोनों दूहोके स्थान पर ग. घ. प्रतियोंमें निम्न एक ही दूहा प्राप्त है—

कै मुंग्रा कै मारीग्रा'बे कुंवर, कै भंफी ग्राई नार बे'।
सवा कोडको मुंदडो, 'भांज्यो' बजर 'कमाड' बे ।।३९
'–'. घ. कै भंफ्या ग्रवार बे। घाठो। कीवांड।

२१. ख. रसालुवाक्यं। ग. रीसालुंवाक्यं-दूहा। घ. में नहीं है। २२. ख न। ग. नै। घ. नां। २३. ख. ग. घ. में नहीं है। ङ. मै। २४. ख. घ. मुग्रा। ग. मुंग्रा। ङ. मुया। २५. ख. नह। ग. नै। घ. न। ङ. ना। २६. ग. मारीग्रा बे रांणी। २७. ख. न। ग. नै। घ. नहीं। ङ. नां। २८. ख. ग. घ. ङ. में नहीं है। २९. ख. जंप्या। ग. भंफीग्रा। घ. भंफ्या। ङ. ज्यापो। ३०. ख. ग्रहीराव। घ. ग्रवार। ङ. कालो नाग। ३१. ख. सरोवर। ग. घ. ङ. सरवर। ३२. ङ. बोल्याडा। ३३ ख. वेहो। ग. घ. वेई। ङ. उवांका। ३४. ख. वयण। ग. घ. वोल। ङ. वैण। ३५. ख. चीतार। ग. घ. चींतार।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[६०. वार्ता—इसो कुंवरजी कहीयो। तरे कुंवरी चूंप करने महिलरे वांरणे बेठी, ने रूपी वडारण छै, तिणनै कने वेसांणने कहे छै—

दूहा– मृगलो सूवो मेनडी, एकण रे वहे (रेहवे) लार बे।
सो तो हंस रिसावी सो, सरवर वात संभार बे ॥ २२३
भूलै चूंके भोलडी, वयण वटाउं जाण बे।
कहिया साहिव किम कीजीयै, रीसवि मती य सूजांण बे ॥ २२४
हे वांदी या (था) हरा हाथरो, आसरो आज अपार बे।
रातडीयांरी वातडी, निसा समें यार बे ॥ २२५

६१ वार्ता—इण भांतसूं वडारणसूं दूहा कहीया। तठै रीसालू जोइयो जे रातरी वात सासरीयामें गई; तो इण लूगाईरी तो पारष लेणी, पछै वात करणी। इसो विचारने कपट-निडा(द्रा)में सूता छै। इतरा माहे वरषाकालरो मास छै। श्रावणरो महिनो छै। तठे उत्तराधरा पमी(गी, गा)री चाली थकी घटा आई छै। मोर, पपीया, कोइलां कहुका कीया छै। डैडरिया डरूं-डरूं कर रह्या छै। धरती हरीयों कांचूं पहरणरी आस धरी छै।]

राग मल्हार

दूहा– वरषा रीत पावस करे, नदीयां प(ष)लके नीर।
तिण विरीयां सूंकलीणीयां, धणीयांस्यूं धरचौ सीर ॥ २२६
परवाई भीणी फूरे, रीछी परवत जाय।
तिण विरीयां सूंकलीणीयां, रहती पीव-गल लाय ॥ २२७

[—]. कोष्ठगत ६० एवं ६१वीं वार्ताओंकी वाक्यरचना ख. ग. घ. ङ. में इस प्रकार है—

ख. वारता--इसो कहीयो। तरे रांणी इसो सांभली पाछी फीरी। तरे रसालु वीचारियो आ अस्त्री पतीव्रता होसी तो राजलोकमे जासी; नही तर ओर ठीकांणे जासी। इसे समोए थोडो जरमर-जरमर मेह वरसे छे।

ग. वात—ऐस्यो रांणी कही परी गई। तदि रीसालु कह्यौ—आ यसत्री कसी क छे? पतीव्रता होसी तो रावलामै जासी; नही तर ओर जायगा जासी। भीरमर-भीरमर मेह वरसै छै। ऐसो त्रीभाव वीण रह्यो छै।

घ. प्रतिमें इस प्रकारका कुछ भी अंश नहीं है।

ङ. वारता— राणी इसो कहिनै फेर पाछी गइ। तद रीसालु वीचारीयो—जो आ असतरी प्रतीवरता होसी तो राजलोक मांहै जासी; नही तर ओर ठिकांणे जावसी। तिण समै थोड़ो-थोड़ो मेह वरसे छै।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पालो पांणी पातसाह, चढो उत्तराधि कोर ।
तीण वीरीयां धणीयांयति, मोरडीयां ज्यूं झिगोर ।। २२८
आभे अडंबर बादली, वीज चमको होय ।
तिण वीरीयां कचूं कसै, पीवनै राषे नोय ।। २२९
कोरण उतराधि करण, धोरंण ची(चो)ली कुवाल ।
धणीयां धण सालै धणी, वणीयो इम वरसाल ।। २३०[1]

६२. वार्ता—इण भांतरी वरषा रीत वणी छै। तिण समीये छोटी-छोटी बूंद पडै छै। विजलीयांरो झबको हुवै छै। तठै कुंवरीरो जीव सेणसूं विलूंधो छै ने कुंवरजी कपट-नीद्रांमै सूसाडा करै छै। तठे रांणी वडारणने दूहो कहै छै।[2]

दूहा— आज सलूणी रातडी, मोही अलूणी होय बे ।
एको कांमण सोभीयो, वांदी विधुता जोय बे ।। २३१
रांमन रातडीयां तणी, पूरो हौवै पास बे ।
तुं मूझ बालापणा तणो, पूरावै मन आस बे ।। २३२

दासीवाक्यं

नीदडीयांरो नेहडो, लागो कुंवर सूंजांण बे ।
अब ठठो (उठो)सै चालो भली रे, रेण अंधारी आंण बे ।। २३३
चालो मीलीय सेणसूं, रावत सूता सू छोड बे ।
एक घडीमै आंपणो, काज करेस्यां कोड बे ।। २३४*

A६३. वार्त्ता—इण विध छांनेसे वातां करने उठी, सो मेहीलांसूं उत्तरी। तठै कुंमरजी साहसीक होयने ढाल-तलवारसूं कस्या, सो लारे चालीया; लगबग हालीया छै।

दूहा सोरठ—ए आजूंणो रात, षबर पडैसी मूझ षरी ।
वैरण हुंदो वात, षरो मथा ज्यौ षेलणा ।। २३५

---

१. २. २२६ से २३० तकके दूहे तथा ६२वीं वार्ताका गद्यांश ख. ग. घ. ङ. प्रतियोंमें अप्राप्त है।

*. २३१वें पद्यसे २३४वें तकके पद्य (दूहा) ख. ग. घ. ङ. प्रतियोंमें अप्राप्त हैं।

A–A. चिन्हान्तर्गत ६३, ६४, एवं ६५वीं वार्ताओंके गद्यपद्यात्मक अंशोंके वाक्यभेद ख. ग. घ. ङ. प्रतियोंमें इस प्रकार मिलते हैं—

ख. रांणी सोनाररा घर दीसा चाली। रसालु पिण ढाल-तलवार लेने रांणी वांसे चाल्यो। रांणी सोनाररे घरे जाय कमाड कुटीयो। रांणी सोनार प्रते कांइ कहे छै—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६४. **वार्ता**— इण भांतसूं कुंवरजीरो अस्त्री चिंतवती, आपरो सेण 'जात सूंनार रीणधवलनांमै' तीत(ण)री हवेली जाय नै सवा लाषरो मूंदरो हाथरा अंगूठामांहिसूं काढनै फैकीयौ; सो चोक विचालै जाय पडीयौ। तिणरा गुघरा वाज्या। तठै सूंनाररों बाप जागीयौ। तठै बेटानै जागावा जाय ने दूहा कहै छै—

दूहा— **उठीयौ कूंवर वीवालूवा, भीजै राजकुंवार बे।**
राजा रूठैगो गांव लै, नही तर घोडी त्यार बे।। २३६

६५. **वार्ता**— इसौ कहतां प्रांणनाथ सूंनाररो बेटो जागीयो ने कीवाड षोलनें कुंवरीरे लातरी दीवी ने बोलीयौ—कुंतरी रांड! वरषा रीतरी रात मांहै मोडी आई; सो वले किसां मांटियांने रीझावणने गई थी। तठे कुंवरी हाथ जोडनै बोली—साहिबजादा! इतरो कोप मती करो, कांई करूं? आज मांहरो षांवंद आयो, तिणसूं परवस पडी थी। उण दईमारचा नीद आई देष ने वेगी आई छूं। मारो जोर लागौ हुंतो, वेगी आवती; पिण इण बातसूं अटकी रही। तठे सूंनार कंवरीने मांहे लीवी।

दूहा— **झिरमीर झिरमीर वरसीयो, मेह भलो तिण रात बे।**
भीना कपडा नीचोइ सों, करवा बेठा वात बे।। २३७

६६. **वार्त्ता**— हीवै सूंनार ने कुंवरी रंग विलासमे मंगन हुवा छै; नें कुंवरजी किवाडरी इंदलो षांग(प)दैनें (सूं)नाररा महीलरे पसवासै जाय विराजीया छै; सारा ही चरीत्र देषे छै; मनमैं जांणे छै–देषो, लूंगाया चरित्र, जीव ठीकानै कदे ही रहै नहा।A

रांणीवाक्यं

दुहो— उठो उठो कुवर सोनारका, कांइ भीजे राजकुमार बे।
राजा रुठो तो गांम ल्ये, उठो घोडा च्यार बे।। ५२

वारता—रांणी इसो कहीयो। तरे सोनाररे बेटे उठने कमाड षोल्यो। रांणी मांहे गई। आगे सोनार सुतो हतो। सो उठने रांणीरा माथामे पावडीरी दीधी ने फेर कहीयो—इतरी मोडी क्यु आई? तरे सोनारनु कहे—आज आंपणा सहीरमे राजारो जमाइ आयो छै; सो तिणनु सुवाड ने आई छुं; तीण वास्ते ढील हुइं। रसालु बारे उभो सारी वात सुणी। हीवे रसालु छांने बेठा छे। रांणीइं सोनार साथे सुष-वीलास करतां रात्र सुषे गुदारी।

ग. रीसालुं ढाल-तरवार संभाये नै पुठै हुम्रो। रांणी सोनारकै घर गई छै; कमाडकै दिधी। राजकुंवरी सुंनारा बेटानै कांई कहै—

दुहा— उठो कुंवर सुनारका, भीजै राजकुवार बे।
राजा रूसै तो गांम लै, नही तो घोडांरो माल बे।। ४१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[दूहा– मांटी सूतौ छोडनै, जावे षेलण नार बे।
पर-रसभीनी कांमणी, ते हूई जगमे षराब बे ।। २३८
मौ सरसौ पीउडौ मील्यौ, छोड नै हेत सूंनार बे।
आधीनी सषावस भरै, तो ही ण डरपी लीगार बे ।। २३९
नारी नही का आपरी, पूठ पराई थाय बे।
जो हित तन-मन दीजतां, पिण न पतिजे जाय बे ।। २४०
पूरष भला गहिला थई, राषै भरोसौ नार बे।
कदेही अपणी नही हुई, नारी जग निरधार बे ।। २४१
सो कोसां सजन वसै, दस कौसां हुवै नार बे।
तो नारी तेहने झूरे, पीउरी न जांणै पूकार बे ।। २४२
आसू लूधी सेणरी, धणीयण आस लिगार बे।
गौठ पराई राचवै, जीवत छंडै लार बे ।। २४३
धणी सासती नारी नही, सेणा सहिल अपार बे।
प्रेम गहेली सेंणनैं, आपै तन ध (ध)नसार बे ।। २४४

६७. वार्त्ता—इसा दुहा कुंवरजी मनमें कह्या ने चरीत्र जोवै छै। तीतरा मांहे सूंनार बोलीयौ—आज अभागने थांहरै धणी कठासूं आयौ ? आंपरा सनेहमे अंतरास घाली। तठै कुंवरी बोली—पीउड़ा, उण वेईमानने याद मत करौ न आवार रंगरी वीरीयांमे याद करणौ नही। पिण आप जमैं षातर राषौ, दाय-उपाय करनें आपरो मूजरो मोडो-वेगो साझ जासूं। तठै कुंवरजी सूणनै प्र(घ)णा षूसी हूवा। स्याबास है, इसी अस्त्रीयां हुवै तद मांझ हाथे आवै।]

घ. तदी रांणी सुंनारकै घरे गई। पाछासुं रसालु गयौ। थोडोसो मेह वरसै छै। रांणी सनारनें हेलो पाडचौ; सुनारकौ कीवाड षोलेयौ। रांणी मांहै गई। सुनार उठे नें पावडीकी दीधी। रांणी कह्यौ—राजारे जमाईं आयौ थौ, तीणनै सुवांणनै आई छुं। तद रांणी-सुनार माहो-माहै हसै-रमै छै; संसारसु लाहौनो लीधौ।

ङ. रीसालु पिण हाथमांहै ढाल-कवांण लेनें रांणीरै पूठै चालीया जावै छै। राणी तो सोनारकै घरै गइ; किवाड कुंटीयौ। तद सोनार वैटाने कांइ कहै छै—

सोनारवाक्यं—

दूहा– उठो कुमार सोनारका, भीजै राजकुमार वै।
राजा रुसै तौ गांव लै, नही तर घोडा च्यार वै। ४७

वारता—तिवारे किवाड षोल्यो। माहै गइ। सोनार सूतौ थो, सो ऊठनै पगरी दीधी नै कयो—इतरी मोडी क्युं आइ ? रीसालूंरी वात सांभली। तद कुमरी कयो—आज राजारै जमाइ आयो, तिणनैं सूवाडा नै आइ छुं। च्यार पोहर सूती रही; परभात हौण लागौ तद रीसालूंनै ऊघ आई, तिवारे ह आइ छु।

[—] कोष्ठगत पाठ ख. ग. घ. ङ. प्रतियोंमें अनुपलब्ध है।

[दूहा– एक छोडी दूजी छोडस्यां, तीजी करस्यां त्यार बे ।
काई क नारी सूगणली, परष लहैस्यां सार बे ।। २४५

६८. वार्ता—इसो मनसोबो कुंवरजी कीयो । ने सूनार नै कुंवरी घणा रंगमै बेठा छै ।

दूहा– पीउ प्यारी पीउ प्यारडी, मच रही मांझल रात ।
सेणा सेण चपेलीया, कसबी करीयां बात ।। २४६
कंचू कस्यौ दिल हथ कीयो, मीलीयो तन सोनार ।
जांणै केलना पांन पर, कपूर ढुल्यौ नीरधार ।। २४७
वंका लोइण लोइसा, कटि कबाण कसि षंम(ग) ।
सेझ समूद पर नाव ज्यू, तीरता चले तुरंग ।। २४८
आडा कसीया कांमनी, नैण-सरासर देत ।
घा(धा)वा मचोया घोलीया, सैण सवादि लेत ।। २४९
विसरा-वसरी चोसरा, अमला करडी तांण ।
सेझां रंग पलांणीयां, अमलां किया पिछांण ।। २५०
नारी ना-ना मूष रटै, बिमणो वधै सनेह ।
जांणै चंदन रूंषडै, नाग[ण] लपटी देह ।। २५१]

A६९. वार्ता—इसा रंग-विलास मच रह्या छे । हाको-हाक लाग रही छै । सूं रंमतो पोहर पक्की हुई । तठै कुंकडारा सा(ना)द हूवा ।

दूहा– कूकड कूं कूं कहुकीया, झल्लरो ठाकुर द्वार बे ।
साद सूंण्या चेतन हूई, झागी कुंवरी सार बे ।। २५२
अहो अहो रैणी वीगती, पूह पेहली हुई एह बे ।
किण विध जांसूं मूंझ घरे, नवला टुटने नेह वे ।। २५३A

[—] कोष्ठान्तर्वर्त्ती अंश ख. ग. घ. ङ. प्रतियोंमें अप्राप्त है ।

A–A चिन्हगत अंश के स्थानमें ख. ग. घ. ङ. प्रतियोंमें केवल निम्नांश ही प्राप्त है—

ख. प्रभातरो समो हुओ । तरे रांणी सोनार प्रते कांई कहे छे ।
रांणीवाक्यं दुहो ।

ग. सुनांरकानै रांणी कांई कहै । दुहा– ।

घ. अतरै प्रभात हूवौ । रांणी कह्यौ—परभात हूवौ ।

ङ. हम फेर कुमरी काइ कहै छै । कुमरवाक्यं । दूहा– ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहा– उठो[१] नीबूध्यका[२] आगरू[३] , कांई क[४] बूध्य[५] उपाय[६] बे ।
'गलियांरा नर कि(फि)र रह्या,'[७] 'हिव किण विध घर'[८] जाय बे ॥२५४

सोनारवाक्यं[९]

पेहरज्यो[१०]मांहरी[११]पावडी[१२], षांधै[१३]धरो[१४]तरवार बे ।
'मांथै पाग बांधी करी, कांवली ओढ(ठ)ण आधार बे'[१५] ॥ २५५
लांबी लांबी भीषडी, भर भर मारग चाल बे ।
षंषारा षांसी करी, चौघंटांकी चाल बे ॥ २५६[१६]
कोई न लेषैआ लषै, वले तुं अकल आचार बे ।
इण विध कुण तुझ ओलषै, कुण कहै तुझनें नार बे ॥ २५७[१७]

७०. वार्ता—इसी वात रीसालू सूणनै वेइं दोषलां पगनें महिलसू हेठो उतरनै मारग वांधी बेठो । इतरे कुंवरी सिरपाव करने कांधै तरवार तोलती आवै छै । तठै कुंवरजी बोलीया—[१८]

दूहा– पावरीयां[१९] पटकालीयां[२०], कडीया[२१] रूलंता[२२] केस बे ।
हम[२३] हंदी तुं गोरडी, 'किण सिषलाया वेस बै'[२४] ॥ २५८

---

१. ङ. उठौ । २. ख. ग. घ. ङ. बुधका । ३. ख. ग. घ. ङ. आगला । ४. ख. ग. घ. कोई क । ङ. काइ क । ५. ख. ग. घ. ङ. बुध । ६. ख. ङ. बताय । ग. घ. बताव । ७. ख. गलीयारे फीर नवी सकुं । ग. घ. गलीग्रांरा मानवी फीरै (घ. फरै) । ङ. गलियारै नारी नर फीरे । ८. ख. हुं किसे मीस घर । ग. हुं कणी मीस घर । घ. हूं कणीरै मस । ङ. किण मिस हु घर । ९. ङ. त्रीवाक्यं । १०. ख. पहीर । ग. घ. पैर । ङ. पहिरण । ११. ख. ग. घ. ङ. हमारी । १२. ग. पावडी बे । घ. पावडी बे कुंवरी । १३. ख. ङ. बांधे । १४. ख. ग. घ. धर । ङ. धरी । १५. ख. लांबी लांबी डाक भर, कुण कहे तोने नार बे । ग. घ. लांबी लांबी भीष भर, कुंण कहैगा नार बे । ङ. लांबी वीष भरी कुण, कहै राजकुमार बै । १६. १७. ये दोनों दूहे ख. ग. घ. ङ. प्रतियोंमें अप्राप्त हैं । १८. ग. घ. में······वार्ताका अंश अप्राप्त है तथा ख. ङ. में प्राप्त अंश इस प्रकार है—

ख. वारता—हिवे रांणी पावडी पहीर, मरदी सीर-पाव कर ढाल-तरवार लीयां चाली रसालुरी चोकीमें आय पडी । तद रसालुवाक्यं दूहो– ।

ङ. वारता—पावडी पेहर ने तरवार लेनै चाली । तरे रीसालूकि चोकी माहै आय पडी । रीसालूवाक्यं दूहा– । १९. ख. ङ. पावडीयां । ग. घ. ड़. पावडलो । २०. ख. चटकालीया । ग. चटकावमी(सी) । घ. चटकावली । २१. ख. कडीये । ग. घ. कडयां । २२. ग. रूलांता । घ. रलांता । २३. घ. कीण । २४. ख. तुने कीण सीषाया वेस बे । ग. कीण सीषाया भेस बे । घ. कुणी कराया भेष बे । ङ. तोनै किण सीषाय वै ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रांणीवाक्यं

'भोलै म भूल रे भाइया'[1], नेणकै[2] उणिहार[3] बे।
राते[4] करहा[5] उछरे, 'ताकी हु'[6], चारणहार बै ॥ २५६[7]

रीसालूवाक्यं

राते[8] करहा[9] उछरे[10], दीहां[11] उतारा[12] होय बे।
मारू[13] मूंध[14] कटारीयां[15] वर क्यूं वीरडा[16] होय बे ॥ २६०

७१. वार्त्ता—इसो दूहो रीसालू कहने चांटी दीवी, सो एक पलकमे मेहलमै आय सूतो घरराटा करे छै। इतरै पीण कुवरी मनमै संकती थकी, डरती थकी रोलबोल मेहलामें गइ। आगै वेस उतार ने आपरो सागी वेस करनै तुरत कुवरजीकने मैहलमै आई। आगै देषै तौ कुंवरजी पोढीया छै, कपट नींदडलीमै मगनानींद हुवा छै। तठै कुंवरी देषने मनमे वीचारीयौ—औ कांई जांणीजै, मोने भरम तो कुंवरजीरो पडीयो थौ ने कुंवरजो तो सूता छै, ने मोंने इसडा जाबरो कारणहार कुण छो? इसी चींतामे हुई थकी वीरीया चसू(चू)कती जांण ने कुंवरजीरी पगातीया बैसने दुडबडी देवा लागी। तठै कुंवरजी कपटनिंद्रासूं आलस मोडवा लागा, उछासी लेवा लागा। तठै कुंवरोजी कहे—[17]

---

१. ख. भुलम भुलो रे भाइडा। ग. भोलै तो भुलो रे भाईडा। घ. भोललो भुलो तुं भायला। ङ. भोले मां भूले भायडा २. ख. नेणांके। ग. ङ. नैणांरे। घ. नृणंकै। ३. ख. ङ. अणुहार। ग. घ. ऊणीहार। ४. ख. रात ज। ग. रात नै। ५. ग. करसा। ६. ख. तीहांरी। ग. जांकी। ७. इस दूहा के दोनों अन्तिम पाद ङ प्रति में अप्राप्त हैं तथा घ. प्रतिमें इस प्रकार मिलते हैं—मारा बापरा करहला, मैर चरावणहार बे। ८. ख ग. घ. रसालु वाक्यं। ९. ख. घ. न करहा। ग. ज करसा। ङ. करहा नां। १०. ख. उचरै। ङ. ऊछरे। ११. ख. दीहे। ड. दिहां। १२. ख. घ. ङ. न तारा। ग. ज तारा। १३. ख. मारु। १४. ख. मुह। ग. घ. बुंद। १५. ग. घ. कटारडचां। १६. ख. वीरा कीम। ग. घ. ङ. क्युं वीरा।

१७. ७१वीं वार्त्ता का अंश ख. ग. घ. ङ. में निम्न प्रकार है—

ख. वारता—इसो रसालु कहीयो। तरे रांणी वीचारचो—रसालु होसी तो गाढी भुंडी होसी। इसो वीचार करता रांणी राजलोकमे गई। रसालु पीण रांणी पहीला महीला मांहे आइं। कुंवरजीनु सुता देषने रांणी वीचारचो जे रसालु इसा नही, अजेस भोला छे। रसालु आय सुता, तीणरी रांणीनु षबर नही। पछे रांणी पग दाबवा लागी।

ग. ऐसा वचन रीसालुं माहो-माहे कह्या। तदि रांणी सोची—रखे रीसालुं न छै। तदि कुंवरजी म्हैलां गया। रीसालुं रांणी पैहली जायनै सुंता छै। रांणी जांण्यो—ओर कोई होसी। देषै तो भर नींदमै सुंता छै। रीसालु ईस्या नीदमै छै। तद पग दाबवा लागी।

घ. वारता—तदी रांणी जांण्यो—रसालु कुंवरको वचन छै। रांणी मनमै डर षाधो। रांणी सताब घरे गई। रांणी पैहलां रसालु जाय सुतो छै। रांणी जाय पग दाबवा लागी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहा— उठ विडाणा देसरा, कांमण जागी जोर बे ।
रेण गई उगा सूरज, अब तो मांने निहो(हा)र बे ।। २६१[१]
साहिब तो सूता भला, करडो वांगां तांण बे ।
धण नही लीवी नींदडी, ढीला हुवा संधाण बे ।। २६२[२]
साई साजन प्रेमका, धण दीधा छोटकाय बे ।
वरषा रुतरी रातडी, दुषम दई विताय बे ।। २६३[३]
सोल वरसरी बीजोगणी, निठ मील्यौ भरतार बे ।
हस्या न बोल्या हे सषो, आइयो लेष अपार बे ।। २६४[४]
आज रूपाली रातडी, झिरमिर बरस्या मेह बे ।
पीउ मन षांची पोढीयो, नवली नार ने नेह बे ।। २६५[५]
कोड छडाया कागला, पीउडा कारण पाय बे ।
विधना हृंदि वातडी, आजब करी मूझ माय बे ।। २६६[६]
पिण हिव सूता रिसालूवा, पिण पूह फाटी प्रेम बे ।
जागो नही निदांलूंवा, उठो सूरज षेम बे ।। २६७[७]

[७२. वार्त्ता—इसडा दूहा कुमरजी सूण्या तद मनमे जांण्यौ—देषो, सचवादी हुवे छै । इसो विचारने कुंवरजी वले आलस मोड नै आंष्यां मसल ने लाल करने सेझसूं उठ्यां । जांणै सारी रातरो नीदालूवो उठे, तिसो रोतरो सहिनांण दिषायो । तठे एहवो सरूप देषने राजी हुई ने जांणीयो–जे मोने मारगमें जाब दीयो छो, सूं दईमारचौ कोई इसडा कांमारो करणहार हुसी; सेहरमे लूंड-भूंड कोई घणा छै तो बे झष मारो, उणा(मुंवा)रो डर नही । कुवरजीरो डर राषीती, तीनरो अब भरूसो आयो । इसो चित्तवने रांणी बोली— ।

ङ. वारता—इसो रीसालू कयो । तद रांणी वीचारीयौ—रीषे रीसालूं हुवै । तिवारे महिलां माहै सताब गइ । रीसालू रांणी पहिला गयो । राणी आयने देषे तो कुमर सूतो छै । तिवारे पग दाबवा लागी छै ।

१. २. ३. ४. ५. ६. ७. ये दूहे ख. ग. घ. ङ. प्रतियोंमें अनुपलब्ध हैं ।

[—] कोष्ठकान्तर्गत गद्यपद्यांश के स्थान पर ख. ग. घ. ङ. में केवल निम्न गद्यांश ही प्राप्त हैं—

ख. रसालु जाग्या । जदी राजी हुआ । जदी रांणी लाष रुपीयारा गहीणारी रीझ हुई । इतरे प्रभात हुओ ।

ग. रीसालु जाग्यो, राजी हूवो । घडी दोय दीन चढचौ छै ।

घ. रसालु जागे नै रजावंध हूवा । सवेर हूवौ ।

ङ. तरे रीसालू जाग्यो, राजी हुवो । घडी एक दिन चढीयौ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुहा– आज कुंवरजी रीसालूवा, मूझ पर सारी रेंण बे ।
नींद ण(न) लीधी धण घडी, जागी न जांणी सेंण बे ॥ २६८
सेयण रीसालूं हुय रही, धन विलपो सारी रेंण बे ।
चूक किसो सो मूझ कहो, माहरा पीउ सूषदैन बे ॥ २६९

कुंवरजीवाक्यं

म्हे क्यूं रीसालूं थाह थकी, कुण कह्यो एह विचार बे ।
राज सरीषो पदमणी, कदेय न भूलूं चितार बे ॥ २७०
परभूमी षडवा थकी, थांकां कुंवर सूंजाण बे ।
जिसूं नीदडी धांपीया, मत हो नारि अजांण बे ॥ २७१
थांह सरसी मांहरे, भाग तणें परमांण बे ।
ते भूले सो ई ढोर बे, लहज्यो साच पिछांण बे ॥ २७२]

७३. वार्त्ता—कुंवरजी इसा दूहा कहीया । तठे कुंवरीने कुंवरजीरो पतीयो । तरे रांणी उठने झारी, पालो, दांतण लेने कने आई । तठै कुंवरजी बोलीया—इतरा वेगा ही करां, सो कांइ कारण ? रांणी कहै—माहाराजा कूंवार ! वासी मूहडै राजसूं वात करां, सो जोग नही । तठे कुंवरजी दांतन-कुरला कीया; आमल-पांणी कीयां, यांकां-वांगा, हाका-डाका हूवा । तठे कुंवरजी वडारणनें कहे—जायै 'रामजोग' रिण धवल सोनारना बेटाने बूलाय ल्यावौ, ज्यूं कांई क टुम करावां । आगे ही चालपणें टुम हाथे आई थी, तिकी आज तांई रही, तीणसूं नवि घडावस्यां । तरे वडारण सूनारने जोयने कहीयो—अहो कारीगरजी ! थांनै कुंवरजी बूलावै छै, वेगो आव । तठै सूनार बोलीयो—जवाईजी कठे विराजीया छै ? तठै वडारण कहीयो—जे राजलोकमैं छै । तठै सूनार राजी हूवो—जे गेहणौ घडावसी । इसो विचारने सूनार मेहलां आयौ; कुंवरजीसूं मूजरो करने बेठो । तठे कुंवरजी आपरी कटारी उपर सोनो चढावणरे वास्तै सोनारने कहै छे । तिण समे रांणीरी नीजर सोनार मांहे पडि । कुंवरजी दोढि लाबहुं देषने दुहो कहै छै—[1]

---

१. ७३वीं वार्ता का पाठान्तर ख. ग. घ. ङ. प्रतियों में इस प्रकार है—

ख. तरे कुवरजी दातण कर अमल आरोग्या । तरे रांणी कहीयो—माहाराज कुमार ! हेमकुट सोनार आयो छे, सो घाट भला घडे छे । तरे कुवरजी कहीयो—उणने ज तेडावो । तदी सोनारने सहेलीया बोलावण गई । रसालु बेठा स्नान करे छे । रांणी सोनारी झारी लीयां पांणी नांमे छे । इतरे सोनार आयो । तरे रांणीरी अर सोनाररी नीजर एक हुई । तदी रांणी पांणी नांमती हती, सो धार चुक गई, धार धरती जाय पडी । तदी रसालु रांणी प्रते कांइ कहे छे— ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रीसालूवाक्यं—[1]

दूहा–[2] तास[3] तीषां[4] लोयणा[5], ओस[6] चंगी[7] वेणाह[8] बे।
धार[9] विछटी[10] धर[11] गई[12], नर[13] चढियो[14] नेणांह[15] बे ॥२७३

रांणीवाक्यं

रहो रहो केथ[16] अणभावना[17], अणहुंतो 'कहि ताहि'[18] बे।
हीवडै[19] हार अलूझियो[20], सो[21] सूलझायो[22] नेणाह[23] बे ।। २७४

७४. वार्त्ता—इसो कहि तब प्रांणनाथ कुंवरजी झारी लेने सोनारने कहै—मांडि रे ! हाथ, मांरी अस्त्री तोनें दीनी; श्रीकृष्णारपूंन्य छै। तठै सोनार

ग. तब दातण कीधो। अमल-पांणी करेनै रजपुतांनै कह्यौ—जावो, सोनार गली माहिलानै तेडे ल्यावो। तद रजपुत दोडचा गली माहिला सोनारनै तेड ल्याया। सोनार मनमै जांण्यो–जमाई आयो छै, गैणों घडावता होसी। सुंनार आव्यो। रीसालु सांपडे छै। रांणी पांणीरी झारी लेयनै एक धारा कुढै छै। रांणीकी सोनारकी नीजर ऐक हूई। तदि रीसालु कांई कहै—।

घ. अमल-पांणी करे संपाडो करवा लागा, रजपुतांनै कह्यौ—जायनै बांमणांरी सेरीयामै सुनार रहै छै, तणीनै बुलाय ल्यावौ। सुनार जांण्यौ—राजाजीरै जमा[ई] आयो छै, सो गेहणौ घडावता होसी, राछ पीछे ले आयौ। रसालु बैठो संपाडो करै छै। रांणी झारो भरनै कुढै छै। सोनारकी नीजर, रांणोकी नीजर, एकठी हुई। धार छूटी धरती पडी। तदी रसालु कहै—।

ङ. तद दांतण करी अमल आरोगनै दरीषानै आय बैठा। रजपूतांनें कयौ—जावौ, सोनारनै बुलाय लावौ। तद रजपूत गलीयामै सोनारको घर है, तिहां जाय बुलाय लायौ। सोनार जांण्यो—जमाई गेणौ घड़ावसी। इसो जांणी सोनार राजी होयनै आयो। तरे रांणी सोनारसूं लागी नीजरौ-नीजर मिली दीठी नै तारौ-तार मिली।

१. ख. तदि रसालु रांणी प्रते कांइ कहे छे—रसालुवाक्यं। ग. तदि रीसालु कांई कहै—। घ. तदी रसालु कहै—। २. ख. दुहा। ३. ख. तारा। ग. तारां। घ. तारूं। ङ. तीषा। ४. ख. ग. घ. तीषा। ङ. राता। ५. ग. लोअयणां। ६. ख. अर। ग. उर। ङ. ऊच। ७. ङ. संगी। ८. ख. बयणांह। ग. नयणांह। घ. नैणांह। ङ. वैणांह। ९. ग. घ. धारा। १०. ख. वीछुटी। ग. घ. तुटी। ङ. विछुघटी। ११. ग. घ. धरती। १२. ग. घ. पडी। १३. ख. कोइ नर। ग. घ. में नहीं है। ङ. को नर। १४. ख. देष्यो। ग. घ. निरष्यो। ङ. चढीयौ। १५. ख. नयणांय। ग. दोय नयणांह। घ. दोय नैणांह। ङ. नैणांह। १६. ख. ग. घ. ङ. कंत। १७. ख. अभावणा। ग. घ. अभांमणा। ङ. आभावणा। १८. ख. कही वाय। ग. घ. कंहणांह। ङ. कंहौ नांह। १९. ख. ग. हीयडै। २०. ख. ङ. अलुजीयो। घ. उलझीयो। २१. ग. घ. ङ. में नहीं है। २२. ख. ग. सलुझायो। घ. सुलजायो। ङ. सूलजायो। २३. ख. नयणांय। ग. नयणांह। घ. नंणां। ङ. नैणांह।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हाथ मांडीयो। कुंवरजी रांणीने परी दीवी। सोनार ले घरे गयो। तठै राजा ने रांणीनै षबर हुई। तरे जवाईने अलाधा बूलायने ओलंभो दीयो। तठे रीसालूं कहै—[1]

दूहा—[2] **रतन कचोलो रूवडो[3], 'सो लगो पाथर फूट बे'[4]।**
'जिण जिण'[5] आगल ढोईयो[6], केसर बोटी[7] काग बे॥ २७५

सासूवाक्यं—[8]

'तलगुं दल निलज उपरे'[9], 'नीर निरमल होय बे'।[10]
'टुक पीव हो रीसालूवा,[11] नीरमल[12] नीर न[13] होय[14] बे॥ २७६

रीसालूवाक्यं—[15]

सांप[16] छोडी[17] कांचली, देवा[18] छोडचा[19] देव[20] बे।
रीसालू[21] छोडी[22] गोरडी[23], मन भावे[24] सो लेव[25] बे॥ २७७

---

१. ७४वीं वार्ताका पाठ ख. ग. घ. ङ. प्रतियोंमें इस प्रकार है—

ख. वारता—रांणीरा इसो वचन सुणीने रसालु सोनारने कहीयो—हाथ मांड, आ अस्त्री तोनु दीधी; मां जोगी नही। तरे सोनार हाथ मांडीयो। रसालुए हाथ पांणी घाल्यो; श्रीकृष्णारपुन्य कीधो; अस्त्री सोनारने दीधी। सोनार राजी हूओ अस्त्रीने घरे ले गयो। ती वार पछी राजलोकमे सांभल्यो। तदी सासु ने राजलोक, राजमांनप्रमुष सर्व जणे ओलंभो दीधो। तरे रसालुवाक्यं।

ग. वात—तदि सुंनारनै रीसालुं कांई कहै—हाथ मांड। सुनार हाथ मांड्यो, जदि पांणी कुढ्यो नै असत्री परी दीधी। अम जोगी नही। असत्री सुंनारनै दीधी तदी राजा, रांणी वात सुंणी। तदि रीसालुनै ओलुभो दीधो। तदि रीसालुं कांई कहै छै—।

ङ. वारता—रीसालूं सोनरने कयौ—जा रे, हाथ मांड, तोने आ अस्तरी द्यु। आ अस्तरी मा लायक नही। तरे सौनारनै दीधी राजायै जांण्यौ, रीसालुंनै ओलंभो दिनौ। रीसालुवाक्यं।

२. ख. दुहा। ३. ख. रुअडो। ग. रावरो। ङ. रूयडो। ४. ख. ग. फुटो पथर लाग बे। ङ. सा लगो पथर फूट बे। ५. ख. ग. जीण जीण। ६. ग. जीरा कह्यो। ङ. ढाइयो। ७. ख. बोटयो। ८. ख. सासुंवाक्यं। ग. रांणी राजानै कांई कहै—। ङ. वारता–तदी रांणी रीसालूनै देषने काइ कहै छै—सासुंवाक्यं। ९. ख. तलगुंदल जल नील पर। ग. तिलगुंदल ऊपर ऊजल। ङ. तली गुदल नील उपरै। १०. ख. ग. नीर उस्या ही होय बे। ङ. पिरा नीरमल नारी नां होय बे। ११. ख. टुक टुक पीयो रसालुआ। ग टुकरे पीवो रसालुंवा। ङ. टुक एक पीवे हो रीसालूया। १२. ङ. पिरा निरमल। १३. ख. नार न। ग. नारी। ङ. नारी नां। १४. ख. कोय। १५. ख. रसालुवाक्यं। ग. तदि रीसालुं कांई कहै। १६. ख. सापे। ग. सांप ज। ङ. सापा। १७. ग. छांडी। १८. ख. देवल। ग. भीत्यां। ङ. देहरे। १९. ग. छाड्यो। २०. ग. लेव। २१. ख. रसालु। २२. ग. छांडी। २३. ग. असत्री। २४. ख. ग. ङ. मांनै। २५. ख. लेय। ङ. लैह।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सासूवाक्यं

रीसालूया[1] 'रीस कसांइयां'[2], 'यां रीसडी'[3] जल[4] जाव[5] बे।
घरणी[6] अस्त्री[7] 'नें छोडीयै'[8], 'लाष लोक'[9] 'कहि जाव[10]' दे[11]॥ २७८[12]

रीसालूवाक्यं[13]

दूहा– **म्हे[14] समसत[15] रायक[16] पूतडा[17], रीसालूं[18] मेरा नांम बे।**
परणो हींडे पर घडै[19], तो[20] क्यूं[21] राषे सांम[22] बे॥ २७९[23]

[**७५. वार्त्ता**—इसी वातां करनें रीसालूं सूसरा कनांसूं उठ नें नीचै तबेलेमे आय ने घोडे असवार हुय, ने हीरण ने सूवा ने मेणा ने पिंजरो लेनें, धारा नगररो मारग पूछनें मारगेमे चालीया जाय छे। तठै लारें साहणीया राजां मांनने कहियौ—माहाराजा, आपरो जवांइ तो चढ गया छे। तठै राजा दोय-च्यार सिरदार साथे ले ने आप घोडे चढिनें कुंवरजीने जाय पूंहता। तठै राजा कहै—

दूहा– **कुंवरजी हव इम कित करी, तोडयो माहसूं प्रीत बे।**
जगमे भूंडा लागसी, थे तो हुवा नचां(चीं)त बे॥ २८०
म्हारे पुत्री इक बले, छोटी छै परण्यौ ति(ते)ह बे।
राजवी थांरा एहवा, छांणा न हुवे ए नेह बे॥ २८१

रीसालूंवाक्यं

श्रीमाहाराजा जांणज्यौ, सूरां एह संताप बे।
सिर उपर रूठा फिरे, त्यांने केहा पाप बे॥ २८२
आप कही सो म्हे परणीया, पूठा पधारो राज बे।
वले य न आवै रीसालूवो, कोटि पडैज्यौ काज बे॥ २८३

---

१. ख. रसालु। २. ख. रीस कसायला। ङ. अस कसांइ सांइया। ३. ख. थांरी रीसडली। ङ. रीसालूआरी। ४. ङ. जड। ५. ख. ङ. जाय। ६. ख. ङ. परणी। ७. ख. ङ. असत्री। ८. ख. कीम छंडीये। ङ. छोडि ने। ९. ङ. लोषु लोका। १०. ख. कहीवाय। ङ. को जाय। ११. ख. ङ. बे। १२. यह दूहा ग. में नहीं है। १३. ख. रसालुवाक्यं। ग. में नहीं है। ङ. रीसालुंवाक्यं। १४. ख. में नहीं है। ङ. मै। १५. ख. ङ. समस्त। १६. ख. राजाको। ङ. रायका। १७. ख. पुगडो। ङ. पुंगरा। १८ ख. रसालु। १९. घरे। २०. ख. सो। २१. क्यु। २२. ख. पास। २३. यह दूहा ग. प्रतिमें अनुपलब्ध है एवं इस दूहे के अन्तिम तीन पाद ङ. प्रति में अप्राप्त है।

[—] कोष्ठगत ७५ एवं ७६वीं वार्त्ता के गद्यपद्यांश का रूपान्तर ख. ग. ङ. प्रतियोंमें गद्य के रूप में इस प्रकार है—

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

७६. **वार्त्ता**—तठै राजा मांन घणाई निवारा किया पिण कुंवरजी न मांनी। राजा घरे आयो ने रीसालू उज्जेणीने चलीया।]

A तठे देवीर (रे) देहरा माहै जाय उतरीया। नै राजा भोजरो बेटीरे चित्रांमरो आंबो थो, तिणरै सात कैरीयांरी झूंबषां नीचै पडीयों दीठो। तठै रांणी जांणीयो—'जै म्हां आयासूं झूंबषो पडसी; सो कुंवरजी नही आया नें झूंबषो पडीयो तो अबे कुंवरजीसूं मे कोल कीयो छो—आप नै आया तो हु काठ चडसूं, तो आज तो वले वाट जोवनी; तै परभांते काठां चडसूं।' इसो विचारतां परभांत हुवो। तठे आपरा माता-पितासूं मील नें सीष मांग नें कौलरो जाब कर नै चहिने नदी उपरे रचाईने ढोलडा घडकीया।

दूहा– **ढोल धडकै तन दडै(है), विरहीणी सतीया होय।**
पीउ मीलाओ तो मीलै, तो किम दुषीयो कोय।। २८४

७७. **वार्त्ता**—हिवै कुंवरी चह नेडी वासदेव सिलगायो छै; धूंवा-धौर लाग रह्या। तठै कुंवरजी देहरासूं उठैने तिण वेला तठे आवतां धूंवौ देषने कुंवरजी कहै—A

ख. वारता—इतरो कहे रसालु घोडे असवार हुआ। जद राजा मांन कहीयो—दुजी बेटी परणो। तरे रसालु कह्यो—उवा पीण उण सरीषी होसी तीण वास्ते नही परणां। सीष करी तीहांथी चाल्या।

ग. वात—अतरो कह्यौ अर रीसालु असवार होयनै चाल्या। अतरै राजा मांन कह्यौ—मारी दुजी बेटी परणो। जदी रीसालुं कह्यो—उही ज उसी ज होसी। रीसालु चाल्यो उजेणी नगरी राजा भोजरै चाल्यौ।

ङ. रीसालु असवार हुवा चालवा लागा। जद राजाजी कयौ—मारी वेटी दुजि परणाउ। तद रीसालुं कहै—वा पिण उसी ज हुसी, तिण वासतै ना परणां। तिहांथी चाल्यो रीसालु उजैणी नगरी आयो, तिहां राजा भोज राज करे छे।

A–A. चिन्हगत अंश का पाठ भेद ख. ग. ङ. प्रतियों में इस प्रकार प्राप्त है—

ख. हीवे उजेणी नगरीइं राजा भोजरी वेटी रसालु परण्या छे, तीका कुवरी रसालुजीरी वाट जोवे छे। गांमरा आंबा साषे हुआ छे। कुंवरी घणी चींता करे कुवरजी गया नही। तरे रांणी काठ चडवाने त्यार हुई छे; तलावरी पाल गई छे। चेह चुणीजे छे। लुगाया सतरा गीत गावे छे। तीण समीए काठरो ढोल वाजे छे। इतरे रसालुजी जाय पहुता। हीवे रसालु सहीरा लोकांने कांई कहे छे—।

ग. आगै राजा भोजरी बेटी काठां चढै छै—रीसालुं आयो नही। अतरै रीसालुं चाल्या आवै छै। वाटै लोक रीसालुनै मील्या। रसालुं लोकांनै पुछै कांई कहै—।

ङ. आगै राजा भोजरी वेटी काठे चढै छै तरे रीसालू लोकांनै पूछै—।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुहा[1]– सेहर[2] उंज्जेणीके[3] गोरमे[4], 'क्यां ए'[5] धूवा-धोर[6] वे ।
काागारोलो[7] 'मच रयो'[8], 'ज्यूं वाजैगो'[9] ढोल वे ।। २८५
वचन हतो सो पूगीयो, तिण कारण चढै काठ वे ।
रीसालू-वचन षोटो थयो, तिण कारण ए घाट वे ।। २८६[10]

७८. वार्त्ता—इसो सूणत प्रांण रीसालू घोडो दपटाय नैं तलावरी पाल षषारो कर नें उभो रहियो नैं लोकांनूं कुका करताने वरजने रीसालूं दूहो कहै छै—[11]

---

१. ख. ग. रसालुवाक्यं दुहा । २. ख. सहर । ग. सैहर । ३. ख. उजेणीरे । ग. उजेणीकै । ङ. उजैणीके । ४. ग. गोरमै । ङ. गोरवे । ५. ख. क्यु मांडी । ग. क्यूं मांड्यो । ङ. क्या मंडी । ६. ख. धुंआ-धषरोल । ग. ङ. धु (ङ. धू.) आ-धकरोल । ७. ग. कागारोल्यौ । ङ. कागारोला । ८. ख. मच रह्यो । ग. क्युं मच्यो । ङ. मचीया । ९. ख. वाजे क्यू जंगी । ग. क्युं वाजै जंगी । ङ. वाजै सिगी । १०. ख. ग. ङ. प्रतियोंमें यह दूहा इस प्रकार मिलता है—

ख. सहीररा लोकवाक्यं

राजारे भोजरी कुवरी, रसालुआ घर नार वे ।
नाया कुवर रसालुआ, काठ चढवेकी त्यार वे ।। ६६

ग. तदि लोक रीसालूनै कांई कहै—

दुहा– राजा भोजरी डीकरी, रसालु बंधी नार वे ।
आयो नही कुंवर रीसालूवो, काठां बैठ कुंवार वे ।। ५३

ङ. नगरलोकवाक्यं

राजा भोजरी डीकरी, रीसालूंआ नर नार बै ।
आयो नही रीसालूंओ, काठे चढे कुमार बै ।। ६१

११. ख. ग. ङ. प्रतियों का पाठ इस प्रकार है—

ख. वारता– इसो सांभलने रसालु घोडो दोडायो । तलावरी पाल गयो । देषे तो सर्व लौक-लुगाइ मीत्या छे । अबे रसालु जाय रांणी प्रते कांइ कहे छे—।

ग. वात– ऐस्यो रीसालु सांभल्यो; घोडो दोडायो; तलावरी पालै आव्यौ । लोक मील्या छै । रीसालु रांणी नषै आव्यो; रांणीको मन जोवा लागो—आ पिण लालचणी छै कै नही ? देषां ईणनै कहू । तदि रीसालु कांई कहै—।

ङ. वारता– इसौ रीसालू लोका पासै सांभली नैं घोडो दोडाय तलावरी पाल आय उभो रयौ नैं कहै छै—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहौ[1]- रूपासूं[2] धोलो[3] करूं, सोनारी[4] चकडोल बे ।[5]
रीसालू[6] नांमने[7] छोड दै[8], जोरू[9] हमारी होय[10] बे ।। २८७

कंवरीवाक्य[11]

अंबर[12] तारा[13] डिग पडै[14], धरण[15] अपूठी[16] होय[17] बे ।
साहिब[18] वीसारू[19] आपणो, 'तो कलि उथल'[20] होय बे ।। २८८

[७६. वार्त्ता—इसो दूहौ केहने रीसालू रजाबंद हूवो । मनमें वीचारीयो—अजे संसारमे सत छै; विना थंभा आकास षडो छै । इसो मनमै चिंतविनै चहथी नेडो गयो; लोकांरा विचला भिडावमे उभो रहिनै दूहो कहै छै—

दूहा– सुगणी तुं चिरं जीवज्यौ, जगमैं नांम कढाय बे ।
राजा भोजरी डीकरी, वंस उजालण भाय बे ।। २८६

८०. वार्त्ता—इसो दुहौ कुंवरी सूणनें चहने छोड ने आंबारा पेड तले जाय उभी रही; गुंघट पाट दीये । तठै सारा हि उम्रांवा, प्रधानां आवि वहार देषनें जाणीयो—सहे, रोसालू कुंमरजी आप छै; पिण पूरो पारष लीजै । इसौ सारा उम्रांवां चितवने बोलीया—श्रीमांहाराजा कुंवार ! आप भला पधारचा; आप म्हांनै मोटा कीया; पिण एक म्हांरा मनमांहै छै, तिका कर देषावो तो राज तो पूरो पतिजो आय जावै । तठै कुंवरजी कहै—भलां उम्रावा, थे के दिषालौ; मांसूं

---

१. ख. रसालुवाक्यं । ग. रसालुवाक्यं दूहा । २. ख. रुपासु । ङ. रूपाकोसु । ३. ख. धवली । ङ. धालि । ४. ख. सोनासुं करु । ग. सोनै कराउ । ङ. सोनाकी करू। ५. ख. वीलोय । ग. लोग्र । ६. ख. रसालु हुंदा । ग. रीसालु हुंदा । ७. ख. ग. ङ. नांम । ८. ग. ङ. छोडदै । ६. ङ. ग्ररं जोरु । १०. ग. होग्र । ङ. हौय । ११. ख. रांणीवाक्यं । ग. कुवरीवाक्यं दुहा । ङ. रांणीवाक्यं दूहा । १२. ङ. जो ग्रंबर । १३. ख. तार । ग. तारो । ङ. ता[रा] । १४. ख. ध्रु डीगे । ग. धु डगं । १५. ख. ग. ङ. धरणी । १६. ख. ग्रपुठी । ग. ग्रफुटी । १७. ग. होग्र । १८. ख. सांइ न । ग. सायब । ङ. सायत । १६. ख. वीसारु । ङ. विचारू । २०. ख. जो थल उथल । ग. ज्यो कुल दुजो । ङ जो कली दुजा ।

[—] कोष्ठगत ७६, ८०, ८१, ८२, ८३ एवं ८४ वीं वार्ताओंकी शब्दावलियां ख. ग. ङ. प्रतियों में निम्न रूप में लिखित है—

ख. वारता—रसालु रांणीरा वचन सुणी षुसी हुग्रा । ग्रा ग्रस्त्री सुकुलीणी दीसे छे । तदी रसालु कहीयो—हुं समस्त राजारो पुत्र छुं । माहरो नांम रसालु छे । तीं वारे राणी कहे—सात केरीरो जुबको एकण चोटसु लोकां देषतां पाडो तो रसालु षरा, नही तर थें रसालु नही । जदी रसालु सात केरीरो जुबको एक चोटसुं उडायो । तदी रांणी घुंघट-पट षांचीयो । सर्व लोक राजी हुग्रा । राजा भोजने हलकारे जाय कह्यो—वधाइ दीजे, रसालुजो

हुसी तो कर देषामसां । तठै उम्रांवां बोलीया—श्रीमाहाराज कुंवार ! अमांरो बाई सासरासूं पीहर ल्याया छा जठे आपरी साथेलीयासूं मोली; तरे राजारी वडीसी फते कीवी छी; तिण आपरी साथेंलीयांने माहरी कुंवरी कहौ छौ—म्हारो षावंद इसडो तीर वाहवठां(णां)छा सो रूंषरा सात-आठ फल एक तीरसूं झूंबषौ नाष देवै छै; इसौ जाब म्हे पिण सांभलीयौ छौ, तिणसूं आपनै तसती हुसी; पिण ओ आपरे मूंहडा आगै आंबारो रूष छै, तिणरै ऐ सात झूंबषारी डाली छै, तिका डाली रह जावै नै झूंबषो आय पडै । तठै कुंवरजी मनमै विचारीयौ—देषो, दइवां राष्या इणां उम्रांवां आव वात कही नै कदाचित सझै नही तौ हेल हुसी ।]

दूहा— **वीरह विडांणा मेहलथी, साथीडां सीरदार बे ।**
दोरो हुवो दुहेलडी, मिलीयौ इण भरतार बे ।। २९०
सांई बाजी राष बे, तो सूधौ सहु काज बे ।
पंच पतीजौ पांमै बै, वलि रहै सगली लाज बे ।। २९१

८१. **वार्त्ता**—इसो विचार परमेसरनें समरनें कबांण चढाय नें तीर झूंबषा नै बांह्यौ, सौ सात केरीयां जूई-जूई आय पडी । झूंबषौ सारा ही उम्रावां पडियौ दिठौ ।

दूहा— **तीर सपल्लल चांपीयो, लागा आंबा डाल बे ।**
पंषारां सूंधो निकस, झूंबषो पड्यौ पराल बे ।। २९२
उम्रावां साषीधरा, दीठां कैरी झूंब बे ।
जांण्यौ कुंवरी छै सही, कूड नही तिल वात बे ।। २९३

८२. **वार्ता**—हिवै पंचा सारा ही साषीधर हूवा । सारा ही षमा-षमा कैह ने कहे—श्रीमाहाराजकुंवार ! आप तसती घणी फूरमाई, गुणौ बगसाविजै, दरबार पधारीजै । इतरौ कहीयौ तठै कुंवरजी उंम्रांवांरे साथे घोडै असवार हूवा ने कुंवरी चकडोलमे वेसनें दरबाररे महिलां गई । वासैसूं बधाईदार राजा भोजने जाय वधाई दिवी ।

पधारचा । इसो सुणी राजा षुसी हुआ, परधांनने कह्यौ—सांमेलारी ताकीदी करो । तदी परधांन सारो सहीर, बाजार सीणगारीयो; हाथी, घोडा, कोतल सीणगारचा; नगारा नीसांण फररा सर्व त्यार कीधा । राजा भोज सांमेलो करी कलश वंदावे कुंवरजीनुं मांहे लीधा ।

ग. वारता—रांणी कह्यो । रीसालु कहै—आ असत्री सूकलीणी छे । तदि कह्यौ—हूं राजा समस्तरो बेटो छुं । तदि [रांणी] कह्यौ—सात कैरीको झुंबको ऐक तीरसूं पाडो तो हूं जांणूं तो थे रीसालु षरा । तदि सारा लोक देषवा लागा । तदी रीसालु कुंबाण ले तीर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहा– श्री माहाराजा भोजजी, तांहरो जमाई अबार बे ।
आयो जीवतदांनमें, दीधो कुंवरी उतार बे ।। २६४
राजन रूडा होयज्यो, सीषा सारा काज बे ।
बाजी परमेसर षरी, राषि दोन्यारी लाज बे ।। २६५

८३. वार्त्ता—इसा समाचार श्रीमाहाराजा भोजजी सांभलने षूसी हूवा; घणी वधाईयां वाटी । इतरै उम्रावासूं मोलीया थकां श्रीमाहाराजारे सभामे आया, मूजरो कीयो । राजा भोज घणी मनवार कुंवरजीने दीनी । भली भांत सूं बांहा पसाव कीया । आछी विछात विराजीया । कुशल-कुशल पूछीया । कुंवरजी आपरी वीती वात सारी देसोटा धूरा-धूरा कही । राजा भोज घणी धीरप देवी नै दूहो कहै छै—

दूहा– पूत्र पितारा हुकममे, जे रहे जगमै जोय बे ।
ते सारीसो जग इणै, वले न वीजो कोय बे ।। २६६
पाछो बोलो वोलडा, वादै कर रीसाय बे ।
ते सूता पितुं अलषामणो, होय सदा दुषदाय बे ।। २६७
जेसा पूत्र ज्यूं वाल्हा, जेसा अवर न कोय बे ।
पिण जग मावीता तणौ, सूषमे दुष को जोय बे ।। २६८
भली वूरी माइत तनी, नवि कीजै देषै पूत्र बे ।
पूठत मावीतथी, ते सफू जाषै सूत्र बे ।। २६९
पूत्र ईसा जगमें हुवै, माइत तणा मंजूर बे ।
रहै सदा मूष आगल, नही अलगा नही दुर बे ।। ३००
प्रेम विडांणा पारषा, जगके मोह अकथ बे ।
कर जोडि पितु आगले, रहैं सदाई साथ बे ।। ३०१
ज्यू पितुं जपे तु षरो, कालो गोरो कथ बे ।
तेहवो हुकम चढाईये, सीस सदा समरथ बे ।। ३०२

मेल्यो, सात कैरी को झुंबको पाडयौ । सारा रजाबंध हूवा राजा भोजरै जमाई रीसालु आव्या ।

ङ. वारता—रीसालं इसो रांणीरा मुषथी साभलीने घणा रजाबंध हूवा, आ असत्री सूषलीणी छे, घणु जोग्य छै । तद कुमरी कयो । सात केरीरो झूंबको एकण कवांणीयासु पाडो तो षरा । तरे सर्व लोक देषतां सर नांख्यो । तरे सात केरीरो झूंबषो आगणै आय पडौ । राजा प्रजा सर्व राजी हुवा । राजा भोज सांभल्यो, जमाइ आयो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८४. वार्त्ता—इसा दूहा राजा भोजजी कहीया। कुंवरजी [रो] घणो मन द्रढ हुवो, षूस्याली हुई। राजा भोज नवा सिरपाव कराया। भलाकडा मोती निजर-निछरावला कीवी।]

दूहा– लोक करत बधामणा, घर घर मंगल माल बे।
नगर गली घर नोबती, बाजै ठोर बे बाल बे।। ३०३[1]
हर्ष तणी गत होय रहि, नगर लोक ले पेस बे।
पूरमे रलीयायत घणी, सकल नमावत सीस बे।। ३०४[2]
बंदी जम छोडावीया, के पंषी मृग माल बे।
नर-नारि आसीस दे, जीवो कोडीक काल बे।। ३०५[3]
भला ई पधारचा कुंमरजी, भलो हुवो दिन आज बे।
आस्यां बंधी कांमनी, ताका सूधरचा काज बे।। ३०६[4]
आज सूरज भल उगीयो, हुवै बूठा मेह बे।
नीजीवत हुवा जीवता, भवला बंधीया नेह बे।। ३०७[5]
भलाई पीयारो नेहडो, नीहचो फलीयो नार बे।
कोड वरस राजस करो, सूष विलस्यौ अण पार बे।। ३०८[6]

*८५. वार्त्ता—हिवै नगररा लोकां आसीसां सूथरो दीवी। साराहीसूं कुंवरजी मांन कर-करनै मोल्या। नगरमे पडोहे वाजीयौ। हर्षरा वधावा-गीत

---

१. २. ३. ४. ५. ६. ख. ग. ङ. प्रतियोंमें इन छहों दूहोंके स्थान पर निम्न दूहे ही प्राप्त हैं—

ख. दुहा– लोक करे वधांमणा, घर घर मंगलच्यार बे।
नगर सहु को युं कहे, भले आया कुंवर रसालु बे।। ६०
नगर चोहटे नोसरचा, सहु को नमावे सीस बे।
नर नारी आसीस द्ये, जीवो कोर वरीस बे।। ७०

ग. साहूकारवाक्यं

दूहा– लोक करै वधांम[णा], घर घर मंगलचार बे।
सहू मील लोक ईयुं कहै, आयो कुंवर रीसालु बे।। ५६

सेठवाक्यं

दूहा– नगर चोहटै नीसरचौ, सहु नमावै सीस बे।
नर नारी आसीस दै, जीवो कोड वरीस बे।। ५७

ङ. दूहा– लोक करै वधांमणां, घर घर मंगलाच्यार बै।
बंधी जन छोडि दीया, के पंषी मृग माल बै।
नर नारी आसीस दै, जीवो कौडी वरीस बै।। ६४

-. चिह्नान्तर्वर्ती ८५, ८६, ८७ एवं ८८वीं वार्त्ताओंके गद्य-पद्यांशका वाक्यविन्यास ख. ग. ङ. प्रतियोंमें इस प्रकार मिलता है—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गवीज रह्या छै। इतरै रात्र पूंहर सवा गई। तठै कुंवरजी मेहलां दाषल हुवा। इतरे कुंवरी सिणगार कीया कुंवरजो पासै आई।

दूहा– कालो कांठल झलकीया, बीजलीयां गयणेय बे।
चमकंती मन मोहीयो, कचू छाकी देय बे ॥ ३०९
पिंडस पतल कटि करल, केल नमावे अंग बे।
लोयण तीषां ठग भर, आई मेहल षंतंग बे ॥ ३१०
जांणै मांन सरोवरे, मीलप्यो हंस विसाल बे।
सेझां आई सूंदरी, छुटो गज छंछाल बे ॥ ३११
पूरो पूनम जेहवो, मूष विच चूंपे जडाव बे।
कालो वादल कोर पर, वीज षोवे झिझेकाव बे ॥ ३१२

८६. वार्त्ता—इण भात सूं कुंवरी सींणगार सझनें कुवरजी पासै आय ने सरदो कर ने हाथ जोडने ऊभी रही। तठै रांणीरो रूप, मटक-चटक देषने मनमे कुंवरजी घणा राजी हुवा।

दूहा– जि नर रूपे रूवडा, ते नर निगुण न हुवंत बे।
जी मण भोज कूमारका, मोह्यौ मन तन कंत बे ॥ ३१३

८७. वार्त्ता—इसो कुंवरजी वीचारने रांणीने घणी राजी कीवी। घणा कवित्त, दूहा, गाहा करीने माहे-मांहि चरचा कीवी। तठे कुंवरजी रांणीनें कहै—साबास, थांहरो कोल भलो उजलो दिषायो; म्हे तो मांरा मनमे जांणता था—लूंगायांरो समाधाका आलम कहीजै, तिके लूगाया छै।

ख. वारता—रसालुजीए इण तरेसु महीलां दाषल हुआ। सघला साथसुं मीलया। नीजर-नीछरावलां हुई। इम करतां च्यार पोहर दीन वतीत हुओ। संध्याइं रंगमहीलमे जाए पोढीया। रांणी पोण स्नान, मजन कर भला कपडा पेहरीया। सर्व आभुषण पहीर वाल-वाल मोती सार, घणा अंतर-फुलेल ढोलीया। कपडा सघला इकगरकाव (इक रंग का) कीया। इण भांत घणा उछाहसुं सुरापांनरी सुराही लीयां रात्र घडी दोय गयां, महीलां आई। रसालु जीम लीया। घणा उछाह कीया। वात वीगत मन-तनरी कीधी, सुष-वीलास कीया, लयलीन हुआ। तीण समीए रसालुजी रांणी प्रते कांइ कहे छे—

रसालुवाक्यं

दूहा– सर वर पाय पषालतां, तेरी पायडली षस जाय बे।
हु थने पुछु गोरडी, थने क्युं कर रयण वीहाय बे ॥ ७१

रांणीवाक्यं

सर वर पाय पषालतां, मोरी पायलडी षस जाय बे।
अंबर तारा गीणतां थकां, यु मोकु रयण वीहाय बे ॥ ७२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहा— कूड कपटनी कोथली, रमती पर पूरषांह ।
लजा संकण जा(ता) नही, प्रीतम मन पिछतांह ।। ३१४
जगमे नारि रूवडि, वसत करी जगनाथ बे ।
पिण साचे मन चाल वे, तो पिउ थाय सूंनाथ बे ।। ३१५
मंगल जारी मागरण, चीला छोड कुचीन बे ।
चाले मन पिउ नहि गिरणै, ज्यूं मद मानो(तो)फील बे ।। ३१६
पिण तो सरषो बालही, जो नवि मिलती मोह बे ।
तो हुं प्रतीत न जांणतो, नारि तणो अंदोह बे ।। ३१७

वारता— इसो सुणि रसालुजी राजी हुआ । रांणीरे घणा ग्रहणा, वेस-वागा कराया । हीवे रात दीन सुषे भोगवे छे ।

दुहो— मो मन लागो साहीबा, तो मन मो मन लग ।
ज्यु लुण वीलुधो पांणीयां, ज्यु पांणी लुण वीलग ।। ७३

वारता— इसी रीतसुं सुष-वीलास करतां मास पंच वतीत हुआ । तदी रसालुइं राजा भोज पासे मीष मांगी ।

ग. वात— रसालुंनै म्हैलांमै डेरा दीवाडचा । तदी रीसालुं म्हैलांमै सुंता छै । रांणी आई । रांणीनै कांई कहै—

रीसालुवाक्यं

दूहा— सरवर पाव पषालतां, तेरी पायल क्युं सही जाय बे ।
हूं तोनै पुछु गोरडी, तुं क्युं रयण बिहाय बे ।। ५८

तदी रांणी कांई कहै

दूहा— सरवर पाव पषालतां, मेरी पायल क्युं कसी जाय बे ।
अंबर तारा जोवतां, ज्यो मो रैण वीहाय बे ।। ५६

वात— तदी रीसालु राजी हूवो । तदी रांणीनै ग्रहणौ दीधौ । जडावरो सीसफुल, जडावरा आंकोटा बीदी सहेत दीधी । सोनारी धड, रतनां रो हार, नवसरो वरहार, चंद्रसो उजलो चंद्रहार, माला सोनारी, दोय हाथरा वाजुबंध, हाथरी बीटी, जडावजडी, नगजडयां हीराकणीरी बीटी, जडावरी जेहड, दोई पायल, दोय पग पांन मय मेषला, हजार पांचसैरा दीधा । ऐस्यो पंच फुल्यो गहणो कुंवर रीसालुजीरी रांणीनै दीधो । गैहणा-गांठा घडाव्या । राजाजी राजी हूवा, वधाई वांटी । घणा भोग-वीलास दन पनरै रह्या । एक दिनकै सम्यै राजा राणीसूं कह्यौ—मांने सीष देवाडो ।

ङ. वारता— रीसालुनै महोला माहै डेरो दीरायो । रीसालूं महिलां माहै सुता छै । तद रांणी आय रीसालूंनै कांइ कहै छै—

दूहा— सरब याय पषांलतां, तेरी षायल षीस जाय बै ।
हुं तोने पूछूं गोरडी, तौनै क्युं कर रेण विहाव वै ।। ६६

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

रांणीवाक्यं

सूकुलीणी नारि तिका, पति संग रहै अछेह बे।
जीवतडां नहि वीसरे, न वलगाई नेह बे ।। ३१८

८८. वार्त्ता—इण भातसूं मांहौ-माहिं दुहा कहिनै राजि हुवा। नवा नेह लागा, विरह-विछोहा भागा। पेहरो केसरीयां वागां, मिट गया दुषना दागा, चोवा-चंदन लागा। इण भातसूं माहौ-मांहै संसाररा सूष विलासतां घणा मास हुवा। हिवै एक दिनरे समै कुंवरजी राजाजी कनै सीष मांगी। तठै राजा भोजजी घणा दुषी हुवा।*

दूहा– राज सरीषा प्राहुणा, वले न आवै कोय बे।
मिलीया दुष गलीया सहू, जूगत थई सहु जोह बे ।। ३१९[1]
अंग उमाहो कुंवरजी, कीयौ कोसी वीस आज बे।
राज सला धारी धरण, सो कहिं जंबो काज बे ।। ३२०[2]

कुंवरजीवाक्यं

बारै वरस वनवास रा, भोगवीया माहाराज बे।
अब घर जइये वचनथी, सोल वरस धर साझ बे ।। ३२१[3]

A८९. वार्त्ता—इसा समाचार सूणनें भोजजी टीको ओझणौ सारो ही कीयो, दत दायजो घणा दीया, घणा मनवारांसू दीया, घणा मनवारांसूं लीना। हिवै रांणी पिण छांनो माल आपरो बेटीनें दीयो, घणी राजी कीवी।

दूहा– सहस दाय हैवर दीया, इकवीस गैवर दीध बे।
सहस धोरी दूणा करला, जगमग झूलां लोध बे ।। ३२२
चाकर पंचसय चेरीयां, वलि हथियार विशारन बे।
चतुरंगणी लछमी दई, टलीया आल पंपाल बे ।। ३२३

९०. वार्त्ता—इसा द्रव्य देनै कुवरजीनै सीष दीवी, घणा आसूं आया। माता-पिता घणा रूदन कीना।A

रांणीवाक्यं

दुहा– सरवर पाय पषालता, मैरी पायलडी घीस जाय बै।
अंबर तारा गिणतां थकाय, मौरी रेण विहाय बै ।। ६७

वारता– रीसालु राजी हुवो राणीरे घेहेणौ घडावै। राजा राजी हुवो वधाई बाटी। घणा दिन रया। रीसाल् राजा तीरे सीष मांगी।

१. २. ३. ये दूहे ख. ग. घ. में नहीं हैं। A–A. चिन्हान्तर्गत गद्य-पद्यांश का वाक्यभेद ख. ग. ङ. में गद्यरूपमें इस प्रकार मिलता है—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहा– धन धन मातारो नेहडो, धन धन पालै जेह बे।
धन धन पीउं धन प्यारीयां, धन धन कुंवर सनेह बे ॥ ३२४[1]
माय बाप लीया तिहां, विरह घूराया निसांण बे।
एहवा पाहुणा डा (ई) सदा, भल आज्यौ भगवांन बे ॥ ३२५[2]

६१. वार्त्ता—इसा विलास, विरह, मिलाप साराहीसूं करने कुंवरजी नगारो देनै चढिया सो धारावती नगरी आया। आयने वरस पांच तांई रह्या। वलै वसती घणी वसाई। तठै माहादेवजीरो सेवावजीनूं कहीयौ—श्रीमाहाराज जोगेसराज ! ओ रीसालूं कुंवर आपरी घणी भगत कीवी छै सो इणनै कांइ क देवो। तठै श्रीमाहादेवजी बोलीया—रे कुंवर ! संतुष्टमान हुवा; मांगै सौ हि ज देवां। तठै कुंबरजी बोलीयो—श्रीमाहादेवजी माहाराज ! आप तूठा छो तौ आ नगरी सारी ही वस जावै; आगली हुती, तिणसूं सवाई हुई जावै नै म्हारै सवा लाष फौजरो वाधैपो हुवै; इतरी वीध मोनै दिरावौ। तठै श्रीमाहादेवजी बोलीया—तुं चावै सौ सारी ही विध हुय जासी। इतरो हुकम लैनै कुवरजी घरे आया। हिवै कितरा इक दिननै आतरै रांणीरै गर्भ रहो। नव महीना पूरण हूवाथी पूत्र हुवौ। तिणरो नाम रतनसींह दीयौ।[3]

दूहा– सूरज किरण ज्यूं तन झिमै, सूंदर फूल गुलाब बे।
रतनसिंह नामै धरौ, दीधौ नांम सूलाब ब ॥ ३२६[4]

ख. वारता– तरे भोज राजा आछो मोहरत जोय बेटीनु सीष दीधी। घणो दतू-डायचो, घोडा, हाथीदल, कटक देइ ओझणो पोहचाया।

ग. तदि राजा भोज बेटीरो चलाववारो महूरत पुछयौ। तदि राजानै पांडतां भलो मोहूरथ दीधो। तदि राजारी बेटी चलाई। घोडा, हाथी, रथ, पायक देनै चलाई भली भांतसु पोहचाया।

ङ. तद राजा भोज मौरत पूंछौ। बेटी साथै घणा कटकदल देनै डाइचो दे चलाया नै भली तरैसू पोहचाया।

१. २. दोनों दूहे ख. ग. ङ. प्रतियों में नहीं हैं।

३. ६१वीं वार्ताके स्थान पर निम्न गद्यांश ही ख. ग. ङ. प्रतियों में प्राप्त है—

ख. रसालुजी घोडे असवार होय सघलाइसुं मील श्रीपुरनगर साह वीदा हुआ।

ग. तदि [रीसालु] चाल्या चाल्या धीरावास नगर आया। उठै जाऐ वरस पांच रह्या। उठै नगर वसायो। उणी रांणीरै बेटो हूवो छै। रतनसाह नांम दीधो।

ङ. चाल्या चाल्या धारावती नगरी गया। उठै वरस पांच रया नै नगर वसायौ। रांणीरै बेटौ हुवौ। तिणरो रतनसिंघ नाम दीधौ।

४. यह दूहा ख. ग. ङ. में नहीं है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९२. **वार्त्ता**—इण भात रहतां थकां श्रीमाहादेवजीरा प्रतापसूं घणा दास दासी वधीया। चारूं ही कानीरा भौमीया, ग्रासीया आंणनै चाकर रह्या। नगरी सारी ही आगासूं सवाय वसती हुई। घणा विनज-व्यापारसूं डांण-जगात घणी आवै छै। तिणसूं कुंवररै षजांनौ क्रौडा रूपीयारौ हुवौ। कुंमे किनी वातरी नही।B

Cतठै इण विध रहतां थकां वरस पांच वलै हुवा। तठै रातरा पौहरा कुंवरजी सूता छै। सूतां मनमैं वीचारीयौ जे वनवास ही भोगवीयौ, राज ही भोगवीयौ, पिण घरै गयां विनां विभ्रारी षबर किसी पड़ै; तो अवै माईतांसूं मीलनौ ने धरतीमैं नांम करणौ। इसौ विचारनै आपरा उम्रांवानै प्रभातै सभामै बूलाया; मनसोबा कीया। तठै मोटो माहाजन अकलबादर, तीणनै दीवाणपद देईनै द्वा(धा)रावती नगरी सूंपी; भला समसेरबादर रजपूत मूंहडा आगै राषी घणी जाबताई दीधी। हिवै आप नगारो दिरायनै सवा लाष घोडौ साथै लीयो।

दूहा- **दल वादल भेला हुवा, देता नगारां ठोर बे।**
जांणै भाद्रव गाजीयौ, चढीया वहतां सजोर बे॥ ३२७

९३. **वार्त्ता**—इंण भातसूं वहता थकां आपरी नगरीसूं कोस एक उपरै आंणनै आचाचूकडा डेरा कीया। प्रभातै राजा समस्तजीनै षबर पडी। मनमै भयभ्रांत हुवा—जे कीणरी फोज है। तठै नीजरबाजांने मेलीया। तिकै जायनै षबर पाडी—कैठै जावसी, क्यूं आई छै? तिका हकीकत कहौ। तठै कोई क उम्रावा बोलीयौ—अरे राईकां! थांहारा राजानै केहनै इण नगरोरी जाबतानै आई छै। फोज उमीर-सीरदारारी छै। इसा राइके समाचार सूंणनै राजाजीनूं

B. यह अंश ख. ग. ङ. में नहीं है।

C.–C. चिन्हान्तर्गत गद्य-पद्यांश के स्थान पर ख. ग. ङ. प्रतियोंमें निम्न गद्यांश ही प्राप्त है—

ख. कित्तरेके दीने चाल्या थका श्रीपुरनगर नेडा गया। राजा समस्त जांण्यो—कोइ वेरीदल धरती लेवा आयो दीसे छे। इसो वीचार राजाए उंबरावानु सांहमा मेल्या—आ कीणरी फोज छे, कठे जासी? इतरामे हलकारा आया राजा समस्तने अरज कीधी—माहाराज! रसालु कुमर परणेने आवे छे। इसो सुणीने राजा समस्त राजी हुआ। हीवे राजा समस्त सांमेलारी सभ्क कराय रसालु कुवर सांमा आया। मोती थाल भर वधाया। नरनारी मील मंगल गाया। घणा उछव महोछव हुआ। सर्व लोकांनै मन भाया। यु करतां रसालु राजलोकमे आया। माता सु मील्या पछे महीला दाषल हुआ। हीवे रसालु सुषे रहे छे। तठा पछी पांच रांणी फेर परणीया। रांणीयां संघाते मनवंछीत सुष भोगवे छे। इम करतां एकदा राजा समस्त देवलोके पहुता। तरे रसालु घणो धर्म पुन्य करी चंदण अग

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कहोयौ—श्रीमाहाराजा ! फोजरी तो चौकस कोई नही, पीण बूरै मतै छै, आप जाबताई करीजै । तठै राजाजी घणी जावता करवा लागा; घणा नाल-गौला बूरंजा उपर कसीया । रावत, सूरवीर घणा दल भेला हुवा । पिण रीसालूंरी फोज चूप-चापसूं बेठी रहै छै । किणहीरो तिणामात्र उजाड़ै न छै ।

यूं करतां छ महीना हुवा । तठै राजा समसतजी आपरा प्रधांनने कहीयौ—थै फौजरा नायकसूं मीलौ; देषां, कांई रंग-ढंग छै ? षबर जीसी हुवै तीसी ल्यावज्यौ । तठै प्रधांन असवारी करनें हजार पांच असवारांसूं फोजां सांमो नीसरचौ । आगाउ सांढोयो मेलीयौ । प्रधांन मीलवान आवै छै, इसौ कहाय दीयो । तठै सांढि(ठि) यै हकीकत कही । तठै सारा ही सांवधांन हुवा छै । प्रधांनजी आवै छै ।

दूहा– **दल दिषणादी देषीया, झांझा फरहर झंग बे ।**
बाजै नोबत बंबली, रीसालूं फौजा रंग बे ।। ३२८

६४. वार्त्ता—इसा दल देषतो प्रधान रीसालूंरी फोजमै आयौ । आयनै माहौ-माहै मीलीया, बांह पसाव कीया । प्रधांन कुंवरजीनै घणा वरससू उलष्या नही । कुशल-कुशल पूछीया, विछायत बेठा, अमल-पाणी कीया । तरै कुंवरजी पूछीयौ-जै प्रधांनजी साहिबा ! आप क्यूं पधारीया छो ? तठै प्रधांन कहै—श्रीमाहाराजाजी मेलीया छै आप कनै । सौ आप कीण कांम पधारीया छो । आप कजीयो पिण म करौ, आघा पिण न जावौ, तिणरौ कांई विचार छै ? आपरा मनमै हुवै सू कुवरजी साहैब ! आप कहौ; आपरा मनमै हुवै सूं मने कहौ, ज्यूं माहाराजसूं मालिम करूं ।

काठसु दाग देरायो । बारे दीवसे प्रेतकार्य कीधो । पछे आछे मोहूर्त्त शुभलग्ने शुभवेलाए रसालु पाठ बेठा । प्रोहीत तीलक कीधो । सघले सीरदारे, मसुधीए आय मुजरो कीधो । भोमीया, कांठलीया सर्व आय पाय नमण हुआ । रसालुए अदल राज पाल्यो । घणा दीन सुष भोगव्यो ।

ग. उठासु चाल्यो आपकै श्रीपुर नगरै आव्या । राजा समस्तै जांण्यो—ओ दल-बादल कीणीरो छे । अतरायकमै राजा समस्तजी हूकम कीधो—स[र]दारने उरो बोलावो । चाकरे कह्यौ—प्रमांण । चाकरां जायनै प्रधाननै उरो तेडचो । आप हजुर आयो । तदि आप हुकम कीधो—ओ कटक कोणीरो छै ? तुं जाअ षबर ल्याव । ओ घोडो चढे सांमो गयो । जायनै पुछचौ—ओ कटक कणी राजारो छै ? मांने कहौ । माहरे राजाजी पुंछायो छै । अतरायकमै माहाराज कुंवरजीसुं आपरे फोजदार जाए मालक कीधी—माहाराज ! अणी सैहररो राजा, तणीरो फौजदार षबर करवानै आव्यो छै । तदी आप हूकम कीधो—उरो बुलावो । तदि हजुर आयो । मुंजरो कीधो । आप कह्यो—आघो आवो । आप पुछचौ—क्युं आया छो ? जदी उणी ही हाथ जोडनै कह्यौ—माहाराजा आपरी षबर करवाने मोकल्या छै ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

तठै रीसालू'जी बोलीया—म्है थांहरा राजानो कागल बीड देवां छां सौ हाथौ-हाथ देज्यौ। थांहरौ राजा वांचनै मांनै सीष दैसी तौ परा जावस्यां, कजीयौ करसी तौ कजीयौ करस्यां; ओ जाब छै। तठै प्रधांन बोलीयौ—दुरस फूरमाई, आप कागल लीष दीरावौ। तठै रीसालू' कागल लिषै छै—

दूहा– **सोध श्री सकल गुणनिधांण, तपतेज प्रमांण, प्रबल राजपरताप,**
तपतेज कायम, जगत दुष चूरण, गरीबके सरण, छोरूकै पाल,
माहारसाल, परम सूषकारी, राजकृपाथी सूत सूष भारी श्री श्री
श्री १०८ श्री १०००००० श्री श्री माहाराजाधीराज माहाराजाजी
श्री श्री श्री समस्तजी चरण कुमलायनूं—

दूहा– **श्री सिध श्री श्रीहजूरनै, लिषतं सूत कल्यांण।**
तन मन जीवन सूष करन, पूरण परम निधांन।। ३२९
सकल ओपमा जोग्य है, पितु-माता मनूं रंग।
सूतको मूजरौ मांनज्यौ, दिन दिन अधिको रंग।। ३३०
सूष बहु तुम परसादथी, तन धन श्री माहाराज।
सदा रांवलो जांणज्यौ, चाकर साधत काज।। ३३१
तुम फूरमायो जा परो, सो काहां जावै भांम।
पूत्र तुमारो रीसालूंवो, आयो मीलवा काज वे।। ३३२
जो मिलवो मूष देषवौ, जो कौई मूहुरत हौय।
प्रोहितजीनै पूछ कर, आछौ दिन ल्यौ जोय।। ३३३
पिता हूकम वनवासकौ, सौ लह्यौ सीस जढाय।
वरस बहुत बारे भम्यौ, अब आयौ तुम पास।। ३३४
श्रीमाहाराजा हूकम द्यौ, तो हु' आउं राज।
चरण तुमारा भेटवूं, ज्यूं मूज सूधरे काज।। ३३५
सल्ला होय सौ कीजीयौ, पूठौ दीज्यौ जाब।
जै कहौस्यौ सौ मांनस्यूं, करस्यूं कांम सताव।। ३३६
गुनेहगार हु' रावलो, साहिब चरणां दास।
छोरू' कुछोरू' हुवै, पिण तात न छोरत आस।। ३३७

तदि आप हूकम कीधो—मे थांरा राजाजीरा बेटा छयां; वरस बारमैं आया छां, सगलै साथ राजाजीरै कुसल-षेम छै? माहरौ आजीरो डील आछो छै? मे तो वरस घणांसु आया छां, सो ठीक नहीं। जदी उणी कह्यौ—माहाराज! घणो सुष छै, चैन छै, वले आप पधारयांथी वसेष चैन छै। जदि कुंवरजी कह्यो—थे जावो, राजाजीसुं मालम करो। उणी कह्यो—प्रमांण। उ घणा उछाहसुं दरबार आव्यो, राजाजीसुं कह्यो—माहाराज! कुंवर

छोरू आस करै घणो, षिउंसू मीलवा कोड ।
सांचौ जाब दिरावज्यौ, ज्यूं पूगै मूझ होड ।। ३३८
कागद वाचनै भेजीयौ, आप तणो कोई दास ।
मूकैज्यौ ज्यूं आवस्यूं, तात चरणकै पास ।। ३३९

रीसालुजी आव्या छे। जदि आप घणा कुस्याल हूवा। रावलामै रांणीसूं कवाओ। राजाजि हुंकम कीधो—कोटवालनै तेडाव्यो। कोटबाल हजुर आव्यो। हूकम कीधो—तुं सारो चोक, गली झटकावो, धुलो सगलो बाहीर नषावो।

कोटवालवाक्यं

दूहा– सैहर सगलो झटकावीयो, चोहटा कीधा स्याफ बे।
अब क्या आग्या देत हो, पुरो मनांकी आस बे।। ६०

राजावाक्यं

दूहा– कुंवर भलै घर आवियौ, हूई बहूत जगीस बे।
रीध बहूली ल्याईयो, ल्यायो कुंवर एह बे।। ६१

अथ वात— राजाजी सांमेलोतो आ'र कराव्यो। हाथी, घोडा, रथ, पायक, ढोल, नगारा, ताल, मृदंग, पषावज, मजीरा, फररा पांच सबद बाजा लेनै राजाजी सांमा चाल्या। रीसालुजी राजाजीनै देषी नीचा उतरचा, सात सलांम करेनै आय पगे लागा। राजाजि सुषपालथी नीचा उतरचा, बेटानै उरगथी गाढो भीरचौ, कुसल षेम बुझचौ। तदि रीसालु हाथ जोडेनै कह्यौ—श्रीजीरै पगे लागतां गाढो चैन हूवो। पाछा असवार होयनै सैहर दिसा चाल्या।

साहूकारवाक्यं

दूहा– धन रे नांम रीसालुंवा, धन अस नगरीका भाग बे।
बहू रीध ले आवीयो, अब क्या पुछौ तोही बे।। ६२

वात— चोहटामै असवारी नीकलै छै। मांणक चोकमै आवीआ। तिहां नगर सेठांरा घर छै। सेठरी बेटी गोषै बैठी छै। अतरायकमै कुवरजीनै दिठा।

कुंवरजीवाक्यं

दूहा– देषो सहेली आयकै, एह राजाकौ रूंप बे।
ईस धरणी औ राजवी, उपम धुंन आंब क्याह छै (बे) ।। ६३

वात— अबै चाल्या चाल्या दरबार आव्या। दोढचांथी नीचा उतरचा, लछमी नाराअणजीरै पगे लागा। राजलोक सगला गोषै बैठा देषै छै। तठै रीसालुजीरी बैन देषै छै। बैन भाईनै दीठां कांई कहै।

राजारी कंवरीवाक्यं

दूहा– बंधव भलै घर आवीयो, दुधै वुठा मेह बे।
मोतीडै वधावस्यां, मिलस्यां बांह पसाव बे।। ६४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वात— आप रावलारै मुंढै जाय उभा रह्या। उमरावांनै सीष दीधी--आप डेरा करो, कमर षोलो, उतारो करो। उमराव मुंजरो करेनै आप-आपणै ठीकांणै गया। रसालुजी मैहलां माहे गया, माताजीरै पगै लागा। आप बैनसुं मीलया। बेहनै उवारणा लीधा। माउ कैहवा लागा—बेटा ! अतरा दीनां माहे कोई कागद-समाचार अतरां वरसांमै कोई मेल्या नही।

माउवाक्यं

दूहा– बेटा तुं सुंलषणो, ज्यां सरवर तुं देष बे।
तुम विना हूं हरी बंधवा, जल विनां ज्युं मछी बे ।। ६५

बेटावाक्यं

दूहा– मातामै मीलवा तणो, घणो ज कीधो चंत बे।
अब तुम चरणे लागस्यां, सफल फल्या वंछत बे ।। ६६

बैनीवाक्यं

दूहा– वीरा तुं सुंलषणो, गयो कुंण प्रत देस बे।
ल्याया सो कहो मुंने, मे छां ताहरी बैन बे ।। ६७

कुंवरजीवाक्यं

दूहा– सुंण बाई वीरो कहै, मै गआ समुद्रं पार बे।
घणा तमासा देषीया, देष्या त्रीआ चीरत बे ।। ६८

बैनवाकं

दूहा– सुंण बीरा बैनी कहै, कुलवंती ते होय बे।
त्रीया चीरत्र जांणै नही, जो आवै सूर ईद्र बे ।। ६९

वारता—माउ, बैन कैवा लागी—बीरा ! थे कीणी कीणी देस गया, (कुण कुण देस गया) कुण कुण तमासा देष्या, कतुहल देष्या, देष्यो होवै सो मां आगै सगला कहो।

जदि रीसालु कैहवा लागा—बाई ! मे समुद्र परै राजा अंगजीत छै, तीणरी बेटी परण्यो, सौ मेलनै उरा आव्या। पछै राजा भोजरी बेटी परण्या। पछै राजा मांनरी बेटी परण्यां, ते मेले आया। आ कंन्या परणे ल्याया सो पतीव्रता छै। उणीरा तो लषण पातला, मां जुगती नहीं, तणीथी परी मेली। तद बाई कैहण लागी—वीरा ! उणीमै कांई अवगुण दीठो। तदि आप कहै—हू परणेनै पाछौ फीरचौ जदि ऐक सेहरमै उजड दीठो। तिणीमै मे मेलि थी, जणीमै मे रह्या। सवेरै हूं सीकार जातो। तदि हठीमल पातसाह मृगरै वांसै ऊ आव्यो। रांणी म्हैलांमै थी, देष्यो। तदी मै जांण्यौ। उणनैं में परो मारचौ। ईतरै ऐक सीन्यासी मारा मेहलां नीचै गोरष जगायो। जदि मे उणीनै षांणो दीधो। हूं गोषमै बैठो थो। जत्रै जोगीऐ माथामैथी मांदलीयो काढचौ। तणीमैथी लुगाई काढी। तणीनै षांणो दीधो। दोई जणा रमे, षेले नै जोगी सुंता, लुंगाई बैठी थी। तणी साथलम्हैथी बतीस वरस-को जुंवान काढचो तणीनै षांणो दीधो। तणीसुं भोग-वीलास गाढो किधो। करे नै पाछौ साथलमै मेल्यो। जदि जोगी जांण्यो (गयो)। अतरो तमासो रीसालुंजी दीठो। देषनै आय नीचो

उतरचौ । देषै तो आप जोगी सूंतो छे । तदी रीसालुजी कह्यो—बाबाजो ! नमो नारायण । कह्यो—बाबाजी आधो आव ।

रीसालु वाक्यं

दूहा– रे बाबा तुं जोगीआ, दीसो बोहौत सुंग्यांन बे ।
तुंम ही कीधा ष्याल दो (हो) सो दिषाडो मुंझ बे ॥ ७०

जोगीवाक्यं

दूहा– थे छो राजा बहुगुंणा, क्या ल्यो मेरा अंत बे ।
देसां देसां भमता फीरो, कीधा ऐता सरब बे ॥ ७१

वात— तदि कुंवरजी कह्यो — थे तमासो कीधो सो मोनै दीषावो । तदी जोगी जांण्यो— ओ राजा चकोर छै, कला माहरी दीठी छै । जदी जोगीऐ मादल्यो माथामांथी काढचौ, माहथी लोगाई काढी । तदी लोगाईने राजा कहै—तु जणीथी राजी होवै तीणनै काढ, में तोनै उपगार करस्यां । तदी लुगाई साथल माहेथी जुवानने काढचो । जदी रीसालु कह्यो— अणथी राजी है । जदी उण कह्यो—आप कहो जिम । जदी जोगीनै रीसालु कह्यौ—आ असत्री थां जोगी नही । जदी कह्यो —माहाराज । जदी लुगाई नवानै दीधी । जोगीने आपरी असत्री दीधी । हाथै पांणी कुंढचौं । वले घणा त्रीआ-चरीत्र दीठा ।

हजार सातरो माल पगे मेल्यो । मातानै गैहणो जड़ावरो दीधो । बैननै सरपाव ईकतीस दीधा । सगलांनै संतोष्या, पोष्या, राजी कीधा । मैहलांमै जायनै पोढचा । असत्री संघातै कांम, भोग, संजोग घणा कीधा । सवेरै नणद भोजाई मील्या । नणद भोजाईनै नीद आवती देषनै कह्यौ —

नणदवाक्यं

दूहा– नयण थारा भुंभला, दीसै छै बहू नीद बे ।
रजनी सहू वह गई, तो ही न धाप्या तेह बे ॥ ७२

भोजाईवाक्यं

दूहा– थारो वीरो बहुबली, तीम अरजण बांण बे ।
रयणी वात बहू गई, ईण वीध राता नैण बे ॥ ७३

वारता– तदी नणद कैहवा लागी—पुरषरो ऐहवो जोवन होवै छै, थे आजी ज जांणो छो । पिण एक दीन दादोजी सकार गया था । सो मृग उछेरचो । ईतरै समदै घोडै चढचा था । सो घोडो पाछै दीधो तीतरै मृग अलोप हूवो । अतरायकमै पटा झरतो, मद छकतो, मेहनी परै गाजतो, घटानी परै कालो, ईस्यो हाथी भाई सांमो आयो । तदी भाई मनमै वीचारचौ—पाछो फरूं तो अमरावांमै हासी होसी । तदि हसतीरै दंतुसलै जायनै हाथ घाल्यो । दंतुसल काढेने उरा लीधा । माथा माहे झाटकी । हाथी मुवो । उमराम वषाण कीधो— माहाराज ! भाईरो बल ईसो छै ।

अतरै वसंत रीत आइ । वनासपती, सगली फलवानै लागी । वड, पीपल, आंबा, आंबली, दाडाम, सहतुंत, बोलसरी, आसापालव, केवड़ा, केतकी, पाडल, चंपो, मोगरो, जाय सदा

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

भेटे चरण सूषी थवूं, करूं वधावा कोड ।
[चरणाम] ? करूं वधामणा, एक हुं बेकर जोड ।। ३४०

६५. **वार्त्ता**—इसी चोठी लीषनै प्रधांनरै हाथे दीधी । प्रधांन चोठी लैनै माहाराजने दीधी, सारी हकीकत कही । तठै राजाजी चीठी बिड षोलनै वाची । साराहीनै अचंभो नै षूस्याली हुई । हिवै राजा समस्तजी सहर सीणगारीयौ । कुंवररै वास्तै वधांमणा कीया । घणा षूसी थका राजाजीसूं पूत्र मील्या । घणा वधायनै माहै लीया । माता-पितासूं मील्या । सारा ही सहरमै हर्ष, मंगलाचार हुवा । मातारो बोलीयो कुंवर कायम कीयो ।C

Dदूहा– **राज पाट सहु विलसतौ, लिषमीकै भंडार बे ।**
रांणी पांच भली परणीयौ, रंभारे अवतार बे ।। ३४१

वसंत, वडांम, बीजोरा असी भांतरा अनेक भांतरा रूष पालव्या छै । तणी समै राजाजी नर्षसु सीष मांगें नै नवलषा वागमै सघला राजलोकंमै पधारचा । रिसालुजी तठै तंबु षडा कीधा । रावल्या तंबु षडा कीधा । वसंत रीत आवी ।

कुंवरजीवाक्यं

दूहा– अब वसन्त ही आवही, फल्या आंब अनार बे ।
तस्कै कारण कुंवरजो, चाल्या सहैरकै बार बे ।। ७४
दूहा– ज्यांह नवलषा या (वा) ग है, भांत भांतका रूष बे ।
तीहां है बगला नवनवा, चोबाराकी मोज बे ।। ७५
दूहा– तीहां छै बचा अती भला, नल छुटै भरपुर बे ।
केसरकी चोकी कीयां, रमै तीयांकै संग बे ।। ७६
दूहा– रांणी सहू साथै लीयां, षेलै आप वसंत बे ।
मुंठी हाथ गुंलाबकी, नांषै माहोमाह बे ।। ७७
दूहा– रात दीवस तीहां (ही) रहे, नही जांणै ससी-सुर बे ।
सुरगलोक म्रतलोगमै, जांणै सहै ज मुज (सुर) बे ।। ७८

वात— वागमै रमे, षेले नै घणा दीन तांई रहेनै पाछा सैहरमै आया । कुंवरजीरै दोय बेटा हूवा । घणा दीन तांई कुंवर पदवी भोगवी । पछै पाटै बैठा । सगलै देसै आंण-दांण चलाई । दुसमण सघला आय मील्या । कंवर पधारचा । अमरावांनै घणा बधारचा; उणांनै मोटा कीधा । तीणांनै सीरपाव दीधा, घोडा हाथीनी पट दीधा, उमराव कीधा । प्रतापीक राजा हूवो, साहसीक हूंवो परनारी सहोदर, प्रदूषरो कातरो ।

दूहा– भागवांन अरू साहसी, रावां हंदा राव बे ।
मन वांछ[त] सहू फल्या, फल्या मन जगीस बे ।। ७९

वारता—सुषै राज पालै छै । देवतांनी परै सुष भोगवै छै । ईंद्रनी परै रीध वीसै छै । न्यायवंत राजा वीक्रमादीतनी परै माहान्याअवंत हूवो । अकल, रूपना धणी । असी तरै राजा न्याअवंत राज पालै छै । सहू लोक धन धन करै छै । घणा षटदरसणरो प्रतीपाल हूवो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणवंतो नारि तणा, विलसै भोग-विलास बे ।
जाचक जय जय नित कहै, पूरै पूरजन श्रास बे ।। ३४२
रीसालूं हुंदी वातडी, कूडी कथी नही कोय बै ।
गावै चारण नरबदौ, हस्ती श्रापौ मोज बै ।। ३४३
वात रीसालूं रायकी, हुंतो आगै जेह बे ।
मांहै कवि भेल्या अछै, दूहा वात सनेह बे ।। ३४४
छोटीनै मोटी करी, कविता मन कर हुंस बै ।
आनंद मंगल होयज्यौ, जय जय करज्यौ वेश बै ।। ३४५
कवियां मंन जय पांमवा, हुयसी वाचणहार बे ।
चतुर भंवर सूंगणी नरां, चा(वा)चौ कर मनवार बे ।। ३४६

९६. वार्त्ता—इतरी वात रीसालूरी कही । सारि विध पून्यरो छै । वातरो वणाव षूब कीयौ छै । चतुर पूरषांनै रींझरै वास्तै, मीठी लागनरे वास्तै कीवी छै । मूरष पूरषांनै दांतकथा ज्यूं छै । ग्यांनी पूरषांनै सील, गुण, ग्यांन छै ।

दूहा– मनरंजण अतिसूषकरण, राग रंग रस रीत ।
वात रीसालूंरायकी, वांचै ते पालै प्रीत ।। ३४७D

रीसालूरी वात संपूर्ण : संबत १८७८ रा वृषै मिति माहा वद ७ गुरवासरे लिषतं षूबरां नागोर नगरमध्ये ।।श्रीः।।[1]

ङ. उठासु चाल्या श्रीपुर नगरे श्राया । तरे राजा श्रोठीनं साहमौ मेल्यौ ने कहवाडीयौ–थे कठाथी श्राया, ने कठे जास्यौ ? तिवारे रीसालू सघली वात श्रायारी कही । तरे मां-बाप राजी हुवा । उछरंग करी सांमा श्राया । मोतीया थाल भरं वधाया । नर-नारी मील मंगल गाया । हाट, वजार सब उछव छाया । सरब लोक मन भाया । राणी पंच मिली परणीया । ढोल, दधामा, नोपत बजाया । घणा उछवसू पधारीया । राणी बहु सुष पाया ।

D–D. चिन्हगत श्रंश के स्थान पर ख. ङ. प्रतियों में निम्न एक दूहा ही प्राप्त है––

ख. दुहा– राजा रसालुरी वातडी, भलो कथी कर बोज बे ।
गावे चारण नरबदो, हस्ती पावे मोझ बे ।। ७४

ङ. दूहा– राजा रीसालू हुंदी वातडी, कूडी कथा न कोय बै ।
गावै चारण नरबदा, हसती पायो मोज बै ।। ६८

ग. प्रति में उक्त श्रंश के स्थान पर कुछ भी लिखित नहीं है ।

१. ख. इती श्रीरसालुकुमररी वात संपूर्ण : ली० । पं० श्रनोपवीजयः ग । संवत १८७५ रा श्रासाढ सुद ३ दने ।

ग. ईती श्रीरसालुंकुंवररी वारता संपूर्ण समापता सुभं भवतु । संमत् १८१० वर्षे मती बैसाष वदि ५ दिने वार श्रादित्यदीने लि० क्री० रामचंद ग्राम कागंणीमध्ये ।। श्री ।।

ङ. श्री इति श्रीरीसालूंकुमररी वात : दूहा : ढाल वंध संपूर्ण सं० १८६२ रा मिती चैत सुद ७ अर्कवासरेः ।। मेडतानगरे ।। श्री

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वात नागजी-नागवन्तीरी

अथ श्रीनागजी नै नागवन्तीरी वात लिख्यते

१. चवदै चाल कछरो धणी जाखड़ौ अहीर तिणरी नगरी में दुकाळ पड़ीयौ। तरै जाखड़ै अहीर कांमदारानु[1] कहीयौ--सांभळो छो, चवदै चाळ कछरो लोक[2] माळवै जांण पावै नहीं। आपणै कोठारसु सब लोकांनै[3] चाहीजै सु[4] धान रुपीया वैगेरा[5] देवो। तरै[6] कामदारां कह्यौ–साहबजी, दुरस्त[7] छै। तारै सारां उमरावांनै, लोकांनै धान कोठारसु दीयो। सारै ही लोक सुखसु रह्यौ[8] ने बारा मासां काळ काढीयो, ऊपरै आऊगाळ[9] आयो। तरै रईत लोक ओर ही सब लोक हरखवांन हुवा[10]। अबै तो जमानो हुसी[11]। पिण दूजै वरस वळै काळ पड़ीयो।

दुहा– **मन चितै बहुतेरीयां, किरता करै सु होय।**
उलटी करणी देवरी[12], मतो[13] पतीजो कोय ॥ १

२. **वात**[14]—तरे[15] कांमदारां अरज कीवी–महाराजा! एक तो काळ काढ़ीयो नै वळै ओ दूसरो काळ पडीयो। अबै आपरो हुकम हुवै सु करां। तारे जाखड़ैजी कह्यौ–सुणो छो, जठां तांई आपणै कोठार मांहे अन धन छै[16] तठां तांई सब लोकांनै देवो। किण ही नै वीषरण देवो मत। आपणो सुख-दुख रईत[17] भेळो काढणो छै। जे रईत सुख पावसी[18] तो वळै कोठार, भंडार घणाई भरस्यां। तिणसु जठां तांई कोठारमैं छै तठा तांई किणहीनै ना कहो मती नै कोठार षूटीयाँ[19] पछै जिकुं होवणहार छै तिकु हुसी।

दुहा– **लाख सयाणप कोड़ बुध, कर देषो सब[20] कोय।**
अणहुंणी हुंणी नहीं, होणी हुवै सु होय ॥ २

---

१. ख. कामदारांनैं। २. ख. धणी लोक। ३. ख. सर्बलोकनैं। ४. ख दिरावो। ५. ख. वगरै। ६. ख. तरां। ७. ख. दुरस। ८. ख. सुखसु खुसीसु रह्यौ। ९. ख. आऊकाळ। १०. ख. लोक बडो राजी हुवो उ घणो हर्ष हुउ। ११. ख. अबै तो परमेस्वर जमांनो करसी। १२. ख. देवकी। १३. ख. मतां। १४. ख. वार्ता। १५. ख. यतरै। १६. ख. आपणै कोठार भांडार छै। १७. ख. सर्व। १८. ख. पासी। १९. ख. निठीयां। २०. ख. सहु।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. वात[1]—तारै कांमदारां नगरमैं, मुलकमैं, पटैमैं, सारै[2] कहाड़ीयो-बाबा, थारै जोईजै सु कोठारसुं लेवो । अबै जिणरै धांन न हुवै तिको कोठारसुं धान लेवै । खरची न हुवै तिणनै रोकड़ देवै[3] । यूं दैतो-दैतां दूजो काळ वळे काढ़ीयो, पिण करमरै[4] जोगसु वळे तीजो काळ पड़ीयौ नै कोठार भंडार पिण खाली हुवा । तारां कामदारां राजासूं[5] कह्यौ–महाराज ! सिलामत, खजानो श्रीदरबाररो मांहे थो सु तौ सब षायौ[6], रईतरै काम आयौ[7], हमैं तो लोक निभै कोई नहीं । तिणसुं अबै तो बिषौ कीजै तो भलो छै[8] । तरै जाखड़ै कही–च्यारे ही तरफ सांढीया मेलो, सु जठै घास पांणी मोकळा देखो[9] तठै चालो । तरै ओढी[10] मेलीया सु तीन ओढी[11] तो पाछा आया नै एक ओढी[12] बागड़रै मुलक धोळबाळो राज करै छै, तठै गयौ । सु उठै घास-पांणी मोकळा दीठा । तरै जायनै धोलबाळानुं कह्यौ--जाखड़ै अहीर राम-राम कहयी[13] छै । कह्यौ छै–मांहरै मुळकमैं तीन काळ पड़ीया सु[14] कहो तो थांहरै देस आंवां नै मेह हुवां परा जावसां[15] । तरै धोलबाळै कह्यौ[16]–भलांई पधारो; ओ मुळक थांहरो हीज छै । तरै ओढी पाछो चाल्यौ[17] । सु जाय नै जाखड़ानूं कहीयो--हूँ जायगां देख आयो छुं । सारा समाचार कह्या । तरै जाखड़ो चवदै चाल कछनुं लेनैं बागड़रै मुलक आयो । तरै धोळबाळो सांमो जायनै ल्यायो नैं कांमदारांनुं कह्यौ[18]—गामरै माहे लोक-रैतनुं[19] वसाय देवो नै राजलोक छै, सुं तलहटीरै महलां राखो, कांमदारांनै साथै[20] ले जावो । तरै सारांनुं ठिकांणै-ठिकांणै[21] उतारा दीया । हमैं धोळबाळै रै बेटो नागजी नांमें छै अनै जाखड़ैरै बेटी नागवंती[22] नांमे छै । सुं रंहतां घणा दिन हुवा ।

एक दिन बागड़रै मुळक भटीं दोड़ीया । तरै लोकां आयनै कह्यौ[23]—दोय-दोय राजा बैठा छै नै भाटी मुळक विगाड़ै छै । तरै धोलबाळै दरबार करनै बीड़ो फेरीयो । सो बीड़ो किण ही झालीयो[24] नहीं । तरै[25] नागजी राजलोक

---

१. ख. वार्ता । २. ख. गांवरा लोकांनै । ३. ख. दरावै । ४. ख. करमै । ५. ख. राजानैं । ६. ख. सर्व परो दीयो । ७. ख. प्रति में नहीं है । ८. ख. तिणसुं कठैई जाई तो भलां छै । ९. ख. घणों हुवै । १०. ख. उठी । ११. ख. उठी । १२. ख. उठी । १३. ख. कहीयो । १४. ख. तीणसुं । १५. ख. जास्यां । १६. ख. कहीयो । १७. ख. हालीयो । १८. ख. कहीयो कामदारांनै थे साहमां जायनै ल्यावो । तरै सामां जायनै घणै हरगंमसुं लाया तरै कामदारानुं कह्यो । १९. ख. लोकडानुं । २.० ख. थे । २१. ख. ठिकांणा माफक सगळांइ नै । २२. ख. नागवती । २३. ख. आंण कहीयो । २४. ख. फाळियो । २५. ख. तिसै ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मांहिसु आयनै सिलांम करी बीड़ो उठाय लीयो। तरै रजपूत सब बोलीया–कुवरजी साहिब ! बीड़ो खावणरो न छै, मरणरो छै[1], तरै नागजी कह्यौ–हूं भाटीयां ऊपर[2] जासुं। तरै राजाजी कहियौ–तूं टाबर छै, कदे ही राड़ देखी न छै। पिण नागजी कह्यौ मांनै नही[3]। तरै लोकां कह्यौ–महाराजा ! रजपूतांरा बेटांरो काहू[4] छोटो, सिंघरो बचो नानो हीज थको हाथीयांरी गजघंटा[5] भांजै छै।

दूहा– **छोटी केहर बोहत्त गुण, मिलै गयंदां मांण।**
लोहड़ बडाइ नां करै, नरां नखत्त प्रमांण॥ ३[6]

४. तिणसुं आप कोई फिकर करो मति नै कुंवरजीनै मेलो। ताहरे राजा कह्यौ–भलां, जावो। तरै नागजी आपरा दांईदार हजार पांच असवार लेनै चढीयो, नै भला घोड़ा लीया, नै पोसाख तथा डेरा तथा घोडांरी सभाई इकरंग केसरीया करनै चढीया, सु जायनै भटीयांसु कजीयो कीयो। भटी भाज गया। जिकै थम्या[7] तिणांनै मार लीया। फतैनांवा करनैं पाछो वलीयो। सु सैहरसुं कोस एक ऊपर मांनसरोबर तळाव छै, तेथ[8] आय डेरा किया। आसोजरो महीनो थो। सु तळावरै कनै जाखड़ारी घर-घराउ खेती थी। सु रखवाळो[9] न थो। खेतरो रखवालो कोई हूतो नहीं। नै नागजीरै एक बड़ी भोजाई परमलदे इसै नामे छै। सु नागजीनुं जीमायनै जीमैं। सु महीना दोय एक तो हवा देख तळाव उपरै हीज रह्या[10]। सु भोजाई जायनै जीमाय आवै[11]। पछै एक दिन कह्यौ–नागजी माहाराजकुवार ! थे गढ़ दाखल हुय जो; मोनै फोड़ा पड़ै छै। तरै नागजी कह्यौ–भाभीजी ! ओ तळाव ऊपर खेत किणरो छै ? अठै खेतरो रुखवाळो कोई नहीं, तिणसुं म्हें खेतरी रुखवाळी करां छां, इसो कह्यौ। तरै परमलदे पाछी आई। आपरै[12] धोलबाळानुं कह्यौ–तळाव ऊपर खेती किणरी छै[13], सुं रखवालो कोई नहीं[14] ? जो कोई रुखवालो म्हेलो तो नागजी गढ़ पधारै। तरै धोलबाळै चाकरांनुं पूछीयो। तरै चाकरां कह्यौ–खेती तो जाखड़ाजीरै हुयी छै। तरै धोलबाळै जाखड़ानुं कह्यौ–तळाव ऊपर खेती राजरै बुई छै तो रखवाळो मेलो, ज्युं नागजी घरै आवै; टाबर छै, सु वाद चढ़ौ छै। तरै जाखड़ो तलहटी गयो। जायनैं लुगायांनुं

---

१. ख. उ बीड़ो मरणरो छै। २. ख. उपरां। ३. ख. न छै। ४. ख कांइ। ५. ख. गजघटा। ६. ख. प्रतिमें यह दूहा नहीं है। ७. ख. संभ्या। ८. ख. तठै। ९. ख. खेतरै रखवाळो। १०. ख. प्रतिमें नहीं है। ११. ख. आई। १२. ख. तरै। १३. ख. हुई छै। १४. ख. प्रतिमें नहीं है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कह्यौ। तद[1] कह्यौ–चाकर तो बीजा[2] खेत रुखवाळ छै; अठै किणनै मेलां ? तरै लुंगायां कह्यौ–जे परमलदेजी नागजीनै जीमावण नित जावै छै[3] अोर ऊ खेत ही उठै हीज छै[4] तो च्यार दिन नागवतीनै परमलदेजी सागै[5] मेलसां। सु दिन दिन तो खेत में रहसी नें रात पडीयां घरै उरी अावसी। नागजी जाणसी–खेतरो रुखवाळो अायो तरै नागजी उरा पधारसी। तरै धोळबाळ कह्यौ–ठीक छै। तरै परमलदेजीनै कहायो–सुवारे नागजीनूं जीमावण जावो तरै तळहटीरै महलांसु नागवंतीनै साथे लीयां जाज्यो। तरै परमलदेजी कह्यौ–भली बात छै। तरै परभाते परमलदेजी जाती थकी नागवंतीनै पिण पालखीमैं बैसांण[6] लीनी। सु मारगमै जातां परमलदेजी नागवंतीनै कहै छै–नागवंतीजी ! मांहरै नागजीरै हालतांरै कुंकुंरा पग मंडै[7] छै। तरै नागवन्ती बोली–परमलदेजी ! इसो भूंठ क्युं बोलो छौ, मिनखांरै[8] कदे कुंकुंरा पग मंडै छै[9] ? तरै परमलदेजी होड़ मारी, कह्यौ–जे नागजीरै कुंकुंरा पग पड़ै तो थांने नागजीनूं[10] परणाय देवां; जे नागजीरै पग न पड़ै तो थे थारी दाय अावै, तिणनुं मोनै परणाय दीज्यो। इसो कवल[11] करनै खेत गई। तरै परमलदेजी तो नागजी कनै गई। अर नागवन्ती जठै खेतमें मालो छै, तठै गई। अबै परमलदेजी नागजीनै पूछै छै–

सोरठा– **संपाडै[12] बैठाह, साहला नै[13], सरबतड़ी[14] ।**
जे दहेल मुकाक, कागद मंडा[15] नागजी ॥ ४

नागजीवाक्यं

भावज संपाडै बैठाह[16], साह हला नै[17] सरवतड़ी ।
चढ़ चोकी ऊभाह, जद[18] साखी च्यार[19] सिदूरका ॥ ५

५. **वार्ता**—तरैं परमलदेजी बोली–नागजी ! जाखड़ा अहीररी बेटी नागवंती, तिणसुं मैं होड़ मारी छै। नागजी रै कुंकुमरा पग पड़ै[20] छै। तरै नागवंती म्हांरी कही वात मांनी नहीं। तरै म्हे कह्यौ–जे नागजीरै कुंकुंरा पग पड़ै तो म्हें थानै नागजीनै परणाय देस्यां[21] अर जे न पड़ै तो थे मोनै परणाय देज्यौ[22]; इसी होड़ मारी छै। तरै नागजी कह्यौ–भाभीजी ! जाखड़ौ नै

---

१. ख. तरैं लुगायां। २. ख. सगळा। ३. ख. परमलदेजी खेत जावै छै। ४. ख. प्रतिमें नहीं है। ५. साथै। ६. ख. बेठांण। ७. ख. उपड़ै। ८. ख. मनुष्यांरै। ९. ख. उपड़्या था। १०. ख. नागजीसूं। ११. ख. कोल। १२. ख. सांपड़ै। १३. ख. साळानै। १४. ख. सरबनड़ी। १५. ख. मभा। १६. ख. सांपडै बैठा साह। १६. ख. सालानै सरबनडी। १७. ख. जद ऊभै। १८. ख. सापारचा। १९. ख. उपडै। २१. ख. देवां। २२. ख. परा दीज्यो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धोळबाळो मांहोमांहि पाघड़ीबदल भाई छै। सु नागवंती म्हारै कांसु लागै। तारै परमलदेजी काई वात मांनै नहीं नै दूजै दिन नागवंतीनै साथै लेनै नागजी कनै आई नै चौपड़रो खेल मांडीयौ। सु नागजी नै नागवंती एकै भीर हुवा अर परमलदेजी नै बडारण एकै भीर हुवा। सु रमतां नागवंतीरो पलो उघड़ गयो, सु पसवाड़ो, पेट, छाती उघाड़ा हो गया[1]। तरै नागजी देखत समां[2] मुरछागत होय पड़ीया[3]। सु कितीक वारनै[4] वले सावचेत हुवा। तरै भोजाईनै कह्यौ–माहनूं नागवंती परणावो। तरै भोजाई बोली–कुंवरजी ! युं तो विवाह हुवै कोई नहीं, नै छानै वींवाह हुसी। सो रजपूतांरा बेटांनै सीख देवो। तरै नागजी दरबार मांड नैं[5] सारा रजपूतांयनै सिरपाव बगसीस करनै[6] सीख दीवी नै कह्यौ–होळी ऊपर वेगा आवजो। सु सारा सिरदार[7] विदा हुवा। पछै भूजाईनैं कह्यौ–तयारी करो[8]। तरै परमलदेजी नागवंतीनुं पूछीयो--कांई खबर छै ? बोल पाऊं। तरै नागवंती कह्यौ--दुरस छै। खेतमें जवार मोटी थी सु डोका ल्यायनै पांणीरी मटकीयां थी, सुं मंगायनै वेह रची[9] वीवाहरी तैयारी कीवी। तरै नागवन्ती कह्यौ–परमलदेजी ! छांनै वीवाह करज्यो। आगै म्हारी सगाई हाकड़ा पढीयारसुं कीवी छै। तरै नागवन्तीनुं परमलदेजी कह्यौ–भली बात। हमै ब्राह्मण[10] वीना तो वीवाह हुवै नहीं। तिणसुं एक ब्राह्मण बाहरलां गांवांरो सहरमैं कण-विरत करणनै आयो[11] थो, बसती मांहे जातो थो। तिणनुं परमलदेजी बोलायनै कह्यौ[12]– तूं वीवाह कराय जांणै छै ? तरै बिरामण कह्यौ–हूं सब जांणूं छूं। ताहरै परमलदेजी दूहो कहै छै--

दूहा– हूं जांणूं तूं जाण, निर[13] तीजो जांणै नहीं।
नागजी तणो पुरांण, तोनुं लिखुं देवजी[14] ॥ ६

६. बात—इसो ब्राह्मणनैं कह्यौ[15]। नागजी नागवंतीनूं परणीया। पछै दूजै दिन आंवतां नागवंती नैं परमलदेजी दोनुं[16] तंबोळीरै पांन लैवण गया, तंबोलीनै हेलो दीयो। तरै तंबोली बाहर आयौ[17]। इणांरै मुख सामो देख मसत हुवो[18], देखतो हीज रह्यो[19]। तद दूहो कहै छै--

---

१. ख. होय गया। २. ख. उघाड़ा देखनै। ३. ख. गया। ४. ख. खिणेकनै। ५. ख. करनै। ६. ख. प्रतिमें नहीं है। ७. ख. प्रतिमें नहीं है। ८. ख. मांहरै विवाहरी त्यारी करो। ६. ख. प्रतिमें नहीं है। १०. ख. बिरामण। ११. ख. जातो। १२. ख. कहीयो। १३. ख. नर। १४. ख. तोनै लेखुं देवता। १५. ख. प्रतिमें नहीं है। १६. ख. दोन्युं। १७. ख. आयनै। १८. ख. इणांरै मुंहडा सांहमो जोवण लागो। १६. ख. प्रतिमें नहीं है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहा सोरठा– **तम्बोली आपो पांन, दोय बीड़ा बाँधे करी ।**
गई तमीणी स्यांन, कांईरे मुख साहमों भणै ॥ ७

तम्बोळी कहै—

सोरठा– **आंख्या आंकस बांण, तांख करे नै तांणीया ।**
न डरै तेण दीवांण, सो माढु नैंणा ही मांणीया ॥ ८

७. **वारता**—तंबोळीरैसुं[1] पान ले तलाव गयां । सुं हमै रात दिन नागवंती नै नागजी खेतमैं ऊंचो मालो छै, जठै बैठा रहै छै, रंगरळीरी वातां करबो करै छै । युं करतां माहरो महीनो आयो । सु खेतरो धान तो धणी ले गया । तरै परमलदेजी कह्यौ—नागजी महाराजकवांर ! हमै गढ़ दाखल हुयजो नहीं तो लोक भरम धरसी नै आ वात छांनी न रहसी । आ वात छांनैरी छै, गुपत राखणनुं ज्युं छै[2] । तरै नागजी कह्यौ--सुंहारे गढ जांवसी[3] । हमै नागजी गढ़ चढ़ै छै नै नागवंती कमर बंधावै छै नै दुहो कहै छै—

दूहा– **कमर बंधावत कुंवरकुं, विरह उलट गयो मोहि ।**
सजन बीछड़ण कब मिलण, काहा जांणें कब होय ॥ ६
हे विधना तोसुं कहूं, एक अरज सुण लेत[4] ।
वीछड़ण अंकंज मेट कर, मिलबैको लिख देत[5] ॥ १०

नागजीवाक्यं—

दूहा– **गोरी हीयो हेठ कर,[6] कर मन धीर करार ।**
सांई हाथ संदेसड़ो, तो मिलसां सो सो वार ॥ ११

८. **वारता**—नागजी कमर बांध हालीयो । तरै नागवंती गळैमैं बांह घाल नै नागजीनुं छातीसुं भीड़नै गल-गली होवण लागी । तरै परमलदेजी कह्यौ[7]—

दूहा– **गोरी बांह छातीयां, नागकुंवर न झुराय[8] ।**
जांणै चंदनं रूंखड़ै, बेल कलुंबी[9] खाय ॥ १२
गोरी दागल् हाथड़ा, नाग कुंवर कर सेल ।
जांणै चंदनं रूंखड़ै, अधर विलंबी वेल ॥ १३

६. **वारता**—परमलदेजी कहै छै–नागवंती अबै तु हंसनै सीख दे ज्युं नागजी गढ़ पधारै । तारै नागवंती कहै छै—

---

१. ख. हिवै । २. ख. प्रतिमें नहीं है । ३. ख. जावसां । ४. ख. लेह । ५. ख. देह
६. ख. हथ करि । ७. ख. कहै छै । ८. ख. नठाय । ६. ख. कलुंबा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहा– **जावो जीमां(भां)[1] ना कहूं, वधो सवाई बट ।**
ऊगड़सी[2] थां आवीयाँ[3], हतां रथां को हट[4] ।। १४
सिधावो नै सिध करो, पूरो मनरी[5] आस ।
तुम जीवकी[6] जांणं नहीं, मो जीव छै तुम पास ।। १५

१०. **वारता**—परमलदेजी कहै[7] (इसो कहै)-वेदल थकी सीख दीवी । नागजी आंबा हेठै घोड़ो बांधो थो[8], सुं घोड़ै असवार हुवो । तारै नागवंती दूहो कहै छै—

दूहा– **सजन दुरजन हुय चले, सयणा सीख करेह ।**
धण विलपंती[9] यूं कहै, आंबा साख भरेह ।। १६

११. **वारता**—नागजी नागवंतीनै कहै छै-तू वारोवार[10] वेदल हुय मती । जे परमेसरजी कीयो तो वैगाही मिलसां । यूं नागवंतीनै धीरज[11] देनै नागजी तो गढ दाखल हुवा नै नागवंती तलहटी दाखल हुई । हमै नागजीरी चेसटा धोलबाळै दीठी । तरै मनमैं जांणी[12] अबै कूंवर निरालो नहीं । तरै नागजीनुं एक खिण[13] बारणै नीकळण न देवे[14] राजा आपरै कनै राखै; नै[15] नागवंतीरै विरह कर दिन-दिन गळतो जावै छै, नै नागवंती नागजीरै विरह कर गळती जाय छै । सु नागवंती आपरा महलां[16] चढै नै झरोखामैं आयनै झांखैं नै दूहो कहै—

सोरठा– **नागजी नगर गयांह, मन-मेल मिलीया[17] नहीं ।**
मिलीया अवर घणांह, ज्यांसुं[18] मन मिलीया[19] नहीं ।। १७

१२. **वारता**—इण तरै सदा[20] झरोखै आवै तरै ओ दूहौ कहै । हिवै नागजी दिन-दिन डीलमैं गळतो जावै । सुं सारां मुलकांरा वैद बुलाया, पिण नागजी चाक न हुवै । तरै राजा सहरमैं पाडो[21] फेरयो--नागजीनै ताजो करै, तिणनै लाखपसाव देवां । सु वैदांनै तो वेदन लाधी नहीं ।

दूहा– **राजा वेद[22] बुलायकै, कुंवर देखाई बांह ।**
वैदां वेदन काल ही, करक कलेजां मांहि ।। १८

---

१. ख. जीभ्यां । २. ख. ऊघरसी । ३. ख. आयांह । ४. हे तीरथांरा हट । ५. ख. मनांरी । ६. ख. जीयकी । ७. ख. प्रतिमें नहीं है । ८. ख. बँधायो । ९. ख. विणपंती । १०. ख. बारंबार । ११. ख. धीरप । १२. ख. घोलवाले मनमें जाणीयो । १३. ख. खिण मात्र पिण । १४. ख. देवै नहीं । १५. नागजी तो । १६ ख. महिलां उपर । १७. ख. मिलीयो । १८. ख. त्यांसु । १९. ख. मिलियो । २०. ख. सदाई । २१ ख. पाडहो । २२. ख. वैद्य ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करक कलेजा मांहि, उकसै पिण निकसै नही ।
गल गया हाड'र मांस, नेह नवलै नागजी ।। १६[1]

१३. **वारता**—इण तरह सदा झरोखै आवै तरै ओ दूहौ कहै । तिसे एक मुसाफर वैद आय नीकल्यो । सुं नागवंतीरै मोहल नींचै[2] झरोखैरी छाया ऊभौ छै । तिकै[3] नागवंती झरोखे आय दूहो कह्यो सुं इण वेद सांभळीयो । तरै वैद विचारीयो जे दीसै छै--इणरै नै कुंवररै प्रीत छै पिण मिलाप[4] न छै[5] । [तरै वैद विचारयो जे दीसै छै—इणरै नेहसुं नागजी][6] गळतो जावै छै तो अबै जायनै हूं इलाज करूं । इसो विचारनै नागवंतीरै महल नीचै डेरो कीयो नै ते [ने]जा रोपीयो । दोढी जाय[7] मालम कराई[8]–नागजीनुं हूं चाक करसुं[9] । तरै राजा वैदनै मांहै बुलायो; नागजीनुं देखायौ[10] । वैद नागजीनुं देख दूहो कह्यौ[11]—

दूहा– **सिसक-सिसक मर-मर जीवै, ऊठत कराह्-कराह् ।**
नयण-बांण घायल कीया, ओषद[12] मूल न थाय[13] ।। २०

वले कहै छै[14]—

प्रीत लगी प्यारी हुती, बाला थई विछेह ।
नोज किणहीनै लागज्यो, कामण हंदो नेह ।। २१
चख सिर खत अदभुत जतन, बधक बैद निज हत्थ ।
उर उरोज भुज अधर रस, सेक पिंड पद पत्थ[15] ।। २२

१४. **वारता** –'इसो वैद विचारयौ'[16] । तरै नागजी वैदनै[17] कह्यौ–आ वात उतांवली कहो मती । नै सवा किरोडरी मुंदडी हाथमैं थी सू वैदनै दीवी । तरै वैद राजानुं कह्यौ–कुंवरजीरो मांचो अलायदो एकांत घालौ[18] । तरै मांचो अलायदो घाल नै वैद पाछो आयनै वले तेजारो काढै छै । इतरै नागवंती झरोखै आयनै दुहो कहै छै—

सोरठा– **नागजी ! तुमीणा नेह, रात-दिवस सालै हीये ।**
किणनै कहीयै तेह, नित-नित सालै नागजी ।। २३
नागजी समो न कोय, नगर सारो ही निरखीयो ।
नयण गुमाया रोय, नेह तुमीणै नागजी ! ।। २४

---

१. यह सोरठा 'ख' प्रतिमें नहीं है । २. ख. प्रतिमें नहीं है । ३. ख. जितरै । ४. ख. मिलापण । ५. ख. न हुवो छै । ६. [—] ख. प्रतिमें नहीं है । ७. ख. जायनै । ८. ख. करायो । ९. ख. करस्यूं । १०. ख. दिखायो । ११. ख. कहै छै । १२. ख. नैणां । १३. ख. ओषध । १४. ख. थाह । १५. ख. प्रतिमें नहीं है । १६. ख. प्रतिमें यह दूहा नहीं है । १७. '—' ख. प्रतिमें नहीं है । १८. ख. बैदनूं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोरठा– **नागजी तणै सरीर, क्या जांणु वेदन किसी ।**
इसो न कोई वीर, जिणनै पूछु नागजी ॥ २५

तरै वैद दूहा कह्या, सुणनै कहै छै—

दूहा– **कुच कर ओखद भुजपटी, अहैरपती दे ताव ।**
उन नयनके घावकूं, ओखद[1] एह लगाव ॥ २६

१५. **वारता–** वैद बोलीयो—हे नागवंती ! आज ढोलीयो हूं एकांयत अलायदो[2] घलाय आयो छुं, सुं थे नागजी कनै जाज्यो; [थांहरो मनोरथ सरसी][3] ।

तद नागवंतीरै गलै मांहे सवा कोड़रो हार थौ, सु काढनै ऊपरांसु नांखीयो । सु वैदरा खोला मांहे आय पड़ीयो । सु वैद तो चढनै वहीर हूवो । हमै होळीयांरा दिन था । सु गढमैं गेहर वाजै छै, 'गेहरीया रमै छै[4]' । सु उठासुं नागजी हाथमै सेल लेनै ओ ताक आय ऊभा छै । तिसै नागवन्ती आपरी मांनै कह्यौ—थे कहो तो गढमैं गेहर वाजै छै, सु जायनै देख आऊं । तरै माता कह्यो—जावो । तरै नागवन्ती सातवीसी सहेल्यांसु गढ़में आई । आगै धोल-बाळो नै जाखड़ो दरबार मांडीयां[5] बैठा छै । बड़ा बड़ा उमराव मुसदी[6] बैठा छै; मोटीयार डांड़ीयां[7] रमै छै[8] ; गेहर अवल वाजै छै । सुं नागवन्ती तो नागजी रै वासतै आई, सु सारी गेहरमैं फिरी । पिण नागजीनै दीठा नहीं । तरै दुहो कहै छै—

दुहा– **ढोल दड़ूकै[9] तन दहै, गेहरीया नांचंत ।**
चालो सखी सहेलड़ां[10], कठै न दीसै कंत ॥ २७

१६. **वार्ता–** तरै एक वडारण जांणीयो—आ[11] नागजीरै वास्ते आई छै । ईसो जाणनै वडारण फिरती फिरती नागजीनै देख आई नै नागवंतीनै दूहो कहै छै—

दूहा– **सेल भळूका[12] कर रह्यो, माठू(ढू)ड़ा घूमंत ।**
आवो सखी सहेलड़ां, आज मिलाऊं कंत ॥ २८

१७. **वारता–** तरै वडारणरै माथैमै नागवन्ती देनै[13] छानैसै पचास रुपीया दीया, तिवारे वडारण कह्यौ—एक वले ही देवो पिण हालो । तरै नागवन्ती

---

१. ख. ओषध । २. ख. इलायधो । ३. [–] ख. प्रतिमें नहीं है । ४. '–' ख. प्रतिमें नहीं है । ५. ख. कीयां । ६. ख. मुतसदी । ७. ख. गैर । ८. ख. रम रह्या छै । ९. ख. धड़ूकै । १०. ख. सहेलड़ो । ११. ख. प्रति में नहीं । १२. ख. भलूक्का । १३. ख. दीनी ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चाली सु' नागजी कनै गई; जायनै मुजरो करनै दूहो कहै छै—

सोरठा— **साजनीयांसूं प्यार, कठै वसो दीसौ नहीं।**
मिलता सो सो वार, नैणां ही सांसो पड़्यौ[1] ।। २९

वले कहे छै—

सांमा मिलीया सैण, सेरीमैं सांमा भला।
उवे तुमीणा वैण, नहचैं निरवाया नहीं ।। ३०

नागजीवाक्यम्—

अमीणों तुम पास, तुमहीणो[2] जाण्' नहीं।
विवरो होसी वास, वास[3] न विवरो साजनां ।। ३१

१८. वारता— नागजी नै नागवंती दोनु' भेळा मिल महले आयनै सेझ ऊपर भेळा सोह्या[4] रह्या, नींद आय गई। ईतरां मांहे जाखडै धोलवाळैनु' कह्यौ—हालो तो नागजीरी खबर ल्यांवां; कांई ठीक छै ? तद दोनु' सिरदार[5] नागजीरै महल आया सो धोलबाळै दोनु'[6] जणानै सूता दीठा। तरै तरवार काढ वाहण लागो। तरै जाखड़ै पकड़लीयो नै दुहो कह्यौ—

सोरठा— **धवला बाल न वाढ, नागरवेल न चढीयै[7] ।**
'चंपै वली चाढ[8]', फूल विलंब्यो भंवरलो ।। ३२

१९ वारता— अबै धोळबाळौ नै जाखड़ो पाछा आया। जितरै नागवंती जागी। नागजीसु' सीख कर तलहटी आई नै नागजी सूता छै। अबै परभाते[9] नागजी जागीयो। सु नागवंतीरै विजोगसु' वेचाक थो। सु नागवंतीरो तो मिलाप हुवो तद चाक हुवो। अबै नागजी उठ दरबार आयो। आगै धोलबाळो नै जाखड़ो बैठा छै, तठै आय मुजरो कीयो। सु इणरो तो नीचो हुवण हुवो नै धोलवाळै कनै सेल[10] थो, सु नागजी ऊपर वाह्यौ। सु नागजीरै ऊपर कर नीकळ गयो 'सु सेल धरती पड़्यौ[11] ।' तरै नागजी विचारयौ—करूं कांई, बाप छै, नहींतर तो मार नांखु। तरै कांमदारानु' धोलबाळै कह्यौ—नागजीनु' देसोटो देवो। अनै जाखड़ानु' कह्यौ—म्हे नागजीनु' देसोटो देवां छां। थे आछो दिन लगन साहो देखनै नागवंतीनु' परणाय देवो। तरै जाखड़ै कह्यौ—हाकडै पढीयारसु' सगाई कीवी छै। तारै ब्राह्मणनु[12] बोलायनै सांढीयो मेल्यौ नै

१. ख. सांसा पडचा। २. ख. तुमीणो। ३. ख. सांस। ४. ख. सोय। ५. ख. प्रति में नहीं। ६. ख. दोऊं। ७. ख. वढीयै। ८. '–' ख. वेलो न चाढ। ९. ख. प्रभातै। १०. ख. सेलड़ो। ११. '–' ख. प्रति में नहीं है। १२. 'बिरामण कनै साहो सुझायो सु दिन तीन रो साहो ठहरायो' इतना पाठ 'ख' में अधिक है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लिखीयो—जे दिन तीन मांहे आया तो वीहा[1] थांहरो छै। अनै अठै नागजी नै देसोटो देवै छै। नै नागवंतीरो वीहा मंडीयो छै। अबै नागजी जातो थको भोजाईरे महलां नीचै कर नीकळै छै। नीकळतो दूहो कहै छै—

सोरठा- **भावज भणु जुहार, सयणांनु संदेसडा।**
वै तुमीणा वोहार, जीव्या जितैही मांणीया।। ३३

तरै भोजाई दूहो कहै छै—

सोरठा- **कुंकुं वरणी देह, टीको[2] काजलीयां थई।**
एह तुमीणा[3] नेह, 'सू नित मेलो[4]' नागजी।। ३६

२०. **वारता**- भोजाई कह्यौ—देवरजी ! दिन तीन तो[5] वागमैं रह्ज्यो; नागवंतीनै हूं थांस्यु मिलावस्यु। तरै नागजी कह्यो—दिन तीन तो थांहरै कहै वाट जोऊं छुं, पछै परो हालस्युं। इसो कहनै नागजी वागनु चालीयो[6]। तिसै नागवंतीनै खबर हुई-अस[7] नागजीनु रातरौ देसोटो हुवो, सु परभातै चढ गयौ। तरै नागवंती दूहो कहै छै[8]।

सोरठा- **नागा खायजो नाग, काळा करड़ै[9] मांहलो।**
मूंवो न मिलज्यो आग, जांवतड़ै जगाई नहीं।। ३५

२१ **वारता**- अबै नागवंतीरै वींहारी[10] तयारी छै। तिणसु नागवन्ती चिन्ता करै छै। 'मनमें कहे छे[11]' हूं तो एक वार परण चुकी, वले[12] परणावै छै। इतरै तांई जाय हाकड़ानै खबर दीवी। परभातरो वखत थो। जागनै महलसु उतरतो थो। तिसै राईकै जाय खबर दीवी। कागळ[13] वांचनै तुरत घोड़ै चढ़ चालीयो नै उमरावांनै चाकरांनै कह्यौ-मांहरी जांन वणायनै वागड़रै देस[14] आय मोसु मिलज्यो[15]। यु कहनै चढीयो सु आयो सु आगै वीहारी तयारी करै छै। तरै नागवंती आपरी मानै कह्यौ-मैं परमलदेजीनै कह्यौ थो जे माहरो वीहा हूसी तारै थांनै नैतीहार[16] बोलायसां[17]; तिणसु परमलदेजीनै बुलावो। तरै माता वडारणनै कह्यौ[18]-तूं[19] जायनें कहे-थांनु बोलावै [छै तरै बडारण जाय परमलदेजी नु कह्यौ][20] तरै परमलदेजी कह्यौ—संपाड़ौ कर[21] आवस्यां। एम[22] कहनै मनमैं विचारीयो-जे नागजीनुं लीयां जाऊं

---

१. ख. वीवाह। २. ख. कीकी (?) ३. ख. तमींणों। ४. '–' ख. नित नित नवेलो। ५. ख. ताईं। ६. ख. चालीया। ७. ख. जे। ८. ख. नागवतीवाक्यम्। ९. ख. किरंड्या। १० ख. बिबाहरी। ११. ख. '–' प्रति में नहीं है। १२. ख. नै वलै दुसरी बेला। १३. ख. कागद। १४. ख. मुलक। १५. ख. सामल होज्यो। १६. ख. न्यूंतार। १७. ख. बुलावस्यां। १८. ख. मेली। १९. ख. सु। २०. ख. [–] प्रति में नहीं है। २१ ख. करनें। २२. ख. इम।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तो भली वात[1] छै। तिसै नागजीरो खवास उभो थो, तिणनुं परमलदेजी कह्यौ–तूं वागमैं जायनै नागजीनुं बोलाय ल्याव[2]। तरै खवास जाय[3] बोलाय[4] ल्यायो। तरै नागजीनै असत्रीरो रूप[5] करायनै साथे लीयो।

तिसें धोळवाळै जाखड़ानुं कह्यौ—जिणरो नांव नागजी छै, सु विनां आयो[6] रहसी नहीं, अनै मेह अंधारी रात छै। तिणसुं सहर बाहरली चौकी हूं देऊं छुं नै सहर मांहली चौकी थे देज्यो[7] नै सात पोळ छै, जठै[8] चौकी राखज्यो[9] नै मांहली पोळ एक आंधो पोलीयो छै तिणनै बेसांल्यो[10]। उणरो हीयो देखतांसुं सवाय छै। इण तरै सरब जाबतो करनै धोलवालो तो चोकी देवण सारू चढीयो नै परमलदेजी सातवीसी सहेल्यांनै लेनै चाली। नै मोहरा पचास कनै राखी सु सहरनै जातो[11] जाखड़ो मिलीयो। तरै जाखड़ै पूछीयो—थे कुण छो नै कठै जावो छो ? तरै सहेली[12] कह्यौ—परमलदेजी नागवंतीरै वींहा[13] जाय छै। तरै जाखड़ै कह्यौ—दुरस छै पिण जावतो राखज्यो, नागजी आवण पावै नहीं। अबै इसी तरै छव प्रोल[14] तो गया नें सातड़ी[15] प्रोल गया तरै आंधे कह्यौ—बायां ! थां मांहे मरदरो पग वाजै छै, हूं जांवण देसुं नहीं। तरै बडारण बोली—अठै मरद कठै छै। तरै प्रोलीयै कह्यौ—भलां, मांहरै हाथ ऊपर हाथ दे जावो। तरै [वडारण दूहो कहै छै][16] —

दूहा– **पापी बैठो प्रोलीयौ[17], कूडा इलम[18] लगाय[19]।**
निलाडांरी फुट गई, पिण हिवड़ांरी वी जाय ॥ ३६

२२. **वारता**—तरै प्रोलीयै कह्यौ –हरगज जांवणं देऊं नहीं, हाथां मैं ताळी देनै जावो। जद सगळीयां हाथ दीयो नें नागजी हाथ ताळी दीवी। जठै[20] हाथ पकड़ीयो[21]। तरै परमलदेजी पाछी फिरनै कह्यौ—स्याबास छै तोनै पोळीया। इसो कहनै मोहर पचास पकड़ाय दीवी। तरै प्रोलीयै कह्यौ—पांच वले ही ले जावो। अबै परमलदेजी मांहे गया। आगै देखे तो नागवंती चंवरी मांहे हथलेवो जोडीयां बैठा छै। तिसे परमलदेजीरै मुंहडा सांमो देखै नै कहै छै—

---

१. ख. भलां। २. ख. लाव। ३. ख. प्रति में नहीं। ४. ख. बुलाय। ५. ख. वेस। ६. ख. आयां। ७. ख. देवो। ८. ख. तठै। ९. ख. राखो। १०. ख. बैसांणो। ११. ख. जातां। १२. ख. सहेलीयां। १३. ख. विवाह। १४. ख. पोळ। १५. ख. सातमी। १६. ख. परमलदेजीवाक्यम्। १७. ख. पोळिया। १८. ख. कलंक। १९. ख. म लाय। २०. ख. तठै। २१. ख. पकड़लीयो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोरठो– **नागड़ा निरखु देस, एरंड थाणों थपीयो ।**
हंसा गया विदेस, बुगलहिसु बोलणों ।। ३७

परमलदेजीवाक्यम्[1]—

भांमण भूल न[2] बोल, भंवरो केतकीयां रमैं[3] ।
जांण मजीठां[4] चोल, रंग न छोड़ै राजीयो ।। ३८

२३. **वारता**– अबै परमलदेजी कहै छै—नागजी ! थे मोह[5] कनै उभा रह्यौ[6] नैं जे नागवंती कनै जावो तो या[7] डावड़ी लूण उतारै छै, तठै जायनै थे थाळी उरी लेनैं लूण उतारण लागज्यो[8] । तरै नागजी जायनै थाळ उरो लीयो नै नागवंती ऊपर लूण उतारण लागो । नै आंख्या आंसुवे भरांणी नें आंसु पड़ीयो सु नागवंती रै खवै लागो । तरै नागवंती ऊंचो जोयो, सु देखे तो नागजी छै । तरै नागवंती कह्यौ—राज ! बागमैं रहज्यौ; हूं हथळेवो छुड़ायनै तुरत आवुं छुं ।

नागवंतीवाक्यं[9]

सोरठा– **टिपां टिप[10] टपीयांह, विण वादल बुछुटीयां[11] ।**
आंख्यां आभ थयांह, नेह तुमीणै नागजी ! ।। ३९

तरै सहेल्यां कह्यौ[12]—

सोरठा– **वण्यो त्रिया को[13] वेस, आवत दीठो कुंवरजी ।**
जातो दुनीया देख, नाटक कर गयो नागजी ।। ४०

२४. **वारता**– हमै नागजी तो बाग मांहे[14] गयो । उठै हीज खेत मैं बाग छै, तिणमैं मालो थो, तिण ऊपर नागजी जाय बैठो नै लारै नागवंती चवरी मांहे[15] सुं ऊठी नै मानै कह्यौ—मांहरो तो माथो दूखै छै सु हूं तो रंगसालमैं[16] जाय सोऊं छुं, मोनै कोई वतलाज्यो मती । इसों कहनै[17] पोसाक पैहरियां थकां ईज बागनुं चाली सु आधी रातरै समैं एकली[18] जावै छै । सु एक [गुणवंत बुधवंत[19]] माहातमारी पोसाल छै, तिणरै आगै हुय नीकळी । [तारै चेलौ गुरुजी नुं कहै छै][20]—

---

१. ख. प्रति में नहीं । २. ख. म । ३. ख. भमैं । ४. ख. मजीठो । ५. ख. मो । ६. ख. रहो । ७. ख. उ वा । ८. ख. लाग जाज्यो । ९. ख. प्रतिमें नहीं । १०. ख. टप । ११. ख. बिछुटीयां । १२. ख. इतरी बात करनें नागजी बाग जावण लागो तरै बलै सहेली कह्यौ । १३. ख. कै । १४. ख. में । १५. ख. बैठी थी । १६. ख. रंग महल । १७. ख. कहीनै । १८. ख. इकेली चाली । १९. [–] ख. प्रतिमें नहीं है । २०. [–] ख. प्रतिमें नहीं है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहा– रिम भिम[1] पायल[2] घूघरा, मोती मांग[3] सवार[4] ।
आधे समैइयै रैणकै, गुरजी कहां चली उवा[5] नार ॥ ४१

तरै गुरुजी दूहो कहै छै[6]—

दूहा– कांन घड्यां वले सोवना[7], नक सोनारी नाथ[8] ।
प्यारी प्रीतमपै चली, रमण सेझ रंग रात[9] ॥ ४२
बेलड़ी, तिलड़ी, पंचलड़ी, ज्यां सिर वेणी म्हेल[10] ।
चेलै दीठी गोरड़ी, सु दीधा पुसकत[11] मेल ॥ ४३

गुरुजी कहै—

दूहा– चेला पुसतक भल करी[12], कहा पूछत है वात ।
इण नगरीकी डगरमैं, एक[13] आवत एक जात ॥ ४४

चेलो दूहो कहै छै—

रहो रहो गुरजी मूढ[14] कर, कहा सिखावत मोय ।
सत[15] सूते इण नगर के, जागत विरला कोय ॥ ४५

२५. वारता– नागवंती सहर[16] सु बारै नीकळी[17]. मेंह अंधारी रात छै सु हाथ नै हाथ सूझै न छै[18] । तिण समै नगर बारै डूमांरो घर थो, तठै आई तरै दूहो कहै छै—

सोरठा– साली सूनो ढोर[19] बाली मैं वरजु घणी ।
अठै अमीणो चोर, जुगमें जाणी तल थयो ॥ ४६

२६. वारता– उठांसु आघी हाली । सू एक बिरांमणरो घर थो जठै आय नीकळी । बिरामण जाणो—डाकण छै, कै देवी छै, सु उठ नै भागो । तरै नागवंती कहै छै—

सोरठा– नां भरड़ो नां भूत, म्हे दुखी मांणस हुय आवीया ।
अठै अमाणो कंत[20], नारी-कुंजर नागजी ॥ ४७
डाकण नहीं गिवार, सिहारी हुंती नहीं ।
गलती मांझल रात, खरी सिहारी हुय रही ॥ ४८

---

१. ख. रिमझिमीयां । २. ख. पाय । ३. ख. मांगमें । ४. ख. सार । ५. ख. प्रतिमें नहीं है । ६. ख. प्रतिमें नहीं है । ७. ख. सोवन्यां । ८. ख. नथ । ९. ख. रत । १०. ख. वणी हमेल । ११. ख. पुसतक । १२. ख. मेल कर । १३. ख. इक । १४. ख. मुठ । १५. ख. सब । १६. ख. सेर । १७. ख. निसरी । १८. ख. कोई नहीं । १९. ख. बेस । २०. ख. सूत ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तरै बिरामण दूहो कहै छै[1] —

सोरठा– सूतो सुख भर नींद, सूतैनै[2] सुपनो थयो ।
ऐ रख नागो वींद, सुखरो मल् थो खेत मैं[3] ।। ४९

२७. वारता– हमै उठासु आघी हाली, सू रात इसी मिली सु लिगार मात्र सूझै कोई नहीं । तरै वीजळीरे झाबकासूं[4] आघी जाय छै । तिसै मेह् गाजीयो ।

[तरै दूहो कहै छै][5]

दूहा– ऊंडो गाजै ऊतरा[6], ऊंची[7] बीज खिवेह् ।
ज्युं ज्युं सरवणे[8] संभलु, त्युं त्युं कंपै देह ।। ५०

२८. वारता–उठासुं आघी हाली सुं तलाव आई । तलावरो पांणी हिलोळा खाय रह्यौ छै । पीपळरा पांन बाजै छै । तरै नागवंती कहै छै—

दूहा– पीपल पांन'ज रुणझणै, नीर हिलोला लेह् ।
ज्युं ज्युं श्रवणे संभलुं, त्युं त्युं कंपै देह ।। ५१

२९. वारता– [उठांसुं आघी हाली । सु तळाव आइ आगै जाय][9] इसो कहनै हेला मारीया[10]—हो नागजी महाराजकुंवार ! कठैई नैड़ा हुवै तो बोलज्यो; हमै हूं डरूं छुं । इसो कहि आघी हाली सुं आंबां नीचै आई ।

[तरै दूहो कहै छै][11]

दूहा– सजन आंबा मोरीया, आई आस करेह् ।
ज्युं ज्युं श्रवणे संभलुं, त्युं त्युं कंपै देह ।। ५२

सु देख वागमै आई । तरै दूहो कहै छै—

दूहा– आंबो, मरवो, केवड़ो, केतकीयां अर[12] जाय ।
सदा सुरंगो चंपलो, आज विरंगो काय ।। ५३

[वलै कहै छै][13] —

सजन चंदन बांवनै, अै रू कूका रेह् ।
ज्युं ज्युं श्रवणे संभलूं, त्युं त्युं कंपै देह ।। ५४

३०. वारता– इसो कहिनै वले हेलो मारीयो । हो नागजी ! हमै तो बोलो । हूं घणी[14] डरूं छुं ।

---

१. ख. प्रतिमें नहीं है । २. ख. सूतांनै । ३. ख. नैं । ४. ख. झबतकार । ५. [–] ख. में नहीं है । ६. ख. उतराध । ७.ख. ऊंची ऊंची । ८. ख. श्रवणे । ९. [–] ख. प्रतिमें नहीं है । १०. ख. हेलो दीयो । ११. [–] ख. प्रतिमें नहीं है । १२. ख. अरु । १३. [–] ख. प्रतिमें नहीं है । १४. ख. प्रतिमें नहीं है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोरठा– सेवा सेहतडांह[1], मांनव काय मांनै नहीं ।
पाथर पूजतडांह, निरफल थई हो नागजी ।। ५५
सूतौ सवड घरेह, विव[2] पिछोड़े पिंडरा ।
सादो साद न देह, 'आवि वले ओ'[3] नागजी ! ।। ५६

३१. वारता– अबै नागवंती घणा खाला-वाहला उलांघती जावै छै। पाहड़ांमै सींह गाज रह्या छै;[4] बादळा झुक रह्या छै; बीजां झबक रह्या छै; मोर कुहका करै छै; रात महाभयंकर वण रही छै; मेह छोटी बूंदां पड रह्यो छै, पवन पिण बाजै छै; तिण समै नागवंती सनेहरी बांधी थकी घणां दुखांसूं माला तांई आय पोहती नै आगै नागजी मालै जाय बैठो थो सु नागवंतीरी घणी बाट जोई, पिण आई नहीं तरै विरहरै मारीयै कलेजारी कटारी मार सुय रह्यो। तिसैं नागवंती आई। मालै चढी देखै तो नागजी सूतो छै, तरै कनै जाय बैठी नै दूहो कहै छै—

दूहा– नागड़ा नींद निवार, हूं आई हेजालुई ।
ऊठो राजकंवार, नींद निवारो नागजी ।। ५७
नागड़ा सूतो खूंटी तांण, बतलायां बोलै नहीं ।
कदेक पड़सी कांम, नोहरा करस्यो नागजी ।। ५८[5]

३२. वारता– इसो कहिनै पछेवडो उपरासूं परो कीयो, देखै तो कटारी कालिजै थिरक रही छै सु देखनै नागवंती कहै छै—

सोरठा– कटारी कुनार, लोहाली लाजी नहीं ।
आजूणी अधरात, नागण गिल[6] बैठी नागजी ।। ५९[7]

दूहा– जा जोबन अर जीव जा, जा पांणेचा नैण ।
नागो सयण गमाय कर, रहो किसा सुख लैण ।। ६०

---

१. ख. सेवतडांह । २. ख. पीव । ३. '–' ख. आज निहेजो । ४. ख. प्रतिमें इतना विशेष है।—'पाणीरा खंडताल पड़ रह्या छै, निस अंधारी रात छै, दादुर सोर कर रह्या छै बीजळियांरा झबतकार होय रह्या छै, मोर झिगोर कर रह्या छै।' ५. ख. यह सोरठा 'ख' प्रतिमें नहीं है । ६. ख. हूं निगलज । ७. ख. प्रतिमें निम्न सोरठा विशेष है—

'कटारी कुनारि, लोहारी लाजो नहीं ।
नागतणै घट मांहि, बाढा नींबू ही भलो ।।
बाला बिलबिलतांह, ऊतर को आयो नहीं ।
कदे काम पडीयांह, निहुरा करस्यो नागजी ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहा– कुच जा भुज जा अहर जा, तन धन जोवन जाह।
नागो संयण गमाइयो, अब[1] रहि'र करसी काह ।। ६१

सोरठा– जाय'जसी जुग छेह, पाछा[2] आय जासी नहीं।
नालां[3] विच बैसेह[4], वले न वातां कीजसी ।। ६२

दूहा– जान[5] मांणी रतड़ी, ते न लाई[6] वार।
अमां विछोहो तें कीयो, तो करज्यो भरतार[7] ।। ६३

सोरठा– नागड़ा नवलो नेह, जिण तिणसु कीजै नहीं।
लीजै परायो[8] छेह, आपणो[9] दीजै नहीं ।। ६४
नागड़ा नवलो नेह, नोज किणहीसुं लागजो।
जलै सुरंगी देह, धुखै न धुंवो नीसरै ।। ६५
नागा नागरवेल, गूढ स गूढी उषणी।
क्युंहीक मोंनुं रांख, वरतण जोगी बालहा ।। ६६
डूंगर केरा बादळा,[10] ओछां तणे सनेह।
वहता वहै उंतावला, झटक देखावै छेह ।। ६७

सोरठा– तूं ही रावल हीर, मोट सूता मिलसी घणा।
तूं पाटण पट चीर, नारी कुंजर नागजी ।। ६८
इम कहीया बहु वैण, नैण झरै आंसु घणा।
तो सिरखा[11] मो सैण, वले न मिलसी नागजी ।। ६९

३३. वार्ता– इसी तरै बैठी विलाप करै छै। तिसै धोळबाळो चोकी फिरतो आय नीकळचो। नागवंतीरो बोल सांभलीयो तरै नैड़ो आयो, मालै ऊपर चढीयो। देखै तो नागजी मूवो पड़ीयो छै नै नागवंती कनै बैठी विलापात करै छै। तरै धोलबालै कह्यौ–नागवन्ती नींचै ऊतरो।

[तरै नागवंती कहै छै][12]

सोरठा– चढती चड बड तार[13], उतरंतां आंटा पड़ै।
[आ जूणी अध रात][14], हूं निगल बैठी नागजी ।। ७०
सुसराजी सो वार, सयण घणांई संपजै।
पिण न मिलै दूजी वार, नाग सरीखो नाहलो ।। ७१

---

१. ख. हिव। २. ख. इठै। ३. ख. बाला। ४. ख. बिब। ५. ख. जानीं। ६. ख. लगाई। ७. ख. किरतार। ८. ख. परनों। ९. ख. आपणपो। १०. ख. बाहला। ११. ख. सरीखा। १२. ख. प्रतिमें नहीं है। १३. ख. बार। १४. ख. बहै तमीणो बाल।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३४. **वारता**– इसौ कह्यौ तरै धोळबाळो लजखांणो पड़ीयो नै नीचो उतरीयो । मनमैं विचारीयो जे रात तो थोड़ी श्राय रही छै नै श्रा ऊतरै नहीं । परभात होय जासी तो वात श्राछी लागसी नहीं । तरै सहरमैं श्रोठी मेलनै जाखड़ानु बुलायो । नै सारी हकीकत कही । तरै जाखड़ै कह्यौ—नीची उतर । तरै नीची ऊतरी । तरै दूहो कहै छै—

सोरठा– **श्राईयो श्राढा लाह, गाज्यो न धड़ुक्यो नहीं ।**
बूढो वाढा लाह, निगुणी भुंय पर नागजी ।। ७२[1]

३५ **वारता**– जितरै नागवन्ती घरांनै चाली । श्रठै नागजीरै चलावारी तयारी करै छै । काठ भेळो करै छै । नै धोलवालो दुहो कहै छै—

सोरठा– **नागड़ा नव खंडेह, सगपण घणांई तेडीयै[2] ।**
भुय[3] ऊपर भुंवतांह[4] , मिलतां हो मरजै नहीं ।। ७३

३६. **वारता**– नागवंती पीहरसु हाली, सु नागजीरी श्रारोगी कनै श्राय नीसरी । सु धोळबाळो दूहो कहै छै—

सोरठा– **ऊंडै पड़वै पैस, पिवसु पैजां मारती ।**
सु मांणसीया एह, घूंघै लागा धोलउत ।। ७४

नागवंती सुण नै कहै छै—

सोरठा– **ऊपरवाड़ै श्रहीर, रह रह चावा[5] डांभतो ।**
सालै मांय सरीर, सु नित नवेला नागजी ।। ७५
चुड़लो चोरां एह, मोल मुहंगै श्रांणीयो ।
नांखूनीं झाडेह, भव पैलासु पाइयौ[6] ।। ७६
कलमैंको कुंभार, माटीरो मेलो करै ।[7]
चाक चढावणहार, कोई नवो निपावै नागजी ।। ७७
'कुलमैं दोय कुंभार'[8], वांसोलो नै वींभणी ।
जे हुं हुंतो सुथार, नवो 'घड़ लेवत'[9] नागजी ।। ७८

---

१. ख. प्रतिमें—'श्रईयो श्रासाढाह, गाजीनै धड़ूकियौ ।
बूढो बाढालाह, निगुणी भूई सिर नागजी ।।
२. ख. घणां हा तोडिये । ३. ख. भव । ४. ख. भमतांह । ५. ख. चम्बा । ६. ख. पाछव्या । ७. ख. प्रतिमें एक सोरठा विशेष है—
'कळमैं को कुंभार, माटीरो मेळो करै ।
जे हूं हुंतो कुंमार, तो चाक उतारूं नागजी ।।
७ '–' ख. कळमें दोय श्राधार । ८ '–' ख. घडेलूं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३७. **वारता**– नागजीरी आरोगी चिणे छै, लांपो देवणरी तयारी छै। जितरै [नागवंतीरो रथ बराबर कनै आरोगीरै आय][1] नीसरीयो[2] । तरै देखनै रथरै खड़ैती[3]नै पूछीयो, जुहारीरा नाळेर कितरायक आया छै ? तरै खडेती[4] नारेल देखाया तिण मांहेसुं नालेर एक ले नै रथसुं नीची ऊतरनै आरोगी कनै आई। नागजीनुं खोळमैं ले बैठी। तरै सारा देखता रह्या नै कह्यौ, नागवंती ओ कांई। तरै नागवंती कह्यौ, म्हारै ठेठरो ओ भरतार छै। तरै लोकां घणीं ही समझाई। पिण आ मानै नहीं। तरै जान तो परी गई। अनै जाखड़ो अहीर धोलबाळौ सारो साथ लेनै सहरमें गया। नागवंती आपरी रथीरै आग[5] लगाय मांहे जाय बैठी। जितरै श्रीमहादेवजी नै पारबतीजी आय नीसरचा। तारै पारबती कह्यौ, महाराज ओ कांसू बलै छै। तरै महादेवजी कह्यौ– आ नागवंती नागजीरै लारै बळै छै। तरै पारबती कह्यौ– महाराज नागवंती तो आपांरी घणी चाकरी[6] सेवा करी छै, सो[7] इणरो सुहाग अखी राखो। तरै महादेवजी ततकाल अगन 'बुझाव दीवी'[8] नै नागवन्तीनुं कह्यौ– तूं बळ मती, इणनै म्हे जीवतो करस्यां। इसो कहनै अमीरो छांटो घालीयो। तरै नागजी उठ बैठा हुवा। नागवन्ती, नागजी महादेवजीरै पाए[9] लागा। पारबती आसीस दीवी– थांहरो सुहाग अखी रहो। अबै नागवंती नै नागजी सहरमैं आया।

दूहा– **मूवा मुसांण गयाह, नागवंती नै नागजी।**
कलमैं अखी कयाह, महादेव अर पारबती॥ ७९
प्रोत निवाहण अवतरचा, कलमें अखी थयाह।
सिव उमया प्रसाद कर, चिरंजीव रहियाह॥ ८०[10]
जो याकौं गावै सुणे, विरहै टळै ततकाल।
नितप्रतरो आंनंद रहै, कदे न होत जंजाल॥ ८१[11]

इति श्रीनागजी-नागवंतीरी वात सम्पूर्ण[12]।

---

१. [–] ख. प्रतिमें नहीं है। २. ख. नीसरी। ३. ख. सामड़दी। ४. ख. सागदड़ी। ५. ख. अगन। ६. ख. सेवा। ७. ख. तिणसूं। ८. ख. बुझाई। ९. ख. पगे। १०-११ ख. प्रतिमें ये दोनों दूहे अप्राप्त हैं।

१२. ख. इति श्रीनागवंती नै नागजीरी वात सम्पूर्णम्।

संवत् १८५२ वर्षे मिति आसाढ वदि ७ भोमवारे लपिकृतं पं० केसरविजेन विकंपुर-मध्ये कोचर मुनि छुमणजी पठनार्थे॥ श्रीरस्तु कल्याणमस्तु॥१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

* श्रीः *

बात दरजी मयारामकी

[अथ श्रीमयाराम दरजीरी वात लिख्यते]

बरवै– बंदू नंद गवरिया, गुनपत देव ।
दीजै भेद अछरिया, करहूं सेव ।। १

दोहा– आसै डाबीरी अगै, वारठ आसै बात ।
जग जांणी जोडी जकां, पढै अजे लग पात ।। २
कवीयण नै सिधांणनै, जोडै कहै परत ।
अमर करै औ आंषरा, कवि कथ अमर करत ।। ३

नीसांणी– ऊकतां डं(ऊं)डी ऊमदा जुगतां हुं जांणां ।
उकतां जुगतां आणीयां, विरला सम जाणां ।।
आषर सूधा ऊमदा ग्रहणा सोनांणा ।
कंठ कथीरा काठका दन थोडा जांणां ।।
पहसर आषर पाधरा वापार पडांणां ।
पाधरसला दुहडा के दोहर हांणां ।।
बैठा कीकर सो बुधा कव उदम करांणां ।
मांणीगर म्यारांमकी धर वात धरांणां ।।
मालम होसी मेदनी राणां सुरतांणां ।
आडा पडसी दोहडा जद केहा जांणां ।। ४

दोहा– आबूगिर अछ(च)लेसरी, सिध दोय करता सेव ।
चेला नांमै चतुर रिष, गुरकौ नांम गंगेव ।। ५
सत त्रेता द्वापुर समै, कीधी तपस्या कोड ।
इंद्रायण नै अपच[स]रां, जितै रही कर जोड ।। ६

१. **वारता**– आबू मांथै दोय रषेस्वर तपस्या करै । सो गुरकौ तौ नांम गंगेव रिष, चेलाकौ नांम चतुर रिष । सतजुग, द्वापरजुग नै त्रेताजुग, तीन ही जुग रषेसर तपस्या करबौ कीधा । जतै एक तौ इंद्रायणी नै आठ अपच(छ)रा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वैकुंठसूं आय नै रषांनै जीमाड नै ग्यांनचरचा सुणनै दहुं वषत वैकुंठ जाती। हमै कलजग आयौ नै कलजुगरौ पवन लागेवा ढूकौ। जद रषां ईद्रांणीनै अर आठ ही अपछरांनै कह्यौ–हमै मे देहां दूजी धारसां; कलजुगमैं अण देहां नहीं रहसां। सो इंद्रायण ! थै नै आठ ही अपचरां मारी विंदगी घणी कीधी; सो थे वर मांगौ सौ थांनै मे वर दे नै गुर-चेलौ अलोप होसां।

रिषां वायक—

दुहौ– कलजुगरो मांनै कहर, विजनस लागै वाव।
रिषां कह्यौ अण देहरौ, परत करां पलटाव ॥ ७
नर-पुरमै रहसां नहीं, वससां सुर-पुरवास।
मांग इद्रायण ! वर मुषां, अब तौ पूरां आस ॥ ८
इंद्रायण मुष आषीयौ, औ वर मांगां आज।
नर-पुर मांहे नेहसूं, मो परणौ माहाराज ! ॥ ९
आया वचनांमै अबै, चेलौ गुर कर चाव।
पालण वचन पधारसी, वले करेवा व्याव ॥ १०
एक इंद्रायण रिष उभै, आठूं अपछरां आंण।
मांणण सुख मृतलोकमै, जनम लिया घण जांण ॥ ११
चेलो हुओ ज सूवटौ, गुर दरजी म्यारांम।
चेलो काम सुधारणौ, रामबगस उण नांम ॥ १२
भांडचावस जाहर भुवण, गहर रसीलौ गांम।
दुलहै घर अण देसरै, जनम लियौ म्यारांम ॥ १३
अलवल(र) माहे ऊपनो, जसां इंद्रायण जाय।
ज्यूं लीधौ म्यारै जनम, मुरधररी धर मांय ॥ १४
आठू अपछर आगलै, भेली रहती भव।
जसीयांरै हाजर जकै, आठूं दासी अब ॥ १५
कसतूरी चंपककली, लवगां नै लाली ह।
चंदू चमनूं चोषली, मझनायक माली ह ॥ १६
कोडसी(धी)स सवलालकै, धजा फरुकै धांम।
जणंकै घर जाइ जसां, नव-षंड राषण नांम ॥ १७
म्यारोजी मोटा हुआ, दुलूहौ मुरधर देस।
पनरां वरसां पदमणी, वनो वनी यकवेस ॥ १८

२. **वारता**– वरसां पनरांमै जसां हुइ, सिवलाल का(य)थकै घरै। जदी रामबगस सूवौ कीरां पकडनै सिवलालनै दीधौ। सौ चार ही वेद बकै(भषै ?)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज़द सौ मोहरां दे नै सिवलाल रामबगसनै लीधो। सो जसां कनै रहै, जसांनै पढावै। जद जसां वर-प्रापतीक हुई। सवलाल जसांकौ रूप देषनै मनमैं उदास हुऔ—जसांरी जोडरौ आदमी हीदुसथानमैं एक ही नजर न आवै। सिवलालकै दलीकी उकीलायत, त(अ)ने बावन कलांरौ कांम, कोड रुपियांकी ध(घ)रे नगद मालीत। जणरै पुत्री एक जसां। जदपी रांमबगस सूवै कह्यौ—कायथजी ! आप सोच मत करौ। आ तो जसां इंद्रायणी छै, आपकौ घर प्रवीत करणनै जनम लीयौ छै। ज्यूं हेमाछ(च)लकै घर पारबती, ज्यूं जनकराजाके सीता, भीषमकै घरे रुषमणी जनम लीधो, ज्यूं आपके घरे जसां जनमी छै। आ एकली नहीं आई छै। अत-लोकमै यणरी जोडीरौ पुरस हुं हेरनै परणाय देसूं। आप सोच मत करो। जद सवलाल रामबगसनै कह्यौ—रामबगस ! थूं तो त्रकाळ-दरसी छै नै थूं मारै तौ वडो पुत्र छै। थूं भी रांमबगस अवतार छै; सो थांसूं तो काइ बात छांनी नहीं छै। आ लाष रुपीयांकी मालीत छै, सो यण पुत्रीकै नमंत छै। आछो जसांरी जोडीरौ वर, घर [सं]भाल नै व्याव कर देजे। हुं तो रावजीकै किलकता-दसाको कांम छै, सो चढूं छूं।

सवलालवायक—

जोवन-मद आई जसां, व्याव करीजै वेग।
लागौ औ सवलालकै, दिलमैं वडो उदेग॥ १९

३. **वारता**— सवलाल तो कलकतांने चढीयौ नै लारसूं जसां रामबगसकै गलै छी(ची)ठी बांधनै समाचार लषीयो—'सिध श्री भांडीयावास वाली वाट मुहगी दसै, आतमका आधार मयारांमजी वसै, अलवल(र)थी लषावतुं जसांकौ मुझरौ अवधारसी। रामबगस राज नषै आयो छै, जीकौ कुरब वधारसी। अठा लायक काम बिंदगी लषावसी। अठी दसाकी आप गाढी षुसीयां रषावसी। षांन-पांनकौ, पंडांकौ जाबतौ रषावसी। जाबतो तो बलदेवजी करसी पण ताबादार तो लषावसी। भरोसादार भला मनंष जीव-जोग साथे लीजो। इंद्र राजाकी तरैका वीद राजा[हो]वीजो। आपकी वाट भालां छां। औ दवस कदीयां ऊगै, जसीको भाग जागै, अलवल(र) आप आय पूगै।

दुहौ— **अलवल(र)हुंता ऊडीयौ, चेलौ कर मन चाव।**
गुर-कदमां भेटण गहर, वह आयौ भांड्याव॥ २०
कागद माहे कांमणी, जसीयल लषीया जाब।
म्याराजी ! दरसण मनै, आतुर दीजो आव॥ २१

४. **वारता**— रामबगस भांडीयावास आयौ। गुर-चेलौ मिलीया। बारै वरसांसूं भेला हुआ। रांमबगसकै गलै कागद पाचौ(छौ) मयारांम लषीयौ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुहा– **म्यारै कागद मेलीयौ, जसीयलनै जग जीत ।**
भूलूं नह तो भांमणी, छन-छन आवै चीत ।। २२

५. वात– मयारामका हाथको कागद नै हाथकी मूंदडी लेनै रांमबगस जसां नषै आयौ । जसां कागद वाचीया, घणी षुसी वरती । हमै मयारांम जांनरी ताकीद लगाई ।

दुहा– **पूठै सहसां पांचरै, हैवर पांच हजार ।**
म्यारै मोल मंगाडीया, वंगैसू उण वार ।। २३
हेमो लाधो नैहरो, गिर गांमौ संधराज ।
महि जतनां मयारांमरा, साथे यता स काज ।। २४

घोडांरा वषांण—

दुहा– **रानां पर तांना करै, विध विध नाचै वाज ।**
नाच करंता निरषनै, अछरां लाजै आज ।। २५
रेवत समजै रांनमैं, किसू बागरौ कांम ।
कर पलवी आसक करै, वध जण समजै वांम ।। २६
रेवंत समजै रांनमै, किसौ बागरौ कांम ।
वलै पवन जरा दस वलै, जेम धजा अठ जांम ।। २७
विडगांरा बाषांण, दोडतणां की दाषजे ।
बेडा तारा बांण, जाण न पावै जे लीयां ।। २८

६. **द्रावैत**- पवनका परवांह, गुलाबकी मूठ; सधराजकौ गोटकौ, तारेकी तूट । आतसकौ भभकौ, चक्रीकी चाल; चपलाको चमंकौ, चातीका ढाल । सींचाणैकी झडप, हींडैकी लूंब; षगराजका वचा, षेतुमैं षूब । ऐहडा-ऐहडा पांच हजार घोडा सोनैरी सांकतां सज कीधा ।

दुहा– **जाषौडा कसीया जरी, तूंणां करी तैयार ।**
मुरधर हुता म्यारजी, चढीया राजकुमार ।। २९
अतलस थरमा ऊमदा, तास वादळा त्यार ।
जसडा कसीया जांनीया, कसीयौ राजकुमार ।। ३०
मोती हीरा मूंगीया, पना पीरोजा पूर ।
बाजूबंध बांधाविनै, नवल वनै बह नूर ।। ३१
कडां, जनेऊ, कंठीया, वीटां, पुणच्यां, वेस ।
ग्रहणांमै मढीयौ गजब, प्रीत चढावण पेस ।। ३२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिजलां-मिजलां म्यारजी, अलवल पुंहचा आय ।
समाचार वरतै सरब, जसां कनै नत जाय ।। ३३
दौय अगाऊ दोडीया, दियण वधाइदार ।
जसां वाट जोती जकौ, सज आयौ सिरदार ।। ३४

७. **वारता**– वधाइदारनै पांचसै मोहरां वधाईमैं दीधी नै मालकीनै कह्यौ–थूं सांमी जाय । भादरवाकी घटा पण आयनै लूंबी छै । मुधरी-मुधरी बूंदां पडै छै । राव वषतावरसींग असवारी कीधी छै । सो पैंतीस हजार नरुपोता सोनैरी साकतां गज गाहांमैं गरक कीया थका बाजारमैं घोडा उछकावै छै । महोलां-महौलां हजारां सहेलीया ऊभी गावै छै । जकण वषतमैं जांनरौ कैतूल कीधा सरीषा घोडा, सिरदार लीधा, मयारामजी पण आया छै । रंग-राग उमेदवाराम(मै) छाया छै । सो जसां कहै–मालकी ! थूं सांमी जा ।

जद मालकी कहै–आ तो मेह अंधारी रात छै नै जणमैं रावरी असवारीरौ लोक गलीयांमैं नहीं छै । मयारामजीकी कसी षबर पडै ? जद जसां कहै–सूरज बादलांमै ढकीयौ कदी रहै ? अण ऐहलांणा मयारामजीनै ओलष लीजे ।

दोहा– तुररै छौगै चांकोया, झलंब रहै अठ जांम ।
भीनै रंग अलीयौ भमर, मांणोगर म्यारांम ।। ३५
फब सेली किलंगी फबी, दुपटै पेचां दूंण ।
प्यारै(म्यारै) जणनै ईषनै, लषां सहेली लूंण ।। ३६
अलगो वे(व्हे) जोहे अलो, जोवण दीजो जांन ।
मांणोगर म्यारांमकौ, वेषण दीजौ वांन ।। ३७

८. **वारता**– अणतरैका मयारांम छै । थूं ओळष लीजे । जद मालकी सारा सरदार नजरां वार वती थकी मयारामनै ओलष नै मुजरौ कर नै मयारांमका हाथकी मूंदडी रामवगस लायो, सो निजर की ।

दुहा– मालू मेलै मांझली, तारव छैल तमांम ।
जसां कैहती जैहडौ, मिलीयो यक म्यारांम ।। ३८
मुजरौ करनै मालकी, आगै ऊभी आय ।
म्यारै कररी मूंदडी, दीधी तुरंत देषाय ।। ३९

९. **वात**– जद मयारांमनै मालकी तोरण लावे छै । सात ही वडारणां दुजोडी साथे छै । पांचसै भगतणां, पातरां, ढोलणांरा गरट माहे वींद राजा घोडा षडे छै । ईंद्रकी असवारी ओला-भोला पडै छै । मयारांमजी वैहता महेलीयां सांमौ भालै छै, कांमदेवरा बांणासूं जालै छै । जद मालकी मयारांमनै कहै छै–राज ! सूधो नजरां कु न वहै छै ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मालकीवायक

दुहा- जसां सरीषी जगतमै, महिल नहीं म्यारांम ! ।
पंचौलण है पदमणीं, हालौ पूरण हांम ॥ ४०
जसकी हुंदो जोडरा, यसकी म्यार ! अमीर ।
घालौ बथ जणरै गलै, हालो हेल हमीर ॥ ४१
आंगलीयां जणरी यसी, मूंग तणी फलीयांह ।
म्यारा जसकीसूं मिले, कीजो रंगरलीयांह ॥ ४२
म्यारामजी ! थे मांणजौ, जसीयांहुंत जरूर ।
पंषौ ग्रहे पवनरौ, पूंगूं बिदंगो पूर ॥ ४३
प्रीत पहेला पेरनै, करौ जहेला काज ।
हमै वहेला हालजै, राज गहेला राज ! ॥ ४४
छिन-छिनमै पग चांपसूं, छिन-छिन करसूं चाव ।
पांतर सो तो ही परा, राजंद ! वैडा राव ॥ ४५

मयारामवायक

मुषसूं दाषै म्यारजी, हसनै असन हवेह ।
मे तौ तोनै मालकी, भूलां नहीं भवेह ॥ ४६

मालकीवायक

दुहौ[1]-ऊणां[2] सहेल्यां आगला, म्यारा ! हु[3] तिल-मात ।
महिल ऊणीमै मूंभसी, सहेल्यां रहिसी सात ॥ ४७

१०. वारता-[4] यु मयारांमनै माल तोरणरै मुहडै लाई । सात-बीस सहेलीयां नरेंषणनै आई । पडदांरी जालीयांमै[5] मयारामनै[6] दैषै छै । सारी सहेल्यां हुइ[7] चष एकैठै भाल-भालनै थूंथका नांषै छै । मयारांम पर[8] मोती पांषै[9] छै । दनांका नादांन, कामकी मूरत, जसडाही ग्रैहणा नै जसडी ही सूरत । श्रीभगवान आपरां[10] हाथांसूं वणायौ[11]; इसडौ[12] मयारांम[13] तोरणरै मुहडै आयौ । जांनरौ, घोडांरौ, ग्रहणांरौ वरणाव, गीत सुपंषरौ पाधरौ भाव ।

गीत[14]

ओपै लपेटो अगार सोस वागौ घो[धो]रादार[15] अंगां ।
कुलै ताज पेठां जोत[16] नगारीं[17] करूर ।

१. ख. में नहीं है । २. ख. ऊंणां । ३. ख. हु । ४. ख. बारता । ५. ख. जालियांमै ६. ख. मायारांमनै । ७. ख. दइ । ८. ख. पै । ९. ख. खावै । १०. ख. आपारां । ११. ख. बणायौ । १२ इसडौ । १३. ख. मायाराम । १४. ख. गीत सुपंखरौ । १५. ख. घोरदार । १६. ख. जाते । १७. ख. नगांरी ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आवलां दलामैं[१] म्यारा[२] प्रकासीयौ रीत एही,
सांवलां[३] वादलां माहे नकासीयौ[४] सूर ।। १
चोगां तोडां पवत्रां[५] किलंगी सेलो पाग छाई,
बाजूबधां चोकी जोत जगाइ वसेक ।
मोतीयां[६] मूंदडां कडां जनेऊ जडाव मालां,
ओपै बीद[७] राजा यसी पोसाकां अनेक ।। २
साथीयां[८] सजोडां घोडां जाषौडां साकतां साजी,
लडालूं बहुआ देषे राजी लाषां लोक ।
बधाई बधाई वाजी जसां ऊभी माल वांटै,
अमीराइ[९] भाइ भाइ गाइ[१०] ओका-ओक ।। ३
झलंबां झलूस साज सहेल्यांरौ साथ जोवै,
बांदी बीजी हुइ रूप देषे हाक - बाक ।
कुरबां[११] वधारे लाडी जसांनै सुनाथ कीजै,
चैल[१२] (छैल) बना लीजै दोय दुंबारं की चाक ।। ४

दोहा– देषै ऊभी दासीयां[१३], सरब जसांरौ साथ ।
मुजरौ करनै मालकी, प्यालौ लीधौ हाथ ।। ४८

११. वारता–[१४] अण तरैका बींद राजा मयारांम[१५] आला-नीला बांस रोपनै परणीया[१६] नै पाचसै पांचसै मोहरां ब्रामणांनै[१७] भुरसीरी दीधी । दुजै दन जसां मयारांमरै तंबूआंनै हाली ।

नीसांणीं–लांबक झूंबक लाडली, अंग टेर अपारां[१८] ।
जण[१९] पुलमैं हाली जसां, सजोयां[२०] सिणगारां ।।
सास जकणरौ सोभीयौ, नालेर नैहारां ।
अलकां सिरसूं ऊतरी, टक एडी तारां ।।
जांणे[२१] नागण हीडलै, षभां सोनारां ।
ओपन[२२] लाडी ऊमदा, तषतांण[२३] तैयारां ।।

---

१. ख. दलांमैं । २. ख. मयाराम । ३. ख. सावलां । ४. ख. नकासियौ । ५. ख. पवन्नां । ६. ख. मोतियां । ७. ख. बदि । ८. ख. साथियां । ९. ख. अभीराई । १०. ख. गाह । ११. ख. कुरबा । १२. ख. छैल । १३. ख. दासियां । १४. ख. बारता । १५. ख. मायाराम । १६. ख. परणिया । १७. ख. बांभणांनै । १८. ख. आपारां । १९. ख. जगा । २०. ख. सजियां । २१. ख. जांणो । २२. ख. ओपै न । २३. ख. तखतांणा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ्रू आवल बेहुं भडी, भमरांण[1] गुंजारां ।
भोयण[2] (लोयण ?) कीजै भांमणै, कोयण कुरगांरा[3] ।।
वदनां नाक विराजीयौ, च(छ)ब कीर-चचारां ।
अहरां दीजै ओपमा, परवाल प्रकारां ।।
दांत बतीसूं[4] दीपीया[5], दाडम-बीजारां ।
कंठां जांणे[6] कोयली, बोली तण वारां ।।
गरदन जसकी गांगडी, तक कुरज तरारां[7] ।
नसमैं[8] बाधा तेवटा, झल मोती ऊ प(ा)रां[9] ।।
हार टकावल हीडलै, ऊणमोल अपारां ।
होया[10] सनेहा हेतका, अमीयांण[11] ठैयारां[12] ।।
उर - थल थोडा ऊफीया, नींबूण चैयारां ।
पीपल पना पेटका, ग्रभ केल चीरारां[13] ।।
कडीयां लंघा केहरी, गजराज चलारां ।
नितबां दीजे ओपमा, वीणार[14] वैहारां[15] ।।
एडी पेडी ऊमदा, तक एण[16] तरारां ।
जांणै[17] करती झूंबकौ, तग मगीयौ तारां ।।
जांणे[18] हंस मलपीयौ, सर मांन मझारां ।
हाथां जांण कहालीयौ, मद पीध बजारां ।।
पदमण जांणे[19] पोषता, ऐहडां[20] आचारां ।
इद्रायण कै ऊतरी, मृतलोक मझारां ।।
जसकै पलटण जाबतै, हल बीस हजारां ।
ढालां बडफर[21] ढाबीयां[22], वांकी तरवारां ।।
होदा नांगल हाथीयां, जाषोड जैयारां ।
सोनै साकत साकुरा, झलको 'तल तारां'[23] ।।
नरषै ऊभी नारीयां, अण पार अटारां ।
गावै मीठा गीतड़ा, थह मोर थटारां[24] ।।

---

१. ख. भमरांणा । २. ख. लोयण । ३. ख. कुरंगारां । ४. ख. बतीसूं । ५. ख. दीपिया । ६. ख. जांणों । ७. ख. तारारां । ८. ख तस । ९. ख. झपरां । १०. ख. हिया । ११. ख अमीयांणा । १२. ख. ठैआरा । १३. ख. चरिरां । १४. ख. बीणार । १५. ख. बैहारां । १६. ख. एणा । १७. १८. १९. ख. जांणो । २०. ख. अहैडां । २१. ख. बड कर । २२. ख. ढाबियां । २३. ख. तलवारां । २४. ख. ठारां । २५. ख. ठारां ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तीनुं पुरवाली त्रीयां, दल मांणद टारां ।
श्राया जोवरण श्रादमी, दरीयाव तटारां ।।
ज्यां सांमौ जोवै जसां कर घाव कटारां ।
मुरचा(छा) गत वे मानवी, पड जाय पटारां ।।
जसीयल जो ऊचौ जीऐ[1], असमान फटारां ।
जतीयां सतीयां जोगीयां, बक फाड ब(बै)ठारां ।।
चलीया चीत रषेसरां, मुंन जोग मटारां ।
श्रमरां चीत श्रलूझीया, जोवण कज जारारां[2] ।।
इंद्र इंद्रासण ऊतरे, ताकी धण[3] तारां[4] ।
रषीयो इंदर रांणीए[5], पकड नठारां[6] ।।
झगमगीया मन देवता, सरगापुर सारां ।
लाष पचासां लूझीयां[7], हल दो वडहारां ।।
झली मुसालां जोतसूं, अधरात दोफारां[8] ।
भगतण पातर कंचणी, ढोलण ढुलारां ।।
गावै वहती गायणी, मह राग मलारां ।
दाम हजारां दोजीयै, मोहताद मझारां ।।
बंध जलेबां बेवडो, लूझी लष लारां ।
वाजै जेहड वाजणी, घूघर घमकारां ।।
मुहडै श्रागै मालकी, कहती षमकारां ।
घण वरण श्रावै ढोलीयै[9], लग थगथी लारां ।।
मद-चकीया[10] म्यांरामजी, तुम होय तैयारां[11] ।। ४६

१२. बात (द्वावैत)- यण तरै जसां मयारांमरै[12] डेरै आई । जाजम, गदरा वचा(छा)यता कराई । सहेलीयां आय गदरां विराजी । म्यारांमजीरी बिंदगी साजी । दुहा, गाहा, पहेलीयां कही जतरै रात आधी गइ र आधी रही ।

मालू कहै—

दुहौ- रातां हव थोडी रही, वातां बह विसतार ।
सातां ऊठ सहेलीया, लुकौ कनातां लार ।। ५०

---

१. ख. जोश्रौ । २. ख. कज जारां । ३. ख. घणा । ४. ख. नारां । ५. ख. रांणीये । ६. ख. निठारां । ७. ख. लूडीया । ८. ख. दोकारां । ९. ख. ढलियौ १०. ख. छकीया । ११. ख. तयारां । १२. ख. मायारांमरै ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुहौ– सारी ऊठ सहेलियां, गई आपरी धांम।
धणनै[1] लोधी ढोलीयै, मांणीगर म्यारांम ॥ ५१

१३. वारता (द्वावैत)– म्यारांमका र जसांका मेला[2] हुआ; चकवी र चकवौ भेला हुआ। घणा दिनांको विरह भागौ, घणा आणंदको धौरौ लागौ।

दुहा– हीडै लागी हीडबा, कामण जांणे[3] काय।
जसीयां हीडै जोमसूं, म्यारारै अंग माय ॥ ५२
वादल कालै वीजली, षवै मली कर षांत[4]।
म्याराजीरै अंग मिली, झलक[5] जसा अण भांत[6] ॥ ५३
लपटीजै 'तरसूं लता'[7], सांवण मास सवाय।
जण वध लपटांणी जसां, मांणीगर अंग माय ॥ ५४

जसानै रोती सुंणनै मालकी कहै—

किसतूरी अरजी करै, राज ! म कीजो रीस।
मांचै थांरै म्यारजी, आंचै(छै) वाजै ईस ॥ ५५

मयारांमवायक—

पागै चोटौ पाक छै, लागै ठेह लगीस।
मांछै[8] जणसूं मालकी, आंचै[9] वाजै ईस ॥ ६६

मालूवायक—

अलल वचेरां ऊपरै, भूल न चढीया म्यार ! ।
थैटु रहीया थांहरै, टैगण घोडा तरार ॥ ५७ *

मयारामवायक

मे तो टैगण मालकी, जसीयलनै जांणाह।
अलल वचेरा[10] ऊबटा[11], 'त्यार हुआं ताणांह'[12] ॥ ५८
अलल वचेरा ऊमदा, फेरवीया अणफेर।
मत दुष मांनै मालकी, दोरम अणचत देर ॥ ५९

१४. वात– हमै मयारांम नै जसां रंग-राग मांणै छै। जकांनै इंद्र भी वषांणै छै। रंग-रागरो धोरौ लागौ छै। विरह भौलौ भागौ छै।

---

१. ख. धणानै। २. ख. मेल। ३. ख. जाणो। ४. ख. मालिक र खांत। ५. ख. झलक। ६. ख. मांत। ७. ख. '–' ख. तर झूलता। ८. ख. मांचै। ९. ख. आछै।
* ५७, ५८ तथा ५९वें दूहोंके विषयमें पुस्तकमें निम्न लेख उद्धृत है—'तै दूहा सरब गूढा छै। यण दुहा दुहामै वात वंगरी छै। 'टैगण' कैहतां हसतणी असत्री जाणणो। 'अलल' घोडा कैहतां पदमणी, चत्रणी असत्री जांणणी। १०. ख. वछेरा। ११. ख. ऊमदा। १२. '–' ख. प्रतिमें यह अंश नहीं है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुहौ– **के भगतरण के कंचरणी, पातर ढौलरण पूर।**
गावै नटवा गायणी, हुंसी[1] म्यार हजूर ॥ ६०

१५. **वात (द्वावैत)**– किसतूरी, चंपकली, लवगां, लाली, चंदू, चमनू, चोकली, मालू ऐ आठ ही अपच(छ)रां गावै बजावै छै; म्यारामजीनै रीझावै छै। महीना बारै होय गया छै; म्यारांमजी मैलांमै रत होय रहा छै। पाचौ(छौ) आसाढ मास आयौ छै; आभौ वादलां चा(छा)यौ छै जद ब्रामण लाधै दुहौ लष मेलीयौ छै; म्यारांमजी हाथ झेलीयौ छै।

दुहौ– **जल वूठा[2] थल रेलीया, वसधा नीलै वेस।**
मांगौ सीषां म्यारजी, देषां मुरधर देस ॥ ६१

१६. **वारता**– म्यारामजी मारवाड आवणरौ मतौ कीधौ; तंबू गुड़दावणरौ हुकम दीधौ। भार वरदारी[3] आगै चलाइ छै; घोडां पर साकतां झलाई छै। बेलीये कमरां बांधी छै; पाचा(छा) पधारणकी सुरत[4] सांधी छै। म्यारांम ऊठणकी धारी सै[5]; जसांकै मरणकी त्यारी छै। कुवरजी राषीया नही रहै[6] छै; जद मालूडी दोय दुहा कहै छै—

दुहां– **म्याराजी ! थे मुरधरा, वालम जाय वसांह।**
आप वहोरणी एक दन, जीवै नहीं जसांह ॥ ६२

जसांवायक

दासी कुंण जीवै दिवस, घडी न जीवू एक।
पल-पल जीवां म्यारजी, दिल सुध थांनै देक ॥ ६३

मालूवायक—

म्यारा ! पासी मोहकी, आची[7] नांषी आय।
पहला हु हीज[8] पांतरी, लाई महल बुलाय ॥ ६४
म्यारा! जासो मुरधरा, चो(छो)ड र जसांनै चै(छै)ल।
लाडा थां वण लागसी, मांनै षारां मैल ॥ ६५
अलवल(र) रहणौ आप, थेटु वचना थापीयो।
मुरधर जांणो माप, मन सुध करजै म्यारजी ! ॥ ६६

मयारांमवायक—

मुरधर जोवण मालकी, त्रा(आ)सां चो(छो)णी जासांह।
श्रांवण[9] तीजां ऊपरै, आसां तो आसांह ॥ ६७

---

१. ख. हंसी। २. ख. बूठा। ३. ख. तरदारी। ४. ख. सूरत। ५. ख. छै। ६. ख. रही। ७. ख. आछी। ८. ख. हुडीज। ९. ख. श्रावण।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

दुहां– मालू आषै म्यारनै, गल-गल अरजी गैर[1] ।
आप षरीदो ऊंठ चौ[2] (छौ), जसां षरीदै जैर ।। ६८

जसांवायक

मैं तो बरजी मालकी!, सरजी प्रीत[3] समात ।
अरजी नह[4] मांनै अबै, ज्यांरी दरजी जात ।। ६९

मयारांम[5] वायक—

सुंण मालू ! थांरी जसां, बोलै बोल कुबोल ।
अण बौलांरै[6] ऊपरै, जासां अलबल षौल ।। ७०

मालूवायक—

म्याराजी लौही मूआ, जीभांरा घण[7] जांण ।
जण कारण[8] थांनै जसां, बोलै वांण कुवांण ।। ७१
घना घना समजावीया, चना चना कर चाव ।
वना न मांनौ वीनती, आप-मना ऊमराव ।। ७२

जसांवायक—

म्याराजी ! विरचौ[9] मती, प्याराजी[10] कर प्रीत ।
न्यारा जी रहतां नमंष, मो वैराजी चीत ।। ७३
म्याराजी थे[11] मुरधरा, पांतरीयाकी[12] पोव ।
चालौ थे आ चो(छो)डनै, जसीयां जीवन जीव ।। ७४
अरज करां अलवेलीया[13], पला भेलीया पांण ।
म्याराजी मत मेलीयां(या), पमगां सीस पलांण ।। ७५

१७. वात (द्रावैत)– गावणौ-बजावणौ वध हुऔ; म्यारांम रीसमैं अंध-कंध हुऔ । जरां मालकी बोली; हीयैरी बात षोली । आप सारू दारूकी भटी कढाइ छै; लाष रुपीयांकी टीप चढाइ छै; लाष-लाषका लागा छै मुसाला; जीका तो अरोगै[14] दोय प्याला । आप सारू भटी कढाइ छै; आपकै तो मारवाडकी चढाइ छे । जण दारूका दोय पयाला लीजे; जसांनै सुनाथन[15] कीजै ।

दुहौ– ऐक भटीरै ऊपरै, लागै रुपीया लाष ।
जकण भटीरो म्यारजी!, छैल दुबारौ चाष ।। ७६

---

१. ख. गैल । २. ख. ऊठवौ । ३. ख. प्रति । ४. ख. नहीं । ५. ख. मायारांम । ६. ख अणबैणौ । ७. ख. घणा । ८. ख. करण । ९. ख. विरछौ । १०. ख. थारा जो । ११. ख. प्रतिमें नहीं है । १२. ख. पांतरियाको । १३. ख. अलबेलियां । १४. ख. आरोगै । १५. ख. सुनाथ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मयारांमवायक—

मो लंकानै मूंदडी, अबल वतावै आण ।
ऐक भटीरै ऊपरै, कोड करु कुरवाण ।। ७७

१८. वारता (द्वावैत)– जिण दारूको मालू प्यालो झालीयौ; ऐवौ ऐराक चाक[1] प्यालामै घालीयौ[2] । प्यालौ भर म्यारांमजी नषै आई; मुंजरांकी सडा-सड लगाई ।

दुहौ– **ऐक पयालौ ऊमदा, अत चौषौ ऐराक[3] ।**
मालूरी मनुआररी, छैल अरोगै छाक ।। ७८

१९. वात– एक मनुहार मालू कीधी; अब सीसो दारूकी जसां हाथ लीधी ।

दुहौ– **जोडै कर आषै जसां, प्रलंब[4] सजे पोसाक ।**
म्याराजी ! मनुहारकी, छैल अरोगै[5] छाक ।। ७९

२०. वात (द्वावैत)– अब सातु ही सहेलीयां[6] ऊठी; रंग-राग रूपकी बूंटी[7] । मांसूं मालकी काइ[8] सवाई; मे बी आप आगै गाई-वजाई । सातु ही सहेलीयां[9] सात प्याला भरीया; जीसूं म्यारामजी होय गया हरीया ।

दुहौ– **सातु मिल[10] सहेलीयां, माडां कर मनुहार ।**
मद पायौ म्यारांमनै, ऊगायौ अणपार ।। ८०

२१. वात– बेलीयां कमर बाधी छै; भार वरदार लादी छै । घोडा, ऊंठ भीजै छै; मदवो जी मैलांमै रीजै[11] छै ।

दूहौ– **कैफ मही चकीयो[12] कुंवर, मांणीगर म्यारांम ।**
बेली भीजै बाहिरा, भीजै साज तमाम ।। ८१
सेठौ कीधो साय धण[13], म्यारौ मैहला[14] माय ।
लछ(ज)कांणौ पडीयौ लधौ, कारी लगी न काय ।।८२
म्याराजी ! थे मुरधरा, जाता किसै जारूर ।
लुचो चगावै[15] लाधीयौ, दोढी कर दो दूर ।। ८३

२२. वात– मालू दोढी आयनै कह्यौ—म्यांरामजी फुरमावै छै–हतां ज्यां डेरा कर दो; घोडा, ऊंठ पाचा(छा) ठांणांरा ठांणा बांध दो ।

---

१. ख. छाक । २. ख. छालियौ । ३. ख. ऐयक । ४. ख. पलंब । ५. ख. आरोगै । ६. ख. सहेल्यां । ७. ख. बूंठी । ८. ख. कोई । ९. ख. सहेल्यां । १०. ख. मिली । ११. ख. रीझै । १२. ख. छकियो । १३. ख. घण । १४. ख. मैलां । १५. ख. लगावै ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गीत

जेले तुरंगां रेसमी डोरां बनातां जडाव भीण[1],
फबे[2] फीण हांतु माग सांकरे फेराव[3]।
पना मारू गाह्हांणी - जलाला[4] म्यारो चले ओढा[5],
राग रहे षोलो दोढा षडो मारू राव ।। १
जोवे जुल सहेली हवेली सीस चढे जोषी,
तारीफे अनेकां गोषां बेठी रूप तांम।
देषे साथ जसांरो ज(झ)रोषै माली जा(झा)लो[6] दीयै,
मांरे[7] डेरे ह्रालो वींद रसीला म्यारांम ।। २
आसां जडी(झडी)लगासां दुबारै सूंघ भीन आसां,
राजलोकां रमासां हुलासां सुंने राट[8]।
मीठा बोलो देती थगा सांरंग भेलां भारी,
वींद राजा हालोनी ओ जोएे थांरी वाट ।। ३
करे कोडजाडा (दा) दोढी[9] षंचाणा कनांटां कार,
रमासां हुलासां माडा भारी रेग[10] राज।
मारू गाढा ही चो[11] लुलुहीयारो हार जेम,
मारू जस-म्यारा अबार थीग देसां पधारो लाडा आज ।।४

२३. वात (द्वावैत)– जद बेली डेरांने वलीया[12]; जसांका मनोरथ फलीयां हेमराजकौ घोडौ कूदै छै; दुसमण आंषीयां मूंदै छै। पांच पांच बरछी ठेकै[13] छै, अलवल(र)की सहेलीयां[14] देषै छै।

दुहा– केइ नरषै[15] कांमणी, आडै गुंघट आय।
हैवर कूदै हेमरौ, पायक नट ज्यूं पाय ।। ८४
डेरां दिस वलिया दुझल, अलवलीया[16] असवार।
हेम कूदावै हैवरौ[17], अलवल(र)रै[18] बाजार ।। ८५

२४. वात(द्वावैत)–पाचा(छा) डेरा हता ज्यां हुआ छै; पकवांनाका थाल डेरांनै वूआ[19] छै। पाचा[20] रंग-राग वरतांणा; मालूका हुआ मनका[21] जांणां।

---

१. ख. जोण। २. ख. फले। ३. ख. फंरोव। ४. ख. जाला। ५. ख. वोढा। ६. ख. जाली। ७. ख. मोरे। ८. ख. राह। ९. ख. दोडी। १०. ख. रेया। ११. ख. छो। १२. ख. बलीया। १३. ख. टकै। १४. ख. सहेल्यां। १५. ख. नरेखे। १६. ख. अलवलिया। १७. ख. हैबरो। १८. ख. अलबलरै। १९. ख. हुआ। २०. ख. पाछा। २१. ख. मन।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दारूको झड लगायो छै; जसां भी पीधो छै, म्यारांनै पीयो छै। दारूका प्याला लेवै छै; मालकी ओलभा देवै छै। ओ वरसात आयो छै; चै(छै)लां मनचायौ[1] छै। आ रात नहीं छै जावण की; आ रात छै घरां आवण की। ओ वैरी वरसालौ आयौ; आप जावणको फुरमायौ।

जसांवायक—

दुहा– वरसालौ वैरी वू(हू)ओ, वैरण दूजी बीज।
माथै आई म्यारजी, तीजो वैरण तीज॥ ८६
वैरी चोथा बादला, घण[2] पांचमो घुरांत[3]।
थटी अंधारी थाग विण, छटी वैरण रात॥ ८७
सारंग वैरी सातमां, मीठा गावै मौर।
ऊवां[4] बरसै बादली, लूंबां-झूंबा लौर॥ ८८
नवमी आ वैरण नदी, जदी जलां ऊझेल।
दसमौ वैरी दीवलो, तण सीचोजै[5] तेल॥ ८९
मद वैरीं अगीयारमौ, जण वण केम जीऊ।
बोलै वैरी बारमा, पपीया पीऊ[पीऊ]॥ ९०
तैहडो वैरी तेरमो, जोवन चढीयो जोर।
चंदो वैरी चवदमौ, कामणीयां चहु कोर॥ ९१
पाका वैरी पनरमा, वलीया फूलां वाग।
साचौ वैरी सोलमौ, रस बरसावै राग॥ ९२
वरसालोमै मत वूओ, वादल वादल वोज।
मांनै थां विण म्यारजी, कुण षेलासी तीज॥ ९३
हीडै सहीयां हीडसी, वादलहीमै वीज।
मझ दोऊ हीडां म्यारजी, तुरी खेलाजो तीज॥ ९४
पोसाकां कीजो प्रबल, लीजो दारू लार।
मुहगौ(डौ) कीजो म्यारजी, तीज तणौ तहवार॥ ९५
साथै लीजो साथीयां, प्याला भर पाजो'ह।
महिल जसांनै म्यारजी, हीडा हीडाजो ह॥ ९६
दूजी मारी देषसी, सारो साथणीया ह।
म्याराजी मछकावतां, हीडारी तणीयां ह॥ ९७
दूजी मारी देषसी, साथणीयांरो साथ।
प्याला थांनै पावसां, घाल गलामै बाथ॥ ९८

---

१. ख. छायौ। २. ख. घणा। ३. ख. घुरंत। ४. ख. ऊंबां। ५. ख. सी छीजै।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

दूजी मारी देषसी, साथणीयांरो संग ।
हीडां थे मे हीडसां, अंगां भीजे अंग ।। ९९
कूजां[1] दारू ले'र कर, सहीयां घेर सुजांण ।
फेर पयाला पावसां, दे'र गलारी आंण ।। १००
हीडांरी लीजो हलक, राजंद कीजो रीज ।
देषीजो ऊभा दुला, तीजणीयां नै[2] तीज ।। १०१
हीडा रेसम हेमरा, लटके होरां लूंब ।
तीजडीयां हीडै तठै, जण लूबां विच भूंब ।। १०२
तरह-तरहरा तायफा, सजे कहरवा सांग[3] ।
ऐ[4]वै हीडां आवसी, मोजां लेसी मांग ।। १०३
कल-हल[5] करसी केकीयां, वल-वल षवसी वीज ।
म्यारा अलवल[6] माभली, तण पुल रमसां तीज ।। १०४
वादल गल-गल बरससी, थल-थल नीर थटाव ।
तिण पुल जोजौ तीजरौ, अलवल(र) रो औचा(छा)व[7] ।। १०५
पांणी षल-हल[8] परबतां, तल-गल सभर तलाव ।
काली मिल-मल कांठलां, अलवल भुकसी आव ।। १०६
साकल षल-हलसी घरा[9], वल-वल हल-वल वाज ।
भल-हल सावल भलकतां, रमजौ अलवल(र) राज ।। १०७
हीडां जासां हींडवा, षैगां षेलासांह ।
वाजां तासां वाजतां, आवासां[10] आसांह ।। १०८
हीडां जासां हींडवा, आसां पूरासांह ।
आसां दारू ऊमदा, पीसां अर पासांह ।। १०९
मांरी थारी म्यारजी, जोवणजोगी जोड ।
अलवल(र) जसीयां ऐकली, चै(छै)लम जावौ चौ(छौ)ड ।।११०
मारू मां मनुआरकौ[11] पीवो दारू पूर ।
माफ कराडौ(औ) म्यारजी, मुरधररौ मछकूर ।। १११
वजसी थाढौ वायरौ, गजसी मधुरौ गाज ।
धण जद तजसी ढोलीयौ, सजसी जोग समाज ।। ११२

---

१. ख. कूंजा । २. ख. प्रतिमें नहीं है । ३. ख. संग । ४. ख. जे । ५. ख. कलहक ६. ख. अलबल. ७. ख. औ चाव । ८. ख. खळ-खळ । ९. ख. धरा । १०. ख. आवसां । ११. ख. मनुहारकौ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चहु दिस उमंघीयो[1] झड-चवण, मचीयौ घण चत्रमास[2] ।
कीवं कसीयो ढोलीयो, पीय[3] रसीयौ नह[4] पास ॥ ११३

संगरां[5] भीजै साथीयां, अंगरा कपडां ईज ।
मांणो रंगरां मालीयां, तरां अंगरां तीज ॥ ११४

श्रामण मास सुहामणो, घणौ मेह घण गाज ।
तण रतमै जावण तणो, मुणौ मतो माहराज ॥ ११५

नदीयां नाला नोझरण, पांणी वाला पूर ।
बरसालारा बादला, काला वरै[6] करूर ॥ ११६

लष ग्रहणां वप लपटजो, राज अपटजो रीज ।
दारू आसौ दपटजौ, तुरां झपटजौ तीज ॥ ११७

भमरां थांनै भालसां, चमरां ढुलतां चै(छै)ल ।
आजौ डमरां 'अत ररर[7]', गुमरां घरीयां[8] गैल ॥ ११८

काली वरसै कांठलां[9], सैहरां वा(पा)लो सोभ ।
मतवाली रत नर-मना, लै हरीयाली लोभ ॥ ११९

साथे लाज्यो सूषडां, रैण दिराज्यो रीज ।
आज्यौ साजां ऊमदा, तरण रमाज्यौ तीज ॥ १२०

महि चा(छा)इ मामोलीयां, बादल चा(छा)यौ वोम ।
वेलां चढ चाया[10] अचां[11], जसीयल चा(छा)ई जोम ॥ १२१

वरचां(छां)[12] चढसी वेलडी, नदीयां चढसी नीर ।
नजरां चढजौ माणजौ, साहिब जसां सरीर ॥ १२२

बादल जम कूंजा बहै, कांठल जेम[13] कुराज ।
मदरौ झड़ म्यारांमरै, ईन्द्र झडरूपी आज ॥ १२३

२५. वारता (द्वावैत)- म्यारांमजीनै दारू पायो छै; अफरौ उगायो छै। म्यारामजी आंषां मींचै छै; कांमका थांणा सींचै छै। जसांनै भी दारू आयो छै; कांमको मुसालो षायौ छै। जसां मालूनै जगावै छै; मांगै ज्यों[14] मंगावै छै। म्यारांमजी कैफमै घोरांणा; मालूनै ग्रहणां[15] थोरांणा। म्यारामजीनै जगावै मालू; तो थांकौ जनमकौ दालद पालू ।

---

१. ख. उंमधीयो। २. ख. चतमास। ३. ख. पिय। ४. ख. न। ५. ख. समरां। ६. ख. वैर। ७. ख. अतणां। ८. ख. धरीयां। ९. ख. काठलां। १०. ख. छाया। ११. ख. अछां। १२. ख. बरछां। १३. ख. केम। १४. ख. ज्यां। १५. ख. ग्रहण।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मालूवायक—

अण दारूरै ऊपरै, वैरण पडजो बीज ।
जसडी थूं दीसै[1] जसां, आज रहेलो ईज ।। १२४
कंफमही च(छ)कीयौ कवर, नैणी फरगी नींद ।
जागै नह[2] मांसूं जसां, वैरण थारो वींद ।। १२५

जसांवायक—

अण दारूसूं हे अली !, मारू भी[3] दुष पात ।
सो दारू किण विध सहै, ज्यांरी कारू जात ।। १२६

मयारांमवायक—

लाली यक कावल लुली, साली[4] मौ उर सूल ।
अण कालो धणनै अबै, माली ! कर माकूल ।। १२७

मालूवायक—

कुंण थांनै कारू कहै, मांकै थे मारू ।
दारूकी पी धल[5] [धण] दषै, छैकी अण सारू ।। १२८
जसीयां मद पीवौ जदयां, राजंद मतरी वौह ।
औ दीवौ घर आपरै, जिण दीठां जोवौह ।। १२९
अतरौ अवगुण आपमै, मोटो यक म्यारांम ।
आंष न जागै आपरी, कामण जागी कांम ।। १३०
जसां अपछर जनमकी, जसां आभ की झाल ।
जसां हंस थाकै जसी, भोगौ नी भूपाल ।। १३१
घम-घम बाजै घूघरा, बाजै चम-चम बीच(छ) ।
तम-तम यम मालू तबै, म्यार(म)चसम म मीच ।। १३२
पैहला दारू पायनै, काढै वचन अकाज ।
म्यारौ आंषं मालकी, अलवल रहां न आज ।। १३३

२६. **बात** (द्वावैत)– अलवल(र)ऊभा रहां नहीं; थांका वायक सहां नहीं । मे आया वचनांका बाधा; जसांका माजना लाधा । पूरबली प्रीत पालता ता(था); अतरा दन रीस टालता ता(था) । ढूंढाडमै नीपजै सो ढांढी; मे तो जसां आजसूं चां(छां)डी । थांकी जसां सरीषी उगै(ठै) लाषां परणां; मांकी सोभा मे कांई वरणां; मांनै तो अनेकां न्यौरा करै छै; मांरै यण विना कांई नहीं सरै छै ?

---

१. ख. दीजै । २. ख. न । ३. ख. जो । ४. ख. साली । ५. ख. घल ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मालूवायक—

दुहौ– जसां सरीषी जगतमै, महल नहीं म्यारांम ।
अण कह्यौ म ऊथपौ, करौ कहै सो काम ।। १३४

२७. बारता (द्वावैत)– जसीया कसीयक छै; आपनै भी उधारे जसीयक छे। पतीयासीको कमल, गंगासी विमल। भूभलीया नैणांकी, अमरतसा वैणांकी। मेहको ममौलौ, वादलाकी बीज; होलीकी[1] झाल, सामणकी तीज। केलकौ गरभ, सोनेझो षंभ; सीलकी सती, रूपकी रंभ। ताठौ मरग, मगराकी मौर; पाबासरको हंस, मनकी मीत, मनकी चौर। जीवकी जडी, हीयाको हार; अमीकौ ठाहौ, रूपको अवतार। कांजालीकी सांठी, गूंजालीको भलको; गैलाकी कबांण, हीडाकौ[2] हलको। मुगलरो मींमचौ[3], वषायतरो भालौ; सधरौ गोटको[4] प्रेमरौ[5] प्यालौ। सोलमौ सोनो, राजहंसरो वचौ; बावनौ चंदण, रेसमरौ गचौ। करतीयांरौ झूबको, मोतीयांरी लूंब; हीरोरो[6] लछौ, सरगरी[7] झूंब। सनेहरी पालषी, हेतरौ थांणौ; नैणांरौ नरषणौ, प्रेमरो कमठांणौ। सरदरी पूनमरो चंद, आसाढरो भांण; जसीयांकी तारीफ, बुधैका वाषांण। मदवीको मछौलौ, हाथकी हाल; तीजणीयांकौ तुररौ, रूपकी मुसाल। कांषको लाडू, मोतीयांको गजरो; जलालीयाको धको, जसीयांको मुजरौ। 'कलपव्रच(छ)री डाल'[8], पारसरौ टोल[9]; मेहरी महर[10], दरीयावरी छौल[11]। तावडैरी छांहि[12], अंधारैरो[13] दीयो; सीयालारो ताप, जका जसां घणा जुग जीवौ। हरषरौ हीडौ, उदेगरी मेट; जीवरो जतन, इन्द्ररी भेट। किस्तूरीरो माफौ, केसररी क्यारी; रूपरौ रूषडो[14], रच(स)ना हीनारी। भमरांरो भणणांट, डीलांरी[15] दोली[16]; दीपमालारा दौर, भाषररी होली। गुलाल सही गढौ[17], आंषांरौ पांणी; हीरांरो हार[18]। ग्रहणांको भललाटो तेजको अंबार; जसीयांको जोवणो वा संसारको सार। 'दांतारो पाणी'[19], कडीयांरो केहरी, हालरो हंस; भूंआंरी भमर, कुरजरी नस। अलकांरी नागण, पलकांरी कुरंग; कंठारी[20] कोयल, सोनैरी अंग। अणीयालां नैणांमै काजलकी रेषां; अमरतरा ठांसा चंदामै पेषौ[21]। सींदूरकी

---

१. ख. होलीको। २. ख. होडाको। ३. ख. ममिचौ। ४. ख. गेटको। ५. ख. प्रेमको। ६. ख. हीरांरो। ७. ख. सणरी। ८. ख. '–' ख प्रतिमें दरीयावरी छौलके बाद यह गद्यांश है। ९. ख. टोट। १०. ख. मेहर। ११. ख. ढरीयावरी छैल। १२. ख. छोहि। १३ ख. अंधारौरो। १४. ख. रखडा। १५. ख. डीलारो। १५. ख. ढोली। १७. ख. गूढौ। १८. ख. हारौ, पोतारौ पांणी। १९. ख. '–' ख. प्रतिमें नहीं है। २०. ख. कंठरी। २१. ख. पेखां।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बींदो भालूमै भलक, कालीसी कांठलमै चंदोकन चलकै। असोभतां ऊतारे; सोभतां धारे। वाल वाल मोताहल पोया; जांणे नवलाष नषत्र एकठा होया। बाजणां जांभर पैरीया, घूघरांका सुर गैरीया। अण भांतकी जसीयां; जकाकूं चो(छो)डो चौ[1](छौ) रसीया। मांणोनी म्यारांमजी, थांनै दीनी छै रांमजी। लो नी लाडीका लावा, पोचै(छै) करसौ[2] पच(छ)तावा। जावणकी वातां जांणां छां, मतवाली कूं नहीं माणां छां। वरसालाका वादल ज्यूं, ढालका जल ज्यूं; भाषरका पांणी ज्यूं, वाटका दांणी ज्यूं; चे[3](छे)ह मती चा(छा)डौ, थोडौ सो मन करौ गाडौ। भाली वागां षडौ, थोड़ा रहौ भलीया। पिण थांमै किसो दोस, थां कै संगी पलीया!

दुहौ– **पलीवालरी पोत ज्यूं, ऊठौ भाटक अंग।**
मांणौ रंग म्यारांमजी!, आंणौ अंग उमंग॥ १३५

२८. **वारता (द्वावैत)**–वरसायत आवणकी धारी छै; आपकै जावणकी त्यारा छै। जमी नीला सिणगार धारसी, जसां सिणगार उतारसी। मोरीया महकसी, डेडरा डहकसी; भिर्लीगन भणकसी, भमरा भणकसी। सीतल पवन वाजसी[4], मुधरौ मेह गांजसी। भाषरैरी छीयां लागसी, 'ग्रीषम रित भागसी। वीजलीयां भलकसी'[5]; भाषरांसूं वाला षलकसी; पावसकी पोटां पडसी, इंद्रकी असवारी चडसी। हरीयालीयां चूंटसी[6], नदीयांका बंध फूटसी; जण रतमै आप कमरां बांधां (धौ) छौ; आपकै कोइ[7] मांसू पला भवकौ बांधौ छौ। बरसायतकी आ रीत सुणौ—

चो(छौ)टौ सांणौर[8] गीत

रहीया ढक गिरंदरी छीयां रसीया, वसीया बुगला पावस वास।
जण पुल मांय तजे धण जसीया, बालम[9] क्यूं कसीया वर हास[10]॥ १
गीत– **दादुर मोर पपीया नस-दन, सोर[11] करै घण[12] घोर सन्ताप।**
बादल लोर षवै बह बीजां, मेहा घोर करै अणमाप॥ २
बरसै सघण षलल वजवाला, वसधा जल थल एक वूआ।
अलबलहूं तज कण पुल अलीया, हलवल कर क्यूं त्यार हुआ॥ ३

---

१. ख. छोडं छै। २. ख. करस्यो। ३. ख. वे। ४. ख. वागसी। ५. ख. '–' यह पदावली ख. प्रतिमें अप्राप्त है। ६. ख. छूंटसी। ७. ख. को ह। ८. ख. शांणोर। ९. ख. बालक। १०. ख. सात। ११. ख. सारे। १२. ख. घणा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सरवर कह् रस भर जल सिलता, तरवर षपसर ऊत रलतत्यार ।
मुरधर कमर[1] कस म्यारा, ह्र घर मत कर कंत ह्मार ।। ४
पग-पग कीछ्[2] अथग लग पाणी, मग-मग डग-डग पथग मरै ।
जगमग नगां सुरंग अंग जसीयां, धण लग पग अग करग धरै ।। ५
चरंजी रहौ रहौ चां[3] (छौ) नौजी, वरजी करजी जोडे वाम ।
भोगी दरजी दिन भांनौजी, मांनौजी अरजी म्यांराम ।। ६

दुहा– म्यारा ! थांरा मुलकमै, चंगी कासू चीज ।
वार वार मुरधर वहौ, राज किसै गुंण रोज ।। १३६
मालू ! मांरा मुलकमै, चंगी वसतां च्यार ।
नर नारी औ ठान थंग, तोषा वै तोषार ।। १३७
मालू ! थांरा मुलकमै, कासू भला कहौ ।
नर नागा नारी नलजा, रीजे केम रहौं ।। १३८
म्यारा ! मांरा मुलकरा, वागांरा वाषाण ।
आलीजां सुणजौ अबै, श्रवणां कथन सुजांण ।। १३९

वागांरा वाषाण-छन्द पधरी

वन सघन लसत मनु घन वसाल, संचरै नाहि रवि-रसमरास ।
जग-ताप हरत अतिसुषद छांहि, लष लिलत छटा मुनगन लुभाय ।।
केली कदंब करुना असोक, सह्कार बकुल लष मिटत सोक ।
जातीफल जाबू नालकेर, वट पीपर महि व्है[4] हरत हेर ।।
पाडर पुन रांयन तरु तमार, तहां सरु बकायन सरस तार ।
चंदन अगर तोया[5] कुन्द चारु, सीताफल चंपक अरु अनारु ।।
कचनार नागलितका लवंग, थल कोंल मल्लिका मिलत संग ।
केतकी जुही केतक रु जाय, चंबेल माधवी वेलराय ।
केसर मनौग क्यारी जु कीन, रितराज वसै नित चिव[6] नवीन ।।
प्रफूलत हिम गुलम ज नव प्रकार, थल सकल हरित सुष करत सार ।
मकरंदमंजुरी स्ववत[7] पुंज, अलिमाला झूमत गुंज-गुंज ।।
डहडहत कुसम पूरत पराग, पल्लव दल[8] मिल जोव जाग ।
रवमुषी दावदी पुन पलास, नाफुरमा परगस आस पास ।।
सोभत मन्द[9] सीतल समीर, कोकला कुहक क्रत सोर कीर ।
वांनो अनेक कुजत वैहंग, नाचत मयूर आनंद अंग ।।

१. ख. कवर। २. ख. कीच। ३. ख. चो। ४. ख. महि है। ५. ख. तिया।
६. ख. छिव। ७. ख. स्वतत। ८. फल। ९. ख. मंत।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

गव धनुष ससक चित्रिग वराह्, म्रग महष सुरभ आवरत चाह् ।
आनंद मइ[1] जहि्ं अवन आज, राजत है मानहुं रामराज ।। १४०
नभ चुवत सृंग गिर कलस ऊंध[2], उपमा जहि्ं[3] सोधत सुकव बुध ।

२९. बात (द्वावैत)– यसा तो मांका वाग छै; इसोई संजीवन राग छै। मारवाडको भूषौ, देस जठै अनको न रत्तौ लेस। जकरा मुलकका जाया, मांनै पजावण आया।

दुहा– कोड गुना कामरा कीया, माफ कीया महाराज ।
म्याराजी चोडौ[4] मती, बांहि-ग्रहां की लाज ।। १४१
मे तो अणसूं मालकी !, पाली आची[5] प्रोत ।
अतरा दन रहीया अठै, बांहि-ग्रहांकी रीत ।। १४२
जहर-जसा मांनै जसां, वकीया षारा वैण ।
जकण जसांसूं मालकी ! नमंष मिलै नह नैण ।। १४३

जसांवायक

रीसां बलती राजनै, वकीया षारा वैण ।
मारा थांनै म्यारजी !, नरष न धापै नैण ।। १४४

मयारांमवायक

पग पग ऊपर पदमणी, कीना नोह्रा कोड ।
कामण जसीयां कारणै, चलीया ज्यांनै चोड[6] ।। १४५

मालकीवायक

अण सूरत अण अकलनै, करै न नोह्रा कोय ।
मोलौ लोहो[7] मालकी, ज्यो गर चाढ मरोय ।। १४६

जसांवायक

अगलै भव वाली अबै, पालू माली प्रीत ।
मन भावै ज्यूं म्यारजी !, चाडौ[8] 'रीस नचीत'[9] ।। १४७
नयण लगाडे[10] नेह्रा, वयण दिराडे[11] वल ।
मांडी अब क्यु[12] म्यारजी!, चालणकी[13] हलचल ।। १४८

बात दरजी मयारामरी समाप्त ।

---

१. ख. मई । २. ख. अंघ । ३. ख. जाहि्ं । ४. ख. छोडौ । ५. ख. आछी । ६. ख. छोड । ७. ख. लोहा । ८. ख. छाडौ । ९. '–' ख. री मन चीत । १०. ख. लगाहे । ११. ख. दिराहे । १२ ख. क्यूं । १३. ख. चलणकी ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजा चंद-प्रेमलालछीरी वात[1]

॥६०[2]॥ कथा ॥

अभा[3] नगरी चंदो राजा, गिर नगरी, प्रेमलालछी ।
सौ[4] जोगे[5] विवाह हुसी; अबै मलणौ[6] देवरे[7] हाथ ॥ १

वारत्ता—राजपुर गांव, तठै रजपुत एक घररो धणी वसै । तिणरौ नाम रुद्रदेव । तिण दैवरे संजोगै दोय[8] अस्ती[9] परणीयौ; सुषमै रहै । पिण सोकांरो[10] वेध[11] तिणसुं राति[दि]नि[12] वढती[13] रहै । कदे क मेलि[14] पीण होय[15] जाय । तरै[16] रुद्रदेव आपरा सुष होणनै दोनुं[17] ही बैरांने घर जुदा जुदा वणाय दीधा । वडी बहुरै बैटौ[18] हूवै[19] न छै । सो कांमधेन ले दीधी । तीका दूझै[20] । पिण लुगाई[21] बैहुं[22] जणी विद्या सीषी थी । तिका बालकपणै अतीत मीलियौ[23] थौ, तिणसुं वीद्या[24] पाई[25] । पीण[26] भरतार जांणै[27] नही । दोहु[28] जणी रैह[29] छै ।

एक दीन बैऊ जणी पांणी भरणने चाली । तरै धणीनै[30] कह्यौ । लहुडी कह्यौ—म्हारौ डावडौ पालणै[31] माहे सुंतो[32] छै; देषज्यौ, जागे तो[33] रोवण मत देज्यौ । वडी वहु[34] कह्यौ—चोपा[35] आंवणरी[36] वेला हूई छै । गाइ आवै तौ टोघडानै[37] चुघण मत देज्यौ[38] । ईसि भांत भला इ बेहु जणी पांणीनै गई । तिसै डावडौ जागीयौ ने रोयो[39] । तरै[40] रुद्रदेव बालकनै पालणा मांहेसु[41] उरौ[42] लिनो । तिसै गाइ पीण आई ।[43] तरै[44] टौघडौ[45] चुंघण लागौ । तरै बालकनै[46] पालणा माहे सुंवांण्यौ । आप टोघडानै[47] जुदौ[48] बांधीयौ । गायनै[49] बांधे तीसै[50] दोनुं जणी जल ले आई[51] ।

---

१. २. ख. में नहीं है । ३. ख. अंभौ । ४. ख. सो । ५. ख. जोगे । ६. ख. मेलो । ७. ख. देवरै । ८. ख. दौय । ९. ख. अस्त्री । १०. ख. सोकांरो । ११. ख. रह्यौ । १२. ख. रात दीन । १३. ख. विढती । १४. ख. मेलि । १५. ख. हौय । १६. ख. तरे । १७. ख. दोनुं । १८. ख. बेटौ । १९. ख. हुवै । २०. ख. दुझै । २१. ख. लुगायां । २२. ख. बेहूं । २३. ख. मीलीयौ । २४. ख. विद्या । २५. ख. पाइ । २६. ख. पिण । २७. ख. जांणे । २८. ख. दौहु । २९. ख. देह । ३०. ख. तरे धणीने । ३१. ख. पालणा ३२. ख. सुतौ । ३३. ख. तो । ३४. ख. वहू । ३५. ख. चौपा । ३६. ख. आवणरी । ३७. ख. टोघडानै । ३८. ख. देज्यौ मती । ३९. ख. रोयो । ४०. ख. तरे । ४१. ख. मांहिसु । ४२. ख. उरो । ४३. ख. आइ । ४४. ख. तरे । ४५. ख. टोघडौ । ४६. ख. तरे बालकने । ४७. ख. टोघडाने । ४८. ख. जुदो । ४९. ख. गायने । ५०. ख. बांधै तीसै तितरे । ५१. ख. आइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इतरै[१] लौडो वहू देषै[२]—गायनै[३] बांधे[४] छै नै[५] बालक तौ रौवै छै। तरै[६] लहूडी जांणीयौ—धणी म्हारौ[७] नही; बडारी गायरौ[८] जाबतो कीयौ दुधरौ[९]; नै[१०]बैटां[११] जिसी[१२]मोरात, तिणरो जाबतौ नही कीधो[१३] तो[१४] इणनै[१५] परौ[१६] मारणौ[१७]। भलौ नही आपनै[१८], तिकौ[१९] दीजै काला सापनै[२०]। औ उठासुं औषांणा[२१] चाल्यौ छै। तरै लहुडीरै माथै[२२] ईढौणी[२३] थी, तिणरौ[२४] मंत्रसुं साप कालंदार कीयौ नै[२५] रजपुत सांम्हौ षांणनै[२६] दौडचौ[२७]। तिसै[२८] वडी दोठौ—इण म्हारौ[२९] मछर करि धणीनै[३०]मारणौ[३१]मांडचौ। तरै[३२]वडोरा हाथ महै[३३] लोटी[३४] थी, तिणरौ नोलीयौ बणायौ मत्रसुं। तिको नोलीयौ सांपसुं विढवा लागौ। तिण सांपने न्यौल्यै[३५] मारीयौ।

रजपुत दोन्यांरा चरित्र देषने धूज्यौ ने मन माहे विचारीयौ— इसी बैरां आगे कदे'क 'ऐली साट मरीजसी'[३६] तौ ईयांने छोडीजै तो भलौ; पिण इयांरी सीष विना परदेसनै चालुं तौ ऐ पोंचनै मोनैं मारै; तिणसुं ईयांरा मुढांसु हसने सोष दैवै तौ दस कौस अदीठ[३७] हुइजै नै उठै पइसो कमाय, काई'क सुधी रजपुतांणी आंणनै घर मांडूं। इसौ विचार कह्यौ(रचौ)। दिन दस आडा देनै दौन्यु भेली बैठो छै, तरै रुद्रदेव बौल्यौ— ऐस साष तौ पतली हुई नैं घर माहे ऊडौ[३८] तेह नही. नै षाधौ-पहिरचौ जोईजै; जौ थैं हसने सीष द्यौ तौ च्यार मास कठै एक जाय नै, किण हेकरी-चाकरी करिनै च्यार टका ल्यावुं। तरे बैरां कह्यौ—घरै बैठा जाडी जीमता, पतली जीमस्यां; चोपड़ी जीमता, लूंषी जीमस्यां; परदेस कुण जायै। परदेसरो मांमलौ छै, कि जांणी, जैं कदेई मिलणौ हूवै ? करम माहै लिषीयौ छै, तिकौ अठे हीज मिलसी। तरै रुद्रदेव अबोल्यौ रह्यौ।

मास १ वीतां वलै रजपूत परदेस दिसावले कह्यौ। तरै दौन्युं[३९] सोकां वात कीवी—आंपां सांप-नौल कीधौ तिणही'ज रातिसूं इणरो मन घरसुं लागै नही छै तौ कौ इयु[४०]रहे नहीं। इणनैं गधेडौ करां तौ दीहां दीहां फुस, कचरौ, फुहडौ ल्यावै नैं रात पडीयां आंपणी दाय आवसी त्युं करिस्यां। इसौ सोच विचारनै दौनुं जण्यां मतो कीधौ। रावतजी ! थे परदेस कमावणनै पधारौ नै

---

१. ख. इतरे। २. ख. देषे। ३. ख. गायने। ४. ख. बांधै। ५. ख. ने। ६. ख. तरे। ७. ख. म्हारो। ८. ख. गायरी। ९. ख. दुधरो। १०. ख. ने। ११. ख. बेटां। १२. ख. सरीसो। १३. ख. कीधौ। १४. ख. तौ। १५. ख. इणने। १६. ख. परो। १७. ख. मारणो। १८. ख. आपने। १९. ख. तिको। २० ख. सापने। २१. ख. ओषां। २२. ख. माथे। २३. ख. इढौणी। २४. ख. तिणरो। २५. ख. ने। २६. ख. षांणने। २७. ख. दोडचो। २८. ख. तिसे। २९. ख. म्हारो। ३०. ख. धणीने। ३१. ख. मारणो ३२. ख. तरे। ३३. ख. हाथ माहे। ३४. ख. लौटी। ३५. ख. ल्यौल्ये। ३६. ख. '–' ख. एळी साजसी। ३७. ख. अठी-उठी अदीस। ३८. ख. हउडौ। ३९. ख. दोनुं ही। ४०. ख. कौइ।

वेगा आवणरी मनसा करज्यौ । म्हांनै थां विना घडी १ आवडे नहीं छै। तरे रजपूत राजी हूवौ । तरै जाण्यौ—भली बात, म्हांरौ दिन पाधरौ दीसै छै। इणां मौनै सीष दीधी । इण रजपुतांणीयांसु घणो हेत-प्यार दीधौ । तरै दौनु जिण्यां भाता सारू चूरमौ कीधौ ने लाडू ४ बांधीया । तिके मंत्रनै कौथली माहे घाति बांध मेल्या । जिको एँ लाडू षाये तिकौ गधेडो हुवै ने भूंकतौ भूंकतौ पाधरौ घरै आवै । इसो भातो कर राषीयौ । राते रजपूत सूतौ, पिण नीद आवै नहीं । मन माहे जांणै इण वावर माहिसु वेगो नीसरू । इयु जांण आधो रातिरौ जाग्यौ नैं कह्यौ—हिवै तौ पाछीली राति छै । तरे ऊठि कमर बांधी, हथीयार बांधि[1] सीष करै । तरै दौनु ही बैरें[2] लाडू भाता सारू कौथळी हाथ माहे दीधी ।

रजपूत लाडू लेनै ऊतावलो चाल्यौ । तिकौ रातोराति माहे कोस १२[3] ऊपरा श्रीसूर्यजी दरसण दीधौ । दिन घड़ी १ चढतां चालता-चालता आगै १ जलसूं भरीयौ तलाव आयौ । तरे रुद्रदेव जांणीयौ—अठै भातौ षायनै कोस २० सुधौ आज गयौ रहूं । यु जाणि, जलरी तीर हथीयार छोडि सारां-फेरां गयो । दातण करि हाथ पग ऊजला कीधा, अमल कीधा नैं आप[4] श्रीपरमेश्वरजीरा नांम लैणनै बैठौ । नांम ल्यै छै तिसड़े १ ढोली आय नीसरीयौ । तिण रुद्रदेवनै ऊजलायत मोटौ आदमी देषनै सुभराज दीधौ नै कह्यौ—मा-बाप ! अमलदार छुं; अमल षाई गांवसु च्याल्यौ थौ । तिको कालजै अमल लागौ छै, कु[5] साथे सीरांवणी[6] हुइ[7] तो[8] रावला जाचकने पसाव करां[9] । इसो सुण रुद्रदेव जांण्यौ—धरम आडो आवसी नै एक लाडू इणनै द्यु; वांसै तीन रहसी घणा ही छै। यु जांण एक लाडू ढोलीनै दीयो । ढोली चूरमौ-चूटीयो[10] देषि, जलरी तीर जाइ[11], उतांवलो उतावलो उतावलो[12] लाडू षाधौ । तिसै ढोली गधेडो हूवो, रबाब गला माहे लीयां भुकतो जीण दीसी षोज रजपूतरा था, तिण षोजां दोड़ौ, घड़ो एक माहे घरां गयो । रजपूताणीयां-जाण्यौ पधारीया तो षरा, रबाब कीणरो लाधा । इसो तमासो [देखनैं] आषा मंत्र बांटिया, तिसै गधारो ढोली हुवौ ने कह्यो—कुल-गोत सुहासणीरो भलो करो, चूडो अवचल रहो। आज म्हारा[13] अभागनै रजपूत एक मिल्यौ; तिण लाडू षांणने दिधौ । तिण षात समांण[14] एं फोड़ा पड़ीया । तरै दोनु ही जांण्यौ—लाडू तौ तिण न षाधा हुसी । ढोलीरो

---

१. ख. बांध । २. ख. बेरां । ३, ख. १०ऽ१२ । ४. ख. प्रतिमें नहीं है । ५. ख. कांइ । ६. ख. सीरांमणी । ७. ख. हुवै । ८. ख. इ तो । ९. ख. बगसावो । १०. ख. उठी पो । ११. ख. जाइ । १२. ख. प्रतिमें द्विरुक्त शब्द नहीं है । १३. ख. म्हारा । १४. ख. षांत समांन ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

तमासो दीठो तो आंपां री दाढां मांहसु[१] जासी तो पाछो नहीं आवसी, इण ढोलीनै क्यु दै वेगी वाहर करो। यु जाण ५ अथा ७ धांन घालि ढोलोनै सीष दीधी। ऐ दौनु जणी घोडीरो रूप कीयो, लारे दौड़ी।

तिसे रजपूत ढोलीरो चिरत[२] देष चमक्यौ। तरै लाडू तो पांणी मांहे नांष दीधा। उतावलौ, डरतौ हाथमे जुती लै नाठौ, पाछो जोवतो-जोवतो जायै। आगै कोस एक ऊपरा देवगढ आयौ। तिणरै फोलसै सास भरीयौ पैषै[३]। जिसै रजपुतांण्यां घोड़ीरे रूप-पासरगौ कीधां, पूंछ माथै लीधां आवती दीठी। तरै रुद्रदेव एक अहीरणो घर 'फीलसारै माथै छै, तिणमै पैठो। अहीरणी जवांन छै,[४] अकेली चौक मांहे[५] ऊभी छै। तिण कह्यौ—देषे छै, तु मांहरा घरमै च्याल्यो आवै छै। आंषां फुटी छै? तु निसर जा! तरै रजपूत कह्यौ—हू मारीजतो[६] थांरै सरणे आयो छु। उण कह्यो—कुण मारै? तरै रजपूत उतांवली वात सगली कही। अहीरणी वात सुणि बोली—जो तु म्हांरो धणी होइनै रहै तौ वाहर पालु। रुद्रदेव प्रमाण की। जैरै अहीरणी[७] मंत्रांरै पांण नाहरी हुई नै घोडां[८] सांमी दोडी। तरै उवै दौनु जणी पाछी डरती नाठी। तरै कोस ५ ऽ ७ सुधी न्हसाई[९] पाछी आई। रजपूत दीठौ—कीसि बलाइ लागी? घरसु तो इण मंत्रांरा भौसु न्हाठौ थो नै अठै तौ आ उठांसु इधकी! पिण रात रहौ। जरै अहीरणीनै रति-श्रान्त हूई निद्रा व्यापी, आधी रातिरो रजपूत छोडि निसरीयौ। तिको अभो[१०] नगरी जठै चंद[११] राजा राज करै छै, तठै आयौ।

आगै राजारै कवरी वड कवार छै। तिणरा सवारै-संवरा मंडप मंड्यो छै। देस-देसरा राजा आया छै। त्यां[१२] मांहे रुद्रदेव पिण तमासो देषणनै गयो छै, ऊभो छै। तिसे कवरी 'माला फूलरी'[१३] हाथमैं छै, लीयां घणी दासी सहेल्यांरै झूलरै आई। तिको पेलंतररै लैष, वडा वडा गढ़पति छोडिनै[१४] रुद्रदेवरै गला माहै वरमाला घाली। जरै सगलां कह्यौ—कवरी चुकी-चुकी। जरै वलै बीजि वेला फिर वर माल्यो। जरै चांदौ राजा कह्यो—इणरा करम माहै[१५] लिषीयो थौ, तिको मिलीयौ। जरै रुद्रदेवनै जात-पांत पुछि कवरी परणाई। गांव दीया, महिल[१६] दीयौ। गेहणो, पोसाष, माल, दासी सरब दीयौ[१७]। सुषमै रहै पिण पाछलो डर भागो नही।

---

१. ख. मांहिसु। २. ख. तमासौ। ३. ख. पछै। ४. ख. '–' ख. प्रतिमें चिह्नित अंश नहीं है। ५. ख. मे। ६. ख. म्हारीजतौ। ७. ख. अहेरणी। ८. ख. घोड्यां। ९. ख. नाहरी दोड। १०. ख. अंभौ। ११. ख. चंदो। १२. ख. त्यांहां। १३. '–' ख. फुलरी माल। १४. ख. छोड। १५. ख मैं। १६. ख. महेल। १७. ख. दीयां।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिसै पाछली रजपूतांणी सांवली दोइ हुइनै उडती[१]। तिके अंभो नगरीमै सुष विलसतो रुद्रदेवनै दीठौ। तरै दोनां ही विचारीयौ—ईणरी आंष्यांकाढि लै जावां तौ आंधो तिको जीवतो ही मुंवा बरोबर छै, युं जांणि। रुद्रदेव झरोषे बैठो नगररो ष्याल-तमासो देषे छै। तिसे आकास उपर सांवलि दोइ भमै छै। तरै जांणीयौ—सही, बेहु रजपूतांणीयां छे। ऊ[२] देषे इतरै उचो सांमो देषै, तिसै आंष्यां लेणनै[३] तूटी। रुद्रदेव झरोषासूं महिल माहै पीण ढौल्यौ पडचौ छै, जीकण उपर ढह पडचौ। कवरी षमा-षमा कर पुछीयौ—आज झरौषासु क्यु महलमै पडचा? तरै रुद्रदेवकूं अंधालि[४] आई। तरै कवरी हठ घणौ करि पूछियौ तरै रुद्रदेव वांछली वात धुरा-मुलसु कही। जरै कवरी आपरा पगरा नेवर उतार मत्रिया। 'तिके सीकरो होइ उभो रह्यौ'[५]। सीकरो तुटो तिकौ सांवलि दोन्युनै मार पाछौ आयो। तरै कवरी नेवररा[६] नेवर कीया।

रुद्रदेव देष सोच्यौ जठै[७] जाउ जठे एक-एकणसुं 'चढति चढति मिलें'[८] तरै आधि रातरो इणनै ही छोड नाठो। तिसै पाछली रातरी कवरी जागि देषै तो सेज षाली। जरै सहैल्यांनै कह्यौ—अठी-उठी, मांहे-बारै सगलै सोध कीनी पिण बारणारा[९] पोलिरा किवाड[१०] उघाडा लाधा। जरै जांण्यौ—रावतजी तो परदेस विगर सीष च्याल्या। तरै कवरीरे[११] चंदो राजा पिता छै, तिणनै कह्यौ—थांहरो जमाई आज आधि रातरौ निसर गयौ, षबर करावौ। ईसो सांभल[१२] राजा मारग चारै दिसां असवार दोडाया। जठै लाभै तठासुं लाज्यौ[१३]ने थांहरो[१४] बुलायो[१५] नावै तो मांनै षबर देज्यौ; म्है आइनै मनाय लासां[१६]। युं समझाय असवार दोडचा। एक मारग रुद्रदेवजी मीलिया। कह्यौ—अपुठा पधारौ। रुद्रदेव नावै जदि एक असवार पाछो मेलियौ। जायनै कह्यौ—मांरो[१७] तो बुलायो आयौ नही। जरै राजा गयौ। जायने मिलीया। वात पुछि—थे मांहसुं विना सीष रीसाय क्युं निसरीया; तिका किसी तकसीर दिठी? पाछा पधारो। जरै[१८] रुद्रदेव झूठी-साची ऐक-दोइ[१९] वात कही। तरै राजा कह्यौ—सांच दाषवौ जद मन मांनै। जरै रुद्रदेव धरा-मुलसुं वात मांडनै कहि—जठै इसी मंत्रवादण असत्रि छै, जठै जिवणकी आस कीसी? काएक सुधी, भोलि लुगाईसुं घर मांडीयां चैन होइ[२०]। जरै राजा[२१] हसि कह्यौ—रावतजी!

---

१. ख. उठती। २. ख. में नहीं है। ३. ख. नेण। ४. ख. अंधाली। ५. ख. '–' तिको सीकरो होय उभी रही। ६. ख. में नहीं है। ७. ख. जठे जठै। ८. ख. चढति सं। ९. ख. बारेणारा। १०. ख. कीवाड। ११. ख. कवरी। १२. ख. सांभले। १३. ख. लावज्यो। १४. ख. थांहरा। १५. ख. बुलाया। १६. ख. लासुं। १७. ख. मांरा। १८. ख. में नहीं है। १९. ख. दोयइ। २०. ख. होय। २१. ख. में नहीं है।

म्हारो वात सांभली आरवल जितरै काई षीषां नहीं; तिको आपरो दिन पाधरो जोइजै । तरै चंदो राजा आप वीती वात कहै छै—

इण अंभो नगरी मांहै राज करूं । तिको माहरी मावु छै । मारी पटरांणी परभावती तिका मांहरै जीवरी जडी; पिण स्त्रीजाति तरैदार छै । गिरनगरीरो राजा, तिणसुं दइवरै जौग म्हारी माता नै परभावती रांणी, ऐ दोन्युंरो जीव लागो । तिको सातवीसी कोसरो आंतरो छै । तठै 'नितरा नितरा'[1] जावै । राति पडीयां दोन्युं जायै । मौनै सूता ऊपर आषा मंत्रनै छांटै, तिको अघोर निद्रा आवै । दोन्युं जणी पुठी आवै तिको आषा छांटै तरै जागुं । युं मास दो[2] विता । ऐके दिन मै मनमै सोचीयौ— कदे ही रातिरो सुष जांणु नही तिको कासु छै ? युं जांणि पोढिणनै सुतौ नही । तरै ढोलीया उपर घासरो पूलो मेलियो, ऊपरा सोड ओढाय दीनी नै हुं अंधारी जाइगा माहै बठो । तिसै पटरांणि आइ आषा मंत्र, सेज ऊपरा छांट्या नै पाछी फिरी[3] । तरै मै दीठो—देषां, आ अबै कासु करसी ? तरे दोन्युं सासु-वहू पोसाष करि गढ बारै नीकली[4] । हू पीण लारै नीसरीयौ । तिसै बैहु जणी सहर बारै एक वड थौ, तिण उपरा जाइ[5] बैठी । हुं पिण वडरी षोषाल[6] थो, तिणमै जाय बैठौ चिरत देषणनै । तिसै दौनां ही मंत्र जप्यौ तरे वड चाल्यौ । तिको घडी दो मांहै गिर नगरी बैहू[7] जणी नगर बारै वड ऊभौ रह्यौ, जरै दोन्यु ही उतरी नगरमै चालि[8] । रात पोहर दोढ वीती छै । जरै हु पिण अलगौ थको लारै चयाल्यौ । हु पिण वातां सुणु छु ।

राजा कह्यौ—आजि मोडा क्युं आया ? रांण्यां कह्यौ—चंद राजा मोडो सुतो । जरै राजा कह्यौ—एक वात सुणो—मांरै प्रेमलालछि(छी) पुत्री छै तिणरो व्याह आजसुं इकवीसमै दीन अमको तिथ गुरवाररा फेरा छै; तिण ऊपरा रात पोहर जातां पहिली दौन्युं पधारिज्यौ । जरै दोन्यूं ही प्रमाण कीयौ । उठी रही, हसी-रमी । अबें पाछिली[9] राति थोडी रही, जरै सीष मांगी तिके चाली । हुं पिण ऊणारै लारै चाल्यौ । बारै आय वड ऊ[प]रै बैठी । हुं म्हारी जायगा जाय बैठौ । सबद जप्यौ तरै वड चाल्यौ ठिकांणै आयौ । राण्यां ऊत्तरि नगरमें चाली नैं हुं तिणां पहिली ऊपरिवाडै हौयनै सेभ ऊपरा आय पोढ्यौ । तिसै रांणी आय आषा छांटीया तरै राजा जागीयौ । तरै मैं दिन ऊगां कागद माहे मीति तिथ लिष राषी । ऊण दिन तौ हुं जास्युं, देषां, इणांरौ किसौ एक आदर छै ? नै व्याहरौ ख्याल-तमासौ पिण देषस्युं । युं करतां औ दिन आयौ । जरै मैं जांणतै ही दिन आथमतै समैं मातासुं कह्यौ—आज म्हारा नेत्र घुलै छै,

१. '–' ख. नितरा । २. ख, २ऽ३ । ३. ख. घिरी । ४. ख. नीसरी । ५. ख. जा । ६. ख. षाषल । ७ ख. बेहू । ८. ख. चाली । ९. ख. पाछि ।

नींद धकावै छै। माता कह्यौ—जा[1], ऊ मालीयै पधारिनै सुष करौ। तरै हु मालीयै आय ढोलीया ऊपरि घासरो पुलो मेल नैं ऊपरा सोड ऊढायनैं छिप बैठौ। उवां दोन्यां ही रा चींतोया[2] हुवा। राति घडी ३ऽ४ जातां माहै रांणी ऊपरि आई, ढोलीयानै आषा छांटीया नै नीची ऊतरी। तरै हूं पिण उणांरै लारै ऊत्तरीयौ। ऊवे वड माहे बैंठी। हूं पिण छांनौ जाय छिपनैं बैठौ। सासू-बहू सिणगार[3] करि अरगजा पहिरसुधा लगाय नै फूलांरी माला पहिरनै गिर नगरीनै नीसरी नै वड चलायौ[4] तके घडी २(दो) माहै पोंती। तिकै तौ ऊतरी गढ मांहे गई। मैं सोचीयौ—य्यां दोन्यांरो आदर-व्यवहार कुंकरि देषणौ होसी ? जरै मैं जांण्यौ—जांन आई छै, तिण साथे गयां कोई सुल वरणै। जरै मै पोसाष करि आभ्रण[5] पहिर जांन कनै[6] परदेसी थकौ ऊभौ रह्यौ। तठै जांन माहें वींद रांटो[7]-टूंटौ, कांणौ, कालौ, रूपहीण छै। तठै बींदरा बाप प्रमुष जांन्यांनै सोच ऊपनौ—राजारी बेटी तौ रंभा पदमणीरौ अवतार बतावैं छै नै आंपरणै तो वींद इसौ छै, इण वींदनै देषै तौ राजा परणावै नहीं नैं कवारी जांन पाछ[8] जाय[9] तौ भलौ दीसै नही तो काई अकल करि कोईक फूटरौ वीद हेरां; फेरा लिरायनै विदणी कवरनैं सुंप देस्यां, पछै झष मारिनै आदरसी। यु सोचतां माहे मोनैं दीठौ। हूं वणीयौ-वणायौ 'वींद दीसु'[10]। जरै मो कनै आय पुछीयौ—थांहरी पाघ, बोली अठारी [दीसै नही, थांरो वास कठै छै ? जरै म्है कह्यौ—म्हे तो व्यापारी छां][11], आभो[12] नगरी रहां छां। अबार थांरी जांन आई तरै दैषणनै आया छां। जरै वींदरै बाप कह्यौ—एक वात ऊपगाररी छै। थां जिसा पुरष ऊपगारनैं देह धारी छै। तरै राजा कह्यौ—तिका कीसी वात ? तरै राजा विवरा सुधी सर्व वात कही। तरै म्हे दीठो—फैंरा लेसी तिणरी बेंर[13] होसी नैं त्यांरो पिण तमासौ देषणी आवसी। जरै हुकारो भण्यौ। जद सरब षुस्याल होइ 'वींदरी पोसाष कराइ'[14]कांकण-डोग, काजल, महिदी दीधी। आभरण पहीर[15], हाथी चढाय[16], 'मोडि बांधाय'[17] चवर ढलतां मुंसालांरै चांदरणै यु करतां तोरण वांद्यौ। सासु आरती, तिलक कीयौ। राजा देष राजी हूवौ। जिसी कवरी बेटो छै तिसोहीज वीद आयौ[18]। घोडासु उतर[19] माहे दोढी गया तरै दासी, सहेल्यां दिठौ। तिसै चवरीमै जाय हथलेवो दीयो। जरै रांणी प्रभावती

१. ख. मा। २. ख. मनरा चोतीया। ३. ख. सणगार। ४. ख. चालीयौ। ५. ख. आभरण। ६. ख. करेनै। ७. ख. रांवो। ८. ख. में नहीं है। ९. ख. जावै। १०. ख. '–' वींदसु। ११. ख. [–] ख. प्रतिमें चिह्नित अंश अप्राप्त है। १२. ख. अंभो। १३, ख. बेर। १४. '–' ख. वींदरो सरपाव करायो। १५, ख. पहराया। १६. ख. चढाया। १७. '–' ख मोड बांध। १८. ख. छै। १९ ख. ऊतरी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दीठो। लुगायां दोइ सौ[1] मांहे उभी सो हला-बधावा गावै छै। त्यांमै[2] उवां[3] जांण्यौ—चंद राजा जिसो दीसै। लष्यण, रंग, चहिन, निलाड, आंष्यां, सरिसो विभनो पडीयो। चंद राजा पिण वडो वहूनै देषै छै। तिसै रांणी सासुनै कह्यौ! जो[4] सासुजी, वीद तौ थांहरौ बेटो दीसै छै। सासु कह्यौ—अबोली रहै, सरीसां देस भरीयो छै। आंगलीसुं ना कहै। तिको हूं देषुं छुं। तिसै फेरा लेतां पहिली मै जाण्यौ—इणनै तौ दगौ हुसी, माहरी षबर किसी पडसी? चुनडी ऊपर तंबोलसुं कोर ऊपरा दोहो[5] लिष्यौ—

अभौ नगरी चंद[6] राजा, गिर नगरी प्रेमलालछी।
'संजोगै-संजोग'[7] परणीया, मेलो दईवरै हाथ॥ १

पछे फेरा लेनै जांनीवासै मफन्यौ 'गावतां आया'[8]। कवरी पाछी गई। तिसै चांचलै तेडण आदमी आयो। तरै मै कह्यौ—जांनीयानै कहो, मांको साथ चाल जासी, मोनै सीष द्यो। तरै जांनीया [राजी हूवा। जरै पारणेतरो सिरपाव वणाव कीयां][9] वड जाय बैठौ। तिसै सासु-वहु उतांवली सांसै भरी वड ऊपरा आइ बैठी नैं सबदांसुं वड चलायो। अभो नगरी आय थंभ्यौ। सासु-वहू ऊतांवलि नगरनै चाली। हुं त्यां पहिली उपरवाडै होइ सेज जु रो ज्यु आइ पौढ्यौ। तिसै रांणी आगै आइ देषै तो राजा सुतो छै, पिण वीद वणीयो दिसै ज्यु रो ज्यु छै। तरै रांणि दौडि सासुनै कह्यौ—वहुजी! थे न मांनै था, पिण थांहरो बेटो वींद थो त्युं रो त्यूं वैस[10], कांकण-डोरडा[11], मेंधी छै। अबै आंपांनै दोहरौ छै।

तरै माता ऊठी मो कनै आई। तरै मोसु लाल-पाल कर कंठी बांधणनै हाथ घालै। तिसै हु अजांण्यां गलै डोरो बांध्यौ[12]। जरै हुं सुवौ होइ गयो तरै मोनैं पीजरामै घालि आला माहे[13] राष्यौ। आडो तालो दीधौ। कुंची बहूरै हाथ दीनो। राति पडियां राजा करै, दीहां सुवो करि राषै। अबै वांसिली वात सुणो—

जांनि मिल विदनै केसरोयो वागो, पाघ, गेहणौ पहरीया[14]; मोड बांध्यौ। साथे रजपूत दे पोढ़णनै चांचलै गयौ। तरै षोजां सहेल्यां वरज्यौ पिण मोड सुधो ऊंचो मालीयै गयौ। आगै कवरी देषि पूछ्यौ—तुं प्रेतरूप कुण? विद

---

१. ख. सो-दोइसौ। २. ख. त्यां माहे। ३ ख. उणां। ४. ख. जी। ५. ख. दूहो। ६. ख. चंदो। ७. ख. देव संजोग। ८. '–' ख. गवावतां आयौ। ९. ख. [–] ख. प्रतिमें कोष्ठगत अंश नहीं है। १०. ख. वेस। ११. ख. डोरा। १२. ख. बांधीयौ। १३. ख. मै। १४. ख. पहैरिया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कह्यौ—हुं थारो वर छुं। कवरी कह्यौ—मोनै परण्यौ तिको कठै ? इण कहीयो—मजूर, चाकर राजां आगै काम सदा करै[1]; राजांरै हुकमसु तौ कुं वस्तुरो[2] धणी हुइ जायँ ? तरै कवरी राता नैणं करि सहेल्यां कनासुं चांदणीमैं पोटली ज्युं बंधायनैं पगथीयांसु गुडाय दीधो। तिको गुडतो-गुडतो हेठो आय पडोयो। रजपुत ऊभा त्यां जाण्यौ—क्युं माल री गांठ आई। जोवे तो वीद राजा छै। तरै रजपूतां पूछीयौ वीद हुई ज्युं कही। तरे अबोल्या छांना जीव ले न्हाठा। तिके जांनमै आया नै[3] सारी विगतवार[4] बात कही। तरै [नगारो दीयां विना डरता जांन चढी आपरै][5] नगर गई। कवरी वात राजा-राणीसु कही। इचरज हूवौ। अबै प्रेमलाल कवरी सचींती सुपना वाली वात जांणै। वरस १ वीतो, तठै तीज आई। तरै सहेल्यां कह्यौ—बाईजी ! आज तो आप पोसाष वणावो, षुस्यालो राषौ। श्री परमैसरजी सहु भलां[6] करसी। तरै पार-णैतरौ सिरपाव मंगायौ जब दांनी षोली। आगै कोर'ज ऊपरा तंबोलरा आषर छै, तिकै कवरी वांच्या—

अभो नगरी चंद राजा, गिर नगरी प्रेमलालछि।
संजोगे-संजोग व्याह हूवौ, पिण मेलो दईवरै हाथ॥

ओ दूहो वचायौ, हरष पायौ। जांण्यो—म्हारो परण्यो चंद राजा छै। तरै राजा सूं बुलाइ[7] कह्यौ, दूहो वचायो। तरै राजा कह्यौ—पुत्री ! इणरो इलाज कासुं करां ? कवरी कह्यौ—हजार १० ऽथ १५ असवार साथे द्यो, षरची दीरावौ। हुं तीरथरो नांम ले, अंभो नगरी जाइ चंद राजासु मिलुं। पिण षवर ही नही छै, जीवै छै कै नही ?

युं कहे राजा हजार पांच-सात सेन्या दीधी। अठासुं चाली तिका केईक दीनां अंभो नगरी मुकांम कीयो नै कह्यौ—बाई प्रेमलालछि भरतार-विहूंणी वैरागणि छै। तिका के दिनां अंभो नगरी तिरथां करणनै जायै छै। अंभो नगरीमैं सासू, वहू रांणी छै। त्यांनै दास्यां मेलि आसीस कहाई। तरै दास्यां गई थी। घणो मनुहार कीधी नै जीमणरो कहीयौ[8] जरै पाछौ कहीयौ—चालस्यां जद थांहरै रौटी जोमस्यां; जरै दिन दस अठै रहिस्यां; सांमोसुत करणौ छै। इयुं कहि दासीयांनैं गढ माहै जांवती 'आ वातो'[9] कीधी। गांवरा लोकानैं राजाजीरा सर्व समाचार पुछीया। 'जरै लोकां'[10] कह्यौ—वरस १ (एक) हुवौ,

---

१. ख. करि। २. ख. वस्तरो। ३. ख. आयनै। ५. ख. विगत वात। ६. ख. कोष्ठगत पाठ ख. प्रतिमें अप्राप्त है। ६. ख. भलौ। ७. ख. बुलाय। ८. ख. कहायो। ९— ख. '–' ख. में नहीं है। १०. ख. में अप्राप्त है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चंद राजारौ[1] दरसण कीधांनै। सासू, वहू राज चलावै छै नै कहै छै—श्रीमहाराजाजी तौ गौसलषांनै विराजीया छै। इसी वात सुणनै ऊमराव वेदल थका रहै छै।

अबै दासी दोय निजरबाज चतुर थी, त्यांनै कह्यौ—राज जीवता-मुवारी षबर राषौ। इसो भांति कहिनै षबर करावै[2]। तठै १ महिल राजाजीरो पोढणरौ, तिणरै तालौ जडोयौ रहै[3] छै। सांझ पडचां रांणी जायनै तालौ षोलै छै। एक दिन कवरीरी दासोयां सहेल्यांरै झूलरा साथे गई महिल माहै। और दासीयां तौ ऊरी आई। एं दौय जणी अलादी छीपनै रही। रांणी मांहै गई। आलौ षोल, नै पीजरो काढि नै राजानै सुवौ कीनौ छै, तिको डोरो षोलनै राजा प्रगट कीनौ। दासोयां किवाड माहे सारा ही चिरत दीठा। तरै राजी हुई—राजा जीवतो तौ दीठौ छै। तिसैं रात पाछिली घडी २ रही तरै रांणी पाछौ सुवौ करि, पींजरा माहै घालि, पाछौ आला माहै घालि, तालौ देनै नीचो ऊतरी। तरै तिण पहिली दासीयां उतर[4] नै 'आंगणै आ'यनै कह्यौ—म्हे सुवारै कुच करस्यां; तिणसुं थे रीसावस्यो सो आज रोटी म्हे थांरै जीमस्यां। इतरौ सुणनै[5] सासू, वहू राजी हुई नै तयारी रसोई री करणी मांडी।

दासीयां 'हसतो हसती'[6] कवरीनै आयनैं कह्यौ—दीठी हकीकत सगली मालुंम कोन्ही नै म्है जीमण ठहिरायनै आई छां; आज श्री परमेसरजो मनौरथ सफलौ करसी। तिसै सुवो १ पीजरा माहे घालि, डोरो गलै बांधि सहेली कनै छांनो राषीयौ। तिसै जीमणनै दास्यां तेडा आई। तरै कवरी दासी पचास अथवा साठ साथे ले, सुषपाल[7] बैसि गढमै आई, मिली। भोजन अरौगी जरै दासी कह्यौ—बाईजी साहिब! वार-वार अंभो नगरी आपरो पधारणो न होइ नै महिल बीठा नहि, तिणसुं महिल देषीजै। जीमणसु देषणो भलो छै। कवरी कह्यौ—कासु महिल देषस्यां? जरै रांणी कह्यौ—दासी साच कहै छे; महिल दैष्या चाहोजै। तरै रांणी साथै होय कवरीनै महिल दिषावै छै। पहिली चतुराईसुं पीजरामै सुवौ दासी कनै राषीयो छै। महिल देषतां-देषतां दासी बोली—महारांणो! रावलो[8] सुहणैर बाईजीनै दिषावो। देषां, किसी एक जलूस छै। तरै कवरी दासीनै रीस कीनी—सुहणैररौ कासु देषसी? ए महिल दैषै न छै। तरै रांणी भोली होइ महिलांरौ तालौ षोल्यौ, मांहे गया। देषै तो महल मोटो छै। जालि, गोष घणा छै। रांणी, कवरी तो आलासुं निजर टाल, महल

---

१. ख. राजा चंदरो। २. ख. करावो। ३. ख. में नहीं है। ४. ख. उतरी। ५. '–' ख. में नहीं है। ६. '–' ख. हसी-हसी। ७. ख. स्यांवपाल। ८. ख. रांवालो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पग ठांभ-ठांभ, वात पुछि-पुछि देषै छै। तितरै दासी आलारो तालो षोल पीजरो उरो लीधो, श्रोर पीजरो घालि दीधो, तालो दीधो। दासी पीजरो ले डेरे गई। लारली दासी बोली —बाईजो! कूचरी ताकीद छै। अठै घणी वार लागी नै आप फुरमायौ थो, तिको कामरी षुसाली[१] श्राइ छै। कवरी कह्यौ—बापजीरी ताकीदसु कासीद श्रायो दीसै छै।

कवरी डेरे श्राई, पोसाष करि पींजरा मांहिसु सुवौ काढचौ, डोरो षोल्यौ। चंद राजा हूवो। कवरी उठ मुजरो कीयो। चंद राजा बोल्यौ—थे कुंण? इण कह्यौ—हुं गिर नगरीमै प्रेमलालछी परणी, तिका छुं। थानै पोजरामै सुवा कर राष्या था, मै श्रकल कर काढ्या।

वांसै त्यां रात पडी रांणी पीजरो काढि डोरो षोलै तो सुवा तो[२] सुवो छै। रांणी डरती कालजै ऊकती सासुनै जाय कह्यौ—वहूजी! प्रेमलालछी राजानै ले गई; आंपांरो मरण श्रायौ, वेगी बाहर करो। जरै दिन घडी दोय चढत समो दोन्यु सांवली होय डेरां ऊपर राजारी श्रांष्यां फोडणनै श्राई। तरै[४] दोन्युही नै राजा तीरसुं मारी। सुष हुवो। प्रेमलालछी मुदायत रांणी हुई।

राजा चंद रुद्रदेव जमाईनै कहै छै—तिण प्रेमलालछीरी[५] पुत्री थांनै परणाई छै। स्त्रीरा चीरतरो पार नही। नेट भरताररो बुरो चाहे नही; बुरो चाहे तो भलो हूवै नही। मरजासी (णाथी) थे डरो मती, चैनमै रहो। समझाय राजी कर पाछा ल्याया नै राष्या।

इति श्री राजा चंदरी प्रमलालछि-रुद्रदेवरी वार्ता संपूर्ण[६]।

+ + + + + + +

---

१. ख. षुस्याली। २. ख. रो। ३. ख. ऊकलती। ४. ख. तरे त्यां। ५. ख. प्रेमलालछी।

६. ख. इति श्री राजा चंदरी प्रेमलालछी-रुद्रदेवरी वात संपूर्णः। संवत् १८३६ रा मती चेत्र वदि १४ चंद्रवासरेः॥ पंडीतचक्रचुड़ामणी वा०॥ श्री श्री श्री ७ श्री कुशलरत्नजी तत् शिष्य पं० श्री श्री श्रनोपरत्नजी तत् शिष्य मुनि षुस्यालचंद लिपीकृतं॥ श्री गुंदवच नगरमध्ये॥ सेवग गिरधरीरी पोथी माहेसुं लषीः॥

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

॥ श्रीः ॥

परिशिष्ट १ (क)

॥६७॥ अथ रोसालू कुमारनी वार्त्ता लिष्यते ॥

चोपै– प्रथमें प्रणमूं श्रीगणेश, विद्यातणो आपै उपदेश ।
सालिवाहनपुत्र रीसालू होय, संत-तपते ग्रहीया सोय ॥१

दूहा– बेटा जाया सालिवाहन, धरिया रीसालू नांम ।
बांभट भट्टनें पूछिया, नवषंड राषे नांम ॥ २
दोनूं राजा जुगतिका, दोनूं राजा सोज ।
हरषें दोय सगा हूआ, सालिवाहन नें भोज ॥ ३
छाजें बेठी मावडी, आसूडां मत षेर ।
पुत्र हुआ सो चलि गया, ऊभी मंदिर घेर ॥ ४
हंसानें सरवर घणा, पुहप घणा भमरेह ।
सुमांणसनें मित्र घणा, आप-तणे गुणेह ॥ ५
कस्तूरीरा गुण केता, केता कागदमें चित्र ।
नदियांरा वलणा केता, केता सुगुणारा मित्र ॥ ६

राजाना लोक कहे छै—

हरि हरणां थल करहलां, नउ मर्यां तो नरां ।
वींभ विस मोहा थीयां, ए वीसर से मूआं ॥ ७
दुरबलके बल रांम हे, वाड षेतकूं षाय ।
जननी सुतकूं विष दीए, तो सरण कुणपें जाय ॥ ८

अत्र महादेव मिल्या परिष्या करे छै ।

दया रषो धरमकूं पालो, जगसूं रहो उदासी ।
अपना तन ओरका जांणे, तो मिले अविनासी ॥ ९
एक ज घडी आधी घडी, भी आधो को अद्ध ।
हर-जन संग मेला वडो, सुकृत होय तो लद्ध ॥ १०

महादेव यो रूपेंसूं छै—

चातुरकूं चातुर मिले, ललि ललि लागो पाय ।
अलवें थको ओच्चरे, तो मांणिक मेलो जाय ॥ ११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इहां भोज राजानो बेटी सांमलदे परणी नें मेली, चाली नीकल्यो। पछें आगें आगे धारा नगरें मांन कछवाहानी दीकरो धारा परणी, मेली नें चाली नीकल्यो।

कुंण राजारो लाडलो, कें मनरी वात।
कें घररो वैरागीयो, कें दूहव्यो तात॥ १२
नहीं घररो वेरागीओ, नहीं दूहव्यो तात।
पेंडो पूछां मुगतिरो, जंपां दीनें रात॥ १३
एक नर दो नारसूं, कब ही न चूके कांम।
सतके पेंडे चालीयें, ए ही मुगतिका ठांम॥ १४
एक नारी ब्रह्मचारी, एक आहारो सदा पुआरी।
एक छोड दूसरे जाय, ते नर निश्चें दुषीया थाय॥ १५
डाकिण-मंत्र अफीण-रस, तसकर नें जूआ।
काछ उद्राही कांमनी, जाए पंच मूआ॥ १६
जांन बिराजी गोहरें, डेला दीया असमांन।
रीसालू सांमल वरे, मोटा दीजें दांन॥ १७

वार्ता– तिहांथी रीसालू चालो वैराट नगरें आव्यो। तिहां जूवटे रमवा बेठा। रीसालू जीत्यो। वैराटनो राजा हारचो।

दूहा– **हारचो सघलो गांमडो, हारचो घर घर वाद।**
हारचो माथो रावलो, कीयो रीसालू वाद॥ १८

वार्ता– इहां रीसालू वैराट राजानें जूवटे जीती नें छ महीनानी राजानीं बेटी परणी, ते लेइनें चाल्यो।

दूहा– **छोडचो सगलो गांमडो, भलो फूलवती वेस।**
बार वरसरे साहिबे, छोडचो सघलो देस॥ १९

वार्ता– तिहांथी चाली सींधडोइं आव्यो। सींधडो वसे, पण वसतो नहीं। एक दाडमनामा दैत्यें सारा राजा-प्रजा षाधा। एक डोकरी राषी। ते राक्षस परदेसी मांणस ल्यावे। ते डोकरी तेलमें तली ने मांणसनें आपे, त्यारें ते राक्षस षाय। रीसालू चालो डोकरी पासें आव्यो। रीसालुईं डोकरीनें पूछयुं—ए सेहर ऊजड केम छे? त्यारें डोकरी कहे—ताहरूं पण माथूं फिरचूं, जे तूं इहां आव्यो, हवे राक्षस तुनें षाइ जास्ये। त्यारें रीसालूइं कह्युं—डोकरी! ज्यारें मांणस नहीं मिले त्यारें तुंने नहीं षाइं। डोकरी कहे—वीरा! मुंने षास्ये तो स्यूं करूं? रीसालू कहे—तूं कहे तो मारूं। त्यारें डोकरीनें छल-भेदें करीनें राक्षसनें मारचो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहा– **राक्षस रूडां मारीयो, दुष देतो दुनीयांय।**
सींधडीइं सालिबाहननो, रह्यो रीसालूराय ॥ २०

वार्त्ता– हवे रीसालूइं छ महीनानी फूलवती उछेरवानें वास्ते अनेक वन वाव्या। राजा मनवेगें घोडे चडी नें जंगलमांहेंथी रोभडीनूं दूध लावी नें पावे। इम करतां बार वरसनी थई। तिण समें हठीयो वणभारो जातिनो रजपूत, वणभारी कसब करतां भाइइं वारचो—तूं क्षित्रीवट करे तो इहां रहे अनें व्यापार करे तो इहांथी नींकलि। त्यारें हठीयो नीकली नें सोरठ नवलषूं गांम वासो नें तिहां रह्यो।

दूहा– **सहस आंबा सहस आंबलो, केइ डोलरीयो जाय।**
हठीये सेहर वासीयो, नीकी जिहां वनराय ॥ २१

वार्ता– तिण समें एक दिन रीसालूइं मनमांहिथी नांहनूं मृगनूं बचूं फूलवतीनें आंणी दीधूं। रांणी साथकी गुदरांण करो। त्यारें मृगसूं रांणीनें गुदरांण करतां मृग मोटो थयो। त्यारें तिहांथी नीकलोनें मृगलो हठीयानो वाडीना फूल, फल षाइ जाए छे पिण पकडातो नथी।

दूहा– **माली रावें संचरचो, सांभल हठीया वात।**
कोइ गाटेरो मृगलो, वाडी चरि चरि जात ॥ २२
काला मृग ऊजाडका, फिर फिर पवन भषेय।
वाडी हमारी भेलतो, भलकडीयूं भालेय ॥ २३

वार्ता– मृगलो हठीयानें कहे छे—मुनें स्यानें अर्थे घाव करे छे।

दूहा– **ओ दीसे आंबा आंबली, ओ दीसे दाडिम जाय।**
बापें जायो बेटडो, जो मांणी घर जाय ॥ २४

वार्ता– ति वारें हठीओ घोडे चडी तिहां आव्यो। देषे तो वन विचें मेडोयें फूलवतो एकलो बेठी छे। त्यारें हठीयो बोल्यो।

दोहा– **के तू देवल पूतली, के तूं घडी सुनार।**
किण राजारी कूंअरी, किण राजारी नार ॥ २५

फूलवतीवाक्यं

केड कटारा बंकडा, अंबोडे नव नाग।
तिण पुरषांरी गोरडी, पंथीडा मारग लाग ॥ २६

हठीयावाक्यं

लागणहारा लागस्ये, दीठडली म दीठ।
हइडे टेकण होइ रही, ज्यूं कापड चोल मजीठ ॥ २७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फूलवतीवाक्यं

हइडूं न हलावोइं, नयणां भरी म जोय।
इण नयणें जे मूआ, फिरी न आवे कोय ॥ २८

हठीयावाक्यं

सज्जण दुज्जण सुध करण, प्रथम लगाडी प्रीत।
सुष देयण संसारमें, ए नयनूंकी रीत ॥ २९

फूलवतीवाक्यं

नेंनूंकी आरत बुरी, पर-मुष लग्ग न जाय।
आग लेवे ओरको, अपनो अंग जलाय ॥ ३०

हठीयावाक्यं

जीव हमारा तें लीया, पंजर भी तूं लेय।
तो पर तन्न उवारकें, षेर फकीरां देय ॥ ३१

फूलवतीवाक्यं

मारेगो रे बप्पडा, मृगां हुंदे घाव।
सैज हमारी आस करे, तो सिर बाहिर धराव ॥ ३२

हठीयावाक्यं

मेरा नांम हे हट्ठीया, मेरे हट्ठ सुहाय।
तुझस्यूं आल करंतडां, सिर जाय तो मर जाय ॥ ३३

फूलवतीवाक्यं

सिर जातां जीव जायसे, मुझमां किस्यो लुभाय।
हो परदेशी पंथीया, घर कुशलें क्युं न जाय ॥ ३४

हठीयावाक्यं

ए ज्युं रीसालू रीसालूओ, हु हठीओ लाल चउहांण।
राषिल वेला जे चरे, मुडसां एह प्रमांण ॥ ३५

फूलवतीवाक्यं

नेंनूंसें सांन ज करी, हाथ बिछाई सेज।
हूं रांणी तूं राजवी, दोनूं राषें रेज ॥ ३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हठो हठीला हट्टीया, कडि बांधी तरवार।
पक्का आंबा वींणये, काचा तें हि निवार।। ३७

वार्ता– हठियो भोग भोगवीनें कहे छे—जो अमने सीष द्यो तो ठिकांणे जावां। त्यारें फूलवती कहे छे—

दूहा– जावत जीभें क्युं कहां, रहो तो सांई वाट।
आवें तूं ही उघडस्ये, आहे ता रथरा हाट।। ३८

हठीयावाक्यं

जाकी जासूं लगन हे, ता ताके मंन रांम।
रोम-रोमसें रचि रहें, नही काहुसें कांम।। ३९

फूलवतीवाक्यं

सेज ऊजरी फूलूं जई, इसी ऊजरी रात।
एक ऊजरे पीउ विण, सबी जरी होय जात।। ४०

हठीयो गयो, ति वारें पूंठें रीसालू आव्यो।

दूहा– पग दीठा पवंगरा, रीसालू दरबार।
कोइ वटाऊ वहि गयो, कोइ रीसायो घर नार।। ४१

वार्ता– इम कही आघो रीसालू गयो। त्यारें पालेल पंषी हूंता, ते बोल्या—

दूहा– आठ पंषेरू छ बग, नव तीतर दस मोर।
रीसालूरा राजमां, चोरी कर गयो चोर।। ४२

वार्ता– त्यारें रांणी आवी ऊभी रही। रांणी देषीनें रीसालू बोल्यो—

दूहा– किणें आंबा झंझेडीया, किणें छांटचा षूंषार।
किणें कंचुआ मांणीया, किणें सेज दीनां भार।। ४३
पलिगपट्टी ढालीआं, किण ही दीनां भार।
रीसालूरा बागमां, कोण फिरचा असवार।। ४४

फूलवतीवाक्यं

में मेरा कंचुआ मांणीया, में सेजें दीन्हा भार।
में आंबा झाडीया, में थूंक्या षूंषार।। ४५

वार्ता– त्यारें रीसालू फूलवतीनें कहे छे—हवे ए पांन चावीनें नाषो। त्यारें षाटलाना पाइया आगें बलषो पडचो। त्यारें फूलवती बोली—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहा– **रीसालू रीसालुआ, रीसडीयां मर जाय।**
आंबा पक्का रस चुए, कोइ षुणसें न षाय ॥ ४६

रीसालूवाक्यं

रीस अमारा माइ बाप, रीस अमारा नांउं।
सषर पक्का अंबला, रजक होय तो षांउं ॥ ४७

वार्ता– त्यारें फूलवती कहे—रूठा केम बेठा छो। रीसालू कहे छे—

दूहा– **अमृतवेलो वावीओ, मृगो चरि चरि जाय।**
ओ मृगो मारि सोला करूं, दिलरो दाझ मिटाय ॥ ४८

वार्ता– त्यारें रीसालू हठीयानो पग लेई पछवाडें चाली नीकल्यो। ति वारें हठीयो सामो चाल्यो आवे छे। रीसालू पूछे—तूं कुण छे रे? त्यारें हठीयो कहे—तूं कुण छे? ओ कहे—हूं रीसालू। ओ कहे—हूं हठीओ छूं। रीसालू कहे—क्यां जावे छे? हठीओ कहे—ताहरे घरें जावूं छूं। रीसालू कहे—भूंडा, इम नथी जांणतो—जे कोई धणी आवस्ये? त्यारें हठीयो कहे—

दूहा– **रेढा सरवर किम रहे, रेढा रहे न राज।**
रेढा त्रीया किम रहे, रेढां विणसे काज ॥ ४९

वार्ता– रीसालू कहे—तूं छे कोंण? हठीयो कहे—हूं गढ गांगलनो रजपूत छूं।

रीसालूवाक्यं

दूहा– **गढ गांगलरा राजीया, क्युं चल्यो नहीं राय।**
रीसालूरी गोरीयां, क्युं मांणी घर जाय ॥ ५०

रीसालू कहे—मांटी थाजे।

दूहा– **रीसालू बांण सनाहीयो, करे रीस करार।**
छेकें मंडी छंडीया, निकस्या आरो-पार ॥ ५१

वार्ता– हठीयानें मारी मांसनो पावरो भरी घरे ल्याव्यो, राणी करो स्याक—मृग मारी लाव्यो छूं। त्यारें ओ मांस रांधी, ऊपरथी घी काढी दोवो कीधो, स्याक कीधो। रांणी कहे—राजा, जिमो। राजा कहे—रांणी पहिलां तुमें जिमो। त्यारें रांणी पहिलां षावा बेठी। षातां राजा कहे छे—

दूहा– **हाथ पीउ मुषमें पीऊ, दीवडा बले पीयाय।**
जीवतडां रस मांणीओ, मूआं न लीधो साय ॥ ५२

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

फूलवतीवाक्यं

तें आंण्यो में भषीयो, मृगां हंदा माय।
कपी मोरो पिउ मारीओ, मरूं कटारी षाय॥ ५३

वार्ता– त्यारें रीसालू बेठी मेलीनें चाली नीसरचो। त्यारें फूलवती कहे—मुझनें मारीनें जाय।

दूहा– **साद करी करी हूं थकी, चल चल थक्का पाव।**
रीसालू ऊभो न रहे, वेरी वाल्यो दाव॥ ५४

वार्ता– रीसालू तो चाली नीसरचो। फूलवती आवी ठिकांणे बेठी। हवे रीसालूओ आगें चाल्यो जाए छे। एतले एक जोगी आगें मिल्यो। जोगीनें देषी रीसालू झाड ऊपरें चडी बेठो—देषूं, जोगी क्यां जावे छे? त्यारें योगीइं तलाव ऊपरें नाही साथलमेंथी एक जोगणी काढी। ते देषी रीसालू अपना मनमें कहे।

दूहा– **योगी योगी योगीया, आयसडा सधीर।**
ऊंची योगण पातली, काढी साथल चीर॥ ५५

वार्ता– एहवूं रीसालूइं अपना मनमें जांणी तमासो देषे छे। ओ जोगणीइं जोगीना कह्याथी षावूं कीधूं। षावूं जमी जोगी सूतो। त्यारें जोगणीइं आपणी झांघ मांहेंथी एक जोगी बालक जंगनाथ नांमें काढचो। पछें भोग भोगवी ओ पुरुषनें पाछो साथलमें घालो नें अपना मोटा जोगीने जगाडचो। ऊठो स्वामी! हवे सारी पठें जमो। जोगी कहे—जोगणी! तो सरषी कोइ सती नहीं। बाजो संकेली हाली नीसरचो। त्यारें रीसालू जइ आडो फिरचो। चालो सांमीजी! आज बाबानो भंडारो छे। योगीनें तेडी फूलवतीनें पासें लाव्यो। रीसालू फूलवतीनें कहे—लाडूआ करो। सांमीनें जमाडीइं फूलवतीइं लाडूआ करचा। थाल भरी सांमी पासें लाडू लाव्यो। सांमी कहे—बाबा! एता लाडू क्या करूं। में तो अकेला छूं; में पण लाडू षाऊं, तमे पण लाडू षाओ। रीसालू कहे—तमे षाओ अनें तमारा बे जीव भूषें मरे, ते पण अमनें धरम नहीं। योगी कहे—में तो एकला हूं। रीसालू कहे—जोगणी काढो, नही तर माथूं वाढसूं। त्यारें मरण-भयें जोगणी काढी। वली जोगणीपासें भयें करी बीजो बालो जोगी कढाव्यो। योगी बीजा जोगीनें देषी तमासो पाम्यो। बेइ जोगी माहो-मांहें लडचा। ओ कहे, जोगण माहरी, ओ कहे माहरी। त्यारें रीसालू कहे—लडो मां। रीसालू जोगणीनें कहे—तुनें कुंण प्यारो छे? जोगणी कहे—नाहनो जोगी प्यारो। तेहनें जोगणी देइ सीष दीधी। बूढो जोगी कहेवा लागो—तें तो भूंडो कांम करचो, हवे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माहरी चाकरी कुण करस्ये ? त्यारें रीसालूइं फूलवतीनें जोगीनें दीधी । फूलवती कहे—हठीयानें सेवीनें हवे जोगी कोइ सेवूं नहीं । त्यारें फूलवती गोष थकी पडी, आपघात करी मूई । त्यारे जोगी महादेव थइ ऊभो रह्यो । योगी कहे—रीसालू, तूं क्या जांणता हे ? योगी कहे—हमारे घरमें पण ए षेल हे तो आदमीका क्या आसरा ? योगी कहे छे—

दूहा— **पांणी जग सघलो पीए, किहां इक निरमल नीर ।**
सर देषी सारस भमे, तूं कां आंणे अधीर ।। ५६

वार्त्ता— त्यारें रीसालू जोगीनें कहे—में नांहना थकां पाली हती-रोवालागो । रोई नें रीसालू कहे छे—

दूहा— **सज्जन गया गुण रह्या, गुण बी चल्लणहार ।**
सूकण लग्गी बेलडी, गया ते सींचणहार ।। ५७
वीजलीयां चमकीयां, वादलीयां घनघोर ।
हठीओ परदेसी उठि चले, ज्यूं वटाऊ ढो(ठो)र ।। ५८

वार्ता— जोगी कहे—तूं कहे तो जीवती करूं । रीसालू कहे—हवे न षपे । त्यारें जोगी कहे—हवे इहांथी जा, बीजी स्त्रीनी षबर कर । त्यारें रीसालू बीजी स्त्रीनी षबर लेवानें चाल्यो । क्यां गयो—जिहां धारानगर छे, तिहां सरोवरें ऊभो रह्यो ।

धारावाक्यं

दूहा— **सरोवर धोयां धोतीयां, आडण सूंथण पग्ग ।**
नख कर भरद्यो घडूलीयो, तो हि न बोल्यो ठग्ग ।। ५६

ते तलावनें विषें रीसालूनी स्त्री छे । ते पांणी भरवा आवी छे । रीसालूनें रूपवंत देषी, देषवा मोही । धारा नामें स्त्री रीसालूइं ओलषी—ए माहरी स्त्री, पण धाराइं ओलष्यो नहीं । त्यारें ए दुहो कह्यो । मोरे लष्यो ते दूहो सांभली रीसालू बोल्यो—

दूहा— **पाल पीयारी जल नवो, हींडां ज झीलेवा ।**
पण तां गन लभो पांणीआं, बी आंसु बुझ्झेवा ।। ६०

धारावाक्यं

आछो कापड चोल रंग, मांहिसु चंगो डील ।
विण षूटे षींषे नहीं, तूं झलहलयोतो झील ।। ६१

रीसालूवाक्यं

भूमि पीयारी भोगणो, तूं को राजाहंदी धीव ।
तुझ कारण मुझ मारस्ये, कुण छोडावे जीव ।। ६२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देसडला परदेसडा, नहीं झीलणरो जोष।
तुझ कारण मुझ मारस्ये, तो मूआं न पांमूं मोष ॥ ६३

धारावाक्यं

अगर चंदन करी एकठा, चोहटे षडकावूं चे(बे)।
मुझ कारण तुझ मारस्ये, बलसूं आपण बे ॥ ६४

वार्ता- रीसालू कहे—तूं कोंण छे ? कन्या कहे—हूं राजा मांन कच्छवाहानी दीकरी छूं। रीसालू कहे—तूं किहां परणी छे ? कन्या कहे—सालिवाहननो दीकरो रीसालू छे, तेहनें परणावी छे। रीसालू कहे—ताहरो धणो मुझ सरिषो छे ? त्यारें कन्या कहे—रीसालू तो गहिलो सरिषो छे, बाहिर फिरतो फिरे छे, तमे तो महारूपवंत छो, लक्षणवंत छो। त्यारें रीसालू कहे—

दूहा- **अवगुणगारी गोरडी, तिको अवगुण भाषंत।**
आप पुरु[ष] नंद्या करे, पर पुरुषां वादंत ॥ ६५

वार्ता- रीसालू कहे—तुमें जाओ, सांहमी वाडीमें जई बेसो, अमे तिहां आवीइं छइं। ते धारा कंन्या तो वाडीइं जइ बेठी अनें रीसालू तिहांथी राजानें जइ मिल्यो। राजा षुस्याल थयो। दरबारमें षबर पडी—जमाइ आव्या। हवे धारा कंन्यानें ढूंढवा मांडी। कंन्या किहांइ दीसे नहीं। रीसालू कहे—स्यूं जोओ छो ? चाकर कहे—कंन्या जोईइं छीइं। त्यारें रीसालू कहे—में वाडीमें दीठी छे। तिहांथी सषी तेडी आवी। राति पडी त्यारें सिणगार सजावी, सषो लेई रीसालूना मोहलमें गई। तिहां कंन्यानें मेली सषी जाती रही। रीसालूइं जोयूं—ए स्त्री केहवीक छे ? त्यारें ओरडानी सांकल देई मांहे सूतो। स्त्री बाहिर ऊभी रही। त्यारें धारा बोली—

दूहा- **कें मूओ कें मारीओ, कें झंडीयो एं मार।**
हंजा हंदी गोरडी, ऊभी अंगण बार ॥ ६६

रीसालूवाक्यं

नवि मूओ नवि मारीओ, नवी झडीओ एं मार।
हंजा हंदी गोरडी, गई बग्गां घरि बार ॥ ६७

धारावाक्यं

रेढा सरवर न छोडीइं, रेढां जावे राज।
रेढी त्रिया किम रहे, रेढां विणसे काज ॥ ६८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हंज सरोवर हंज पीए, बगा छीलर पीयंत।
बग्गां केतो आसरो, हंजा सरता कंत॥ ६९

वार्ता– रीसालू बोल्यो नहीं। त्यारें धारा स्त्री तिहांथी चाली। मेडी थकी ऊतरता झांझर वाग्गे। त्यारें रीसालूइं जांण्यू—देषूं किहां जाए छे? कंन्या चाली थकी कुमतीया सोनारनें घरें गई। कुमतीयो सोनार घरमें सूतो छे। तिहां सोनारनो बाप सुतो छे। तिहां जई धारा स्यू कहे छे—

दूहा– **तूंबी चूइ टबूकडे, भींजे नवसर हार।**
चीर पटो(ढो)ला ढह पडे, मूरषरे दरबार॥ ७०

सोनीनो बाप कहे छे—

दूहा– **राजा रूठो स्यूं करे, लीये लाष बे चार।**
ऊठो पुत्र सुलषणा, मांणिक भींजे बार॥ ७१

वार्त्ता– इम कही स्त्रीनें मांहि लीधी। भोगवतां निद्रामें प्रभात होइ गयो।

दूहा– **प्रह फूटो प्रगडो भयो, ध्रूओ धलो रें।**
ऊठ कुमतीया अनुमति, द्ये जिम जावूं घरें॥ ७२

सोनार कहे छे—

पाय पहिरी चाषडी, ले षेंडो तरवार।
हो राजारो ओलगू, चली जा दरदार॥ ७३

वार्त्ता– वेस करी चाली त्यारें रीसालु बोल्यो—

दूहा– **पावडीयां चटकालीयां, कडें रलक्या केस।**
रीसालूरी गोरीयां, किणें फिराव्या वेस॥ ७४

कंन्यावाक्यं

वीरां कांइ वरांसीयो, साव सारी पांमूं आं।
उंट विछूटा रावला, अमें नासेटु हूआं॥ ७५

रीसालूवाक्यं

रातें करहा न छूटीइं, दीहें तारा न होय।
फिठ गमार तुं गोरडी, वर किम वीरा होय॥ ७६

कंन्यावाक्यं

काठो तोडातां जणे, झोरां च्यारे दंत।
हूं राजारो ओलगू, तूं किणांरो कंत॥ ७७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रीसालूवाक्यं

नासा सोहे मोतीयां, झाल्यां कांन झबकंत।
नहीं राजारो ओलगू, तूं मोरी अरधंग ॥ ७८

वार्ता– त्यारे रोसालूइं माथानी पाघडी ऊतारी। त्यारें रांड चावी थई। रोसालू कहे—साचूं बोल, रातें किहां हती? कंन्या कहे—

दूहा– **पाघडीयां पंचा सकल, कटारें बहु चित्र।**
जे तूं राजा षांतस्यों, देष हमारो मित्र ॥ ७९

वार्ता– पछें रीसालूइं मेली दोधी, तिहांथी ऊठी चाल्यो।

दूहा– **रीसालू रीसावीओ, चडी चलीओ राव।**
राजा आडो आवीयो, षूंन ज पलें लाव ॥ ८०

वार्ता– त्यारें रीसालूनो सुसरो कहे—स्या माटे जाओ छो? रीसालू कहे—स्त्री धीज दीए तो रहां। त्यारें सुसरो कहे—तुमें कहो ते धीज दीयां। रीसालू कहे—बे घड़ी ध्यांनें बेसूं अनें स्त्री माथाथी पांणी नांमे, नाकें सुद्ध रेलो ऊतरे हूं वर अनें ए स्त्री। त्यारें सुसरे वात मांनी धीज करवा बेठा।

दूहा– **आसण वाली बेठो रहूं, पांणी नेंणा धार।**
इस्त्रीनां एतो गुनो, बोजें पुन अपार ॥ ८१

कन्या आवी—

सोवन झारी हाथ करि, धाराइं करी धार।
तां सोंनारो आवीयो, षूंनी कीयो षूंषार ॥ ८२
नेंण चूकी निजर फेरवी, पांणी पूंठां धार।
रीसालू बांणें दई, सिर काटचो सोनार ॥ ८३
ऊठी नें ऊभो थयो, मांनें केहो दोस।
पापी पापें जायसे, माया लीजें षोस ॥ ८४
मोटाथी मोटा थीइं, मोटा षोटा न होय।
नांढा मोटानें अडे, हाल तिणारा होय ॥ ८५
धारवंती ढली करी, चंचल चडीयो राय।
सांमलदेरो साहिबो, उमंगीयो घरि जाय ॥ ८६

वार्ता– तिहांथी चाली भोज राजारे गांम आव्यो। तलाव ऊपरें देषे तो सांमलदे पोतानी स्त्री नाहे छे। तिहां पांच सात सषी आडी थई ऊभी छे। तिहां

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रीसालू पूछे–जे ए कुण छे ? दासी कहे—राजा भोजनी बेटी छे। त्यारे रीसालूइं पावरा मांहिथी चारों तरफ सोना मोहरू नांषी। दासीउं लेवा गइ। रीसालू घोडो लेइ जइ सांमलदेनें माथें राष्यो। सांमलदे लाजनी मारी पांणी मांहें बेसी रही। दासी रीसालूनें कहे—रे भाइ ! दूरो रहे, ए राजानी बेटी छे; राजा जांणस्ये तो तुंने मारस्ये।

दूहा– **बांहडीयें जल सजल, कलियल केस वलाय।**
दुवल थास्यो गोरडी, ऊंची करतां बांय॥ ८७

वार्त्ता– ति वारें सांमलदेइं हाथ ऊंचो कीधो त्यारे रीसालू मूर्छाई पांणीमां पडचो। त्यारें सांमलदे बाहिर आवी, लूगडां पेहरी अनें दासीनें कहे—दासी, यूं पुरुषनें बाहिर काढो, मरी जास्ये। त्यारें दासीइं काढचो। राजा सचेत थयो। त्यारें परिक्षा हेतें रांणीनें कहे—

दुहा– **सरवर पाव पषालती, पावलीया घस जाम।**
जिण राजारे दं(न)ही गोरडी, तिणनें रेंण किम विहाय॥ ८८

कंन्यावाक्यं

पांणी पी नें वाटथी, तुं मुंकइ सम तुल्य।
जिण राजारी गोरडी, तिणरी पेंनी केरो मूल॥ ८९

वार्ता– त्यारें रीसालू कहे—एक बार मुझस्यूं सुष भोगवो। त्यारें कंन्या कहे— मारचो जाइस। रीसालू कहे—माहरू माथूं फिरे छे, मुनें तो कांइ दोसतूं नथी। त्यारें कंन्या कहे—

दूहा– **माथू फिरचूं तो मारग थी ओ, नहीं ऊभेरो जोग।**
जिण पुरुषनें में वरी, तिणनें भरस्यां भोग॥ ९०

रीसालूवाक्यं

ओ दीसे आंबा आंबली, ओ दीसे दाडिम द्राष।
ए सूडातणां सटू[क]डा, एकेलां विचें वाट॥ ९१

सांमलदेवाक्यं

ए नहीं आंबा आंबली, नहीं दाडिम नहिं द्राष।
नहीं सूडातणा सटूकडा, तारा माथा विचें वाट॥ ९२

रीसालूवाक्यं

ऊभा थाए तो अमी झरे, धरती न झल्ले भार।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सांमलदेवाक्यं

तुमें परदेसी पंथीया, मरतां न लागे वार ।। ६३

रीसालूवाक्यं

साप ज षाधे सहु मरे, वींछी चटपट होय ।
स्त्री दीठे पुरुष ज मरे, तो कुलमां न जीवे कोय ।। ६४

वार्ता- त्यारें कन्या मार्ग लेइ सषी साथें चाली नें घरें आवी। त्यारें रीसालूइं कंन्यानें दृढ जांणी, राजा पासें आव्यो। राजाइ जमाइ आव्यो जांण मेडीइं ऊतारचो। सांमलदे धणी पासें गई। रीसालू कमाड देइ बेठो। कंन्या कहे—ए स्यूं छे ? रीसालू कहे—तुमें एहवां रूपालां एतला दिन किम रह्या हस्यो ? तिण वास्ते काचूं माटीनूं कोडीयूं पांणी मांहें चारे तरफ वाट करी, पोतानी मेलें दीवो थाए तो तूं सती। त्यारें सांमलदे कहे—हूं षूंणे धीज नहीं करूं, राजांननी सभा मांहें धीज करसूं। त्यारें प्रभातें राजानंनी सभामां आवी तिम ज कीधूं। सांमलदे कहे—माहरे ए धणी होय तो दीवो थाजो। त्यारें दीपक थयो। हवे रांणी कहे—तूं समषा, तूं साचो तो आपणें प्रीत, नहीं तो आज थी [टू]को छे। त्यारें राजा [नी, ती] पेलाइं तो दीवो न थयो। त्यारें सभा हसी-जे रीसालू षोटो छे। रीसालू कहे छे—हूं किहांइं चूको तो नथी पण एतलो थयो छे—

दूहा- **रीसालू षोटो थयो, दीवे ज्योति न होय ।**
रांणी रूप नीहालीयो, कलंक ज लगो मोय ।। ६५

वार्ता- इम कहतां दीवो थयो। सत्यवादी पणाथो वली रीसालू कहे छे—

दूहा- **फूलवती हठीयो ग्रह्यो, धारा ग्रह्यो सोनार ।**
सोल सांमलदे पालीयो, राजा भोज जुहार ।। ६६

वार्ता- ति वारें रातें सजाई भेलां थयां।

दूहा- **पावल ऊपल घूघरा, हीयडा ऊपर हार ।**
गोरी ऊपर साहिबो, दो कलियनको भार ।। ६७

वार्ता- तिहां रीसालू छ महिना रही पछें आपणें सेहर आवे छे। सेहर जेतले कोस दस रह्यो तेतलें रातें तिहां रह्या। रातें वारा फिरतां, चोकींइं चोकी करतां रांणीनें साप डस्यो। रांणी मूई। सवारे पांणीनी झारी भरी रीसालू रांणीनें जगावे तो रांणी मूई दीठी। त्यारें रीसालूइं पेट नांषवा मांडी। हवे महादेवनें पार्वती कहे छे—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहा– **रीसालू रुदन करे, आंसूहांरो धार।**
वेगो जाइ महेस तूं मरस्ये राय - कुमार ॥ ९८

वार्ता–तिहां महादेव आव्या।

दूहा– **अमी छुडक्का नांष कर, कंब झडक्का लाय।**
सांमलदे सजीव कर, रीसालुं घरि जाय ॥ ९९

वार्ता–हवे तिहांथी चाली नें आपणें नगरें आव्यो। बापनें वधाई देई। सालिवाहन बेटानें दुषें रोइ आंधलो थयो हतो, ते हरषी नें ऊठचो, बार सांषें माथूं फूटूं, लोही नीकल्यूं। सालिवाहन देषतो थयो।

दूहा– **माथो लागो बार सांषस्यूं, चष बिहूं हुआ सुचंग।**
रीसालू सालिवाहन मिल्यो, दीओग्घाओ दडंग ॥१००

इति श्रीरीसालूकुमरनो वार्त्ता संपूर्णं ॥ संवत १८९० ना कात्तिक विद ८ बुद्धे संपूर्णं ॥ लिखितं मुनी गुलालकुसल ॥ श्रीमांनकूए ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट १ (ख)

॥ अथ रीसालूरा दूहा लिषते ॥

सालवाहन नलवाहणरा, श्रीपुर नगररा राव बे।
पुतां काज ज सेवीया, साधां हुंदा पाव बे॥ १
पींडत पुछणहं चली, थाल भरे नल चावलां।
लीयो कटोरो घीव बे, मारै पुत्रकै धिय बे॥ २
केसर कहै कस्तुरीयां, सुती कै जागंत बे।
सोनां हांदी थालीयां, भीत्र वजी कै बाहिर बे॥ ३
हड हड दे मुडी हसी, नाई मेरे दाइ बे।
एक रीसालु आवीयौ, जासी सीस कटाय बे॥ ४
हड हड दे मुडी हसी, नाई मेरे दाई बे।
एक रीसालु आवीयौ, जासी सउ जलाय बे॥ ५
काला हरण उजाडरा, सरवर पांन झडंत बे।
... ... , ... ॥ ६
हठीया पतसा हठ म कर, हठ हठ रमो सिकार।
... ... , ... ॥ ७
जे देषै तुं रूंषडा, तास तणा फल जाय बे।
बापे ज ... ..., ...बे॥ ८
फेरा फीरे फीरंदडा, साह फिरै कै चोर बें।
कै तुं... ... , ... ॥ ९
है मैहल [ल]छवंती गोरीयां, तम कोस हांदी नार।
... ...पाव बे॥ १०
है म्हैं लछवंतो गोरीयां, तेरा कु............।
... ..., एक प्रेम चषाय बे॥ ११
है म्है लछवं... ..., ...।
... .सीर, भुलां मारग बताय बे॥ १२
... ..., ...।
... ...विच कर डंडडी, पंथी एथ बैसंत बे॥ १३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

... ..., ...।
... ..., ...ल साव बे ॥ १४
मारचौ मारचौ रे बा..., ...।
... ..., ...सुपने आव बे ॥ १५
मे हठुवा मे..., ...।
... .सार जायै तौ जाय बे ॥ १६
किण ऐ ...., ...।
राजा हुंदी गौरीयां, किस हुं... ... ॥ १७
... ..., ...वा घर जाइ बे।
तोसुँ केल करांतडा, सिर जाय तो जाय बे ॥ १८
... ., मे ई सींच्या अजीर रूंष बे।
रीसालू हांदी गौरडी, रीसालुरा दर [बार] बे ॥ १९
मेरा मला भांगीया, कीण भंगीया ए बार बे।
रीसालुरा बागमै, रीसालु असवार बे ॥ २०
मैं तेरा माला भंगीया, मैं बुंदीया ए बार बे।
रीसालुरा बागमैं, रीसालु असवार बे ॥ २१
सड सड सुडचा चषिया, मारचा मोर चकोर बे।
रीसालु हुंदे गौषडै, चोरी करी गया चोर बे ॥ २२
दस सुवा दस सुवटा, नव तीतर दोइ मोर बे।
रीसालु हुंदे गौषडै, चोर करी गया चोर बे ॥ २३
कीण मेरा माला भंगीया, कोण घुंदीया नबार बे।
रीसालुरा मैहलमै, कीण छांटीया षषार बे ॥ २४
हाथ प्रीउ मुष प्रीउ, प्रिउ दीवलै जलाई बे।
जीवतडां जुग मांणीयौ,......न लाभै साव बे ॥ २५
थे दीधौ म्है भष्यौ, हरणों केरौं साव बे।
जांणुं हठुवा मारीया, मरू कटारचां घाव बे ॥ २६
हरीयो होजे वालमा, होज्यौ दाडम दाष बे।
मो नीगुणीरे कारणे, (थांरे) डंक बसाया काग बे ॥ २७
काला मुहरा कागला, उठ परे रोजाई बे।
मेरा प्रीउरी पांसलो, (मेरा) मुह आगै म षाइ बे ॥२८
......जोगी जोगीणा, आव षडो वड तीर।
डीघी जोगण वतली, (तैं) काढी साथल चीर बे ॥ २९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोगीया पर-भोगीया, ध्रिग जमारौ तोय बे ।
ऐंठा परबत सेझमै, मैं दीठा सांमोई बे ।। ३०
रीसालु रीसालुवा, रीसडीयां मर जाय बे ।
मै ई पड्ु इस गौषसु, मेरी देह् जलाइ बे ।। ३१
पंथी ए सुघड धोइया, भ्रगो पछेवड पग बे ।
नषस्युं घुडल्यौ मै भरचौ, प्रेम न बोल्या वुग बे ।। ३२
भुम पराई भोगणै, (तुं) राजा हांदी धीय बे ।
तो कारण मो मारजै, कुंण उगारे जीय बे ।। ३३
भुम पराई नै परमंडलो, नही बोलणका संग बे ।
तो कारण मो मारिजै, मुयां न पाऊ श्राग बे ।। ३४
चंदण-काटे चह रचुं, करूं ज अमर नांव बे ।
मो कारण तो मारिजै, (तो) बलु पंथी गल लग बे ।। ३५
कड कड वाहुं काकरा, लागई लाल किंवाड बे ।
कै मुया कै मारीया, कै चंपीया आहार बे ।। ३६
रीसालु हंदी गोरडी, उभी भीजुं बार बे ।
न मुया न मारीया, न चंपीया आहार बे ।। ३७
तुं राजा हंदी गौरडी, (क्युं उभी) वागां हंदै बार बे ।
(न मुया न मारीया, न चंपीया आहार बे)
लंबा पतला कुंण सा, (तेरै) गया गिलोला मार बे ।। ३८
पटुवा महता गांबरा, न कर हमारी तात बे ।
ले जाउली राउलै, षुटसो मांरै हाथ बे ।। ३९
रूपा सोनानी रूप रंज, मोती अधिक वणाव ।
उठो सोनी पातला, उपर मेरो मेह ।। ४०
एक दीयां तौ दोय दीयां, दोय देस्यां तो च्यार बे ।। ४१
पोह फाटो पगडो हुवौ, धुवो धवलहरांह ।
उठ कमतीया मत दै, (अब) वधुं क जांह घरांह ।। ४२
पेहर हमारा लुघडा, पांचै डाब अ हथियार ।
चोहटै नीसर मचकती, कूंण कहेसी घर नारी ।। ४३
चांषडीयां चटका घणा, कडचां रूलांता केस ।
मां मरदांरी गोरडी, (थंनै) किणै कराय वेस ।। ४४
भोलै भुलौ रे वालंभा, नैण तणै उणीहार ।
रात ज करहा [उछरे], ज्यांरा म्हे ए वालंभ ।। ४५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रात ज करहा न उछरे, वीहा न तारा होई।
... ..., वर क्यु वीरा होई ॥ ४६
सोनी हंदा दीकरा, अवसर न षेलो.........।
उपर चरु चढावीयो, धड दाबीयो पयाल ॥ ४७
सीर अमारै अमी झरै, पगमे........पयाल।
सोनो लेसु लोडीयो, अब कहा करेलो राव ॥ ४८
नारू तोषा लोयणां, उर चंगी नैणांह।
धरा तुट धरती गई, कोइ नर चढोया नैणांह ॥ ४९
रीसालु रीसालुवा, ...मरीयां बहु चित।
तु राजारो षुंटीयो, जोइ हम [क]रो मीत ॥ ५०
सरवर पाय पषा[लता]...पाइल कोस झाई।
जीण पुरषरी गोरडी, जीण क्युं रैण विहाय ॥ ५१
... ..., मो तो किसो ज तोल।
हुं जिण पुरषरी गोरडो, ...राषौ पाइ मुल बे ॥ ५२
पाइ मुका... ..., ... ।
जीणरा मुहडा आगै, तो सरी... .... ॥ ५३
... ---, --........तो आतम लोई।
मो सरीषा दोय... ...... ॥ ५४
सराहीयै टुक दंती, षड... .... ई ॥ ५५
कांई योवन मैंमतीयां, कांई जोब... ... ।
... ..., ...चड़कातां बाइ ॥ ५६
नां जोवन मैंमतीयां, ... ।
... ..., ..., करतां बांह ॥ ५७
अवे आंबा उवे आ..., ...नव मोर।
उहां बीच कर डंडडो, पंथी उवे हो चोर ॥ ५८
जाल ही उढ.....हरण, जाल सोहै बीर बे।
जो तु हुवै रीसालुवा, पंथी आंब पधार बे ॥ ५९
फुलमती हठीयै धरो, धारू धरी सोनार।
संबलदे सत राषीयो, राजा भोज विचार ॥
मेगलसी मुहता आव घरे, देउ गला रो हार ॥६०

॥ ईति श्रीचंदकुंवर रीसालुरा दूहा संपूर्ण ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट २ (क)

"बात बगसीरांमजी प्रोहित हीरांकी"

पद्यानुक्रमणिका

दोहा--अनुक्रम

क्रमाङ्क		पृष्ठाङ्क पद्याङ्क
	अ	
१	अठै निवाई उपरें,	७-५५
२	अतबल चंचल सबल अति,	१७-१३६
३	अतरें अदभुत आबियौ,	९-७१
४	अपछरमैं और न यसी,	४२-२९५
५	अबै झरोखै ऊतरचौ,	२७-२२७
६	अभैरांम हीरां अवर,	४३-३११
७	अभैरांम हीरां अवर,	४४-३१६
८	अरज करत हीरां अधिकै,	२५-२१५
९	अरज करूं चालो अबै,	२३-१९१
१०	अरज करूं छूं आपसुं,	४६-३४४
११	अरज लिषी छै बालिमां,	३४-२५३
१२	अरध निसा आई अली,	२३-१९०
१३	अवर त्रिया मिल येकठी,	४२-३०२
१४	असबारी छब अधिक,	१७-१३८
१५	असवारी हद वोपियो	२४-१९५
	आ	
१६	आज भलाई आबिया,	२४-२०५
१७	आप जोड देख्यौ अबै,	१९-१५३
१८	आप तणी आधीनता,	४८-३६९
१९	आप नहीं जो आवस्यौ,	२०-१६६
२०	आप नहीं जौ आवस्यौ,	२०-१६५
२१	आप पधारीजें अबै,	४४-३२६
२२	आप बडा छौ ईसर,	४८-३७७
२३	आप बिना होयै न असी,	४०-२७६
२४	आभूषण आरंभयो,	२२-१७३
२५	आभूषण करस्यां अवस,	१३-९४

क्र०		पृ० प०
२६	आभूषण झमकत ऊठी,	४-२६
२७	आरंभ उछव गवर,	१६-१३२
२८	आलीजो छिब अंगमैं,	१९-१५४
	इ	
२९	इण विध सूरज आथयो,	२१-१७०
	उ	
३०	उण गिरवर पैं आयेकै,	८-६२
३१	उण पुल कन्या अवतरी,	२-१३
३२	उदयापुर निकसी गवर,	१५-१२५
३३	उदयापुर पति ईंदसो,	१२-९२
	ऊ	
३४	ऊठ चाल्यौ घर आंगणै,	४७-३५८
३५	ऊडघन अंबर छबि अधिक,	४-२३
३६	ऊतर आयौ आंगणै,	४५-३४१
३७	ऊदयापुर चढियो अवस,	१०-८२
३८	ऊदयापुर राजें ईसो,	२-१०
३९	ऊदयैपुर निकसी गवर,	३५-२५९
४०	ऊभी सनमुष आयकै,	२५-२१०
	ऐ	
४१	ऐक ऐकतै आगली,	१०-७६
४२	ऐ धुलो छिब सय अतं,	१९-१५२
	अं	
४३	अंक छोड़ प्रोहित उठचौ,	२६-२१९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

आं

४४ आंनन सषियांको अवर, १५-१२४
४५ आंबा पोहो रत छबि अधिक,४२-२६६

क

४६ क्रोध कर रांणो कह्यौ, ३१-२३८
४७ कए बडारण केसरी, ४४-३२०
४८ कटंक बिकट घण थट कियां,३२-२४५
४६ कमर कटारी असी हुथा, २४-१६६
५० कर गमण तब केसरी, ४५-३३५
५१ कर जोड्या राधाकृष्ण, २०-१५७
५२ कर जोडी सुभटां कह्यौ, ३१-२४३
५३ कर जोडी हीरां कहैत, २६-२२१
५४ कर जोडे येकण कह्यौ, १०-७३
५५ करणफूल मोती कनक, २२-१७७
५६ कर पकडी इम कहत है, ४६-३४२
५७ कर फंटो तजि कमरको, ४७-३६६
५८ कर हीरां डोली करग, ४३-३०५
५६ कर हुंता पाछे करै, १८-१४०
६० करि गमरण अब केसरी, १८-१४५
६१ करो षमो हीरा कहै, ४८-३७४
६२ कला प्रकासत दीपकी, ४६-३८२
६३ कह्यो आपकी धायकूं, ३-१६
६४ कह्यौ बडारण केसरी, ४५-३४०
६५ कह दीजै तु केसरी, २०-१६७
६६ कहियो हीरां इम कथन, ४५-३३६
६७ कहु ता दीनो कुरब, ४६-३८३
६८ कहूँ छंद चंद्रायेणा, ४६-३६२
६६ कहैत बडारण केसरी, १६-१५६
७० कहै दीज्ये तु केसरी, ४५-३३४
७१ कहै बडारण केसरी, ४५-३३६
७२ कहै बडारण केसरी, ४६-३५२
७३ काई नाव क जातिय्या, १८-१४६

क्र० पृ० प०

७४ कामल भुज अणवट किनक,२२-१८२
७५ कामातुर हीरां कहै, ६-४१
७६ किनक मुद्रिका बज्रकण, २२-१८४
७७ कुच ऊपजे काची कली, ३-१६
७८ केसर अग्र कपूरको, ४३-३१०
७६ केसर होद भराय कर, ४३-३०३
८० केहर बतलायो कनां, ६-६८
८१ केहर येक कराल, ६-६६
८२ कोमल तन पर जोर कर, ४६-३४६
८३ कोयल सुर मिल नायका, १५-१२६
८४ कंज कंठ अेवट किनक, २२-१७६
८५ कंज प्रफुलत सोभ कर, ४२-२६८

ग

८६ गड गड वडी गुलाबकी, ४५-३३१
८७ गहर प्रजंक सुगंध अति, २४-२०६
८८ गेंदा छटक गुलाबका, ४६-३५१
८६ गोटत गेंद गुलाबकी, ४५-३३२

घ

६० घणहर जल वरषत घुरत, ६-४६
६१ घणे परकार हीरां अठे, ७-५३

च

६२ चकोर चाहे चंदकूं, २३-१६२
६३ चत्र मास नीला चिरत, ४१-२८६
६४ चमकण लागी चंद्रिका, ६-५१
६५ चमकत बीज अचाणचक, ६-४७
६६ चले प्रोहत नाव चढ़ि, ३१-२४०
६७ चववह बरसं अधिक चित, ४-२१
६८ चहुँ तरफां डगर अचल, १०-७७
६६ चहूंवांण चढै चापड़ै, ४०-२८१
१०० चातुर बोल्यो मुष बचन २५-२०७

क्रमाङ्क पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

१०१ चाल विलूंबी इधक चित ४८-३७१
१०२ चाली घाट चीरवै ४०-२८२
१०३ चाले नाव-जिहाज चढ़ ३०-२३६
१०४ चाहत चातुर अधिक चित १-३
१०५ चाहत जोबन अधिक चित ५-३६
१०६ चाहत बेगी इधक चित ४४-३२३
१०७ चाहत हीरां छैल चित ७-५४
१०८ चैत मास पष चांदणे २-१२
१०९ चैन बुझाकड़ मुष बचनै १०-८०
११० चंद्रहार ऊपर चमक २२-१८१
१११ चंदमुषी म्रगलोचनी ४३-३०९
११२ चांदस्यंघ बोल्यो बचन १०-८१

छ

११३ छकी हीरां मदन छकि ५-१०
११४ छुटत दड़ी गुलाब छिब ४४-३१४
११५ छुद्रघंटका अधक छव २२-१८६

ज

११६ जगमग आभूषण जड़े १०-७५
११७ जगमंदर जगनीवांसमैं २८-२३०

ड

११८ डसण एक सुंडाल १-१
११९ डोली झपटी डाव कर ४५-३३३

त

१२० तरवर पत चंदणत ४२-२९४
१२१ तिलक तेल तंबोल मिल २२-१७५

द

१२२ दरगहै रांणाकी दरस ३०-२३७
१२३ दरवाजै प्रोहित दूगम २४-२००
१२४ दाब कर बांहो दड़ी ४६-३५०
१२५ दावत अतबल कूदियो २४-२०१
१२६ दिल कपटी मैं देषिया ४६-३४८
१२७ दुलही बनड़ो देषतां ४-२९

क्र० पृ० प०

१२८ देषत घुंघट ओट दे ४४-३१५
१२९ दंपत वरस प्रजंक पर २५-२१३
१३० दंपति विलसो सुष मदन ४८-३७८

ध

१३१ धजा फरकत दल सधर १५-१२८
१३२ धन जोबनका थे धणी ३४-२५२

न

१३३ नर नारी सोभत निपट १५-१२७
१३४ नरषौ मो पर शुभ नजरि ४६-३४३
१३५ निरमलगढ़ बूंदी नगर ८-६०
१३६ नील बिडंग कुद्यौ लहर २४-२०३

प

१३७ प्यारा पलकां ऊपरैं २५-२१६
१३८ प्यारी आवो प्रजंक पर २५-२०८
१३९ प्यारी कर गह प्रेमसुं २७-२२६
१४० प्यारी चाहत महल पर ४४-३२२
१४१ प्यारी छै अत प्राणकी ४९-३८९
१४२ प्यारी पीतम हेत पर ४८-३७९
१४३ प्यारी पीव प्रजंक पर २५-२१४
१४४ प्यारी फाग बसंत पर ४३-३०७
१४५ प्यारी राज पधारज्यो ४४-३२१
१४६ प्यारी सागर प्रेमका ४६-३४५
१४७ प्रगट महल जल तीर पर १०-७८
१४८ प्रीतम प्यारी पेम पर (अर्द्धाली) ४९-३८७
१४९ प्रोहित अब चाल्यौ प्रगट ३०-२३५
१५० प्रोहित आयौ पेमसुं १९-१५१
१५१ प्रोहित ईण बिधि पूछियौ १०-७४
१५२ प्रोहित कहियौ पदमणी ४८-३७६
१५३ प्रोहित कीनो जग प्रगट ९-७०
१५४ प्रोहित प्यारीनें कह्यौ २६-२१७
१५५ प्रोहित प्यारी पेल पर ४३-३०४

क्रमाङ्क		पृष्ठाङ्क पद्याङ्क
१५६	प्रोहित बोल्यौ दिल प्रघल	३१-२३८
१५७	प्रोहित ममत पछाणियो	३४-२५४
१५८	प्रोहित रसक प्रजंक पर	२५-२११
१५९	प्रोहित रांण प्रचंडका	३१-२४२
१६०	प्रोहित सुरभे पेमसुं (अर्द्धाली)	२०-१६१
१६१	प्रोहित हीरां कर पकड़	४८-३७५
१६२	प्रोहित हीरां पेखीयो	३५-२६०
१६३	पर घर करां न प्रीतड़ी	२०-१६०
१६४	पहुंचो नग बिधबिधि प्रगट	२२-१८३
१६५	पाव पोस मोती प्रगट	२३-१८८
१६६	पिचकारी कत जोर पर	४५-३३०
१६७	पिचकारी झटकत प्रगट	४५-३२८
१६८	पिचकारी धारां प्रगट	४५-३२९
१६९	पिचकारी मो ऊपरै	४५-३२७
१७०	पिचकारी लगि पीवकै	४५-३३८
१७१	पीछोलै आई प्रगट	१५-१२३
१७२	पीतम कारण पदमणी	४७-३५९
१७३	पीतमकै उर सेझ पर	४९-३८७
१७४	पीतम प्यारो सेझ पर	४९-३८५
१७५	पुरुष प्रीत हीरां तलफै	६-४४
१७६	पंकजमुष पर लोलपट	४-२७
	फ	
१७७	फोकै मन फेरा लीया	५-३२
१७८	फुल अपार प्रजंक फब	४९-३८०
	ब	
१७९	बकि चितवन तन बदन	४३-३०८
१८०	बचन अफटा बहै गया	४७-३५४
१८१	बणियाणी चातुर घणी	२०-१५९
१८२	बणी सहेली बाडियां	२७-२२८
१८३	बतलास्यां म्हे बालमा	४७-३६७
१८४	बन उपवन फूलत विषम	४२-२९७

क्र०		पृ० प०
१८५	बनड़ाको देख्यौ बदन	४-२८
१८६	बले येम कहियौ बचन	४४-३२५
१८७	बहत अगाडी बीरबर	२४-१९८
१८८	बाटो तोनै जीभडी	४७-३६१
१८९	बालक लीला बालपण	३-२०
१९०	बिध-बिध कहियौ बयण	४४-३२४
१९१	बिलकुल बोल्यो मुष वचन	२६-२२५
१९२	बिहद लोह बंजाययो	४०-२७७
१९३	बोल्यौ प्रोहित बागमैं	१६-१३०
१९४	बोल्यौ प्रोहित बेलिया	१६-१३१
१९५	बोल्यौ प्रोहित बेलिया	१०-७९
१९६	बोल सुणत तब केसरी	२०-१६१
१९७	बंक भुकट बोली बयण	४६-३४६
१९८	बंध पकड़ ल्याय बिहद	४०-२७५
	भ	
१९९	भली बात प्रोहित भणे	३१-२४४
२००	भाभी इम कहियो बयण	४-२५
२०१	भाभी डोलत बहुत भर	४३-३१३
२०२	भामण प्यारी अंक भर	४९-३८६
	म	
२०३	मगमद कुंकुम चन्द मिल	२२-१७८
२०४	मदनातुर मेरो मरण	६-४८
२०५	मधुर बचन छवि चंद मुष	४-२२
२०६	मिणधारी छिबतै उछर	१८-१३९
२०७	मिले कसुंबा माजमा	४९-३८४
२०८	मीठा बोलो वचन मुष	४८-३७२
२०९	मुगत मंग सिंदूर मिल	२२-१७६
२१०	मैं तो कागद मेलयौ	४०-२७८
२११	मैंनु घणी विमुढ मंन	४७-३६०
२१२	मोद न हीरां कुंद मन	५-३३
२१३	मो पणवृत राषो मुदे	४०-२७९
२१४	मो मन मलियो बालमां	२६-२२४

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क		पृष्ठाङ्क पद्याङ्क
२१५	मो मनमैं रसियो भवर	१८-१४४
२१६	मोर सबद लागे विषम	७-५२
२१७	मंजण नीर गुलाब मिल	२२-१७४
२१८	मांणत पदमणि महलमैं	८-६३
२१९	मांनत फूल सुगंध मिल	४२-३००
२२०	मांनै तागो बालिमा	४७-३६२
२२१	मांनोजी रसिया भमर	४७-३६३
	य	
२२२	यण प्रकार प्रोहित अठै	४२-२९२
२२३	यण प्रकार सोहत महल	२१-१७२
२२४	यम फंद फसिया प्रगट	२०-१६२
	र	
२२५	रची गोठ यम रावनुं	४०-२८४
२२६	रची बाहादर रावनें	४०-२८३
२२७	रछ्यक आये गवरकै	१५-१२६
२२८	रतनांवत दिल रोसमैं	३१-२३९
२२९	रमत फाग बीत्यौ रिसक	४४-३१७
२३०	रमस्यां सेजां रंगरली	२४-२०४
२३१	रसक बृतीकी सीत रुत	४२-२९३
२३२	रहस्यां बूंदी सासरै	४७-३५७
२३३	रहै जतं उ राजवी	१९-१४९
२३४	राचत कहुं सिंगार रस	५०-३९३
२३५	राज कीयो छै रुसणौ	४८-३६८
२३६	राजत ईधक वसंत रुत	४२-२९६
२३७	राज तणी वा रायधण	४५-३३७
२३८	राव कहै जीती किधूं	४०-२८०
२३९	राव बाहाद्र सुभट रंण	३२-२४६
२४०	राषीजं षांवंद सरस	४८-३७०
२४१	रूप गरबकी राज वणि	४७-३५५
२४२	रंग भरत प्रोहित रसक	४३-३०६
२४३	रंग रात बीती असक	२६-२१८
२४४	रंग प्यालरा व्याप गत	४४-३१८
	ल	
२४५	ललवत किनक सहेलड़ी	२२-१८५

क्र०		पृ० प०
२४६	ललित बंक छबि लोयणा	४-२४
२४७	लारे मोने लेवज्यौ	२६-२२२
२४८	लाल दरोगो बोलियो	१९-१४७
२४९	लाष बात चालूं नही	४६-३५३
२५०	लाषां बातां लाडला	४७-३६५
२५१	लिषमीचंद किरति लीयें	२-११
२५२	लोभी देषौ लोयेणा	४७-३६४
	व	
२५३	वण सहेली वाडियां	१०-८३
२५४	वणं सहेली वाडियां	१२-९१
२५५	वरषत घणहर वीषरचौ	६-५०
२५६	वात सही यण विधि बणी	४९-३९१
२५७	विमल किनकके बिछये	२२-१८७
२५८	वुदयापुर राजै यधक	२७-२२९
२५९	वृछ सरोवर छवि विमल	१९-१४८
२६०	वेग तुरंगम अति विहद	२४-२०२
२६१	वेले मिलीजे बालिमां	२६-२२३
	ष	
२६२	षल-षायक रण-षेतमैं	१२-८९
	स	
२६३	सगता चांडा सग सुभट	२९-२३१
२६४	सपतलडी कंचन सुभग	२२-१८०
२६५	सब सोलै सणगार है	१३-९५
२६६	सरस पियाला सायमैं	१६-१३३
२६७	सरस लुटत रत-रंगको	४९-३८८
२६८	सषी बचन पणि विध सुण्यौ	५-३७
२६९	सहर कोट आयो सिधर	२४-१९९
२७०	सात बरसां को समय	३-१५
२७१	सामां भेटण सासरै	४७-३५६
२७२	सावण घणौं सिराविये	९-७२
२७३	सिरपै वारूं साहिबा	२०-१६३
२७४	सुणत बडारण केसरी	१९-१५०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांङ्क		पृष्ठाङ्क पद्याङ्क
२७५	सुण बडारण केसरी	१८-१४३
२७६	सुण बडारण केसरी	४८-३७३
२७७	सुभटां जसा समाजमैं	११-८८
२७८	सुभटां थट सनमुष मले	३३-२५०
२७९	सुष-सज्या तंडव सुणी	८-६४
२८०	सुष-सज्या समझै नहीं	५-३४
२८१	सुष-सज्या संझ्या समय	४४-३१९
२८२	सूती सहै सहैलिया	६-४९
२८३	सोहै जेहा जेहा सुभट	१२-९०

ह

२८४	हकमल हल हुकलै	३३-२४७
२८५	हय चढियो पर घय हुकम	२३-१९४
२८६	हलकारा मालुंमै करी	३३-२४९
२८७	हसज्यौ कसज्यौ षेलज्यौ	२०-१६४
२८८	हसत लसत निरषत हरष	४९-३८१
२८९	हिया पीतम परहरत	२६-२२०
२९०	हीरांके आयो हरष	१२-९३
२९१	हीरां चाहै छैल चित	६-४३
२९२	हीरां चिंता परहरी	३-१९
२९३	हीरां चिंता परहरो	३-१८
२९४	हीरां चिंता परहरो	५-३५
२९५	हीरां जोवत मन हरष	५-३८
२९६	हीरां तणी सहेलिया	५-३६
२९७	हीरां बगसीरांम हित	५०-३९४
२९८	हीरां मद आतुर भई	६-४२
२९९	हीरां मदन बिलास हित	२४-१९७
३००	हीरां मनमें अति हरष	१९-१५५
३०१	हीरां मनमें अति हरष	४२-३०१
३०२	हीरां मन व्याकुल भई	४-३०
३०३	हीरां मन वाकुल भई	४-३१
३०४	हीरां यम लषियो हरष	२०-१५८
३०५	हीरां व्याकुल थरहरत	२५-२१२
३०६	हीरांसु कहो केसरी	२१-१६८
३०७	हीरां सुणज्यौ हेतकी	४६-३४७

क्र०		पृ० प०
३०८	हीरां सूती महलमें	६-४५
३०९	हू तो चाकर हूकमकी	३४-२५१
३१०	होद नीर चादर वहत	२९-२३२

छप्पय अनुक्रम

अ

१	अब निवाई ऊपरै, हीरां दिल प्रोहित	४१-२८५
२	अब बरषा रत घुमत घुमंड घनहर घूमत	४१-२८७
३	अब सूरज्य आथम गहर, सुनो बति गजिये	२१-१६९
४	अले बेलियां असवार यण बिध देषण आई	१८-१४१

उ

५	उदयापुर त्रिय अवर बिवध मंन राग बणावत	१५-१२२

ऊ

६	ऊट चढै आकलो यम राईको आयो	३६-२६२
७	ऊसन धरण आकास, उसन चल पवन असंभवै	४२-२९१

क

८	कर रावण केसरी चलत मंन बात हरष चित	३४-२५७

ग

९	गिगन मलत घन घोर चपला चंमकारत	४१-२८८

घ

१०	घोडा भड घमसांण पाषरा बगतर पूरा	१८-१४२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक पृष्ठांक पद्यांक

च

११ चढे रीस चष चोल मुंछ मिल
अगट अमांवत ३१-२४१

१२ चोपदार सुण बचन प्रोहित
ऊसस ३०-२३४

ज

१३ जगमिंदर इम जोप राण
भीमेण विराजत २९-२३३

ध

१४ धमकत पग घुघरा तडत
दमकंत ४३-३१२

१५ धरण फोड घडॅ धडे गहिर
गडे त्रमागल ३६-२६५

प

१६ प्यारी महल प्रजंक पर
सपुष सेज फूल पर ४१-२८६

१७ प्रोहित यण प्रकार साथनैं
बात सुणाई २३-१९३

१८ प्रोहित लषियो प्रगट आज
तीजां आडंबर ३४-२५६

ब

१९ बा बात करतां यतै पणि
प्रोहित आयौ ३६-२६३

भ

२० भीमरांण सांभले कहर
प्रजले कोप कर ३६-२६१

म

२१ मरत नीर बिन मीन आप बिन
मो दुष ऐसौ ३४-२५५

र

२२ रचै बाहादर रावं गवणत्र
ब ट गरज्यै ३३-२४८

क्र० पृ० प०

२३ रण केते नर रहे जिते भड
सनमुष जुंटे ३८-२६९

२४ रति बिलास अनुराग करत
निस-दन कंतूहल ५०-३९०

स

२५ सषियां तणें समाज ललित
गहणां नीलंबर १४-१२१

२६ सीतल जल थल सरस
पवन सीतल ऊतर पर ४१-२९०

२७ सुगल गवर संक्रमी झणण
आभूषण झमकत २०-२०९

ह

२८ हुणण मांच हैमरांण गणण
घोषा रवै डूंगर ३६-२६४

२९ हीरां मंनमैं अति हरष
बिवध पोसाष बनाई ३४-२५८

कुण्डलिया अनुक्रम

उ

१ उण गदीक ऊपरें राजत
बगसीराम ११-८६

२ उदियापुरकी छब अधिक
संपति नगर समाज १-४

च

३ चहुँ तरफां बणि चौहटां,
अटा बुतंग अषंड २-७

त

४ तीज तणें उछव तटै,
बांचौं घणौं बषाण ७-५९

द

५ दरवाजा बणिया दुगम,
कीना लोहकपाट १-५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

प

६ प्रोहित बूंदी परणियौ,
रसियौ बगसीरांम ७-५८

७ पीछोलाको पेषबो,
मान सरोवर मोज २-८

ब

८ बणी बिछायत बाडियां,
जाजमैं गिलम जुहार ११-८५

९ बाग अनेक बावडी, अदभुत
फूल अपार २-९

र

१० राजत बगसीरांमकै, अभंग
सुभट थट येम ११-८७

व

११ वजे अंमक धौसर बजं,
नौबति सबद निराट १-६

स

१२ साथ समाजत घण सुभट,
अग्राजत आथांण ७-५७

भुजंगप्रयात-अनुक्रम

उ

१ उदारं विशालं वणै भाल अंगं १३-९९

क

२ करै हाव-भावं कटाछं किलोलं
१४-११९

३ किये फूल सप्पेद बेणींक रंगे १३-९७

४ कुचं कंचुकी रेसमी तारकंदं १४-१०९

च

५ चढं ऊतरं वासना अंग चोजं
१४-१२०

क्र० पृ० प०

ज

६ जरीतारपट्टं बिराजै जहूरं १४-११५

७ जु हारं मिणी पुंचिका हाथ जोपै
१४-१११

द

८ दुतं लोचनं काजलं रीष दीनें
१३-१०२

९ दुतं दंतकी दाडिमी हीर दांणं
१३-१०४

ध

१० धरे बात निरधार छडीदार ध्यायौ
२८-२३०

प

११ पटं बैठ हीरां सनानं प्रसंगं १३-९६

१२ पदं कोमलं लाल एडी प्रकासै
१४-११६

१३ पुणै मांगकी ओर सोभा प्रकारं
१३-९८

१४ पुनीतं नषं रंग मैंदी प्रकासै १४-११२

फ

१५ फबै बांहे बाजू मिणी जोति फूलै
१४-११०

ब

१६ बणी कंठसोभा बिसालं वसेषा
१३-१०७

१७ बणै नैण भूहार भालं विचत्रं
१३-१००

१८ वलै कंठकी सोंभनां कौण भासं
१३-१०८

१९ बिचै नासिका अग्र मोती बिराजै
१३-१०३

२० बिणे मोचडी हीर मोती बिचित्रं
१४-११७

क्रमांङ्क पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

२१ मिणी माणकं हेम ताटंक मंडै १३-१०५
२२ मुषं मंडलं जोति सोभा बिमोहं १३-१०६

ल

२३ लसै लोचनं षंजनं मीनलीला १३-१०१

व

२४ विभूषै सरीरं पटं नीलबृंदं १४-११८

स

२५ सुरंगं दुती नाभि गंभीर सोहै १४-११४

ह

२६ हिये फूलमालं कीये हीरहारं १४-११३

छन्द झमाल-अनुक्रम

प

१ प्रोहित बगसीरांम भमर छै कीतको ७-५६

गाथा चोसर-अनुक्रम

ड

१ डसण येक गजमुंष लंबोदर १-२

चंद्रायणो-अनुक्रम

ऊ

१ ऊदयापुरमें आयकं प्रोहित येरसों १०-८४

त्रोटक-अनुक्रम

अ

१ अब राव बाहादर कोप कियूं, लल-

क्र० पृ० प०

कारत सेल त्रभाग लियूं ३७-२६६
२ तीन प्राक्रम येक तुरंगम यूं, भण नाम स नीलबिडंगम यूं १६-१३५

छन्द उधोर-अनुक्रम

अ

१ अति मीठा बोलत्त मोर, सुभ करत्त कोयेल सोर ८-६१
२ अदभुत सुभट अपार, उतंग अमल उदार १६-१३४

भ

३ भणिया किम बिडंग, अदभुत प्राक्रम अंग १७-१३७

गीत-अनुक्रम

ऊ

१ ऊजालै म छुठै जगै क्रोधबांन मह बोला वीर जंग ३९-२७१

घ

२ घरे घण कटक चोखै घोटै चढि झाला चहूंवांण ४०-२७४
३ घुरे त्रमाला मचायौ जंग मेवाड़ चीरवो घाट वुयो जिण ३९-२७०

च

४ चंद्रहासांकै षागां प्रचंडा झुंड बीर चालै ३९-२७२

ब

५ बागी घमचाल कटक दो हूऐ वंल कढि किरमाल कराली ३७-२६७

ष

६ षरे गोषालानु मार मंडै फूलधारा षैत धरैगो ३९-२७३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

छन्द पधरी-अनुक्रम

उ

१ उपजी कोडी धज घरि आय, लषमी-चंद मन उछव लगाय २-१४
२ उपत जगमंदर जगनिवास, पर दोहन-को शोभा प्रकास २९-२३१

क

३ कोप्यो क अबै प्रोहित कराल, जग्यो क सोर ढिग अगन ज्वाल ३७-२६८

क्र० पृ० प०

ब

४ बतलायो ईम केहरि बडाल, कोप्यो क आय जमजाल काल ९-६९

भ

५ भयो प्रातकाल परकास भांन, बन पंषीजन बोलत्त बांण ९-६५

व

६ वणि महल सपतषंड गगनवाट, कण हेम जटत चंदण कपाट २१-१७१

परिशिष्ट २ (ख)

वात रीसालूरी

दूहा-अनुक्रम

अ

१ अगन सरण ताहरो करूं ११०-२०३
२ अगर चंदणरा ज(ल) कड़ा (टि.) ११३-२८
३ अगर चदन करी एकठा (प.) २०५-६४
४ अपुत्रस्य गतं नास्ती (टि.) ५२-२
५ अपुत्रस्य गृहं सुन्यं (टि.) ५२-१
६ अब बेगा मिलज्यौ हठमला १०९-२००
७ अब वसन्त ही आवही (टि) १४३-७४
८ अमी छबक्का नांष कर (प.) २१०-९९
९ अमृतवेली जो चरौ ९१-११७
१० अमृत बेलो बावीओ (प.) २०२-४८
११ अवगुणगारी गोरडी (प.) २०५-६५
१२ अवे आंबा उवे आ... (प.) २१५-५८
१३ अहौ-अहौ रैणी वीगती ११९-२५३
१४ अहो रीसालू कुंवरजी १०६-१८१
१५ आइयो लेष आलाहका १००-१५८
१६ आईयो कुंवरजी आवीया १०१-१५९
१७ आछो कापड चोल रंग (प.) २०४-६१
१८ आज उजाडा देसमें ९६-१४६
१९ आज कुंवरजी रीसालूवा १२३-२६८
२० आज मेहिल आछौं वणौ ९७-१५१
२१ आज रूपाली रातडी १२२-२६५
२२ आज सलूणी रातडी ११६-२३१
२३ आज सूरज भल उगीयो १३२-३०७
२४ आजूनो दिन अति भलौ ९५-१४०

क्रमाङ्क		पृष्ठाङ्क पद्याङ्क
२५	आठ पंखेरू छ बग (प.)	२०१-४२
२६	आडा कसीया कांमनो	११६-२४६
२७	आप कही सो म्हे परणीया	१२६-२८३
२८	आप खूसी पीउं पधारीयै	६६-१४५
२९	आभे अडंबर बादली	११६-२२६
३०	आय सजोगी ध्यांनमें	१०५-१७६
३१	आसण वाली बेठो रहूं (प.)	२०७-८१
३२	आसू लूधी सेणरी	११८-२४३
	इ	
३३	इण कारण हसीया अमे	७२-६३
३४	इण देसे तु आवीयौ	७२-६२
३५	इम चिंतवता आवीयो	१०४-१७४
३६	इम टहुक्का सरला दीया	१०१-१६०
	ई	
३७	ईम केहतां आंसू ढल्या	६६-५६
	उ	
३८	उंचा महिल आवास है (टि.)	७५-०
३९	उची मीदर मालीया	७५-६६
४०	उजेणीपूर आवीया	६१-२३
४१	उठ वीडाणा देसरा	१२२-२६१
४२	उठीयौ कुंवर वीवालूआ	११७-२३६
४३	उठो-उठो कुंवर सोनारका (टि.)	११७-५२
४४	उठो कुमार सोनारका (टि.)	११८-४७
४५	उठो कुंवर सुनारका (टि.)	११७-४१
४६	उठो नीबूध्यका आगरूं	१२०-२५४
४७	उत्तम जननी प्रीतड़ी	८३-८५
४८	उत्तम जीव हुवे जिके	१०६-१८३
४९	उतावल कीया अलूभीयै	६६-१४१

क्र०		पृ० प०
५०	उद्यमं साहसं धैर्यं	१११-२१३
५१	उम्रावां साथीधरा	१३०-२६३
५२	उमरावा वरज्या घणा	६८-५१
	ऊ	
५३	ऊं एकलडी महीलमें	६८-१५६
५४	ऊठी नें ऊभो थयो (प.)	२०७-८४
५५	ऊभा थाए तो अमी झरे (प.)	२०६-६३
	ए	
५६	ए आजूंणी रात	११६-२३५
५७	एक गई दूजी गई	१११-२१०
५८	एक छोडी दूजी छोडस्यां	११६-२४५
५९	एक ज घडी आधी घडी (प.)	१६७-१०
६०	एक दीयां तौ दोय दीयां (प.)	२१३-४१
६१	एक नर दो नारसूं (प.)	१६८-१४
६२	एक नारी ब्रह्मचारी (प.)	१६८-१५
६३	एक षंड चढ दूसरै	६१-१२१
६४	एक षंड चढी दुसरे (टि.)	६२-३०
६५	ए ज्यु रीसालू रीसालूओ (प.)	२००-३५
६६	ए नहीं आंबा आंबली (प.)	२०८-६२
६७	एवडी रीस न कीजीयै	६७-४७
६८	एहनो काइ पटंतरो	६२-३४
६९	एहवो माता-पिता तणो	६५-४३
	ऐ	
७०	ऐक षंड दुजे षंड़ (टि.)	६३-२६
	ओ	
७१	ओ दीसे आंबा आंबली	१६६-२४
७२	,, ,, ,, (प.)	२०८-६१
७३	अंग उमाहो कुंवरजी	१३५-३२०

क्रमाङ्क पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

७४ अंबर तारा डिग पडै १२६-२८८
७५ अंहो अंहो कुंवरजी रीसालूवा ६७-१५०

क

७६ क्यारा केसर नीलडा ८५-६१
७७ क्यारी केसर द्राषकी (टि.) ८४-०
७८ क्युं चाल्यो रे मांनवी (टि.) ७२-१२
७६ कडकड नाषूं काकरा ११४-२२०
८० कडकड बाहुं काकरा (प.) २१३-३६
८१ कथा रसिक कविरायकी ५१-४
८२ कर चीदा दारु घणो (टि.) ६२-३१
८३ कर छीदो क्युं कर पीवै (टि.) ६३-२७
८४ कर छीदो पांणी पीवै (टि.) ६४-१७
८५ कर ढीला घट सांघूड़ा ६१-१२५
८६ करसूं कर मेलाविया १००-१५७
८७ कवर नई कौ कारणै ६१-२५
८८ कवियां मंन जय पांमवा १४४-३४६
८६ कस्तूरीरा गुण केता (प.) १६७-६
६० कांई यौवनमें मतीयां (प.) २१४-५६
६१ कागद वाचनं भेजीयो १४०-३३६
६२ काची कली मत लूबियै ८६-१११
६३ काठो तोडातां जणे (प.) २०६-७७
६४ कामण कारीगरतणी ११०-२०८
६५ कामण हीयडा कोरणी ६४-१३४
६६ काम विचारीनै कहो ६६-१४२
६७ कारीगर किरतारका १०८-१६१
६८ काला मुहकं कागलै (टि.) १०८-४४
६६ काला मुहरा कागला (प.) २१२-२८
१०० काला मृग उजाडका (टि) ७०-५
१०१ ,, ,, ,, (टि.) ७१-४
१०२ काला मृग ऊजाडका (प.) १६६-२३
१०३ काला रे मृग उजाडका (टि.) ७०-६

क्र० पृ० प०

१०४ काला हरण उजाडरा (प.) २११-६
१०५ काली कांठल भलकीया १३३-३०६
१०६ काहां चाल्या वे राजवी (टि.) ७३-०
१०७ कांहा चालो रे राज (टि.) ७२-८
१०८ किण ऐ···(प.) २१२-१७
१०६ किणस्यूं राजा थे रम्या ७५-६८
११० किणे आंबा भंभेडीया (प.) २०१-४३
१११ किसका वै आंबा आवली ६०-११२
११२ किहां गया कुंवरजी प्रभातका ८८-१०२
११३ कीण ए लोयण लोइया (टि.) ६८-३५
११४ कीण मेरा माला भंगीया (प) २१२-२४
११५ कीण ही लोयण लोईया (टि.) ६८-२६
११६ कुण छै बाल वडी ६२-३३१
११७ कुण तु इहा आयौ अठै ७२-६१
११८ कुण राजा रौ लाडलौ (प.) १६८-१२
११६ कुमर कहैजी गोरीया ६३-३७
१२० कुमर चाल्यौ सांमो जवे ८१-८१
१२१ कुमर सूणनै चीतवै ६२-३३
१२२ कुलवटनी कामणि तणी ६४-४१
१२३ कुवर कहै अहौ हीरणजी ८३-८८
१२४ कुवरजी छाया माहरी ८३-८६
१२५ कुवरजी सोच घणो कीयो ८८-१०४
१२६ कुवरजी हव इम कित करी १२६-२८०
१२७ कुवर भलै घर आवियौ (टि.) १४०-६१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

१२८ कूकड कूंकूं कहुकीया ११६-२५२
१२९ कूड कपटनी कोथली १३४-३१४
१३० कूडौ बोलै छै सूवटौ ९८-१५३
१३१ केड कटारा वंकडा (प.) १९९-२६
१३२ के तू देवल पूतली (प.) १९९-२५
१३३ के मूग्रो कें मारीग्रो (प.) २०५-६६
१३४ केसर कहै कस्तुरीयां (प.) २११-३
१३५ केहनी अस्त्री न जांणज्यौ १०४-१७१
१३६ कै मुग्रा कै मारीग्रा बे ११४-३९
१३७ कोई न लेवैग्रा लवैं १२०-२५७
१३८ कोड छडाया कागला १२२-२६६
१३९ कोरण उतराधिकरण ११६-२३०
१४० कंचू कस्यौ दिल हृथ कीयौ ११९-२४७

ग

१४१ गढ गांगलरा राजीया (प.) २०२-५०
१४२ गणपतदव मनाय की ५१-१
१४३ गाव(बे) मंगल नारीयां ६१-२८
१४४ गुणवंती नारि तणा १४४-३४२
१४५ गुनेहगार हु रावलो १३९-३३७
१४६ गोरषनाथजी नै ध्याईयौ ८१ ७९
१४७ गोरषनाथजीरी सेवा करी ६९-५८
१४८ गोरषनाथजी सेवा करी (टि.) ७०-११
१४९ गोरषनाथजीरी सेवा कीधी (टि.) ७१-६
१५० गोरषनाथजीरी सेवा कीधी (टि.) ७१-७

घ

१५१ घणा दीनारी प्रीतडी ८३-८७
१५२ घूघरीयांरा सौरसूं ८६-१००

च

१५३ चढीया सहु जांनीया घणा ६१-२२
१५४ चाकर पंचसय चेरीयां १३५-३२३
१५५ चातुरकूं चातुर मिले (प.) १९७-११
१५६ चाल्यौ ग्रांबां ग्रागलै (ग्र.) ५६-११
१५७ चालता ठीक छटकीया ८६-९९
१५८ चालो भीलीय सेणसूं ११६-२३४
१५९ चाषडीयां चटका घणा (प.) २१३-४४
१६० चोपड़ षेले चतुर नर (टि.) ६२-३२
१६१ चोर इहां कुण ग्रावीयो ९७-१४९
१६२ चंदन कटाउ··· ११३-२१९
१६३ चंदण-काटे चह रचुं (प.) २१३-३५

छ

१६४ छाजे बेठी मावडी (प.) १९७-४
१६५ छीपायौ तबेला ठाणमै ८९-१०७
१६६ छोटीनं मोटी करी १४४-३४५
१६७ छोडचो सगलो गांमडो (प.) १९८-१९
१६८ छोरू ग्रास करै घणी १४०-३३८

ज

१६९ ज्यांह नवलषा बाग है (टि.) १४३-७५
१७० ज्यूं पितुं जपे तुं षरो १३१-३०२
१७१ जगमे नारि रूवडि १३४-३१५
१७२ जतन करै च्यारूं जीवतणां ८०-७५
१७३ जलज्यो पासो षेलणां ७८-७२
१७४ जल ही उढ···हरण (प.) २१५-५९
१७५ जध्य राष्यस वेताल है (टि.) ८७-२२
१७६ जाकी जासूं लगन हे (प.) २०१-३९

क्रमाङ्क		पृष्ठाङ्क पद्याङ्क
१७७	जाचक जै-जै बोलीया	६१-२४
१७८	जाचक बहुधन पोषीया	६१-२६
१७९	जांण न पाई हठमला	१०८-१९६
१८०	जांणै मांन सरोवरे	१३३-३११
१८१	जांन बिराजी गोहरें (प.)	१९८-१७
१८२	जावत जीभें क्युं कहां (प.)	२०१-३८
१८३	जावो रांणी विडांणीया	१०६-१८०
१८४	जाण्या रीण्या विवताल है (टि.)	८८-१८
१८५	जि नर रूपे रूवडा	१३३-३१३
१८६	जीव हमारा तें लीया (प.)	२००-३१
१८७	जे देषै तं रूंषडा (प.)	२११-८
१८८	जे परपूरषां कामनी	९३-१३१
१८९	जेसा पूत्र ज्यूं वाल्हा	१३१-२९८
१९०	···जोगी जोगीणा (प.)	२१२-२९
१९१	जोगीड़ा रस भोगीया	१०५-१७५
१९२	जोगीया पर भोगीया (प.)	२१३-३०
१९३	जो तुमै रीसवतां हूवा	६७-४८
१९४	जो मिलवो मूष देषवो	१३९-३३३
१९५	जो सूरज आथूणमें	८३-८४
	झ	
१९६	झगो धोयो फेंटो धोयो (टि.)	११२-२६
१९७	झारी हठमल हाथ लै	९१-१२४
१९८	झिरमीर झिरमीर वरसीयो	११७-२३७
	ड	
१९९	डाकिणमंत्र अफीण रस	१९८-१६
	ढ	
२००	ढोल धडकै तन वडे (है)	१२७-२८४

क्र०		पृ० प०
	त	
२०१	तब राकस रूपं रवो	८१-८२
२०२	तल गुंदल निलज उपरे	१२५-२७६
२०३	तास तीषां लोयणा	१२४-२७३
२०४	तिनसूं आयो थां कनै	८९-१०८
२०५	तीर सपल्लल चांपीयो	१३०-२९२
२०६	तीहां छै बचा अती भला (टि.)	१४३-७६
२०७	तीहांथी मांन नृपततणी	६१-२७
२०८	तु कारण क्यूं पूछ बै	९०-११३
२०९	तुम फूरमायो जा परो	१३९-३३२
२१०	तुरत मोहर लेई करी	८०-७४
२११	तु राजा हूंदी गोरड़ी (प.)	२१३-३८
२१२	तुं हठालु हठमला (टि.)	९१-२८
२१३	तुं हठीमल तुं हठीमला (टि.)	९३-२४
२१४	तूबी चूइ टबूकडे (प.)	२०६-७०
२१५	तें आण्यो में भषीयो (प.)	२०३-५३
२१६	ते नारी गढ सूरडी	९२-१३०
२१७	···तो आतम लोई (प.)	२१४-५४
२१८	तो इहां बंध मे सरचा	६५-४६
२१९	तोरा नाम हठमला	९०-११४
२२०	तो सरसी नार तणा	११०-२०७
२२१	तोसुं केल करांतड़ा (प.)	२१२-१८
	थ	
२२२	थारो वीरो बहुबली (टि.)	१४२-७३
२२३	थाल भरी दाल-चांवला	५७-१२
२२४	था वीना सारी वातडी	८१-७७
२२५	थांह सरसी मांहरे	१२३-२७२
२२६	थांह सरीषा म्हारा वांहरू	८४-९०
२२७	थांसूं कटती रातड़ी	६९-५५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

२२८ थे छो राजा बहुगुणां (टि.) १४२-७१
२२६ थे दीधौ म्है भख्यौ (प.) २१२-२६
२३० थे दीनां में जीमीया १०३-१६६

द

२३१ दइवांधीन लिख्या जिके १०७-१८४
२३२ दया रषो धरमकूं (प.) १६७-६
२३३ दल दिषणादी देषीया १३८-३२८
२३४ दल वादल भेला हुवा १३७-३२७
२३५ दस मास हुंदी परणीया ६३-१३२
२३६ दस सुवा दस सुवटा (प.) २१२-२३
२३७ दुरबल के बल रांम हे (प.) १६७-८
२३८ देसडला परदेसड़ा (प.) २०५-६३
२३९ देस वीडांणो भूय पारकी ११२-२२८
२४० देषौ छोरू सुष सदा ६५-४२
२४१ देषौ सहेली आयकै (टि.) १४०-६३
२४२ देषौ सूषम दुषै हुवौ (अ.) ६६-५७
२४३ देषो हुंती दस मासनी १०४-१७०
२४४ दोनूं राजा जुगतिका (प.) १६७-३
२४५ दंत कटका कुदतो ८१-८०

ध

२४६ धणी सासती नारी नही ११८ २४४
२४७ धन-धन मातारो नेहडो १३६-३२४
२४८ धन रे नांम रीसालुवा (टि.) १४०-६२
२४९ धारवंती ढली करी (प.) २०७-८६

न

२५० नगर चोहटे नीसरचा (टि.) १३२-७०
२५१ नगर चोहटे नीसरचौ (टि.) १३२-५७

क्र० पृ० प०

२५२ नयण थारा झुंभला (टि.) १४२-७२
२५३ नवल सनेह पीहर तणौं ६४-४०
२५४ नवि मूओ नवि मारीओ (प.) २०५-६७
२५५ नष अंगूठे अंगूली ११२-२१७
२५६ नहीं घररो वेरागीओ (प.) १६८-१३
२५७ नही घोडा रथ उंटीयां १०४-१७३
२५८ ना जोवनमैं मतीया (प.) २१४-५७
२५९ नाटिक छंद गुण गाजीया ५७-१५
२६० ना म्हे मूवा नवि मारीया ११४-२२२
२६१ नार पराई विलसतां १०१-१६४
२६२ नारी न जांण्यो आपरी १११-२१२
२६३ नारी नही का आपरी ११८-२४०
२६४ नारी ना-ना मूल रटे ११६-२५१
२६५ नारू तीखा लोयणां (प.) २१४-४६
२६६ नासा सोहे मोतीयां (प.) २०७-७८
२६७ नाहर सेती अधीक बल (टि)६?-३३
२६८ नीदडीयांरो नेहडो ११६-२३३
२६९ नेंण चूकी निजर फेरवी २०७-८३
२७० नेंनूकी आरत बुरी (प.) २००-३०
२७१ नेंनूंसे सांन ज करी (प.) २००-३६

प

२७२ प्रथमें प्रणमूं श्रीगणेश (प.) १६७-१
२७३ प्रह फूटी प्रगडो भयो (प.) २०६-७२
२७४ प्रेम गहिली हुं थई १०८-१६५
२७५ प्रेम विडांणा पारषो १३१-३०१
२७६ पग दीठा पवंगरा (प) २०१-४१
२७७ पटुवा महता गांवरा (प.) २१?-३६
२७८ पर घर पर धरती तणा ८६-११०
२७९ पर भूमी पडवा थकी १२३-२७१

क्रमाङ्क		पृष्ठाङ्क पद्याङ्क
२८०	परवाई झीणी फूरे	११५-२२७
२८१	पलंग छीपाए छांटीये (टि.)	८७-३७
२८२	पलिग पट्टी ढालीज्यां (प.)	२०१- ४
२८३	पाई मुका··· (प.)	२१४-५३
२८४	पाघडीयां पंचा सकल (प.)	२०७-७६
२८५	पाछो बोलो बोलड़ो	१३१-२६७
२८६	पांणी जग सघलो पीए (प.)	२०४-५६
२८७	पांणी पीनें वाटथी (प.)	२०८-८६
२८८	पातसाह अग्या तेहनें	८५-६४
२८९	पांना फूलां मांहिला	१०६-१६६
२९०	पाय पहिरी चावडी (प.)	२०६-७३
२९१	पाल पीयारी जल नवो (प.)	२०४-६०
२९२	पालो पांणी पातसाह	११६-२२८
२९३	पावडीयां चटकालीयां (प.)	२०६-७४
२९४	पावरीयां पटकालीयां	१२०-२५८
२९५	पावल ऊपर घूघरा (प.)	२०९-९७
२९६	पिड़स पतल कटि करल	१३३-३१०
२९७	पिण को दाय उपायथी	६५-१३८
२९८	पिण तो सरषो बालही	१३४-३१७
२९९	पिण थैं जावौ गोरडी	६५-१३६
३३०	पिण हिव सूता रिसालूंवा	१२२-२६७
३०१	पिता हूकम वनवासको	१३६-३३४
३०२	पिलंग छपीयां छांटीयां	६८-१५५
३०३	पीउ कचोलें पीउ वाटके	१०३-१६७
१०४	पीउ प्यारी पीउ प्यारडी	११६-२४६

क्र०		पृ० प०
३०५	पीउ रे दुध रसालुग्रा (टि.)	७०-७
३०६	पींजरीयारा पोढणा	६६-१४७
३०७	पींडत पुछणहूं चली (प.)	२११-२
३०८	पीया दुध फली करो (टि.)	७०-३
३०९	पीया दुधा थली करौ (टि.)	७१-०
३१०	पूरब भला गहिलाथई	११८-२४१
३११	पूरो पूनम जेहवो	१३३-३१२
३१२	पूत्र ईसा जगमैं हुवै	१३१-३००
३१३	पूत्रतणी वांछा घणी	६५-४५
३१४	पूत्र नहीं ईक मांहरै	५२-८
३१५	पूत्र पितारा हुकममे	१३१-२९६
३१६	पेहरज्यौ मांहरी पावडी	१२०-२५५
३१७	पैहर हमारा लुघडा (प.)	२१३-४३
३१८	पोह फाटी पगडो हुवौ (प.)	२१३-४२
३१९	पंच पंषेरू सात सूव सूवटा	६६-१४८
३२०	पंथी ए सुघड धोइया (प.)	२१३-३२
	फ	
३२१	फिट फिट कुवधी सज्जनां	१०८-१९३
३२२	फुलमती हठीयै धरी (प.)	२१४-६०
३२३	फूलवती हठीयो ग्रहो (प.)	२०९-९६
३२४	फेरा फीरे फीरंदड़ां (प.)	२११-०
	ब	
३२५	बारै बरस वनवासरा	१३५-३२१
३२६	बालापणरी प्रीतड़ी	१०८-१९०
३२७	बांहडीयें जल सजल (प.)	२०८-८७
३२८	बेटा जाया सालिवाहन (प.)	१९७-२
३२९	बेटा तुं सुलषणो (टि.)	१४१-६५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमाङ्क पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

३३० बंधव भलै घर आवीयो (टि.) १४०-६४

भ

३३१ भलाई पधारयां कुंमरजी १३२-३०६
३३२ भला ई पीयारो नेहड़ो १३२-३०८
३३३ भला तुम्हे सुषीया हुवौ ९५-१३९
३३४ भलो गाइततनी १३१-२९९
३३५ भागवांन अरु साहसी (टि.) १४३-७९
३३६ भुम पराई नै पर मंडली (प.) २१३-३४
३३७ भुम पराई भोगणं (प.) २१३-३३
३३८ भूमि पीयारी भोगणो (प.) २०४-६२
३३९ भूलै चूके भोलडी ११५-२२४
३४० भेटे चरण सूखी थवूं १४३-३४०
३४१ भोलै भुलौ रे वालंभा (प.) २१३-४५
३४२ भोलै म भूल रे भाइया १२१-२५९
३४३ भौम पराई विगाडीया ८४-८९

म

३४४ म्हारे पुत्री इक बले १२६-२८१
३४५ म्हे क्यूं रीसालूं थाह थकी १२३-२७०
३४६ म्हे परदेसी दीसावरा ९१-१२२
३४७ म्हे मारचा किण रांमरा ७३-६५
३४८ म्हे समसत रायक पूतड़ा १२६-२७९
३४९ म्है राजा राजवी ७३-६४
३५० मनरंजण अतिसुषकरण १४४-३४७
३५१ मांगणहारा मंमता ५७-१६
३५२ मांटी सूतौ छोडनै ११८-२३८
३५३ माणस ते नही ढोरड़ा ९२-१२९

क्र० पृ० प०

३५४ माणस देह विडांणीया १०९-२०१
३५५ माता मै मोलवा तणौ (टि.) १४१-६६
३५६ माथू फिरचूं तो मारगथी ओ (प.) २०८-९०
३५७ माथो लागो बार सांषस्यूं (प.) २१०-१००
३५८ माय बाप लियां तिहां १३६-३२५
३५९ माय वडारण बाप वड (टि.) ७१-३
३६० माय वीडांणी पीता पारकां (टि.) ७०-८
३६१ माय पीडांणी बाप वड (टि.) ७०-४
३६२ मारचो मारचो रे बा (प.) २१२-१५
३६३ मारी नै माथौ ल्यावसू ८१-७८
३६४ मारेगो रे बप्पड़ा (प.) २००-३२
३६५ माली कहै पातसाहजी ८५-९२
३६६ माली रावें संचरचो (प.) १९९-२२
३६७ माहाराज धणी हूकमथी ६०-२०
३६८ मुगलो सूबो मेनड़ी ११५-२२३
३६९ मे अस्त्री विन सूनड़ा १०५-१७७
३७० मे मरहूं त्रिस कारणें १०५-१७८
३७१ मे मेरा कंचुआ मांणीया (प.) २०१-४५
३७२ मेरा नाम छै हठीमला (टि.) ९३-२३
३७३ मेरा नांम हठ भला (टि.) ९४-१८
३७४ मेरा नांम हे हट्ठीया (प.) २००-३३
३७५ मेरा मला भांगीया (प.) २१२-२०
३७६ मे विरहणी विरहातणी १०१-१६२
३७७ मे हठीया छुं हठमला ९१-११६
३७८ मे हठुवा मे ·· (प.) २१२-१६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांङ्क　　पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

३७९ मैं ही लोयण लोईया (टि.) ९८-३०
३८० मैं जाण्यो मृग मारीग्रो (टि.) १०३-३२
३८१ मैं तेरा माला भंगीया (प.) २१२-२१
३८२ मोटा थी मोटाथीइं (प.) २०७-८५
३८३ मो सरषी निगुणी तणे १०८-१९२
३८४ मौ सरसौ पीउडौ मील्यौ ११८-२३९
३८५ मंगल जारी मागरण १३४-३१६

य

३८६ योगी योगी योगीया (प.) २०३-५५

र

३८७ रतन कचोलो रूवडो १२५-२७५
३८८ रयणी दुषकी राश भी १०१-१६१
३८९ रस रमतां मेहलां विषे १०८-१९४
३९० रसालुहंदा ग्रांबा ग्रांबली (टि.) ९०-२६
३९१ रहो रहो केथ ग्रण भावना १२४-२७४
३९२ राकस धूतारो ग्रछै ८१-७६
३९३ राग-रंग-रसकी कथा ५१-५
३९४ राजन रूडा होयज्यो १३१-२९५
३९५ राजपाट सहु विलसतौ १४३-३४१
३९६ राज विना दिन जावसी ६९-५४
३९७ राज सरीषा प्राहुणा १३५-३१९
३९८ राजा तणौ वडग परणैनैं ६२-३२
३९९ राजा भोजजी···(अ.) ६१-२५
४०० राजारे भोजरी कुवरी (टि.) १२८-६६
४०१ राजा भोजरी डीकरी (टि.) १२८-५३, ६१

क्र०　　पृ० प०

४०२ राजा भोजरी मांनरी ६३-३८
४०३ राजा मिल नांम थापीयो ५७-१४
४०४ राजा मेरी वालही १०५-१७६
४०५ राजा रसालुरी वातडी (टि.) १४४-७४
४०६ राजा रीसालू हुंदी वातडी (टि.) १४४-६८
४०७ राजा रूठो स्यूं करे (प.) २०६-७१
४०८ राजा सूणनै बोलीयो ६७-५०
४०९ राणी कहै सूण राजवी ७६-७१
४१० रांणी झारी भर लेई ९१-१२३
४११ रांणी सहू साथै लीयां (टि.) १४३-७७
४१२ रांणी सूण पीवतं भणै ६२-३५
४१३ रांणी सूण मोहित हूई ९२-१२८
११४ रात ज करहा न उछरे (प.) २१४-४६
४१५ रात दीवस तीहां ही रहे (टि.) १४३-७८
४१६ राते करहा उछरै १२१-२६०
४१७ राते करहा न छूटीइ (प.) २०६-७६
४१८ रातैं नायौ तु हिरणीया ८८-१०३
४१९ रांमन रातडीयां तणी ११६-२३२
४२० रांम सरीसा भोगव्या १०७-१८५
४२१ रावत भिडियां बांकडा १०८-१८८
४२२ राक्षस रूडां मारीयो (प.) १९९-२०
४३३ रीस ग्रमारा माइ बाप (प.) २०२-४७
४२४ रीसालु रीसालुवा (प.) २१४-५०
४२५ रीसालू कुंवरने छोडने ९३-१३३
४२६ रीसालू बांण सनाहीयो (प.) २०२-५१

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

४२७ रीसालूया रीस कसाइया १२६-२७८
४२८ रीसालू रीसालुश्रा (प.) २०२-४६
४२९ रीसालु रीसालूवा (प.) २१३-३१
४३० रीसालू रीसावीश्रो (प.) २०७-८०
४३१ रीसालू रुदन करे (प.) २१०-९८
४३२ रीसालू हुंदी गोरडी (प्र.)
९०-११३
४३३ रीसालू हुंदी गोरडी (प.) २१३-३७
४३४ ,, ,, ,, ,, २१२-१९
४३५ रीसालू हुंदी वातडी १४४-३४३
४३६ रीसालू षोटो थयो (प.) २०९-९५
४३७ रूडा राजिद जाणज्यो १०८-१९७
४३८ रूपांसूं धोली करूं १२९-२८७
४३९ रूपा सोनानी रूप रंज (प.)
२१३-४०
४४० रेढा सरवर किम रहे (प.)
२०२-४९
४४१ रेढा सरवर न छोडीइं (प.)
२०५-६८
४४२ रे फूटरमल हिरणला ८७-१०१
४४३ रे बाबा तु जोगीश्रा (टि.)
१४२-७०
४४४ रे सूथारजीरा डीकरा ७९-७३
४४५ रंडो भूंडो ते करी ११०-२०६
४४६ रंडी राजी ना हुंई ११०-२०४

ल

४४७ लगन लेइने जोईयो ५७-१८
४४८ लागणहारा लागस्ये (प.) १९९-२७
४४९ लांबी लांबी भोषडी १२०-२५६
४५० लेख बिधाता जि लीष्या ५१-२
४५१ लोक करत बधामणा १३२-३०३
४५२ लोक करे बधांमणा (टि०)
१३२-५६
४५३ लोक करं वधामणा (टि०)
१३ -६०, ६४

व

४५४ व्यापारी ज्यूं बटाउडा १०९-१९८
४५५ बचन हतो सो पूगीयो १२८-२८६
४५६ वरषा रीत पावस करे ११५- २६
४५७ वस राजरो रावणी ६७-४६
४५८ वागां नोलडा चरणनूं ८८-१०६
४५९ वागां मांहेला मांनवी (टि०)
८९-२४
४६० वाजा छत्रीस वाजीया ५७-१३
४६१ वाडो मेहलां श्रादमी ८९-१०९
४६२ वात रीसालूंराय की १४४-३४४
४६३ विच कर डंडडी (प.)
२११-१३
४६४ विधना तूं तो वावली १११-२११
४६५ विष-वेलीका ईहा षरा ९०-११५
४६६ विसरा-वसरी चोसरा ११९-२५०
४६७ वीजलीयां चमकीयां (प.)
२०४-५८
४६८ वीरह विडाणां मेहलथी
१३०-२९०
४६९ वीरां कांइ वरांसीयो (प.)
२०६-७५
४७० वीरा तुं सुलषणो (टि०)
१४१-६७
४७१ वेधालूं मन वीधयो ५१- ३
४७२ वेलारा साजन भणी ६३-३९
४७३ वंका लोइण लोइसा ११९-२४८
४७४ वंदी जम छोडावीया १३२-३०५

श

४७५ श्रीगोरषनाथजीरे ध्यानसूं
८१-८३
४७६ श्रीमाहाराजा जांणज्यो १२६-२८२
४७७ श्रीमाहाराजा भोजजी १३१-२९४
४७८ श्रीमाहाराजा हुकम द्यो
१३९-३३५
४७९ श्री सिघ श्री श्रीहजूरने १३९-३२९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ष

४८० षट्रीतभोगी भमर ज्यूं ५२- ६
४८१ षरीय उहेलि छातीयां ६२-१२७
४८२ षिजमतबंधी रावली ६६-१४३

स

४८३ स्यूं कीधो रांणी एहवो ६७-१५२
४८४ सकल ओपमा जोग्य है १३६-३३०
४८५ सज्जण दुज्जण सुष करण (प)
२००-२६
४८६ सज्जन गया गुण रह्या (प.)
२०४-५७
४८७ सड सड सुड्या चषिया (प.)
२१२-२२
४८८ सत कीधो ने साहबण ११०-२०५
४८९ समस्तपुर पुत्र जनमीयो (टि०)
५७- ०
४९० समस्तसुत रीसालूवो ७६-७०
४९१ समूद्रं घोडं चालीयो ७२-५६
४९२ सरवर कापड धोइया ११२-२१६
४९३ सरवर निरमल नीरडे
१११-२१४
४९४ सरवर पाय पषालता (प.)
२१४-५१
४९५ सरवर पाय पषालतां (टि.)
१३३-७१-७२
४९६ " " " " १३५-६७
४९७ सरवर पाव पषालतां (टि०)
१३४-५८, ५६-६६
४९८ सरवर पाव पषालती (प.)
२०८-८८
४९९ सराहीये टुक वंती (प.) २१४-५५
५०० सरोवर धोयां धोतीयां (प.)
२०४-५६
५०१ सल्ला होय सो कीजीयों
१३६-३३६
५०२ सहस आंबा सहस आंबली (प.)
१६६-२१
५०३ सहस दाय हैवर दीया १३५-३२२
५०४ साइब भरस्यां गोरडी ६५-१३७
५०५ सांई बाजी राव बे १३०-२६१
५०६ साई साजन प्रेम का १२२-२६३
५०७ साथ थिरचो पूठो हीवे ६६-५७
५०८ साद करी करी हूं थकी (प०)
२०३-५४
५०९ सांप छोडी कांचली १२५-२७७
५१० सांप ज षाधे सहु मरे (प.)
२०६-६४
५११ सारा थिडाणा हिब हूवा
७५-६७
५१२ सालयहण नृप रावका ५६-११
५१३ सालवाहन नलवाहणरा (प.)
२११-१
५१४ साली मो मन माहरी ११०-२०६
५१५ सासरीया पीहर तणा १०४-१७२
५१६ साहिबडा तुमै सांभलो ११४-२२१
५१७ साहिब तो सूता भला १२२-२६२
५१८ सिगालो अरि बोलणो ५२-७
५१९ सिर जातां जीव जायस्ये (प.)
२००-३४
५२० सोषावो सोध करो ६६-५३
५२१ सीर अमारं अमी भरं (प.)
२१४-४८
५२२ सोह तणा जेवा वाछडा ६५-४४
५२३ सुंण बाई बीरो कहै (टि०)
१४१-६८
५२४ सुंण बीरा बेनी कहै (टि०)
१४१-६६
५२५ सुण सुण साहीब हठमला (टि०)
८५-९३
५२६ सुण हो साहीब हठमला ६१-११८
५२७ सुणीयं मुगजी आजरी ८६-६६
५२८ सुणो पातस्या हठीमल (टि०)
८६- ०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५२६ सूकुलीणी नारि तिका १३५-३१८
५३० सूगणी तुं चिरं जीवज्यो १२६-२८६
५३१ सूण रे हठीया पातसा १०२-१६५
५३२ सूण सूण साहिब हठमला ८५-६३
५३३ सूणीयै रीसालूरायकी ८६-६८
५३४ सूरज-किरण ज्यूं तन भिमै १३६-३२६
५३५ सूरा पूरा सौ हुमो ६१-११६
५३६ सूवा किण वेशे चलां १०६-१८२
५३७ सूष करस्यूं सारी वातरी ६६-१४४
५३८ सूष बहु तुम परसादथी १३६-३३१
५३६ सेज ऊजरी फूलूं जई (प.) २०१-४०
५४० सेयण रीसालूं हुय रही १२३-२६६
५४१ सेहर उज्जेणी के गोरमे १२८-२८५
५४२ सैहर सगलो भटकावीयो (टि०) १४०-६०
५४३ सो कोसां सजन वसै ११८-२४२
५४४ सोनी हुंदा दीकरा (प०) २१४-४७
५४५ सोभा मांन सरोवरां १११-२१५
५४६ सोल वरसरी वीजोगणी १२२-२६४
५४७ सोवन भारी हाथ करि (प.) २०७-८२
५४८ सौ तुम आज इहा रवे ८६-६७
५४६ संग सूहेलो पीउ तणो ६३-३६
५५० संभ्कचा सूं घडी च्यारडी ८५-६५

ह

५५१ हइडूं न हलावीइं (प.) २००-२८
५५२ हठमल मन काठो करी ६१-१२०
५५३ हठमल मीलज्यो साहिबा ११०-२०२
५५४ हठमल हठ कर चालीयो १०१-१६३
५५५ हठीया पतसा हठ म कर २११- ७
५५६ हठीया रावत वाकडां १०७-१८६
५५७ हठी हठीला हट्ठीया (प.) २०१-३७
५५८ हडवड आग हीसता ५३-१०
५५६ हड हड दे मुडी हसी (प.) २११-४, ५
५६० हथीयांरा पाषल जूडै (प्र०) ५३-६
५६१ हमकी लोंयण लोइया ६८-१५४
५६२ हम परदेसी पंथीया ६२-१२६
५६३ हम ही लोयण लोइया (टि०) ६८-३६
५६४ हय गरथ सोणगारांया ६१-२१
५६५ हर्षतणी गत होय रहि १३२-३०४
५६६ हरण्या भला केहरी भला (टि०) ७१ - ५
५६७ हरष बधाइ नं आवीया ६२-३०
५६८ हरिया हुयजो बालमा १०८-१८७
५६६ हरि हरणां थल करहलां (प.) १६७-७
५७० हरीया बागारां राजवी १०८-१८६
५७१ हरीयो होजे बालमा (प.) २१२-२७
५७२ हाथ प्रीउ मुष प्रीउ (प.) २१२-२५
५७३ हाथ पीउ मुषमें पीउ २०२-५२
५७४ हाथ पीउ मूष पर जलै १०३-१६८
५७५ हारचो सघलो गांमडो (प.) १६८-१८
५७६ हिरण कहै रांणी रातरी ८८-१०५
५७७ हिव रीसालू सीसकूं १०२-१६६
५७८ हिवे कुवरजी हालीया ७२-६०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५७९ हरण भला, केहर भला (टि०) ७०-१०

५८० हीरण भला कंहर भला (टि०) ७०-२६

५८१ हीव चवरी मंडप तणे ६१-२६

५८२ हीव घरे जोतसी तेडीया ५७-१७

५८३ हुंकम भलो माहाराजंरो ६०-१९

५८४ हुं जिण पुरुषरो गोरड़ो (प.) २१४-५२

५८५ हुं हठालु हठमला (टि०) ९१-२७

५८६ हु हठवा हठीमला (टि०) ९३-२५

५८७ हु हठालु हठमलो (टि०) ९१-२९

५८८ हे बांदी थांहरा हाथरो ११५-२२५

५८९ है म्हैल छवंती गोरीयां (प.) २११-११

५९० है म्हैल छवंती...... (प.) २११-१२

५९१ है मेहल [ल] छवंती गोरीयां (प.) २११-१०

५९२ है सुगणी म्हे पंखीया ९५-१३५

५९३ होणहार बुध उपजं (टि०) ८८-१९

५९४ होणहार सो बुध उपजं (टि०) ८७-२३

५९५ होणहार सो नही मिटै ७५-६९

५९६ होणहार सो ही ज हुवो ६८-५२

५९७ हंज सरोवर हंज पीए (प.) २०६-६९

५९८ हंसा ने सरवर घणा (प.) १९७- ५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट २ (ग)

नागजी ने नागवंतीरो वात

दूहा—अनुक्रम

अ

१ आंबो मरवो केवडो १५९-५३

उ

२ ऊंडो गाजे ऊतरा १५९-५०

क

३ कमर बंधावत कुंवरकुं १५०- ९

४ कान-घडयां घले सोवना १५८-४२

५ कुच कर ओखद भुज-पटी १५३-१२६

६ कुच आ भुज जा अहर जा १६१-६१

ग

७ गोरीदा गल हाथडा १५०-१३

८ गोरी बांह छातीयां १५०-१२

९ गोरी होयो हेठ कर १५०-११

च

१० चख सिर खत अवभुत जतन १५२-२२

११ चेला पुसतक झल करी १५८-४४

छ

१२ छोटी केहर बोहत्त गुण १४७- ३

ज

१३ जा जोबन अर जीव जा १६०-६०

१४ जान मांणी रतडी १६१-६३

१५ जावो जीभा ना कहूं १५१-१४

१६ जो याकों गावें सुणें १६३-८१

ड

१७ डूंगर केरा बाहुला १६१-६७

ढ

१८ ढोल दडूकें तन दहै १५३-२७

प

१९ प्रीत निवाहण अवतरघा १६३-८०

२० प्रीत लगी प्यारी हुंती १५२-२१

२१ पापी बैठो ओलीयें १५६-३६

२२ पीपल पांन ज रुण-झणें १५९-५१

ब

२३ बेलड़ी तिलड़ी पंचलड़ी १५८-४३

म

२४ मन चिंते बहुतेरियां १४५- १

र

२५ रहो रहो गुरजी मूढ कर १५८-४५

२६ राजा वेद बुलायकें १५१-१८

२७ रिमझिम पायल घूघरा १५८-४१

ल

२८ लाख सवाणप कोड बुध १४५-२

स

२९ सजन आंबा मोरीया १५९-५२

३० सजन चंदन बांवनें १५९-५४

३१ सजन दुरजन हुय चले १५१-१६

३२ सिघावो नैं सिध करो १५१-१५

३३ सिसक सिसक मर मर जीवे १५२-२०

३४ सेल भलूका कर रह्यो १५३-२८

ह

३५ हे विधना तोसुं कहूं १५०-१०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोरठा-अनुक्रम

अ

१ अमीणों तुम पास १५४-३१
२ आईयो आढालाह १६२-७२
३ आंख्या आंकस बांण १५०- ८

इ

४ इम कहीया बहु वेण १६१-६६

उ

५ ऊंडै पडवै पैंस १६२-७४
६ ऊपर थाडै अहीर १६२-७५

क

७ कटारी कुनार १६०-५६
८ करक कलेजा मांहि १५२-१६
९ कलमेंको कुंभार १६२-७७
१० कुलमें वोय कुंभार १६२-७८
११ कुंकुं वरणी देह १५५-३४

च

१२ चढती चड बड तार १६१-७०
१३ चुडलो चोरां एह १६२-७६

ज

१४ जाय जसी जुग छेह १६१-६२
१५ टिपांटिप टपीयांह १५७-३६

ड

१६ डाकण नहीं गिंवार १५८-४८

त

१७ तम्बोली आपो पांन १५०- ७
१८ तूं हीरावल हीर १६१-६८

ध

१९ धवला बाल न बाढ १५४-३२

न

२० नागजी तणै सरीर १५३-२५
२१ नागजी तुमीणा नेह १५२-२३
२२ नागजी नगर गयांह १५१-१७
२३ नागजी समो न कोय १५२-२४
२४ नागड़ा नव खंडेह १६२-७३
२५ नागडा नवलो नेह १६१-६४,६५
२६ नागडा निरखुं वेस १५७-३७
२७ नागडा नींद निवार १६०-५७
२८ नागडा सूतो खूंटी ताण १६०-५८
२९ नागा खायजो नाग १५५-३५
३० नागा नागरवेल १६१-६६
३१ नां भरडो नां भूत १५८-४७

भ

३२ भांमण भूल न बोल १५७-३८
३३ भावज भणुं जुहार १५५-३३
३४ भावज संपाडे वैठाह १४८- ५

म

३५ मूवा मुसांण गयाह १६३-७९

व

३६ वण्यो त्रियाको वेस १५७-४०

स

३७ साजनीयांसूं प्यार १५४-२६
३८ सामा मिलीया सैण १५४-३०
३९ सालो सूनो ढोर १५८-४६
४० सुसराजी सो वार १६१-७१
४१ सूतो सवड घरेह १६०-५६
४२ सूतो सुख भर नींद १५९-४९
४३ सेवा सेह तडांह १६०-५५
४४ संपाडे बंठाह १४८- ४

ह

४५ हूं जांणूं तूं जांण १४९- ६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट २ (घ)

वात — दरजी मयारामरी

दूहा - अनुक्रम

अ

१ अगलं भवबाली अबं १८५-१४७
२ अण दारूरै ऊपरै १८१-१२४
३ अण दारूसूं हे अली १८१-१२६
४ अण सुरत अण अकलनै १८५-१४६
५ अतरी अवगुण आपमै १८१-१३०
६ अतलस थरमा ऊमदा १६७-३०
७ अरज करां अलबेलीया १७५-७५
८ अलगी वे जोहे अली १६८-३७
९ अलल बचेरां ऊपरै १७३-५७
१० अलल बचेरा ऊमदा १७३-५९
११ अलल माहे ऊपनी १६५-१४
१२ अलबल(र)रहणो आए १७४-६६
१३ अलबल हुंता ऊडीयो १६६-२०
१४ आंगलीयां जणरी यसी १६९-४२
१५ आठू अपछर आगली १६५-१५
१६ आबूगिर अछ(च)लेसरी १६४- ५
१७ आया बचनांमे अबै १६५-१०
१८ आसै डाबीरी अग्ग १६४- २

इ

१९ इन्द्रायण मुष आषीयो १६५- ९

उ

२० ऊणां सहेल्यां आगला १६९-४७

ए

२१ एक इन्द्रायण रिष उभै १६५-११
२२ ऐक पयालो ऊमदा १७६-७८
२३ ऐक भटीरै ऊपरै १७५-७६

क

२४ कड़ां जनेऊ कंठीया १६७-३२
२५ कलजुगरो मांनै कहर १६५- ७
२६ कलहल करसी केकीयां १७९-१०४
२७ कवीयणनै सिधांणनै १६४- ३
२८ कसतूरी चंपककली १६५-१६
२९ कागद मांहे कांमणी १६६-२१
३० काली थरसै कांठलां १८०-११९
३१ किसतूरी अरजी करै १७३-५५
३२ कुंण थांनै काऊ कहै १८१-१२८
३३ कूजां दारू ले'र कर १७९-१००
३४ केइ नरवं कांमणी १७७-८४
३५ केफ मही चकीयो कवर १८१-१२५
३६ ,, ,, ,, ,, १७६-८१
३७ के भगतण के कंचणी १७४-६०
३८ कोड गुना कामण कीया १८५-१४१
३९ कोड सीस सवलालकै १६५-१७

घ

४० घना-घना समजावीया १७५-७२
४१ घम-घम बाजै घूघरा १८१-१३२
४२ घहु विस उमंघीयो भड घवण १८०-११३

च

४३ चेलो हुओ ज सूवटो १६५-१२

छ

४४ छिन-छिनमें पग चांपसूं १६९-४५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज

४५ जल वूठा थल रेलीया १७४-६१
४६ जसकी हुंदी जोडरा १६६-४१
४७ जसां अपछर जनमकी १८१-१३१
४८ जसां सरीषी जगतमें १६६-४०
४६ ,, ,, ,, १८२-१३४
५० जसीयां मद पीवो जदयां १८१-१२६
५१ जहर जसा मांनें जसां १८५-१४३
५२ जाषोडा कसीया जरी १६७-२६
५३ जोडे कर आखे जसां १७६-७६
५४ जोवन मद आई जसां १६६-१६

ड

५५ डेरां विस वलियां दुभ्कल १७७-८५

त

५६ तरह-तरहुरा तायफा १७६-१०३
५७ तुररे छोगे चांकीया १६८-३५
५८ तेहडो वैरी तेरमो १७८-६१

द

५६ दासी कुंण जोवे विवस १७४-६३
६० दूजी मारी देषसी १७८-६७,६८
६१ ,, ,, ,, १७६-६६
६२ देषं ऊभी दासीयां १७०-४८
६३ दौय अगाऊ दोडीया १६८-३४

न

६४ नदीयां नाला नीभ्करण १८०-११६
६५ नरपुर में रहसां नहीं १६५- ८
६६ नबमी आ वैरण नदी १७८-८६

प

६७ प्रीत पहेला पेरनें १६६-४४
६८ पग-पग ऊपर पदमणी १८५-१४५
६६ पलीवालरी पोत ज्यूं १८३-१३५
७० पाका वैरी पनरमा १७८-६२
७१ पागे चोटी पाक छै १७३-१५६
७२ पांणी थल-हल परबतां १७६-१०६
७३ पूठे सहसां पांचरे १६७-२३
७४ पेहला दारू पायने १८१-१३३
७५ पोसाकां कीजो प्रबल १७८-६५

फ

७६ फब सेली किलंगी फबी १६८-३६

ब

७७ बादल जम कूंजा बहे १८०-१२३
७८ बंदू नंद गवरिया (बरवै)
१६४- १

भ

७६ भमरां थांनें भालसां १८०-११८
८० भांडयाबस जाहर भुबण १६५-१३

म

८१ म्यारा जासो मुरधरा १७४-६५
८२ म्याराजी थे मुरधरा १७४-६२
८३ ,, ,, ,, १७५-७४
८४ ,, ,, ,, १७६-८३
८५ म्याराजी लोही मूआ १७५-७१
८६ म्याराजी विरचो मती १७५-७३
८७ म्यारा थांरा मुलकमे १८४-१३६
८८ म्यारा पासी मोहको १७४-६४
८६ म्यारांमजी थे मांणजो १६६-४३
६० म्यारा मारा मुलकरा १८४-१३६
६१ म्यारे कागद मेलीय १६७-२२
६२ म्यारोजी मोटा हुआ १६५-१८
६३ मद वैरी अगीयारमो १७८-६०
६४ महि चा(छा)इ मामोलीयां
१८०-१२१
६५ मांरी थारी म्यारजी १७६-११०
६६ मारू मां मनुआरको १७६-१११
६७ मालू आवे म्यारनें १७५-६८
६८ मालू थांरा मुलकमें १८४-१३८
६६ मालू मारा मुलकमें १८४-१३७
१०० मालू मेलें मांभ्कली १६८-३८
१०१ मिजलां-मिजलां म्यारजी १६८-३३
१०२ मुजरो करने मालको १६८-३६
१०३ मुरधर जोवण मालकी १७४-६७
१०४ मुषसूं दावे म्यारजी १६६-४६
१०५ मे तो मणसूं मालको १८५-१४२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०६ मे तो टंगण मालकी १७३-५८
१०७ मैं तो बरजी मालकी १७५-६६
१०८ मोती हीरा मूंगीया १६७-३१
१०९ मो लंकाने मूंदडी १७६-७७

र

११० रातां हव थोडी रही १७२-५०
१११ रानां पर तांना करै १६७-२५
११२ रीसां बलती राजनै १८५-१४४
११३ रेवत समजै रांनमै १६७-२६
११४ रेवंत समजै रानमै १६७-२७

ल

११५ लपटीजै तरसूं लता १७३-५४
११६ लव ग्रहणां वप लपटजौ १८०-११७
११७ लाली यक कावल लुली १८१-१२७

व

११८ वजसी थाढो बायरो १७९-११२
११९ वरचां(छां) चढसी वेलडी
१८०-१२२
१२० वरसालो मैमत वूवौ १७८-९३
१२१ वरसालौ वैरी वूग्रो १७७-८६
१२२ वादल काले वीजली १७३-५३
१२३ वादल गल-गल बरससी १७९-१०५
१२४ विडगांरा बाषांण १६७-२८
१२५ वैरी चोथा बादला १७७-८७

श

१२६ श्रामण मास सुहामणो १८०-११५

स

१२७ सत त्रेता द्वापुर समै १६४- ६
१२८ साकल पल हलसी बरा १७९-१०७
१२९ सातु मिल सहेलीयां १७६-८०
१३० साथै लाज्यौ सूषडां १८०-१२०
१३१ साथै लीजो साथीयां १७८-९६
१३२ सारंग वैरी सातमां १७७-८८
१३३ सारी ऊठ सहेलियां १७३-५१
१३४ सुंण मालू थांरी जसां १७५-७०
१३५ सैठो कीधो सायधण १७६-८२
१३६ संगरा भीजै साथीयां १८०-११४

ह

१३७ हीडां जासां हींडवा १७९-१०८,
१३८ ,, ,, ,, १७९-१०९
१३९ हीडांरी लीजो हलक १७९-१०१
१४० हीडा रेसम हेमरा १७९-१०२
१४१ हीडै लागी हीडवा १७३-५२
१४२ हीडै सहीयां हीडसी १७८-९४
१४३ हेमो लाधो नै हरो १६७-२४

गीतादि—अनुक्रम

अ

१४४ आसां जडी लगासां दुवारे
सूंघ भीन आसां १७७- ३

उ

१४५ ऊकतां ऊंडी ऊमदा जुगतां हु जांणां
१६४- ४

ओ

१४६ ओपै लपेटो अपार वागो १७०-१

क

१४७ करै कोडजाडा दोढी
षंचाणा कनांतां कार १७७- ४

च

१४८ चरंजी रहौ रहौ चां नौजी १८४-६
१४९ चोगां तोडा पवत्रां किलंगी
सेली पाग छाई १७०-२

ज

१५० जेलै तुरंगा रेसमी डोरां
वनातां जडाव भीण १७७- १
१५१ जोवे जुल सहेली हवेली
सीस चढे जोषी १७७- २

झ

१५२ झलंबा झलूस साज
सहेल्यांरी साथ जोवै १७०- ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द

१५३ दादुर मोर पपीया नस-वन
१८३- २

प

१५४ पग-पग कोछ्रअथग
लग पांणी १८४-५

ब

१५५ बरसै सघण षळळबजवाळा
१८३- ३

र

१५६ रहीया ढक गिरिवरी
छीयां रसीयां १८३-१

ल

१५७ लांबक झूंबक लाडली श्रंग
टेर अपारां (नीसांणी) १७०-४६

व

१५८ बन सघन लसत मनु
घन वसाल (पद्धरी) १८४-१४०

स

१५९ सरवर कहु रस भर
जल सिलता १८४- ४

१६० साथीयां सजोडां घोडा
जाषोडां साकतां साजी १७०- ३

परिशिष्ट ३

वार्त्तागत सूक्तियाँ

अ

अंबर तारा डिग पडै, धरण अपूठी होय।
साहिब वीसारूं आपणों, तो कलि उथल होय॥ —१२६-२८८
अइयो आसाढाह, गाजो नै धडकीयो।
बूढो बाढालाह, निगुणी भूई सिर नागजी॥ —१६२-७२,
अण कह्यो म ऊथपो। —१८२-१३४
अण काली धणनै अबे, माली कर माकूल। —१८१-१२७
अत चोषो ऐराक —१७६-७८
अपछर मैं और न असी, रंभा छवि सारीष।
षट रुत मैं नही पेषजे, रति वसंत सारीष॥ —४२-२६५
अमर करै ओ आषरां, कवि कथ अमर करंत। —१६४-३
अमीणों तुम पास, तुमहीणो जाणुं नहीं।
विवरो होसी वास, वास न विवरो साजनां॥ —१५४-३१
अरज करां अलवेलीया, पला भेलीया पांण।
म्यारा जी मत मेलीयां पमगां सोस पलांण॥ —१७५-७५

आ

आइयो लेष आलाहाका, दूष-सूष का विरतंत वै।
आवेगी थारो मोतडी, पर बंधी कुलवंत वै॥ —१००-१५८
आंगलीयां जणरी यसी, मूंग तणी फलीयांह। —१६६-४२
आंख्या आंकस बाण, तांण करे नै तांणीया।
न डरै तेण दीवाण, सो माढु नैंणा ही मांणीया॥ —१५०-८
आज रूपालो रातडी, भिरमिर बरस्या मेह।
पीउ मन षांचो पोढीयो, नवली नारनै नेह॥ —१२२-२६५
आज सलूंणी रातडी, मोही अलूणी होय।
एको कांमण सोभीयो, वांदी विधुता जोय॥ —११६-२३१
आजूनो दिन अति भलो, जीवत रहीया म्हेह वे।
हिव सारा ही थोकड़ा, करस्यां सारा जेह वे॥ —६५-१४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आजो उमरां अतररां　—१८०-११८
आडा कसीया कांमनी, नैण-सरासर देत।
घावा मचीया धो(ढो)लीया, सैण सवादी लेत॥ —११६-२४६
आडा पडसी दीहडा, जद केहा जांणां। —१६४-४
आंबो मरवो केवडो, केतकीयां अर जाय।
सदा सुरंगो चंपलो, आज विरंगो काय॥ —१५६-५३
आभे अडंबर बादली, बीज चमको होय।
तिण वीरीयां कचू ं कसं, पीवनै राषे नोय॥ —११६-२२६
आवलां दलामैं म्यारा, प्रकासीयो रीत एही।
सांवळां वादलां माहे, नकासीयो सूर॥ —१७०-१
आसू लूधी सेणरी, घणीयण आस लिगार बे।
घोठ पराई राचवै, जीवत छंडै लार बे। —११८-२४३

उ

उठियो कुंवर बीवालूवा, भीजै राजकुंवार।
राजा रूठैगो गांव लै, नहो तर घोडी त्यार॥ —११७-२३६
उत्तम जननी प्रीतड़ी, कीणहीक वेला होय बे।
ते छोडी नै वीसरै, ते जग मूरष होय बे॥ —८३-८५
उत्तम जीव हुवे जिके, जिण तिण सूं उपगार।
करतां न जांणे हांण बे, राषे सूष परकार बे॥ —१०-१८३
उतावल कीया अलूभीयै, सनै-सनै सहु होय बे।
माली सींचे सो घड़ा, रीत आया फल होय बे॥ —६६-१४१
उमरावां बरज्या घणां, राज न मान्यो कोय बे।
बीधना लेख हुवै तिकै, उ टले टलीया टलाय बे॥ —६८-५१
उर-थल थोडा ऊफीया नींबूण चेयारां। —१७१ नी०

ऊ

ऊंडै पड़वै पैस, पिवसु पैजां मारती।
सुंमाणसीया एह, घूंघै लागा धोलउत॥ —१६२-७४
ऊँडो गाजै ऊतरा, ऊंची वीज खिवेह।
ज्युं ज्युं सरवणे संभलुं, त्युं त्युं कंपै देह॥ —१५६-५०
ऊणां सहेल्यां आगला, म्यारा हुं तिल-मात॥ —१६६-४७
ऊवां बरसै बादली, लूंबा-झूंबा लोर॥ —१७८-८८

ए

ए आजूंणी रात, षबर पडैसी मूझ षरी।
वैरण हुंदी बात, षरी म थाज्यो वेलणा॥ —११६-२३५

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

एक गई दूजी गई, हिव तीजो की मेल।
नारी नही का आपरी, कुंडी जगमें केल ॥ —१११-२१०

ओ

ओ जोऐ थांरी वाट। —१७७-३. गी०
ओ दीवो घर आपरै, जिण दीठां जीवीह। —१८१-१२६

क

कंचू कस्यो दिल हथ कीयो, मीलीयो तन मोनार।
जाणे केलना पांन पर, कपूर ढुल्यों नीरधार ॥ —११६-२४७
कंठ कथीरा काठका, दन थोडा जांणा। १६४-४
कटारी कुनार, लोहालो लाजी नहीं।
आजूणी अध रात, नागण गिल बैठी नागजी ॥ —१६०-५६
कटारी कुनारि, लोहारी लाजी नहीं।
नाग तणै घट मांहि, बाढा नींबू ही भलो ॥ —१६०, टि०
कनक थाल में छेद करि, मारी लोहां मेष। —४-३०
कमर बँधावत कुंवरकु, विरह उलट गयो मोहि।
सजन वीछडण कब मिलण, काहां जांणें कब होय ॥ —१५०-६
कर ढीला घट सांघुड़ा, नीर ढुली ढुल जाय बे।
पंथीडो तिरस्यो नही, नेयणाँ रहीयो लूभाय बे। ६१-१२५
कलमैं को कुंभार, माटी रो भेलो करै।
चाक चढावणहार, कोई नवो निपावे नागजी ॥ —१६२-७७
कलमैं को कुंभार, माटी रो भेलो करै।
जे हूं हुंती कुंभार, तो चाक उतारूं नागजी ॥ —१६२- टि०
कला प्रकासत दीपको, दूणा भासत दीप।
रंभा दिषा छैबि रूपको, स्यामा षडी समीप॥ —४६-३८२
कांमण कारीगर तणी, कांमण केथ पडेह।
सात कीयो सांसे गई, भलो दिखायो नेह ॥ २१०-२०८
कांम विचारी ने कहो, रहसी तिणरी लाज बे।
ऊठ कहो ऊतावला, तो विणसाडै काज बे ॥ ६६-१४२
कामण हीयडा कोरणी, जीवत रही तुं आज बे।
हिव सारी सिध होयसी, देह विलूधी नाज बे ॥ —६४-१३४
कांमातुर हीरां कहै, रबि राह बिहरंत।
चाहत चातुर अधिक चित, आतुर होत अनंत ॥ —६-४१
काची कली मत लूबीयै, पाका लागेगा हाथ बै।
जीवत जावंगा मानवी, नही को बीजा साथ बै ॥ —८६-१११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कारीगर किरतार का, छयल किया तसू हाथ।
जीहा पीउ थांरी छांहडी, तीहां पीउं मांहरो साथ ॥ —१०८-१६१
काल हुतैं काची कली, भई सुपारी आज। —३-१७
काली कांठल भलकीया, बीजलीयां गयणेय।
चमकंती मन मोहीयो, कंचू छाकी देय ॥ —१३३-३०६
कुंकुंवरणी देह, टीकी काजलीयां थई।
एह तुमीणा नेह, सू नित मेलो नागजी ॥ —१५५-३४
कुच कर ओखव भुज पटी, अहैर पती दे ताव।
उन नयननके घाव कूं, ओखद एह लगाव ॥ १५३-२६
कुच जा भुज जा अहर जा, तन धन जोबन जाह।
नागो सयण गमाइयो, अब रहि'र करसी काह ॥ —१६१-६१
कूड कपटनी कोथली, रमती पर पुरुषांह।
लजां संकण जान ही, प्रीतम मन पिछतांह ॥ —१३४-३१४
कुल मैं दोय कुंभार, वांसोलो नै वींभली।
जे हुं हुंती सुथार, नवो धड लेवत नागजी ॥ —१६२-७२
कुलवटनी कामणि तणौ, सासरीयौ सीरदार।
इश्वर गत जांणै घरी, आदर पुं(कुं)जी नार ॥ —६४-४१
केइ नरखै कांमणी, आडै गुंघट आय। —१७७-८४
केहनी अस्त्री न जांणज्यौ, कुड़ो नेह रचंत बे।
पूठ पराई नारीयां, न धरे एक ही कंत बे ॥ —१०४-१७१
कोड छडाया कागला, पीउडा कारण पाय।
विधना हुंदी वातड़ी, अजब करी मूझ माय ॥ —१२२-२६६
कोरण उतराधिकरण, घोरण चो(चो)लो कुवाल।
धणीयां धण सालै धणी, वणीयो इम वरसाल ॥ —११६-२३०

ग

गरदन जसकी गागडी, तक कुरज तरारां। —१७१-नी०
गुनेहगार हुं रावलो, साहिब चरणां दास।
छोरू कुछोरू हुवै, तात न छोडत आस ॥ —१३६-३३७
गोरीदा गळ-हाथड़ा, नागकुंवर कर सेल।
जांणै चंदन रूंखडै, अघर विलंबी वेल ॥ —१५०-१३
गोरी बांह छातीयां, नागकुंवर न भुराय।
जांणै चंदन रूंखडै, बेल कलुंबी खाय ॥ —१५०-१२
गोरी हीयो हेठ कर, कर मन धीर करार।
सांई हाथ संदेसडो, तो मिलसां सो-सो वार ॥ —१५०-११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घ

घणा दीनारी प्रीतडी, कीम मुंझ छांडी जाय बे।
कडा राजिंद परषज्यो, जीवूं ज्यां लग काय बे॥—८३-८७
घणी सासती नारी नहीं, सेणा सहिल अपार।
प्रेम गहैली सेंणनै, आपै तन-धन सार॥—११८-२४४

च

चकोर चाहे चंदकूं, मोर चहै घण मंड।—२३-१६२
चख सिर खत अदभुत जतन, बधक वैद निज हत्थ।
उर उरोज भुज अधर रस, सेक पिंड पद पत्थ॥—१५२-२२
चसम म मीच —१८१-१३२
चाल[क] हीरां चंदसी, केत राहा सो कंथ।—४-३१
चाल विलूंबी इधक चित, वेल तरोवत चांण।
लपटावो गल लाडलो, रसिया प्रोहित रांण॥—४८-३७१
चुडलो चोरा(चींरा) एह, मोल मुहंगे आणीयो।
नांखूनीं भाडेह, भव पैला सुं पाइयो॥—१६२-७६
चेला पुसतक भलकरी, कहा पूछत है बात।
इण नगरी की डगर मैं, एक आवत एक जात॥—१५८-४४

छ

छटी (ठी) वैरण रात —१७८-८७
छोटी केहर बोहत्त गुण, मिलै गयंदा मांण।
लोहड बडाइ नां करै, नरां नखत्त प्रमांण॥—१४७-३

ज

जगमें नारी रूवडि, वसत करी जगनाथ।
पिण साचे मन चालबे, तो पिउ थाय सूं नाथ॥—१३४-३१५
जतीयां सतीयां जोगीयां, बक-फाड ब(बै)ठारां।—१७२—नीं०
जलज्यो पासा षेलणा, जलज्यो षेलणहार।
दस मासरी डीकरी, ले गयो कुवर रसार(ल)॥—७८-७२
जल बूठा थल रेलीया, वसधा नीलै वेस। १७४-६१
जागै नह मांसूं जसां, वैरण थारो नींद। १८१-१२५
जाचक जैं जैं बोलीया, मेह आगम जिम मोर वे।
दानें करि राजी किया, तोरण बांध्या तोर बे॥—६१-२४
जा जोबन अर जीवजा, जा पांणेचा नैण।
जागो सयण गमाय कर, रही किसा सुख लैण।—१६०-६०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जांण न पाई हूठमला, नवि पूगो मूझ डाव।
जे हुं मारयो जांणतो, तो करती कटार्‌यां घाव। —१०८-१६९

जांणे नागण होडले, थंभां सोनारा।—१७०-नीं०

जांणे मांन सरोवरे, मोलप्यो हंस विसाल।
सेझां आई सूंदरी, छुटो गज छंछाल॥ —१३३-३११

जांणे हंस मलवीयो, सर मांन मझारां। —१७१ नी०

जांन मांणी रतड़ी, ते न लाई वार।
अमां विछोहो तैं कीयो, तो करज्यो भरतार॥ —१६१-६३

जाय जसी जुग छेह, पाछा आय जासी नहीं।
नालां विच बैसेह, चले न वातां कीजसी॥ —१६१-६२

जावो जीभां ना कहूं, वधो सवाई घट।
ऊगडसी थां आवीयां हुता रयां को हट॥ —१५१-१४

जे नर रूपे रूवड़ा, ते नर निगुण न हुवंत।
जीमण भोजकूंमार का, मोह्यौ मन तन कंत॥ —१३३-३१३

जे पर पूरषां कामनी, हीलमील खेलणहार।
ते पति नै काकर समो, गिणै नित की नार॥ —६३-१३१

जेसा सूत्र ज्यूं वाल्हा (लहा), जेसा अवर न कोय।
पिण जग मावीता तणौ, सूखमें दुष को जोय॥ —१३२-२६८

जोगीडा रसभोगीया, भर-भर नयण मत रोय बे।
आसी(अस्त्री)मजांणो आपरी, घर तुंमारा जोय बे॥ —१०५-१७५

जोवण जोगी जोड। —१७६-११०

जोवन चढीयो जोर। —१७८-६१

जो सूरज आथूण मै, उगै दिन मै हजार बे।
आग न जो सीतलपण करे, तो पिणहुं नहीं बार बे॥ —८३-८४

ज्यू पितु जपे तुं खरो, कालो गोरो कथ।
तेहवो हुकम चढाईये, सीस सदा समरथ॥ —१३१-३०२

झ

झड पडत घावरत कीच भीन।
मनुं तुच्छ नीर तड़फड़त मीन॥ —३८-२६८

ट

टिपांटिप टपीयांह, विण वादल बुछुंटीयां।
आंख्यां आभ थयांह, नेह तुमीणै नागजी॥ —१५७-३६

ड

डाकण नहीं गिंवार, सिहारी हुंती नहीं।
बलती मांझल रात, खरी सिहारी हुय रही॥ —१५८-४८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डूंगर केरा बादला, ओछा तणे सनेह।
वहता वहै उंतावला, झटक देखावै छेह ॥ —१६१-६७

ढ

ढोल दडूकै तन वहै, गेहरीया नाचंत।
चालो सखी सहेलड़ां, कठै न दीसै कंत ॥ —१५३-२७
ढोल धडकै तन दहै, विरहीणी सतीया होय।
पीउ मीलाओ तो मीलै, तो किम दुखीयो कोय ॥ —१२७-२८४

त

तण पुल रमसां तीज, १७९-१०४
तल गुंदल निलज उपरे, नीर निरमल होय।
टुक पोवहो रीसालूवा, नीरमल नीर न होय ॥ —१२५-२७६
तास तीषां लोयणा, ओस(अर) चंगी वेणाह (नैणांह)।
धार विछुटी धर गई, नर चढियो नैणांह ॥ —१२४-२७३
तोजी वैरण तोज, १७८-८६
तुररै छोगै चांकीया, झलंब रहै अठ जांम।
भीनै रंग अलीयो भमर, मांणीगर म्यारांम ॥ —१६८-३५
तू हीरावल हीर, मोट सूता मिलसी घणा।
तू पाटण पटचीर, नारी - कुंजर नागजी ॥ —१६१-६८
ते नारी गढ - सूरड़ी, होवै जगमै हरांम बे।
ग्यूं ए रीसालूरी गोरडी, हठमलसूं हित काम बे। —९२-१३०
तेहडो वैरी तेरमो, जोवन चढीयो जोर ॥ —१७८-९१
तो सरसी नारी तणा, वेल तणा मन वेल।
प्रांण तणा पासा ढल्या, मैमत कीधा मेल ॥ —११०-२०७

थ

थारो वीरो बहुबली, तीम अरजण-बांण।
रयणी वात बहू गई, ईण वीध राता रैण ॥ —१४२-७३
दईवांधीन लिख्या जके, अंकण भिसले सीस बे।
जेसा दुख-सुख सीरजीया, जेसा-जेसा लहै नर वीस बे ॥ —१०७-१८४
दल वावल भेला हुवा, देतां नगारां ठोर।
जांणे भाद्रव गाजीयो, चढीया वहतां सजोर ॥ —१३७-३२७
दसमो वैरी दीवलो, १७८-८९
दारूकी पी धल (धण)वर्ष, छेकी अण सारू। —१८१-१२८
दुलही बनड़ो देषतां, ऊलही उर बिच आग।
संगम देषो साहिबों, कीनों हंस'र काग ॥ —४-२९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देषत घुंघट ओट दे, बंकी अगनि बिसाल ।
लीन बसंत गुलालमें, लसत अंग छबि लाल ।। —४४-३१५
देषो हुंतो दस मासनो, पाली किण विध पोष बे ।
हिव परघर मंडप करी, अस्त्री जातरी ओष बे ।। १०४-१७०
दोढी कर दो दूर, १७६-८३

ध

धण वण आवें ढोलीयें लगथगथी लारां ।। —१७२-४६ नों०
धवळा बाल न वाढ, नागरवेल न चढीयें ।
चंपे वली चाढ, फूल बिलंब्यो भंवरलो ।। —१५४-३२

न

नव अंगूठे अंगूली, भरीयो कलस अभूग ।
अजेयस मारू साहिबो, बोले नहीं ओ वूंग ।। —११२-२१७
नर-नारी ओठा नवंग, तीषा वे तोषार । —१८४-१३७
नवमी आ वैरण नदी, १७८-८६
नवल सनेह पीहर तणो, पीण सासरीयो परधान बे ।
सासरीयो जुग-जुग तणो, सूष पीहर उनमान बें ।। —६४-४०
नहो घोडा रथ उंटीयां, हाथी ने सूषपाल ।
चाकर-बाबर को नहो, ए नृप केहा हवाल ।। १०४-१७३
नागजो नगर गयांह, मन-मेळू मिलीया नहीं ।
मिलीया अवर घणांह, ज्यांसु मन मिलीया नहीं ।। —१५१-५७
नागड़ा नवलंडेह, सगपण घणांई तेडीयें ।
भुय ऊपर भुंवतांह, मिलतां ही मरजै नहीं ।। १६२-७३
नागड़ा नवलो नेह, नोज किण ही सुं लागजो ।
जलै सुरंगी देह, धुखै न धुंवो नीसरे ।। —१६१-६५
नागड़ा नवलो नेह, जिण-तिणसूं कीजै नहीं ।
लीजै परायो छेह, आपणो दीजै नहीं ।। —१६१-६४
नागड़ा निरखुं देस, एरंड थाणों थपीयो ।
हंसा गया विदेस, बुगला हीसुं बोलणो ।। —१५७-३१७
नागा खायजो नाग, काला करड़ मांहलो ।
मूंवो न मिलज्यो आग, जांवतडै जगाई नहीं ।। —१५५-३५
नार पराई बिलसतां, कांटा चूर तूटाय बे ।
सीस साई जब बीजिये, मीच पडे सूचि काय बे ।। —१०१-१६४
नारी न जांण्यो आपरी, जगमें न सूंणी कोय ।
मूरास मरावें हाथसूं, पाछेसूं सती होय ।। —१११-२१२
नारी नहो का आपरी, पूठ पराई थाय ।
जो हित तन-मन दीजतां, पिण न पतिजै जाय ।। ११८-२४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नारी ना-ना मूष रटै, बिमणो बंधे सनेह ।
जांणे चंदन रूषडै, नागण लपटी देह ।। —११६-२५१
नितबां दीजे ओपमा वीणा रवै हारां ।। —१७१- नों०

प

पर घर करां न प्रीतड़ी, प्रोहित बचन प्रकास ।
दाषां म्है छां काच दिढ, रमां न धिय रत-रास ।। २०—१६०
परवाई भीणी फूरे, रीछी परवत जाय ।
तिण विरीयां सू कलीणीयां, रहती पीव गल लाय ।। ११५—२२७
पलीवालरी पोत ज्यूं, ऊठ्यो भाटक अंग ।। —१८३-१३५
पाका वेरी पनरमा, वलीयां फूलां बाग ।। —१६८-६२
पाछे बोलो बोलड़ा, वादै कर रीसाय ।
ते सूता पितु अलषामणो, होय सदा दुषदाय ।। —१३१-२६७
पापी बैठो प्रोलीयो, कूडा इलम लगाय ।
निलाडांरी फुट गई, पिण हिवड़ारी वी जाय ।। —१५६-३६
पालो पांणी पातसाह, चढी उत्तराधि कोर ।
तीए बोरीयां षणियांयति, मोरडीयां ज्यू भिंगोर ।। —११६-२८८
पांना फूलां मांहिला, सीस रहूंगी सोड ।
के नाराज्यू साजना, लहुं मूभ हीयडे जोड ।। —१०६-१६६
पिंडस पतल कटि करल, केल नमावे अंग ।
लोयण तीखा डग भर, आई मेहल पतंग ।। —१३३-३१०
पीतमकै उर सेभ पर, चंदमुषी चिपटंत ।
मांनु भादवै मासकी, लता अछ लपटंत ।। —४६-३८७
पीपलपना पेटका अभ केल चीरारां । १७१ नों०
पीपल पांन'ज रणभणं, नीर हिलोला लेह ।
ज्युं ज्युं श्रवणे संभलुं, त्युं त्युं कंपे देह ।। —१५६-५१
पुरुष प्रीत हीरां तलफै, दुषद हीयो दाहंत ।
ऐसैं बुंद आकासमैं, चात्रग मुष चाहंत ।। —६-४४
पूत्र ईसा जगमैं हुवै, माइत तणा मंजूर ।
रहै सदा मूष आगल, नहो अलगा नहो दूर ।। —१३१-३००
पूत्र पितारा हुकममें, जे रहे जगमै जोय ।
ते सारीसो जग इणे, वले न वीजो कोय ।। —१३१-२६५
पूरष भला गहिला थई, राषै भरोसो नार ।
कदे ही आपणो नहो हुई, नारी जग निरधार ।। —११८-२४१
पूरो पूनम जेहवो, मूष बिच चूंपे जडाव ।
कालो बादल कोर पर, बीज वीवे जिभ्भेकाव ।। १३३-३१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्यारा पलकां ऊपरै, राषालां चित रीत।
रातै घणी छै राजवी, प्रीतम अधिको प्रीत॥ —२५-२१६
प्यारी पीव प्रजंक पर, ऊलही उर अवलूब।
मांनु चंदन वृच्छ मिल, झुकी 'क नागणि झूब॥ —२५-२१४
!!त लगी प्यारी हुती, बाला थई बिछेह।
नोज किणही नै लागज्यो, कांमण हुंदो नेह॥ —१५२-२१
प्रेम गहिली हुं थइ, मांहरा पीउंरे संग।
यूं नहीं जांण्यौ हठमला, तो करती रंगमें भंग॥—१०८-१६५
प्रेम विडांणा पारषा, जगके मोह अकथ।
कर जोडि पितु आगलै, रहै सवाई साथ॥ —१३१-३०१
प्रोहित हीरां पेषीयो, तीष नोष छिब तोर।
बूषी तिषातुर देषिया, मांनु घणहर मोर॥—३५-२६०

फ

फिट-फिट कुबधो सज्जनां, कीनो नहीं सूझ साथ।
षबर न का सूझनै पड़ी, तो मीलती भर बाथ॥ —१०८-१६३
फीकै मन फेरा लीया, अंतर भई उदास।
आंष मीच रोगी अवस, पीवत नीम प्रकास॥ —५-३२
फेर पयाला पावसां, वैं'र गलारी आंण॥ —१७६-१००

ब

बाटो तोनै जीभड़ी, कुटल बचन कहाय।
रीस निवारो राजवी, मो पर करो मयाह॥ —४७-३६१
बालापणरी प्रीतड़ी, पूरण कीधी पीर।
लागा हाथ छयलका, हिव तोसूं हुवो सीर॥ —१०८-१६०
बाला बिल-बिलतांह, ऊतर को आयो नहीं।
कदे कांम पडीयांह, निहुरा करस्यौ नागजी॥ —१६० टि०
बांदी बीजी हुइ रूप देषे हाक-बाक॥ —१७०-४
बांहि ग्रहां की लाज। —१८५-१४१
बोलै वैरी बारमा, पपीया पीऊ-पीऊ। —१७८-६०

भ

भला तुम्हे सुषीया हुवो, म्हे दुषीयारो देह।
साहिब करसी सो भला, पंषी पंषी सालेह॥ —६५-१३६
भला पधारचा कुंमरजी, भलो हुवो दिन आज।
आस्यां-बंधी कांमनी, ताका सुधरचा काज॥ —१३२-३०६
भली बूरी माइत तनी, नवि कीजै देवै पुत्र।
पूठत मावीतथी, ते सफू जावै सूत्र॥ —१३१-२६६
भावज भणुं जुहार, सयणांनुं संदेसडा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वे तुमीणा वोहार, जीव्या जितंहो मांणीया ॥ —१५५-३३
भामण प्यारी अंक पर, पीतम परस प्रजंक ॥
बंक सरीर बिलासमैं, लसत कबूतर लंक ॥ —४१-३८६
भांमण भूल न बोल, भंवरो केलकीयां रमै।
जांण मजीठां चोल, रंग न छोडे राजीयो ॥ —१५७-३८

म

मद वेरी अगीयारमो। —१७८-९०
मन चिंतै बहुतेरीयां, किरता करे सु होय।
उलटी करणो देवरी, मती पतीजो कोय ॥ —१४५-१
मंगल जारी मागरण, चोला छोड कुचील।
चाले मन पिउ नहि गिणे, ज्यूं मदमातो कील ॥ —१३४-३१६
माणस ते नही ढोरडा, पर-त्रीय राखे नेह बे।
नारी पत छोडो तुरत, पर-पुरषांसूं नेह बे ॥ —९२-१२९
माय बीडांणी पिता पारकां, हम ही बिडाणां जाय बे।
खेवटीयाकी नाव ज्युं, कोइक संजोग मीलाय बे ॥ —७०-८
मालू ! थारां मुलकमें, कासूं भला कहों।
नर नागा नारी नलज, रोजे केम रहों॥ —१८४-१३८
मांटी सूती छोडने, जावे वेलण नार।
पर रस भीनो कांमणी, ते हूई जगमे खराब ॥ —११८-२३८
मांणस देह विडांणीया, क्या हींदु मूशलमांन।
आग जलाया कायने, हींदु धर्म निदांन ॥ —१०९-२०१
मेहा घोर करे अणमाप। — १८३-२ गीत
मो मन मल्यो बालमां, कहुक प्यारा कंत।
दीसत यक-सम दूधमें, मानुं नीर मिलंत ॥ —२६-२२४
मो मन लागो साहीबा, तो मन मो मन लग्ग।
ज्युं लुण बीलुधो पांणीयां, ज्युं पांणी लुण बीलग ॥ —१३४-७३
मोलो लोहो —१८५-१४६
मो लंकानै मूंदड़ी, अबल बतावे आण। —१७६-७७
मो सरखी निगुणी तणे, कारण काया छोड।
हुं अभागणी जीवती, रहीय करडका मोड ॥ —१०८-१९२
म्यारा ! मांरा मुलकरा, वागांरा वाखाण।
मालीजां सुणजो अबे, श्रवणां कथन सुजांण ॥ —१८४-१३९

य

यण प्रकार सोहत महल, दमकत छबि उद्योत।
दीपग लय प्रतिबिंब दुत, हिलमिल जगमग होत ॥ —१२१-१७२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

र

रतन कचोलो रूवडो, सो लागो पाथर फूट बे।
जिण जिण आगल ढोईयो, केसर बोटी काग बे॥ —१२५-२७५
रतनावत दिल रोसमैं, प्रोहित चले प्रयाण।
बचन-बचन बांधो बिथा, जग्यो अग्नि प्रत जांण॥ —३१-२३६
रयणी दुषकी राश भी, भरसी गुण संताप।
ढोली सहु ढीली पडी, जावो कलेजा कांप॥ —१०१-१६१
रषीयो इंदर रांणीए पकड नठारां। —१७२-नी०
रस रमतां मेहलां विषे, चोपड पासा सार।
ते छोडी घर पाथरचाँ, सीस धड जूबा वार॥ —१०८-१९४
रहो रहो केथ अणभावना, अणहुंती कहितांह।
हीवडै हार अलूझियो, सो सुलझायो नेणाह॥ —१२४-२७४
रहो रहो गुरजी मूढ कर, कहा सिखावत मोय।
सत(ब) सूते इण नगरमें, जागत विरला कोय॥ —१५८-४५
राषीजै षांवंद सरस, नाजक षण रा नेम।
प्रांण दुषी प्यारी तणो, कीजै अति हठ केम॥ —४८-३७०
राज कीयो छै रुसणो, ऊर मो दहत कदोत।
आप न मांनो मो अरज, मरूं कटारी मोत॥ —४८-३६८
राज सरीषा प्राहुणा, वले न आवे कोय।
मिलीया दुष गलीया सहु, जूगत थई सहु जोह॥ —१३५-३१६
राजा वैद बुलायकै, कुंवर देषाई बांह।
वैदां वेदन का लही, करक कलेजा मांहि॥ —१५१-१८
राते करहा उछरे, दीहां उतारा होय।
मारूं मूंध कटारीयां, वर क्यूं बीरडा होय॥—१२१-२६०
रावत भिडियां वांकडा, ताहरा हाथ सलूर।
मो निगुणीकै कारणे, काया कीधी दूर॥—१०८-१८८
राम सरीसा भोगव्या, बारै वरस वनवास।
तो हुं गीणती केतली, दईव लिख्या ते आस॥ —१०७-१८५
रीसालू कुंवरनै छोडनै, क्यूं जायै घर और बे।
पर पूरषां सूं नेहडो, किम कीजै निज जोर बे॥—६३-१३३
रूडा राजिंद जांणज्यो, मूंझने चूक न कोय।
जे हूं जांणती मारीयो, तो हुं करती वोय॥ —१०८-१९७
रंग प्यालरा व्यापगत, रात वख्यात ऊमंत।
चंद गिगन ऊडन चमक, संजोगण हुलसंत॥ —४४-३१८
रंडी भूंडी ते करी, मांण मूकायो मोह।
षार दीयो मूझ छातीयां, भली करी मूझ दोह॥ —११९-२०६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रंडी राजो नां हुंई, कुंमर थकी कर कूड।
मे विदनांमी रच गई, नार देई तुझ धूड ॥ —११०-२०४

ल

लछ(ज)कांणो पडीयो लग्यों, कारी लगी न काय ॥ —१७२-८२
लाख बात चालूं नहीं, टालूं नह मन टेक।
तापसी बालक और नृप, त्रिया हठ है छे येक ॥ —४६-३५३
लाख सयाणप कोड बुध, कर देखो सब कोय।
अणहुंणी हुंणी नहीं, होणी हुवै सु होय ॥ —१४५-२
लाखां बातां लाडला, मांणो महिल मनाय।
हिवडै नवसर हार ज्यूं, लेस्यां कंठ लगाय ॥ —४७-३६५
लाडा थां वण लागसी, मांनै खारां मैल ॥ —१७४-६५
लांबक-झूंबक लाडली। —१७०-नी०
लुलुहीयारो हार। —१७७-४ गीत
लूंबां-झूंबा लोर। —१७८-८८
लेख विधाता जि लीख्या, तौ महीज भुगतै सोय।
सूगण नरां मन जाणज्यो, बात तणो रस जोय ॥ —५१-२
लोभी देखो लोयेणा, ऐमी नजरि भरि ऐम।
मुख बांणी बोलै मधुर, प्रीतम करि हित प्रेम ॥ —४७-३६४

व

वकीया थारा वेंण। —१८५-१४३
वण्यो त्रियाको वेस, आवत दीठो कुंवरजी।
जातो दुनीया देख, नाटक कर गयो नागजी ॥ —१५७-४०
वदनां नाक विराजीयो च(छ)व कीर चचारां। —१७१-नी०
वरषा रीत पावस करे, नदीयां खलके नीर।
तिण बिरीयां सूंकलीणीयां, धणीयां स्यूं धर्यो सीर ॥ —११५-२२६
वरसालो वैरी बू(हू)ओ, वैरण हूजी बीज ॥ —१७८-८६
वागां मांहेला मानवी, साहूकार के चोर वे।
वरषत ही छीपतो फीरे, ढांढो गमायो के ढोर वे ॥ —८६-२४
वाडी मेहलां आदमी. साहु अछै किनूं चोर वे।
रूषां छीपायो क्यूं रह्यौ, ढीलो हुवो जू ढौर वे ॥—८६-१०६
वादल कालै बीजली, थवै भली कर थांत ॥—१७३-५३
विधना तुं तो बावली, किसका ले किसकूं देय वे।
रोतो सामी चालीयो, पाटण मारग लेय ॥ —१११-२११
विडगांरा बाखाण, दोडतणां को दाखजे।
वेखातारा वांण, जाण न पावै जेलीयां ॥ —१६७-२८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विसरा-बसरी चोसरा, ग्रमलां करडी तांण ।
सेभ्ां रंग पलांणीयां, ग्रमलां किया पिछांण ॥ —११६-२५०
वेघालू मन वीधयौ, मूरष हासो होय ।
जांणै सोई सूजाण नर, ग्रवर न जांणै कोय ॥ —५१-३
वंका लोइण लोइसा, कटि कबांण कसि पंग ।
सेभ समूद पर नाव ज्यूं, तीरता चले तुरंग ॥ —११६-२४८
व्यापारी ज्यूं बटाउडा, बालद ज्यूं बिणजार ।
लवीया लोथ पडी रही, कागा कुचरे घा'र ॥ —१०६-१६८
वैरी चौथा बादला । —१७८-८७

श

श्रीमहाराजा जांणज्यो, सूरां एह संताप ।
सिर उपर रूठा फिरै, त्यांनै केहा पाप ॥ —१२६-२८२

स

संग सूहेलो पीउ तणो, दुहिलो विछडवार बे ।
पीउ'र ग्रक्षर जीभथी, नहीं छूटसी नार बे ॥ —६३-३६
सजन ग्रांबा मोरीया, ग्राई ग्रास करेह ।
ज्युं ज्युं श्रवणे संभलुं, त्युं त्युं कंपै देह ॥ —१५६-५२
सजन चंदन बांवनै, ऐरूं कूकारेह ।
ज्युं ज्युं श्रवणे संभलुं, त्युं त्युं कंपै देह ॥ —१५६-५४
सजन दुरजन हुय चले, सयणा सीख करेह ।
धण विलपंती युं कहै, ग्रांबा साख भरेह ॥ —१५१-१६
सत कीधो ने साहबण, हिंदु तुरक समान ।
जस षाटी जालम तणो, जलण घर्यो ए प्रांण ॥ —११०-२०५
सरवर निरमल नीरडै, भरीयो हूंसा केल ।
बागा फूली सूगीधीयां, वास बलै बहु मेल ॥ —१११-२१४
सरवर पाय पषालतां, तेरी पायडली षस जाय ।
हुं थनें पुछु गोरड़ी, थने क्युं कर रयण बीहाय ॥—१३३-७१
सरवर पाय पखालतां, मोरी पायलड़ी षस जाय ।
ग्रंबर तारा गीणतां थकां, यु मोकुं रयण वीहाय ॥ —१३३-७२
साचौ वैरी सोलमो, रस बरसावै राग । —१७८-६२
साजनीयां सूं प्यार, कठे बसा दीसौ नहीं ।
मिलता सो-सो वार, नैणां ही सांसो पड्यो ॥ —१५४-२६
सारंग वैरी सातमां, मीठा गावै मोर । —१७८-८८
साली मो मन माहरी, भूंडी रांड भडांण ।
तो सरसी थाली बरस, देषी लोहू घडांह ॥ —११०-२०६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सासरीया पीहर तणा, कुलनै करती खराब बे।
पर पूरुषां मनडो रंजे, सकल गमावे आब बे ॥ —१०४-१७२
साहिब तो सूता भला, करडी बांगां तांण।
धण नही लीवी नींदड़ी, ढोला हुवा संधाण ॥ —१२२-२६२
सांई बाजी राब बे, तो सूधो सहु काज।
पंच पतीजो पांमै बे, वलि रहै सगली लाज ॥ —१३०-२६१
साई साजन प्रेमका, धण दीधा छीटकाय।
वरषा रुतरी रातडी, दुष म दई बिताय ॥ —१२२-२६३
सांप छोडी कांचली, भीत्यां छोड्यो लेव।
रीसालू छोडी गोरडी, मन भावै सो लेव। —१२५-२७७
सिधावो ने सिध करो, पूरो मनरी आस।
तुम जीवकी जांणुं नही, मो जीव छै तुम पास ॥ —१५१-१५
सिसक-सिसक मर-मर जीवे, ऊठत कराह-कराह।
नयण बांण घायल कीया, ओषद मूल न थाय ॥ —१५२-२०
सिगालो अरि धीलणो, जिण कुल एक न थाय।
तास पूरांणी वाड ज्यूं, दिन-दिन माथै पाय ॥ —५२-७
सीह तणा जेवा वाछडा, किम बंधीया रहै बंध बे।
होणहार सो होयसी, बिधना कामना अंध बे ॥ —६५-४४
सुण वडारण केसरी, कथन पुराण कहंत।
लछण बाद लुगाईयां, अकलि पछै ऊपजंत ॥ —४८-३७३
सुण बीरा बैनी कहै, कुलवंती ते होय।
त्रीया - चरित्र जांणै नही, जो आवै सूर-ईंद्र ॥ —१४१-६६
सुण हो साहिब हठमला, सूरां हुंदा काम बे।
कायर षडग न वावसी, रंकण देसी दाम बे ॥ —६१-११८
सूकुलीणी नारी तिका, पति संग रहै अछेह।
जीवतडां नहि वीसरे, न वलगाई नेह ॥ —१३५-३१८
सूती सहै सहैलिया, गहरी नींद गरद।
दरद नही छै दूसरां, दुखें जिका दरद ॥ —६-४६
(नागड़ा) सूतो खूंटी तांण, बतलायां बोलै नहीं।
कदेक पडसी कांम, नोहरा करस्यो नागजी ! ॥ —१६०-५८
सूतो सवड धरेह, विव पिछोडो पिंडरा।
सादो साद न देह, आवि वले ओ नागजी ! —१६०-५६
सूवा किण देसे चलां, सूरां किसा विदेस।
जिहां अपणां अंन्नपांणीया, जिहां करस्यां परवेस ॥ —१०६-१८०
सेल भलूका कर रह्यो, माठू(ढू)डा घूमंत।
आवो सखी सहेलड़ी, आज मिलाऊं कंत ॥ —१५३-२८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेवा सेहतड़ाह, मांनव काम मांने नही।
पाथर पूजतडांह, निरफल थई हो नागजी! १६०-५५
सो कोसां सजन बसै, बस कोसां हुवै नार।
तो नारी तेहनें भूरै, पीउरी न आंणे पूकार॥—११८-२४२
सो वारू किण बिध सहै, ज्यांरी कारू बात।—१८१-१२६
सोल बरसरी बीजोगणी, निठ मील्यो भरतार।
हस्या न बोल्या हे सखी, आइयो लेख अपार॥—१२२-२६४

ह

हठीया रावत वाकड़ां, तो विण रैन विहाय।
तेज पराक्रम ताहरी, सो हिव कागा खाय॥—१०७-१८६
हरिया हुयजो वालमा, ज्यूं वाडी के सिग (साग)।
मो नगुणीके कारणे, करक बेसांण्या काग॥—१०८-१८७
हरीया बागांरा राजवी, फूलां हंदा हार।
तो सो छेती बहु पड़ी, कूडे इण संसार॥ १०८-१८९
हीरण भला केहर भला, सुकन भला के सांम बे।
उठो'र अरजुन बांण ल्यो, सीध करे श्रीरांम बे॥—७०-१०
हीरां चाहै छैल चित, जोबन हुंदो जोर।
किरणालो चाहै कमल, चाहै चंद चकोर॥—६-४३
हीरां मद आतुर हुई, चित प्रीतम की चाह।
विषधर ज्युं चंदन बिनां, दिल की मिटै न दाह॥—६-४२
हे विधनां तो सुं कहूं, एक अरज सुंण लेत।
बीछड़ण अंक'ज मेट कर, मिलवैको लिख देत॥—१५०-१०
होणहार सो बुध उपजे, भवीतव्य किण ही न हाथ बे।
तेरा नाम है हठमला, आओ कर मूझ साथ बे॥—८७-२३
होणहार सो नही मिटै, लेख लिख्या छंठी रात बे।
भलो बूरो सहू मांहरो, करसी विधाता मात बे॥—७५-६९
होणहार सो हीं'ज हुवौ, स्यांणपणी क्या होय बे।
राजा कोपे भी भरयो, बरजण सको कोय बे॥—६८-५२

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर द्वारा

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला में प्रकाशित

राजस्थानी–हिन्दी-ग्रन्थ

१. कान्हड़दे प्रबन्ध, (ग्र. ११), महाकवि पद्मनाभ विरचित; सम्पादक - प्रो. के. बी. व्यास । मू. १२.२५
२. क्यामखां रासा, (ग्र. १३), कवि जान कृत; सम्पादक - डॉ. दशरथ शर्मा और अगरचन्द भंवरलाल नाहटा । मू. ४.७५
३. लावा रासा, (ग्र. १४) अपर नाम कूर्मवंशयशप्रकाश, गोपालदान कविया कृत; सम्पादक - श्रीमहताबचन्द खारेड़ । मू. ३.७५
४. बाँकीदास री ख्यात, (ग्र.२१), बाँकीदास कृत; सम्पादक - श्रीनरोत्तमदास स्वामी । मू. ५.५०
५. राजस्थानी साहित्य संग्रह भाग १, (ग्र. २७); सम्पादक - श्रीनरोत्तमदास स्वामी । मू. २.२५
६. राजस्थानी साहित्य संग्रह भाग २, (ग्र. ५२) तीन ऐतिहासिक वार्ताएं—बगड़ावत, प्रतापसिंह म्होकमसिंह और वीरमदे सोनगिरा; सम्पादक - पुरुषोत्तमलाल मेनारिया । मू. २.७५
७. कवीन्द्र-कल्पलता, (ग्र. ३४), कवीन्द्राचार्य सरस्वती कृत; सम्पादिका - रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत । मू. २.००
८. जुगलविलास, (ग्र. ३२), कुशलगढ़ के महाराजा पृथ्वीसिंहजी अपरनाम कवि पीथल कृत ; सम्पादिका - रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत । मू. १.७५
९. भगतमाळ, (४३), चारण ब्रह्मदास दादूपंथी कृत; सम्पादक - श्रीउदयराज उज्ज्वल । मू. १.७५
१०. राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची भाग १, (ग्र. ४२), ई. स. १९५६ तक संगृहीत ४००० ग्रंथों का वर्गीकृत सूचीपत्र ; सम्पादक - मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य । मू. ७.५०
११. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची, भाग २, (ग्र. ५१), ७८५५ तक के ग्रन्थों का सूची-पत्र ; सम्पादक - श्रीगोपालनारायण बहुरा । मू. १२.००
१२. राजस्थानी हस्तलिखित-ग्रन्थसूची भाग १, (ग्र. ४४), मार्च १९५८ तक के ग्रंथों का विवरण ; सम्पादक - मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य । मू. ४.५०
१३. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थसूची भाग २, (ग्र. ५८), १९५८-५९ के संगृहीत ग्रंथों का विवरण ; सम्पादक – पुरुषोत्तमलाल मेनारिया । मू. २.७५
१४. स्व. पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण-ग्रंथ-संग्रह, (ग्र. ५५), सम्पादक - श्री गोपालनारायण बहुरा और श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी । मू. ६.२५
१५. मुंहता नैणसी री ख्यात भाग १, (ग्र.४८), मुंहता नैणसी कृत; सम्पादक - आ० श्रीबदरीप्रसाद साकरिया । मू. ८.५०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६. मुं० नैं० री ख्यात भाग २, (ग्र. ४६), संपा०-आ०श्रीबदरीप्रसाद साकरिया। मू. ६.५०
१७. मु० नैं० री ख्यात भाग ३, ((ग्र. ७२), ,, मू. ८.००
१८. सूरजप्रकास भाग १, (ग्र. ५६); चारण करणीदान कविया कृत; सम्पादक— श्रीसीताराम लाळस। मू. ८.००
१६. सूरजप्रकास भाग २, (ग्र. ५७); सम्पादक - श्रीसीताराम लाळस। मू. ६.५०
२०. ,, भाग ३, (ग्र. ५८); ,, ,, ,, मू. ६.७५
२१. नेहतरंग, (ग्र. ६३), बूंदी नरेश राव बुधसिंह हाड़ा कृत; सम्पादक - श्री रामप्रसाद दाधीच। मू. ४.००
२२. मत्स्य-प्रदेश की हिन्दी-साहित्य को देन, (ग्र. ६६), लेखक डॉ. मोतीलाल गुप्त; मू. ७.००
२३. राजस्थान में संस्कृत साहित्य की खोज, (ग्र.३१), अनु० श्रीब्रह्मदत्त त्रिवेदी, प्रोफ़ेसर एस.आर. भाण्डारकर द्वारा हस्तलिखित संस्कृत-ग्रंथों की खोज में मध्यप्रदेश व राजस्थान में (१६०५-६ ई०) में की गई खोज की रिपोर्ट का हिन्दी अनुवाद। मू. ३.००
२४. समदर्शी आचार्य हरिभद्र, (ग्र. ६८), लेखक-पं० सुखलालजी, हिन्दी अनुवादक-शान्तिलाल म. जैन। मू. ३.००
२५. वीरवांण, (ग्र. ३३), ढाढी बादर कृत; सम्पादिका—रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत। मू. ४.५०
२६. वसन्त-विलास फागु, (ग्र. ३६), सम्पादक - एम. सी. मोदी। मू. ५.५०
२७. रुक्मणीहरण, (ग्र. ७४), महाकवि सांयाजी झूला कृत; सम्पादक—पुरुषोत्तमलाल मेनारिया। मू. ३.५०
२८. बुद्धि-विलास, (ग्र. ७३), बखतराम साह कृत; सम्पादक—श्री पद्मधर पाठक। मू. ३.७५
२६. रघुवरजसप्रकास, (ग्र. ५०), चारण कवि किसनाजी आढ़ा कृत; सम्पादक—श्री सीताराम लाळस। मू. ८.२५
३०. संस्कृत व प्राकृत ग्रन्थों का सूचीपत्र भाग १ (ग्र. ७१), राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर संग्रह का त्वरित रोमन-लिपि में ४००० का सूचीपत्र, अंत में विशिष्ट ग्रन्थों के उद्धरण; सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य। मू. ३७.५०
३१. संस्कृत व प्राकृत ग्रन्थों का सूचीपत्र भाग २ अ. (ग्र. ७७), सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य। मू. ३४.५०
३२. सन्त कवि रज्जब-सम्प्रदाय और साहित्य (ग्र. ७६), लेखक—डॉ. व्रजलाल वर्मा। मू. ७.२५
३३. प्रतापरासो, (ग्र. ७५), जाचिक जीवण कृत, सम्पादक—डॉ. मोतीलाल गुप्त। मू. ६.७५
३४. भक्तमाल, राघोदास कृत, चतुरदास कृत टीका; सम्पादक—श्री अगरचन्द नाहटा। मू. ६.७५
३५. पश्चिमी भारत की यात्रा, (ग्र. ८०) कर्नल जेम्स टॉड कृत, अनु० श्री गोपालनारायण बहुरा, एम.ए. मू. २१.००

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org